श्रीः ।

डॉक्टरी चिकित्सार्णवका विषय सूचीपत्र ।

पिल अर्थात् गोली ।

पोटास अर्थात् क्षार।

ट्रोचीसाय-या-कुर्स-अर्थात्-टिकिया।

केपशूल अर्थात् बुन्दे-तथा सुराहीदार गोली।

कन्फेकशीय-अर्थात्-गुलकन्द।

लिनीमेन्ट—दर्दोपर

दवा-या तेल।

मुतफर्रकात दवायें अकारादि क्रमसे ।

इति विषयानुक्रमणिका समाप्ता ।

भूमिका।

प्रत्येक वैद्य और डाक्टरोंको उचित है कि रोगीके प्रति दया निर्लोभतापूर्वक रोगीकी चिकित्सा करनेमें साहसी बनें क्योंकि वैद्योंहीके अधीन रोगीका जीवनहै और रोगीने अपने जीवनको विश्वासपूर्वक इनहीके अर्पण किया है-इस वास्ते उचित है कि जबतक रोगका ठीक ठीक निर्णय न करलें तबतक औषध देना निष्फल होगा, यही कारण है कि आज कलके वैद्य लोग प्रायः चिकित्सा करनेमें रोगीको निरोग नहीं कर सक्ते और लज्जित हो बैठते हैं वही दवा डाक्टरोंके पास है वही वैद्योंके परंतु केवल रोग निर्णय की पूर्ण सामर्थ्य न होनेके कारणही लज्जित होनापडताहै इसवास्ते प्रथम रोगका निश्चय करके यत्न करनेवाला वैद्यही प्रशंसा योग्य होताहै और कहींकहीं भाग्यवानोंके यहां ऐसा औसर आपडताहै कि वैद्य हकीम और डाक्टर तीनोंहीं इकट्ठे होजाते हैं उस वखत वैद्य लोगोंको डाक्टरकी बातोंको बिलकुल न समझनेके कारण मुख देखना पड़ता है और कुछ भी उत्तर नहीं देसक्ते इसवास्ते वैद्योंको भी कुछ थोडा वहुत डाक्टरी विद्यामें अभ्यासकरना अव श्यही चाहिये क्योंकि इस वक्त डाक्टरी विद्याकाही विशेष प्रचार होरहाहै और डाक्टरी दवायें भी शीघ्र फलकी दिखानेवाली होती हैं परंतु ऐसे पुस्तकका हिंदीभाषामें अभाव होनेके कारण ऐसे अ- मूल्य रत्न डाक्टरी चिकित्सासे विमुखही रहना पडताहै "इस अभा वको दूर करने के वास्ते पंडित माधोराय वैद्यने इस" "डाक्टरी चिकित्सार्णव" को संग्रह करा है यदि वैद्य लोग इसको देखेंगे तो डाक्टरीके बहुतसे कामोंको समझसकेंगे, इस ग्रंथमें डाक्टरी मान

तौल डाक्टरी मतानुसार नाडीपरीक्षा, डाक्टरी मतसे मूत्रके-अंश और थर्मामेटर द्वारा गर्मी शर्दी जाननेकी रीति तथा डाक्टरीदवाओंका निघंटु जिसमें डाक्टरी-दवाओंके नाम और गुण तथा मात्रा विस्तारपूर्वक कही गई हैं और डाक्टरी निदान तथा होमियोपेथिक और ऐलोपेथिक मतानुसार चिकित्सा भी विस्तारपूर्वक लिखी गई है साथसाथ में हिंदीके नामभी दियेगये हैं जिसमें वैद्य लोगोंको समझने में सुगमता पडे और यह तो आपलोग जानते ही होंगे कि एक पुस्तकके पढनेसे कोई भी पूरा वैद्य हकीम या डाक्टर नहीं बन सक्ता इसवास्ते इसको अभ्यासार्थ समझना चाहिये तथा डाक्टरी दवाइयोंका कम्पौंड करना अर्थात् बनाना मिलाना विना सीखे नहीं आसक्ता इसवास्ते किसी सुज्ञ डाक्टरसेही सीखना चाहिये बाकी वैद्यों को इस डाक्टरीचिकित्सार्णवसे बहुतही सहायता मिलेगी डाक्टरी दवा जो विषैलहैं उनकी मात्रा बहुतही कम होतीहैं इस वास्ते विना ठीक ठीक समझे उन दवाइयोंको खर्च करना किसी तरह उचित नहीं होसक्ता और होमियोपेथिकको जितनी दवायें होती हैं उनकी मात्रा १-या२-बूंदसे अधिक नहीं होती।

आपका कृपाकांक्षी—
पंडित-माधोराय वैद्य,
(मुल्क राजपूताना)–मु० बिसाऊ.

॥ श्रीः ॥

डॉक्टरी चिकित्सार्णव।

प्रथम खण्ड, निघंटु।

अंगरेजी तौल का उन्मान।	देशी तौल।
१—ग्रेन	॥ आधी रत्ती
१५—ग्रेन	१—एक माशा
६०—ग्रेन का एक ड्राम	४—चार माशा
७½—ड्राम का एक औंस	२॥अढाई तोला
१६—औंस का एक पौन्ड	८—आठ छटांक
१०—पौन्ड का एक गेलन	५—पांच सेर

जहां वाइन ग्लास कहा जावे वहां २ औंस जानना, जहां चाहका प्याला कहाजावे वहां ४ औंस जानना, जहां छोटा चमचा कहा हो वहां एक ड्राम समझना चाहिये।

डाक्टरी मतानुसार नाड़ी परीक्षा।

डाक्टरी मतसे जब मनुष्य पैदा होता है तो १ मिनटमें अनुमान १४० बार नब्ज चलती है और एक वर्षतक १३० बार पांच वर्षतक १०० बार १४ वर्ष तक ८६ बार ३० वर्षतक ८० बार पीछे ५० वर्ष की अवस्था तक ७५ तथा ७० बार ८० वर्ष ताई ६० बारके अनुमानसे नब्ज चलती है यदि इस अनुमानसे तेज चाल हो तो गरमीकी अधिकता अगर मंद हो तो शरदी की अधिकता जाननी और श्वास का उन्मान यह है कि जितनी देरमें नब्ज ४ बेर चलती है उतनी देर में श्वास १ बार आता है।

डाक्टरी मत से मूत्रके अंश ।

स्वस्थ अर्थात्(तंदुरुस्त)आदमी के मूत्रमें अनुमान१०००भाग में से ९५० भाग पानी, २५ भाग यूरमा, १ भाग यूकर एसिड, १४ भाग नमक, १० भाग कई प्रकार के आरगानक होताहै इस्से अत्यंत न्यूनाधिक हो तो रोग समझना चाहिये ।

अब डाक्टरी शब्द लिखे जाते हैं जो डाक्टरी दवा और निदान चिकित्साके समझनेके समयमें सदैवही काम आतेहैं,इन शब्दोंको याद किये विना समझमें आना कठिन है ।

नं०डाक्टरीशब्द	वैद्यक शब्द	अर्थ
१ अवसारवेट	शोषक	सुखाने वाली वस्तु
२ अरहाइन	क्षवथुजनक	छीक लाने वाली
३ अफ्रोडीजक	बाजीकरण	मैथुन शक्ति वर्धक
४ अंही लेशनै	धूमपान	दवा का धूम पान करना
५ आइंटमेन्ट	रोपनी मरहम	घावको भरने वाला मरहम
६ आई वाटर	नेत्रमें डालनेका अर्क। अर्थात् पानी	
७ आई वासू	एवम्	एवम्
८ ओयल	तैल्य	तेल
९ इन्जकशन	वस्ति	औषधकी पिचकारी देना
१० इसक्काटिक	दाहजनक	जो त्वचा को जलादे
११ ईर्टीटेन्ट	छेदन	खरास पैदा करनेवाली

डाक्टरी शब्द.	वैद्यक शब्द.	अर्थ.
१२—इनीमा	वस्तिकर्म	गुदा में पिचकारी लगाना
१३—इक्साइडिंगकाज	निमित्त कारण	जो पीछे हो या पहले को भडकादे
१४—इस्टीम	तरडे देना	गर्मजल या क्वाथका शरीर पर डालना
१५—इस्मीलोग	सूंघना	औषधिकी गंधलेना
१६—इसनिफ	नस्य	नास लेना
१७—इनफ्यूजन	हिम—फान्ट	भीगी औषधीका जल
१८—इंबीरूकेशन	स्नेह मर्दन	तैलादिक लगाना
१९—एस्ट्रेजेन्ट	ग्राही	काबिज
२०—एक्सपिक्टोरेन्ट	कफहर	जो कफ को दूर करें
२१—एमेटिक	वामक	जिससे वमन हो
२२—एमनागाग	आर्तव जनक	जो स्त्रीधर्म पैदाकरें
२३—एपिरीएन्ट	मृदु रेचन	हलका जुलाब
२४—एसिड	तीक्ष्ण क्षार	तेजाब
२५—एरोमेटिक	सर सुहर्रिक	रसादि में तेजी करें
२६—ऐंथलमेन्टिक	कृमिहर	कृमि नाशकर्त्ता
२७—ऐंटीडूट	विष नाशक	जो विषका प्रभाव हरें
२८—ऐंटसिप्टिक	दुर्गंधिहर	जो बदबूको दूर करें
२९—ऐंसथेटिक	शून्यता कारक	जिससे त्वचा शून्य हो
३०—ऐन्यूडाइन	शूल हर	जो दर्दको शांत करें
३१—ऐक्सट्राक्ट	सत्व द्रव सार वा यूष	पतला सत्व

डाक्टरी शब्द	वैद्यक शब्द..	अर्थ,
३२–एलकचरी	अवलेह	चासनीकी तरह पकाई हुई दवा
३३–ऐक्यूट	नवीन	नई थोडे दिन की
३४–कारडीयल–जिससे दिलकी हरकत् अर्थात् चाल कम हो		
३५–कारमेनेटिब	कफ नाशक	जो कफ को दूरकरै
३६–कास्टिक	दाहक	जो त्वचादि को जलादे
३७–केथारटिक	विरेचन	जुलाब जिससे आंतोंका मल गिरै
३८–क्रोजिव	क्षत कारक	जो घाव कर दे
३९–कोलेगागपरगेरिव–पित्तरेचन		जिससे पित्तके दस्तहों
४०–क्लस्टर	वस्ति	गुदा में पिचकारी लगाना
४१–क्रानिक	जीर्ण	पुरानी बहुत दिनकी
४२–कन्फेक्सन	कन्द	एवम्
४३–कम्पौन्ड	मिश्रित दवा	जहां अंगरेजी में कम्पौन्ड शब्द आता है वहां संस्कृत में आदि शब्द लगाते हैं
४४–काज	कारण	सबब
४५–क्यूमीगेशन	धूपन	वफारा
४६–गागर	कुरला	एवम्
४७–टानिक	बृंहण	बल वढानेवाली
४८–टेंटेटस्	वर्ती	वत्ती
४९–टिंकचर	द्रव अरिष्ट	इस्प्रिटसे घुली हुई दवा
५०–टूथपाउन्डर	मंजन	दांतोंमें मलनेकी दवा

डाक्टरी शब्द.	वैद्यक शब्द.	अर्थ.
५१—डाइफारेटिक	स्वेदन	पसीना निकालना
५२—डाइलोएंट	...	पतली करने वाली
५३—डायोरेटिक	मूत्रल	जो अति मूत्र लावैं
५४—डशक्यूशीएंट	शोथहर	जो वर्म अर्थात् शोथको दूरकरै
५५—डमलसेंट	स्निग्ध लुवाबदार जो खरास दूर करै	
५६—ड्रापस	बिंदु	बूंद
५७—ड्राफ्ट	घूंट	एक घूंट पीना
५८—ड्राइडवीयर	धूम	धूनी
५९—डिकोकशन	क्वाथ फांट	औटाई या औटे जलमें भेई दवा
६०—डाईल्यूटेड	जल मिश्रित करी हुई दवा।	पानी मिलीदवा
६१—थनपाइन्ट	मर्दन	तिला आदि मलना
६२—थिकपाइन्ट	लेप	पतली दवा लेप करना
६३—नारकोटिक	विकाशी और विवाई (विष)	पहले गरमी पीछे नशा और सुस्ती करै
६४—नाशीएंट	ह्लास जनक	जिससे जी मचलावे
६५—न्योटरीरोंट	तृप्ति कारक	एवम्
६६—पारगेटिव	विरेचन	दस्तावर दवा
६७—पिल्स	गुटी	छोटीगोली
६८—पाउन्डर	चूर्ण	कपडछानहुई
६९—प्लास्टर	मरहम	कागज पर लगाकर चिपकाना
७०—पुलटिस	कवलिका	ल्हेई लूपरी
७१—परीडिसयेजिकाज	प्राकृत कारण	जो पहले से हो
७२—पोटास	क्षार	नमक

डाक्टरी शब्द	वैद्यकशब्द	अर्थ
७३–फिटवाथ	पाद स्वेद	औटाई दवाका पानी पिंडलीतक डालकर नीचेको मलना
७४–फोमिटेशन	तापन	सेंकना
७५–फ्रूट	मेवा	एवम्
७६–वटरटानिक	कडीकाष्ठादि दवा।	एवम्
७७–वजीकेंट	विस्फोट कर्ता।	जिससे फफोला हों
७८–वाथ	स्नान	नहाना
७९–विलष्टर	स्फोट जनक	फफोला डालना
८०–वोलस	वटक	बडी गोली
८१–वाटर	आशव	अर्कखिचाहुवा या पानी
८२–वारमवाथ	९६से९८दरजेतक।	गर्मजलसे न्हाना
८३–वाश	लोशनकोही कहतेहैं।	दवामिला पानी
८४–वाइन	मदिरा	जिस्में दवा गलै
८५–वेटारवाथ	उष्णाम्बुस्वेद	गर्मजलका वफारा
८६–म्यूसलिज	लुवाबदार वस्तु.।	एवम्
८७–मिकचर	पीनेयोग्यपतली दवा।	एवम्
८८–रेफ्रीजीरेंट	संतर्पण हृद्यरुचिकारक।	जोहृदयको आनन्द दे गरमी और प्यास को दूर करे, रुचिको बढावे
८९–लिकजेटिव	अनुलोमन	जिस्से आंत और मल नर्महो
९०–लाजिंज	टिकिया	दवाकी टिकियाबनाई हुई
९१–लेक्टस	लेह्य	चटनी

डाक्टरी शब्द.	वैद्यक शब्द.	अर्थ.
९२—लोशन	बाहरलगानेकी दवा	पतलीदवाको बाहर लगाना
९३—लिनीमेन्ट	मलने लायक	जो बाहर मलीजावै।
९३—लीकर	अर्क	एवम्
९४—साइलोगाग	लाला जनक	जिससे थूक अधिक हो।
९५—सप्यूरेंट	पिडिकोत्पादक	जिससे फुनसी पैदा हो।
९६—सिडेटिभ	शांतिकारक	जो दिलकी हरकत कमकरै।
९७—सजू	स्वरस यूस	हरीदवाका पानी।
९८—सयोजीटोरी	स्नेहवर्त्ती	गुदामें रखनेकी चिकनी वत्ती।
९९—सिक्कर	यूस	एवम्
१००—सोल्यूशन	द्रव	धुली मिली पतली दवा।
१०१—सीरप	शर्करोदक	शर्वत पकाहुवा।
१०२—सल्फेट	सत्व	एवम्
१०३—साइनस	लक्षण	चिह्नअलामत
१०४—हम्यूसटेटिक—	रक्तशोधक	जो रक्तको बन्द करै
१०५—हैयोनाटिक—	निद्राजनक	जिससेनींदआवै।
१०६—हैड्रोगागपरगेटिव—	तीक्ष्णरेचन	करडा जुलाब
१०७—हाट बाथ	११०दर्जेतक	गर्मजलसे स्नान करना
१०८—हीयर कलर	केशकल्प	खिजाब

अब अंग्रेजी दवाओंका हिंदी में नामप्रकाशित होताहै ।

नं. डाक्टरी नाम.	हिन्दी नाम.	न डाक्टरी नाम.	हिन्दी नाम.
१ टेमेंडिंग	इमली	२५ एसाकटिडा	हींग
२ सलफर	गंधक	२६ कोफी	काफी
		२७ केम्फर	कपूर
३ कार्ष्टोयल	अंडी का तेल	२८ उपियम	अफीम
४ जेलप	जुलाफा	२९ मारफिया	अफीम का सत्त् वा वीर्य
५ रूबर्ब	रेवतचीनी	३० पापीज	पोस्त
		३१ एपिकेमप्यूल	पोस्तकी डण्डी
६ सेनाविलस	सोनामखी के पत्ते	३२ इष्टोमोनियम	धतूरा
७ वेल	वेल	३३ इडियनहैम्प्स	गाजा
८ एलोज	एलवा	३४ नक्सवोमिका	कुचिला
९ टार्पिनटाइन	तार्पिन का तेल	३५ इष्ट्रिकिनिया—कुचले का प्रधान वीर्य	
१० फारवाइटस	कालादाना	३६ ब्रुसिया—कुचले का दूसरा वीर्य	
११ टारपिर्याइरेडिक्स	त्यरटी	३७ नाईट्रेट औफपोटास	जवाखार
१२ माईरोवालान	हरीतट	३८ माईट्रिक एसिड	जभीराम्ल
१३ एम्ब्लोजिका	आमला	३९ लिमन	नींबू
१४ कालोसिन्थ	इन्द्रायण	४० एसटिक एसिड	सिर्का
१५ क्रोटन	जमालगोटा	४१ बिटर आमंडस	कडुआ बादाम
१६ हेलेबोरेरूट	कुटका	४२ मर्क्यूरी	पारा
१७ मासृर्ड	राई सिरसू	४३ परक्लोराइडआफ मरक्यूरी—रसकपूर	
१८ एन्टिमनी	रसौंत	४४ हेमिटिस ममरूर—अनन्तमूल	
१९ जिंक	जस्त	४५ ग्लास	माजूफल
२० कापर	तृतिया	४६ वेगल्बाइनो	ढाक का गूंद
२१ केप्सिकम्	लालमिर्च	४७ पेलकेटिक्यू	पीला कथा
२२ माष्टिक	रूमीमस्तगी	४८ रेडसंदलउड	लालचन्दन
२३ एमोनिया	नौसादर	४९ रोज	गुलाब
२४ मास्क	कस्तूरी	५० एलम	फिटकडी

॥ श्रीः ॥

॥ ऋद्धिसिद्धीश्वराय नमः ॥

डॉक्टरी चिकित्सार्णव।

अब डॉक्टरी दवाओंका निघटु लिखा जाताहे उसके साथ साथ में हिन्दी नाम और मात्रा तथा गुण सम्पूर्ण ही लिखाजावेगा।

प्रथम एसिड अर्थात् तेजाब कहे जातेहे ।

१—एसिडम् कंथारीडिस (सिरका तेलनी मक्खीका)

पुराने छातीके दर्दमें देते हैं। इससे उपाड करनेसे छाले पडकर दर्द जाता रहता है और सुस्तीकी बीमारीमें इस्के द्वारा उपाड करनेसे रगोंका पानी निकल कर आदमी मर्द होजाताहै तीन बार उपाड करना चाहिये।

२—एसिडम् सिले (जंगली प्याजका सिर्का)

इसको जलन्धर और श्वास अर्थात् दमा, जुकाम, पुरानी खांसी में देना चाहिये। मात्रा १५ से ४० बूंदतक ।

३—एसिडम् एसीटीकम् गिलेशीयल (सिर्का अंगूरी)

इसमें पानी मिलाकर बुखार वाले मरीज का शरीर पोंछा जावै तो बुखार उतर जाताहै और प्यास जाती रहती है इसकी भाफ गलेकी बीमारी को फायदा करती है इसका नित्यखाना मेदेको खराब करता हैं दीमाग की सूजन और खूनजारीमे इसका भीगा कपडा शिरपर रखनेसे आराम होतहै गंज और दादचकत्ते, मस, उंगलि-

योंके गांठोंपर, मसूढों के सडजानेमें और घावोंपर लगानेसे रुधिर बन्द होजाताहै।गलेके घावोंमें पानी मिलाकर कुरला करतेहैं पानी मिले की मात्रा १ से २ ड्रामतक ।

४-एसिडम् कारबोलिकम् (काष्टक सडन नाशक खानेमें सिंडेटिभविष है)

इसके लगानेसे सडना घावोंका बंद हो जाताहै, बदहजमी, खांसी, क्षयी, जहरबाद, चेचक और पेटके केंचुवे दूर होजातेहैं। दस्तोंको बन्द करताहै, वमनकोरोकता है, पुरानीखांसीके कफको रोकताहै, फेफडेके सडेहिस्सेको बहुत ही फायदा करताहै, एक ड्राममें एक पाइनट् पानी मिला कर कुरला कराने से गिराहुवा काग उठजाताहै—एक औंसको एक बोतल पानी में मिलाकर जब जखम पर लगाते हैं तो तुरतंही आराम होता है, ताजे जखम इसके लगानेसे सडने नहीं पाते, जिल्दकी बीमारियों को उत्तम है, बच्चेदानी के जखमों के वास्ते बड़ा उत्तम है ताकि जखम सडे नहीं और अच्छा होजावे जो उपदंशसे कंठ और नाकपर घाव हो जाता है तो एक ड्राम में ४० ड्राम अलसीका तेल मिलाकर लगाने से आराम होता है—और१ ड्राम में१० ड्राम तेल मिलाकर जखमों पर लगातेहैं। दो २ ग्रेन को एक औंस पानीमें मिलाकर उपदंश से हुये कंठ के घावोंपर लगाते हैं, और सुंघाने के लिये १ में १९ गिरीन में २० औंस पानी में हलकरे, उपदंशी घाव, सडाफोडा, गीलीखुजली, कोढ के वास्ते १९गिरीन में १ औंस पानी मिलाना चाहिये, यदि मरहम बनावै जब१ ड्राम में १ औंस वेसलीन मिलाना चाहिये, जलेहुये पर जब इसका अर्क लगाया जाता है तो आराम होजाता है, खाने की खुराक १ ग्रेन से ३ तक म्यूसलिज या शर्बत के साथ देना चाहिये ।

५–एसिडम् सल्फ्यूरिकम् (तेजाव गंधक)

वलदायक, रुचिकारक, काविज, इसमें बाराहिस्से पानी मिलाकर दवाई में दिया जाता है । तिल्ली के वास्ते मुफीद है, पित्ती इसके पीनेसे नहीं उछलती, बुखार में देने से वह उतर जाता है, प्यास जातीरहती है, कंठ और जिह्वा का सूखना दूर हो जाता है, जाडे का बुखार और बदहजमी,क्षयी, हिचकी, हैजा, दस्त, नकसीर, मुखके छाले और खूनके थूकने को बन्द करता है । पानीमिलेहुयेकी मात्रा ५ से २० बूंद या १० से ३० बूंद तक शर्बत के साथ ।

६–एसिडम् सैट्रिकम् (नीबू का जौहर)

रुचिकारक, अगर बुखार की हालत में दिया जावै तो हरारत खुश्की, प्यास को कम करता है, गठिया, वाय और मसूढोंकी बीमारी को दूरकरता है । गुरदे की बीमारी में ३० ग्रेन पोटासीबाईकारब का अर्क और १७ग्रेन इसको मिलाकर १० से ३० ग्रेन देना चाहिये, मात्रा १० से ३० ग्रेन पानी के साथ ।

७–एसिडम् बेन्जायन (लोहवान का जौहर)

पुरानी खांसी और जब पेशाब सोतेमें आपसे निकल जाताहो तो या जादा खारीहो तो इसको देना उत्तम है मात्रा ५ ग्रेन से १५ तक ।

८–एसिडम् गयालिकम् (माजूका जौहर)

हरएक रास्तेके रुधिर को बंद करता है जब खांसीमें खून आता हो या योनिसे रुधिरस्राव होता हो जो किसी तरह बंद नहीं होता हो तो यह बन्द करदेताहै । खूनी बवासीर, अतिसार, दाद, स्त्री का प्रमेह, सोजाक,पेशाब में खून मूतना यह सब इससे आराम हो जाता है ग्राही और काबिज है, मात्रा २ से १० ग्रेन तक ।

९—एसिडम् टैनिकम् (माजूका दूसरा जौहर)

काबिज़ ग्राही यह एसिड गालिक से तेज काबिज़ ज्यादा होता है तमाम जगह के जारी खून को और दस्तोंको बंद कर देता है जलेहुये पर तेलमें मिलाकर लगाते हैं। मात्रा २ से २० ग्रेनतक गोली या पानीके साथ।

१०—एसिडम् हैड्रोक्लोरिकम् (नमकका तेजाब)

इस खालिस तेजाब में ३ हिस्से पानी मिलाकर दवामें देतेहैं। जहर बाद टाईफसफीवर अर्थात् संधिगसन्निपात के भेदको तथा उपदंशआंतोंके कीडे, कोढ, बदहज्मी, मुखका आना, जिगरकी बीमारी, पेशाबका खाराहोना इन सब को दूर करता है। मात्रा पानीमिलेहुयेकी १० से ३० बूंद तक।

११एसिडम्हैडिरोसियानिकमडाइलूटम्(कडवेबादामकातेजाबपानीमिला)

दस्तोंको बंदकरना, वमनको रोकना, खांसी, श्वास, क्षयी, मेदेका दर्द, गठियावायु, पट्ठोंकादर्द, दवा, जिल्दीबीमारी की खारिशको रोकता है अजीर्ण और हैजे में मुफीद है। मात्रा २से ८बूंद तक।

१२—एसिडम् नैट्रिकम् (शोरेका तेजाब)

त्वचा को जलादेनेवाला काष्टिक, इस्से उपदंशके ताजे जख्मों को जो २ या४ रोजका हो जलादेनेसे फायदा होता है। सांप और बावले कुत्ते के काटेहुयेको फौरन्ही जलादेने से जहर नहीं चढ़ता मैले और गंदे बदबूदार जखमों को जलाते हैं, बद और निकाले पर लगानेसे बडी जल्दी फायदा होताहै, यह तेजाब चांदीको पानी के माफिक गलादेताहै—मस्सों को जलाते हैं—और इस्में ९½ हिस्से पानी मिलाने से बीमारियोंमें देनेके काम आता है—पित्ती नहीं उछलने देता—मुखके छाले और जखमों को आराम करताहै और पारे के खानेसे जो मुँहआजाता है, बदहजमी, दर्दकलेजा, दम,

खांसी,उपदंश-जाडेका बुखार, खुजली आदि रोगोंको मुफीदहै, मात्रा पानीमिलेहुयेकी १० से २० बूंदतक—जलानेकेवास्ते निखालिसा को शीशेकी नलीसे बाहर-लगाते हैं ।

१३—एसिडम् नैट्रिहैडिरोकिलोरिकम्(तेजाब शोरा व नमक दोनोंमिलेहुये)

यह तेजाब सोनेको पानी बनादेताहै—तेजाब शोरा१हिस्से— तेजाब नमक २ हिस्से— मिलाकर बनताहै तो उसको इकवारिजाया बोलते हैं और तेजाब शोरा३हिस्से तेजाब नमक४हिस्से पानी २५ हिस्से मिलाकर जो बनता है उसको डाईलूट के नामसे बोलते हैं—यह दवाइयों के काम आता है इससे उपदंश, जिगर की बीमारी और कभी कभी मुखके रोगोंमें कुरली करतेहैं।मात्रा पानीमिलेकी ५ से २० बूंद तक ।

१४—एसिडम् ओकज़ालिकम् ।

थोडीमात्रासे सोजिस, रतूवती परदे को मुफीद है, पीतलकी चीज इस्से चमकदार होजाती है मात्रा १ से १ गिरेन तक ।

१५—एसिडम् फासफोरीकम् डाईल्यूटम् (आगयावैतालका— तेजाब पानीमिलाहुवा)

इश्क—जीयाबतूस की बीमारी, पेशावकी पथरी,रेत, इत्यादि रोगोंमें देनेसे फायदा होता है। रातको जो पेशाब बहुत आता है उसको रोकता है । भूख और प्यास के रोकने को तो अकसीरहीहै हड्डी जो पेशाब में किर किर कर आने लगती है उसको बन्द करदेता है, तपेदिकमें जो रातको पसीना आता है उसको बन्दकरता है । मात्रा १० से३० बूंद तक ।

१६—एसिडम् हैडिरोबिरोमिकम् डाईल्यूटम् ।

इसको कुनैन के पानी करने और उसके गुणको स्थिररखने के वास्ते इसकी ८ बूंद में ५ ग्रेन कुनैन हल हो जाती है । बुखार,

मृगी बावगोला और कानोंमें जो भिन भिन की आवाज आतीहो उसको दूरकरता है--पट्ठोंकी शोजिश, गर्भवतीकी वमनको रोकताहै बच्चोंके श्वास को मुफीद है । मात्रा १५ से ५० बून्द तक ।

१७--एसिडम् सेलीसीलकिम् ।

इसको जलंधर जो दिलसे पैदा हुवा हो--पुरानीगांठिया वायु का दर्द और बच्चोंके श्वासको मुफीद हैं--इसका अर्क मसे गांठीयाकी सोजन पर लगातेहैं सुर्खबादह व माताके बुखारको दाद, फोडा, फुनसी पर लगाते हैं, खून बंद करता है इसमें कोनैन काभी गुण है। इसवास्ते गांठिया के बुखारको मुफीद है थोडी मात्रा से शिरदर्द को आराम करता है और प्रसूता स्त्री को जो सवा महीने के भीतर नीचेके अंगोंमें दर्द और शोथ हो तो आराम करता है । मात्रा ५ से ३० ग्रेन तक ।

१८--एसिड टारट्रिक (इमली का जौहर)

रुचिकारक इससे चमडे का रंग साफ किया करते हैं । खट्टे चने इसके द्वारा उमदा बनतेहैं । इसके २० ग्रेन में ३० ग्रेन सोडा मिलानेसे सोडावाटर बनताहै । मसूढेके रोग, बुखार, बदहजमी, मितली, वमन, खुशकी, कंठ और जिह्वाका सूखना, इन्होंको दूर करता है । मात्रा १० ग्रेनसे ३० तक ।

१९--एसिड लेकटीकम् ।

इसको पित्तकी बीमारी में देनेसे हाजमा करता है; भूखको बढाता है, बारंबार पेशाबका ज्यादाआना, पथरी वगैरह में देतेहैं । यह ईखके रससे बनाया जाता है । मात्रा १ ड्रामसे २ तक ।

२०--एसिड क्रिसोफेनिकम् ।

इसको वैनजोल या गिलसरीन में घोटकर वा वेसलीनसे मरहम बनाकर दाद गीली खुजली पर लगाते हैं ।

२१—एसिड अम्बर ।

यह एककिस्मका पीला रालकीतरह पर होताहै आगपर डालने से सुगंधि देता है। इसका तिला इन्द्रिय पर लगानेसे सुस्तीको दूर करताहै।इसको अम्बरगिरीशभी कहतेहैं-लकवा,फालिज, गांठिया के दर्दों पर लगाते हैं—बच्चोंके श्वासमें छातीके ऊपर मला जाता हैं—इससे नकली कस्तूरी बनाई जाती है ।

२२आरसनिक एसिड (शंखिये का तेजाब)

तीक्ष्ण विष है—खुश्की करता है, बारीके रोगोंमें देते है १ ग्रेन का आठवां हिस्सा की मात्रा से गोली या शोलूशन में देना चाहिये ।

२३—ओलियम एसिड ।

इस एसिडमें—अफीमका जौहर मारफीया—मकोयका जौहर अटरोपीया—मीठेतेलियेका जौहर एकोनेटिया हलहोजाताहै—और इक्सा इड औफीलड मरक्यूरीजिंक से प्रसी पीटेट होजाताहै और यह एसिड आलकोहल और ईथरमें हलहोजाता है ।

अब ओलियम् अर्थात् तेल कहे जाते हैं ।

२४--ओयल औफ फासफर्स (फासफर्स का तेल)

पुट्ठोंको बल देनेवालाहै। दीमागकी बीमारी और बुढापे के सबबसे जो कमजोर होजाता है अथवा ज्यादा स्त्री प्रसंग करनेसे या मठोले मारने से जो सुस्त होजाताहै उसको यह तेल खाना चाहिये । मात्रा ५ से १० बून्द तक मिकचर ।

२५--ओयल गमिगडाला (रोगन बादाम)

इसको कामशक्ति बढानेके वास्ते शिरपर मलते हैं कबजी दूरकरने के वास्ते पीतेहैं। बारंबार मूत्रके आनेको रोकताहै, नजला, खांसी

जुकाम को मुफैद है। पेचिश और पेशावकी पथरी को रोकता है मात्रा २ ड्रामसे ४ तक।

२६—ओयल एनीथी वा ओयल औफ लड (सोयेका तेल)

दर्दनाशक, पाचन, पेचिश, जुलाब, हिचकी, पथरी, जाड़ेका बुखार बवासीर, बेकली, स्त्रियोंकी योनिके मसे, जिगरतिल्ली, कमरके दर्दको मुफीदहै। मात्रा १ बूंदसे ४ तक।

२७—ओयलऐनीसी (रोगन अनीसो किस्मसौंफके होताहै)

इसको मिश्रीके साथ नित्यही एकसालभर खावै तो कभी बीमार नहीं होता। बवासीरको मुफीद है। स्त्रियों का दूध बढ़ताहै। पुराने दस्त और बुखार को खोताहै। मात्रा १ बूंदसे ४ तक।

२८—ओयल एन्थीमिड़िस-या-आयल औफ कैमोमाईल (बबूने का तेल)

पेटकी ऐंठन, अजीर्ण, वायगोला, जाडेके बुखारको दूर करता है। पाचक और वायुनाशक है। दूधको बढाताहै। दीमाग, पट्ठे और कामशक्ति को बल देता है। सर्व दर्दों को इसका तेल लगाते हैं मात्रा १ से ५ बूंदतक शक्कर के साथ।

२९—आयेल केजुपूटी (कायाबूंटी का तेल)

जलंधर, पुरानीगांठिया, वायु, वायगोला, कास, श्वास, तपेदिक और हैजेमें काम आताहै मात्रा ५ बूंदसे १० तक।

३०—ओयल औफके रवे (रोगन जीरा)

छर्दी, योनिरोग, सोजाक, मूत्रकृच्छ्र, अजीर्ण को फायदा करता है। मात्रा २ बूंदसे ६ तक।

३१—ओलियम् केरीयोफीलाप या आयल औफ क्लौज० (लौंग का तेल)

दर्दनाशक—बाहर मर्दन करने से गर्म नसोंको तेज करने वाला वायगोला, कास, श्वास, जलंधर, शीतज्वर, दंतकृमि को अच्छा

करता है और सुस्तीकी वीमारी में इन्द्रिय पर इसका तिला लगानेसे नामर्द मर्द हो जाता है--मात्रा १ बूँदसे ४ तक।

३२–ओयलम सीनेमोमई-या-आयल ऑफ सिनामन (दालचीनीका तेल)

दर्दनाशक, वाहर मर्दन करनेसे गर्म नशोंको तेज करने वाला दस्तोंको बंद करनेके वास्ते और कामशक्ति बढानेके वास्ते नामर्द को खिलाते हैं–स्त्री संगमें आनन्द प्राप्त होनेके वास्ते इन्द्रिय पर लगातेहैं तो वडा मजा आताहै।मात्रा १बूंदसे ५तक शक्करके साथ।

३३–ओलियम् कोपेवा (रोगन वलसां)

कुरा, सोजाक, मूत्रकृच्छ्र, गांठिया,स्त्रियोंका रक्तप्रदर स्त्रियों-का प्रमेह इन सबोंको दूर करता है । मात्रा २० बूंदसे ३० तक शर्वत के साथ ।

३४–ओलियम् किरोटन (जमालगोटे का तेल)

तेज रेचन बन्धबडजाना, बायगोला, जलंधर, सत्ता, वावला पन, जाड़ीबंदहोना,गांठियावाय, जावडेका दर्द, पित्तज्वरमें देने से फायदा होता है, और इन्द्रिय पर इसका तिला मलने से नामर्द मर्द होजाता है मात्रा १ बूंदसे ४ तक शक्कर के साथ ।

३५–ओलियम क्यूवेव (शीतलमिर्च का तेल)

इसको स्त्रियोंके प्रमेह, सोजाक, मसानेकी सोजिश, ववासीर और खांसीमें देनेसे बडा फायदा होताहै। मात्रा ५ बूंदसे २० -तक मिक्चर।

३६–ओलियम् सिलास्टरम न्यूटेन्स (मालकांगनी का तेल)

वुद्धि, स्मृति को वढाता है। जलंधर का नाश करताहै । मात्रा १ बूंदसे ५ तक।

३७--ओलियम् यूकेलिपटस (वीलू गमट्री)

फायदेमें कोनैन के बराबर है, जाडेका बुखार, सोजन, तिल्ली को दूर करता है।खांसी,तपेदिक,मसानेका शोथ और सोजाकमें पांच पांच बून्द देनेसे आराम होता है, जखम को भरताहै मात्रा ५ से १० बून्दतक ।

३८--ओलियम् जूनीपर (रोगन-अर)

जलंधर, प्रमेह, मसानेकी सूजन, सूजाक, बायगोला, गीली-खुजली को मुफीद है । मात्रा २ बून्दसे ३ तक शक्कर के साथ ।

३९--ओलियम् टेरविंथ--या--आयल औफ टरपन टाइन(तारपीनका तेल)

पेशाब लानेवाला, पसीना लानेवाला, जुलाब करनेवाला, पेटके केंचवे मारनेवाला, इसको काष्टोयल के साथ रेचन के वास्ते देते है।मूत्रकी जलन,मूत्रका कम होना,गुरदेकी बीमारी, प्रसूतके आदिमें और पेटके आफरेको मुफीद है।जलंधरमें पेशाब अधिक लगानेके वास्ते दर्दपट्टा,मृगी और भीतरका रुधिर रोकने के वास्ते दिया जाताहै । सोजाक की मवादको बन्द करताहै।प्रमेह को मुफीदहै। दर्दके ऊपर बाहेर मला जाताहै।मात्रा १०बून्दसे३०तक रेचन के वास्ते २ ड्राममें ६ तक और फलालैन को गर्मपानी के साथ निचोड कर इसमें तर करै और सोजिश या दर्द की जगह पर धरै तो आराम हो जाताहै कफको भी दूर करता है । खांसी जलंधर जो जिगरकी खराबीसे हो,रुधिरकी वमन में इसकी भाफ इस तरह लगाते है कि चीनीकी रकाबी में गर्म पानी भर कर थोड़ा थोड़ा ताडपीन डालनेसे इसकी भाफ बीमारके शरीरमें लगती है ।

—

४०—ओलियम् लायमोनिस्--या--आयल--औफ लिमन(नींबूका तेल)

वडा सुगंधित, पाचन, सुस्वाद है वायु,रीह,वमन को रोकने-वाला है । दिलको कूवत्त देता है और दवाइयों को स्वादिष्ठ करने वाला है मात्रा १ वून्दसे ५ वून्द तक ।

४१--ओलियम् लाईनाई ।

जब कोई अंग जलजावे तो उसपर लगाने से आराम हो-जाताहै परीक्षा किया हुवा है।

४२--ओलियम् मिंथीपाईप्रेटी--या--आयल औफ पेपरमेन्ट
(पीपरमेन्टका तेल)

रीह को दफै करता है । पेटका आफरा पेटका दर्द, उलटीको रोकता है, हाजिमहै, विपूचिकाको दूर करताहै, मात्रा १से५वून्द तक शक्कर या पानी के साथ ।

४३--ओलियम् मार्रुई ।

इसको तोला भर नित्य खानेसे आदमी के शरीर में मांस वढताहै,त्वचा वढतीहै।स्त्री धर्म्म खुलकर आता है कंठमाला गां-ठिया वायु के अत्यंत परीक्षा किया हुवा है।शिरमें पुरुपार्थ वढाने और तपेदिक के वास्ते भी अनुभव करा है लालशर्वत हाई पोफा-स्फेट औफलायम के साथ पीना चाहिये छः माशे भोजन करनेके उपरांत पीवे और मात्रा इसकी वढाताजावे--तिल्ली औरकवलवायु तथा वमन के वास्ते भी उत्तम है।मात्रा५ से १५ वून्द तक ।

४४--आयल पाईमेन्टी--या--पिमडिव ।

इसको जुलाबकी दवाके साथ पीतेहैं और कीडेसे खाई हुई डा-ढके दर्दको बंद करने के वास्ते लगाते है मात्रा १ से ५ बूंद तक ।

४५—ओयल ओलीवी--या आयल औफ ओल्यो (जैतून का तेल)

प्लाष्टर आदिमें लगाना या मर्दन,तर करनेवाला, दस्तावर,मालिश करनेसे कामशक्ति को बढानेवाला है। मरहमों में डालते है--मात्रा १ से ८ ड्राम तक।

४६--ओलियम् माईरिसटीके--या--आयल औफ निटयास।
(जायफल का तेल)

पाचन सुगंधित है, वायु, खांसी, श्वास, तिल्ली, जलंधर, लकवा जिगरके शोथ को खोता है। मेदेको वलवान करता है। वीर्य को स्तंभन करता है। मात्रा २ से ५ बूंद तक।

४७--ओलियम् मेसिस वा मेसीडिस (जावित्री का तेल)

कफको दूर करता है,वीर्यको बढाता है,मेदेको बलवान करता है, पाचकशक्ति का रखनेवाला, मूत्रकृच्छ्र, सोतेहुये का मूत्र निकल जाना, रक्तातिसार, आधासीसी, मृगी और स्त्रियों के दर्द कमर को मुफीद है। मात्रा २से ५ बूंद तक।

४८--ओलियम् मेटिको।

भीतरसे रुधिरके आनेको रोकता है। रक्तप्रमेह,रक्तकी वमन, मेदेके किसीरग का मुख खुलजाने के कारण जो कफमें रुधिर आत हो, नकसीर और जोंक के काटने से जो रुधिर आता हो, इन सबको बन्द करता है।डाढ उखाडने के पीछे जो रुधिर जारी होता है उस्को भी रोकता है,निर्बलता के दस्तोंको रोकता है,सोजाक और स्त्रियोके प्रमेह को बन्द करदेता है।मात्रा५से१०बूंद तक।

४९--ओलियम् मुर वा बोल।

विना समयके स्त्रीधर्म्म होना,या स्त्रीधर्म्म नहीं होना, मुखसे खट्टे पानी का जाना, खांसी, सिल, वूढेका श्वास, दांतोंका दर्द

और गलेके जखमों को अच्छा करता है,मूत्रदोष को दूर करता है। मात्रा १ से ५ बूंद तक ।

५०—ओलियम् आरीमेनी वा मारजोरम (मरवे का तेल)

इसको आँवँके दस्तों में देते है।यह पुरुषार्थ करनेवाला, पसीनालानेवाला और स्त्रीधर्म्म जारी करनेवालाहै।मात्रा५से १०बूंदतक

५१--ओलियम् पिट्रोसीलीनी वा पारसिले वा अजमोद इसको पीपल भी कहतेहैं (अजमोद का तेल)

इसको शीतज्वर,तार्तीयिक,चातुर्थिक ज्वरादि में देते हैं और आधाशीशी तपेदिक में जो रातको पसीना आता है उसको रोकन के वास्ते स्त्रीधर्म न होना या विनासमयके स्त्रीधर्म्म होना, इन सबोंको फायदा होता है।मात्रा ८से १५बूंद तक शर्बत के साथ ।

५२--ओलियम् पीसिस ।

बवासीर, कुष्ठ, त्वचारोग, मूत्ररोग में देने से फायदा होता है खांसी और तपेदिक को मुफीद है। गांठिया के दर्दोंपर लगाते है। मात्रा २० से ३० बूंद तक ।

५३—ओलिय–पाईपिस (कालीमिर्च का तेल)

इसको सोज़ाक, तृतीयज्वर, चातुर्थिकज्वर, महादद्रु में लगाने से फायदा होताहै और भीतरी बवासीरको आराम कर देता है । मात्रा २ से १० बूंद तक ।

५४--ओलियम् पाईमेन्टो (आल का तेल)

इस्को पुराने दस्तों में देनेसे फायदा होता है । मात्रा १ बूंद से ५ तक ।

५५--ओलियम् पाईनीसाइलवेसट्रिस(चपायनलीफ का तेल अर्थात् अनन्नास के पत्तोंका तेल)

इसको किरानीलाकरनजाईटिस और कन्जजशचन औफ दी लारिंक्स में देते हैं और बुखारों में सुँघाते हैं।

५६ ओलियम् रूटे ।

इसको बायगोला, बच्चोंकी मृगी, स्त्रीधर्म्मके न होनेमें देतेहैं, मात्रा २ से ५ बूंद तक ।

५७—ओलयम् रीसीनी वा काष्ट्रोयल (अरंडी का तेल)

इसको अजीर्ण, कुलंज, बायगोला, मेदेका जखम, सूखापेटका दर्द, तपेदिकके दस्त, बदहजमीके दस्त, नित्याजीर्ण, कब्जी, चार पाई के लगने से कमरके जखम, खराब गरमी का बुखार, आंतों की जलन, मरोडा, आंवके दस्त बंद करनेको इसका जुलाब निःसंदेह देना चाहिये । मात्रा ¼ से १ औन्स तक।

५८—ओलियम् रोजमेरी ।

इसको बायगोला, दर्दपट्टा, उन्माद, बालोंका गिरना, जोफमेदा और बिनासमयके स्त्रीधर्म्म होनेमें देते हैं । मात्रा २ से ५ बून्द तक।

५९—ओलियमूसेवन वा सेवाईना ।

जब स्त्रीधर्म्म होना बंद होजावे या बिनासमयके हुवा करै तो इसको देनेसे स्त्रीधर्म्म होनेलगता है । यह मानिन्द इर्गोटके बच्चेदानी को हिलाता है । इसवास्ते गर्भवती स्त्रीको नहीं देना चाहिये क्योंकि इस्से गर्भ गिर जाता है । जमालँगोटेके माफिक इसके देनेसे दस्त और वमन होने लगती है। मात्रा २ से ६ बूंद तक।

६०—ओलियम् सेनटीली या सैन्टिल आयल (सफेद चन्दन का तेल)

इसको सोजाकमें ३० से ४० बूंद तक दिनमें ३ मर्तबे जिसमें ३ हिस्से इसप्रिट मिलीहो और दालचीनी का तेल भी मिलाहो देना चाहिये और कोपेवा के साथ मिलाकर पुराने कुरह को बहुत मुफीद है। मात्रा १५ से २० बूंद तक ।

६१–ओलियम् सासाफिरास ।

बल बढानेवाला, रुधिरको साफ करनेवाला, पसीना लानेवाला है इसवास्ते जो उपदंश के कारण शरीर पर फोड़े फुनसी होवें तो देतेहैं । मुखरोग, त्वचारोग, पुरानी गांठिया में इसको अनंतमूल अर्थात् उसबेके साथ देते हैं । मात्रा २ से ५ बूंद तक ।

६२–ओलियम् सिनेपिस या आयल ऑफ मास्टर्ड–(राईका तेल)

बाहर लगाने से उपाड करने वाला तेज, बडाहाजिम अर्थात् पाचक, पेट और सिरके दर्दको फायदा करताहै । खांसी फेफरेका दर्द, छातीका दर्द इसके लगाने से जाता रहता है, राशा, मृगी, सकते मेंभी काम आता है ।

६३–ओलियम् सक्सीनी (अम्बर का तेल)

इसको पुरानी गांठियांमें जोड़ोंपर और बच्चोंके श्वासमें छाती पर मलते हैं ।

६४–ओलियम् स्मभ्यूक्स ।

जलंधर जो जिगरके कारण से होवे तो इसको बतौर जुलाबके देते हैं । मात्रा २ से ५ बूंदतक ।

६५–ओलियम् लम्बीकोरम् अर्थात् वारम आयल (केचवे का तेल)

इसको सुस्ती और नामर्दी में इन्द्रियके ऊपर मलते हैं ।

६६–ओलियम् पाईरीथ्री (अकलकरे का तेल)

सुस्ती और नामर्दी के वास्ते इसको इन्द्रिय पर मलना परीक्षा किया हुवा हैं ।

६७–ओलियम् वर्गमोट या ओलियम् लीमोनस ।

इसको मरहमों और मालिश के तेलों में डाला करते हैं ।

६८—ओलियम् लीमोनग्रास ।

आफरा, हैजा, वमन को अच्छा करता है। गांठिया और पट्ठेके ददों में इसको बाहर मलते हैं। कुचलेहुये और मोचपर भी मला जाता है।

६९—ओलियम् कोरीयान्डर (धनियेका तेल)

पाचन और सुस्वादु है इसको सोजाक में देने से पेशाब की जलन फौरन् आराम होजाती है। रीह और पेचिशके बंद करनेको भी देते हैं। मात्रा १ से ५ बूंद तक।

७०—ओलियम् केलेडोर (इतर केवड़ा)

इसको उन्माद और दर्दसर में देनेसे बड़ामुफीदहै।

७१—ओलियम् कार्डेम्—(छोटीइलायची का तेल)

हैजेमें, मसानेकी पथरीमें दिया जाताहै। पित्तको दूर करताहै। मूत्ररोग, सुजाक इत्यादिक को दूर करता है। आंखके चारोंतरफ लगाने से नजले का पानी निकलता है।

७२—ओलियम् चालमोग्रा ।

मदसमें होता है, कंठमाला, कोढ, गांठियां, उपदंश, तपेदिक, क्षयी, त्वचारोग, इन्होंमें खिलाते और ऊपरभी मलते हैं। मात्रा ५ से १५ बूंद तक।

७३—ओलियम् गर्जन (गर्जन का तेल)

इसको सोजाक में मिस्ल कोपेयाके देते हैं, और चूनेके पानी में मिलाकर कोढ़ी के शरीर पर मलने से बड़ा फायदा होताहै— सोजाकके वास्ते अत्यंत उत्तम दवा है। मात्रा ३० ग्रेनसे १ ड्राम तक बताशा या दूध में।

७४—ओलियम् कोडीनम् (कोडीने का तेल)

इसको घोडे के, जखमोंपर, भेडों की खुजली पर, आदमियोंके त्वचा रोगमें लगातेहैं।

७५–ओलियम् हार्टसहार्न (बारहसिंघे का तेल)

इसको पसीना लाने के वास्ते, आँतोंके कीडे मारने के वास्ते, स्त्रीधर्म्म में, अकडवाई में देते हैं और हरकिस्म के दर्दों पर बाहर मलते हैं। मात्रा ५ से १० बूंद तक।

७६–ओलियम् एली (ल्हसन क तेल)

इसको राशे और गांठिया दर्द पर बाहर मलते हैं। बहरे आदमी के कानों में डालते हैं।

७७–ओलियम् केपसीसाय (लालमिर्च का तेल)

हैजेको और जिसजगह का पानी लगता हो उसको मुफीद है। मात्रा १ से ५ बूंद तक।

७८–ओलियम् सीरीवेक्स (मांमें का तेल)

इसको पेशाब लानेके वास्ते देते हैं। मात्रा २ से ४ बूंद तक।

७९–ओलियम् वक्सी ।

इसको सोजाक में देते हैं, दांतों के दर्द को फायदा करता है मात्रा ४ से ५ बूंद तक।

८०–ओलियम् चार्टा (कागज का तेल)

जलेहुये को, दंत के दर्द को, त्वचारोग को, आंखके दुखने को, फायदा करता है।

८१–ओलियम् कालोसिन्थ (इन्द्रायण का तेल)

गांठिया और पट्ठेके दर्दों पर मलते हैं।

८२–ओलियम् क्यूकरबीठा (रोगनकद्दू)

बवासीर को बड़ा फायदा करता है।

८३–ओलियम् इारगोटा ।

खूनको बंद करने के वास्ते २० से ५० बूंद तक और दस्तोंके बंद करने के वास्ते १० बूंद २ घंटे में देना चाहिये और गांठिया तथा दांतके दर्द पर बाहर लगाते हैं।

८४–ओलियम् फिलिस्मारिस।

इसको पेटके कीड़े मारने के वास्ते १० से ३० बूंद तक देते हैं।

८५–ओलियम् ट्रिटीसी (गेहूँ का तेल)

इसको त्वचारोग में लगाते हैं यह बेवाइयोंको भी बंद करता है।

८६–ओलियम् सिह्नी कम्पौन्ड।

वास्ते नजले और खांसी के मुफीद है।

८७–ओलियम् केलीडोर (केवडे का तेल)

ठंढाहै इसको उन्माद बावलापना और सिरके दर्द में देते हैं। लूह के मारे हुये को फायदा करता है।

८८-ओलियम् सक्सीनी ऑक्साइडेटम आर्टीफीशीयल मुश्क(नकलीमुश्क)

इसका फायदा दफैदर्द एन्डीइसपासमोडिक और नरधायन मात्रा ५ से १० ग्रीन बच्चोंको ½ से १ ग्रीन।

अब एक्सट्रेक्ट अर्थात् सत्त्व कहे जाते हैं।

८९–एक्सट्राक्ट अजू (अजवायन का जौहर सूखा)

इसको पेट के दर्द में दस्त साफ लाने के वास्ते देते हैं। बायगोला,लकवा,राशा, कानका दर्द,छातीका दर्द भी दूर करता है। भोजन को पचाता है। कामशक्ति को बढ़ाता है।मात्रा १से२ग्रेन तक

९०–एक्सट्रक्ट पीपरमैन्ट (पीपरमैन्ट पोदीने का सत्तसूखा)

बायगोला, मितली, वमन, दर्दपेट, हैजा, प्यास, हुचकी, बच्चोंकी मृगी को दूर करता है। स्त्रीसंग के पहले स्त्रीको देने से गर्भ नहीं ठहरने देता। मात्रा १ से ५ ग्रेन तक।

९१–एक्सट्रक्ट ऑफ ऐकोनाइट (मीठेतेलिये का सत्त्व)

शून्यकरता कफनाशक विष है। दर्द पट्टा, खांसी को फायदा करता है।चढेहुये बुखार को उतारताहै।दिलका परदा भारी होजाने

में, जलंधर, तपेदिक, सोजिशफेफडा, सोजिशझिल्ली और दर्द कमर को दूर करता है । मात्रा चौथाई ग्रेन से २ग्रेन तक गोलीमें ।

९२–एक्सट्राक्ट वारवेडोज एलोज (एलवे का सत्त्व)

रेचन,दस्तावर,दस्त लानेके वास्ते बच्चों के पेट पर लेप करते हैं । आदती कब्ज दूर करने को वडी उत्तम दवा है, जिस स्त्रीके रजोधर्म कमती या बिलकुल नहीं होता होवै तो जब रजोधर्म के दिन पास आवैं उस वखत फौलाद के साथ देने से स्त्रीधर्म ठीक ठीक होने लगता है । बच्चोंके चुन्मुने मारने के वास्ते गुदामें पिचकारी देते हैं । इसका जुलाब मुफीद है । मात्रा $\frac{1}{2}$ से ६ग्रीन गोलीमें देना चाहिये। इसीप्रकार सिल्वसकोत्तरी का एलवा दूसरा होता है उसकी मात्रा भी इसीप्रकार जाननी ।

९३–एक्सट्राक्ट विलाडोना (मकोय का सत्त्व)

नारकोटिक अर्थात् सुस्तकरनेवाला स्त्रीका दूध वंदकरता है विप है।थूक और पसीनेको भी रोकता है। पुतली आंखोंकी फैलाता है । मूत्र जारी करता है। सोथको दूर करता है।अत्यंत कब्जीके दूर करनेको किसी दस्तावर दवाके साथ देना चाहिये ।मसानाऔर गुरदे की पथरी, गुरदेकी बीमारी, दमा,पट्ठोंका दर्द, कमर का दर्द, कोखका दर्द, खांसी, निद्रावस्थामें मूत्रका निकलजाना, मृगी, गांठिया,स्त्रीधर्म बंदहोजाना,टायफाइसफीवरमें, ऐठनमें,गर्भाशयमें, नित्यके अजीर्णमें,मूत्रकृच्छ्र सुजाकमें, जुकाम, तिल्ली इत्यादि रोगोंको फायदा करता है मात्रा $\frac{1}{3}$ हिस्सेसे१ ग्रीन तक गोली ।

९४–ऐक्सट्राक्ट केनेविस (चर्स का सत्त्व वा गांजेका सत्त्व)

यह कास श्वास,अकडवाय को फायदा करता है ।बावलेकुत्तेके विपको नहीं चढने देता । गांठिया, शराबियोंकासन्निपात,सोजाक

और कमलबायुमें देनेसे फायदा होता है । मात्रा ¼ हिस्सेसे १ ग्रीन तक ।

९५--एक्सट्राक्ट कन्थारिडिस (तैलनीमक्खीका पतला सत्त्व)

इसका तिला नामर्दीके दूरकरनेको इन्द्रिय पर मलाजाता है। छातीके दर्दमें बाहर मलाजाताहै ।जोडोंके दर्दमें और जो चोटके कारण रुधिर इकट्ठा होजाताहै तो उसपरभी लगाते हैं।सोजाककी पीब बन्द करनेको देते हैं । दीमागकी बीमारियोंमें भी मुफ़ीद है । बालोंको पैदा करता है और बढाताहै।इसका फोहा कनपटियोंपर रखना आंख दुखती हुईको फायदा करता है और कानके पीछे लगानेसे बहरेपनको, बहतेहुये कान वा दर्दको दूरकरता है, नामर्दीके दूर करनेको इसकी पट्टीसे उपाड़ करते हैं।परदे और दिलकी सूजन पर मुफीद है । मात्रा५से१०बूंद तक ।वीर्यप्रमेहके रोकनेको इस दवाकी परीक्षा करीगईहै, वीर्यको पत्थरके माफिक करदेती है।

९६--एक्सट्राक्ट औफ़ बेल लिकोइड (बेलका पतला सत्व)

ग्राहीक़ाबिज--दस्तों और आमातिसार मरोडेको फौरन बन्द करता है । मात्रा १ से २ ड्राम तक ।

९७--एक्सट्राक्टचिरायता (चिरायतेका सत्व)

भूख लगाताहै, जाड़के बुखारको दूर करता है । मात्रा १ से२ ड्राम तक ।

९८--एक्सट्राक्ट कोल्ची साय या काल्चिकम् (सुरंजान मीठेका सत्व)

वायुहर्ता, खरास पैदा कर्त्ता, विष । इसको पुरानी गांठियाके दर्द और सूजनके दूर करनेको अक्सीरहै । सोजाकको भी मुफीद है । जलंधर, ववासीर और खांसीको फायदा करता है । जठराग्नि को बढाता है । मल और मूत्रको जारी करता है । मात्रा ½ हिस्से से २ ग्रेन तक मिकचर ।

९९–एक्सट्राक्ट कालोसिन्थ (इन्द्रायनका सत्त्व)

रेचन करता, मूत्रल और आदती कब्जीको दूरकरताहै, बावलापना अत्यन्तशूल, जलंधर और उपदंशको अत्यन्त मुफीद है, मात्रा ३ से १० ग्रेन तक ।

१००–एक्सट्राक्ट कोनायम् ।

इसका असर दिलपर होता है । खांसी, उन्माद, अकड वायु, बच्चोंकी मृगी, तपेदिक, गांठिया, वायु, आसकत, घेंघा, दर्द छाती को मुफीदहै । मात्रा २ से ६ ग्रेन तक ।

१०१–एक्सट्राक्ट डीजीरेलिस ।

यह मुकव्वी दिल है, पेशाब लाताहै,जलंधर, खांसी हौलदिली अथवा ज्यादा दिलके धडकनेमें मुफीदहै । दिलके धडकनेको फौरन् रोकता है जोभीतरसे खून आता हो तो यह बंद करदेता है । मात्रा $\frac{१}{३}$ हिस्सेसे $\frac{१}{३०}$ ग्रेनके हिस्से तक ।

१०२–एकसट्राक्टल्यूपूलाय ।

मुकव्वी हाजिम,जब भूख बंदहोजातीहै तब इसके इस्तेमाल करनेसे कब्जी दूरहोकर भूख लगने लगती है । निद्रानाशमें निद्रा आनेके वास्ते देतेहैं । स्त्रीधर्म को भी जारी करदेता है,तपेदिकमें भी देते हैं । मात्रा २ से ५ ग्रीन तक ।

१०३–एक्सट्राक्टइर्गट ।

नीचेके धडमें लकवा होजानेको फायदा करताहै, इन्द्रियजुलाब है, सोजाकमें भी देते हैं, खूनके बहने को रोकताहै, दस्तोंके रोकने को मुफीदहै,कष्टित स्त्रीके खलास करनेको बडी उत्तम दवाहै, सोम रोग अर्थात् योनिसे पानी बहनेको रोकता है, जवान स्त्रीका रजो धर्म्म बंद होगया हो तो खोलदेताहै, पेचिश और दस्तोंको रोकता है, नकसीर कोभी रोक देताहै, पुराना सोजाक और उन्मादको भी दूर करता है । मात्रा १० से ३० बूंदतक ।

१०४—एक्सट्राक्ट जिनशियन (सत्व जंतयाना अर्थात् पाषाण भेद)

बृंहण—बलदायक, जब बडी बीमारीसे बीमार कमजोर होजाता है तब उसको ताकत बढानेके वास्ते देते हैं और नाताकती मेदेके सबबसे जब बदहजमी होजातीहै उस वखत इस दवाको खिलातेहैं पुरानी गांठिया और आंतोंके कीडे मारनेको मुफीद है। मात्रा २ से १० ग्रीन तक।

१०५—एक्सट्राक्ट हायोसीयामी (खुरासानीअजवायन का सत्व)

मसानेकी जलन, दमा और जब पेशाव थोडा थोडा मसानेसे जलनके साथ आताहो तो इसके देनेसे पूरा फायदा होताहै। सोजाक कोभी मुफीदहै। बुखार और खांसीको बहुत उम्दा दवा है। ज़ुकाम और तपेदिकको मुफीदहै। मात्रा ३ से ६ ग्रीन तक।

१०६—एक्सट्राक्ट नक्सवोमिका (कुचलेका सत्व)

इसको बदहज़मी, क़ब्ज, लकवा और किसी बड़ी बीमारीके कारण जब बीमार बहुत कमजोर होजाताहै तो ताकत लानेके वास्ते देते हैं। गांठियाका बुखार, बायगोला, दस्त और पेचिश वायुका दर्द, गर्भवतीकी वमन, विषूचिका, चेहरेके आधे लकवेमें, दमा और मृगी में देते हैं और यह दवा कांच निकलनेकोभी बंद करदेतीहै, नामर्दीके दूरकरने को तो यह परमौषधिहै। कामशक्तिको बढातीहै, मात्रा $\frac{१}{३२}$ हिस्से $\frac{१}{१२}$ ग्रेन तक।

१०७—एक्सट्राक्ट ओपियम् (अफीमका सत्व)

ग्राही, काबिज,सिडेटिभ तथा नारकोटिक स्तंभन करता है। सिवाय त्वचा और स्तनोके तमाम बदनकी रतूवतोंको रोकनेवाला है। इसको जाडेके बुखारोंमेंभी देते हैं। माताके निकलनेमें देते हैं। उन्माद, मृगी, अकडवायु, रिंगनवायु, पट्ठेका दर्द,छातीका दर्द, पसलीका दर्द, तपेदिक, श्वास,कास, जलंधर,उलटी,

वीर्यप्रमेह, अतीसार, पेचिश, सोजाक, पथरी और गुरदे वा मसानेके रेतको दूर करता है स्त्रीधर्म्मका तकलीफसे होना, गर्भपात-होना, बवासीर अंदरूनी और भीतरसे रुधिर पडनेमें, कान नाक और गलेके रोगोंमें उपदंश और अंडकोशके बढनेमें, पुरानी गठिया और सिरके दर्दमें दियाजाता है । मंदाग्निको दूर करता है । दूध और पसीनेको बढाता है। दर्दकमर और जब सूखीखांसी बारबार उठतीहो तो उसको रोकता है। दर्द गुर्दा और दर्दमसानाके वास्ते मुफीद है । मात्रा ⅓ हिस्सेसे १ ग्रीन तक तथा एक्सट्राक्ट ओपियम् लिकोइड (अर्थात् अफीम का पतला सत्त्व) इसकी मात्रा १० से २० बूंद तक है और इस्में उपरोक्त सम्पूर्णगुणजानना चाहिये इससे मसाने और गुरदेकी पथरी बाहर निकल आती है।

१०८—एक्सट्राक्ट बायविडंग (वायविडंगका सत्त्व)

सूजनोंके विठानेको, बच्चोंकी मृगी और मुखकी राल रोकनेको दिया करते हैं। जोडोंके दर्दपर मलनेसे फायदा होता है । प्रसूता को इसका पानी पकायाहुवा पिलानेसे फायदा होता है ।

१०९—एक्सट्राक्ट बावची (बावचीका सत्त्व)

इसको कुष्ठ और सफेददागोंके होजानेमें देतेहैं, रुधिरको साफकरता है। केंचवोंको मारकर बाहर निकालदेताहै। मात्रा२से१५ ग्रीन तक।

११०—एक्सट्राक्ट कुवाशिया ।

जाडेका बुखार, मंदाग्नि, ज्वरके पीछेकी निर्बलता और मेदे की कमजोरी में देते हैं । मात्रा ३ से ५ ग्रेन तक ।

१११—एक्सट्राक्ट रीयाई कम्पौन्ड—या—
एक्सट्राक्ट रूबर्ब (रेवंदचीनीका सत्त्व)

मृदु रेचन अनुलोमन, इसको जुल्लावके तौरपर बच्चोंको देनेसे बड़ा फायदा होता है । बदहजमी, कब्ज, वायगोला, आफरा,

मुखरोग, जलंधर, और बच्चोंके हैजेको उत्तम दवा है और पारेके कुश्ते अर्थात् भस्मी में मिलाकर जब बच्चोंको देते हैं तो मेदेको ताकत देता है और हाज़माभी दुरुस्त होजाता है। मात्रा ५ से १५ ग्रीन तक।

११२–एक्सट्राक्ट सेवाईना।

इसको पुरानी गांठियामें देतेहैं। पेटके कीडोंको मार डालताहै इसका अर्क खुजलीको मुफीद है। तैल मरहममें काम आताहै।स्त्री-धर्म्मको जारी करदेता है।गर्भवतीस्त्रीको इसका देना मनाहै क्योंकि इससे फौरन् गर्भ गिरजाता है। मात्रा २ से ५ ग्रेन तक।

११३–एक्सट्राक्ट सारसापरेलालिक्वोइड।

(उसबा अर्थात् अनन्तमूल का पतलासत्त्व)

रक्तशोधक बलरूपदायक,उपदंश,त्वचाकी बीमारी,कण्ठमाला सडेहुयेज़खम, उपदंशके चकत्ते, इन्होंको दूर करता है।उपदंशका ज़हर जब रुधिरमें प्रवेश करजाता है तब इसीकारण से उपदंशको आराम नहीं होनेदेता,जब मौसम वर्षात या जाडा आताहै उस बखत तकलीफ देनेसे १०० वर्षतक पीछा नहीं छोडता। कभीतो इंद्रियपर ज़खम, कभी शरीरपर फोडे फुनसी वा खुजली होती है। उसको दूरकरनेकेवास्ते इससे बढकर दवा दुनियाँभरमें नहीं है। इसमें हायड्रोपोटास मिलानेसे अत्यन्त उत्तम बनजाता है सिवाय उपदंशके इतने रोगोंको औरभी दूरकरता है गांठिया, कमजोरी,मंदाग्नि,बद,अर्श गुदा और नासिकाके रोग,पुराना भगन्दर फेफडेकी बीमारी,दद्रु,वन्ध्यापना,जलंधर,मसूढेकेरोग,शीतज्वर, जिगरके रोग, गलेका घाव,मुख और नाकके जखम जोडों का सोथ, कानकी फुन्सी, नेत्रसोथ, फोडा, कासश्वास, मृगी वगैरह को आराम करता है। बहरेको श्रवणशक्ति देता है मात्रा $\frac{?}{8}$ हिस्सेसे १ औंस तक।

११४--एक्सट्राक्ट ऑफ इस्ट्रीमोनियम् (धतूरेका सत्त्व)

बेहोशी करता, कफश्वासनाशक और विषहै । इसकी गोलियां दमेके मरज़को बिलकुल खोदेती हैं ।अगर आदमी पथ्यसे रहै तो फिर दमा नहीं होता । पट्ठेका दर्द;गांठिया, रींगन वायु, आंखका दर्द जखम, बवासीर, मृगी को दूर करता है मात्रा ¼ हिस्सेसे आधे ग्रेन तक गोलियां मिकचरमें ।

११५–एक्सट्राक्ट टेरेक्सीसारय।

असर इसका मानिन्द अनंतमूलकेहै । पित्तकी वृद्धिको कम करताहै। जलंधर, उपदंश,त्वचाके रोगोंको दूरकरताहै।स्त्रीधर्म्मको खूब साफलाताहै । जिगरके रोगोंको तो अक्सीर है।जब हाथ पैर मुखपर शोथ या कवलवायु होजावै उसवखत इसदवाके माफिक कोई दवा काम नहीं करती और यह मूत्रकोभी साफ लानेवालीहै मात्रा ३ से ५ ग्रीन तक ।

११६--एक्सट्राक्ट सम्बुल ।

इसको दमा, वायगोला,मृगी, बुखार, पेचिस,अतिसार,हैज़ा, खट्टीडकार, स्त्रीधर्मका कमतीहोना,इत्यादि रोगोंमें देनेसे फायदा होताहै । मात्रा १० से २० बूंद तक ।

११७--एक्सट्राक्ट यूकेलिपटिस ।

इसके तेलको कोनैनके माफिक शीतज्वरमें देतेहैं । दमा, खांसी को दूरकरताहै । दस्तोंको रोकताहै। पेटके कीडोंको मारनेवालाहै मात्रा १ से ३० बूंद तक ।

११८--एक्सट्राक्ट गुवाराना ।

पट्ठोंका दर्द, अतिसार, और पेचिशको दूर करताहै। दिलके [illegible]को बढाता है । मात्रा १० से ३० बूंद तक ।

११९–एक्सट्राक्ट हिमेमिलिस ।

इसको रुधिरके जारी होनेमें देनेसे बंद होजाताहै । जैसे बवासीर, आम रक्तातिसार, फेफडे और मेदेका खून थूकके साथ आताहो या रुधिरकी वमन होतीहो तो इसको देनेसे बंद होजाता है और हमल गिरजानेके पीछे इसको इस्तेमाल करतेहैं । सोजाकमें इसकी पिचकारी लगातेहैं । मात्रा १० से ३० बूंद तक ।

१२०–एक्सट्राक्ट बोल्डो ।

यह मुकव्वीमेदा और जिगरको बलवान करनेवालाहै । इसको जोफ मेदामें देतेहैं । मात्रा १० से ३० बूंद तक ।

१२१–एक्सट्राक्ट वीलीरयन (सत्त्व बालछड)

इसको वायगोला, मृगी, खांसी, अजीर्ण, हैजा, बुखार, दर्दपट्ठा और शराबियोंके सरशाममें देतेहैं । मात्रा २ से १५ ग्रीन तक ।

१२२–एक्सट्राक्ट एन्थीमीडिस (सत्त्व बाबूना)

इसके तेलको अजीर्ण, आमातिसार, कमजोरी, हाजमेके बिगड जानेमें देतेहैं । आफरा, वायशूल और बच्चोंकी मृगीमें फायदा करता है । मात्रा २ से १० ग्रेन तक ।

१२३–एक्सट्राक्ट कलम्बो ।

बुखार, कमजोरी, बदहजमी, गांठिया और जोफमें देते हैं, मात्रा २ से १० ग्रेन तक ।

१२४–एक्सट्राक्ट बारबेरीजलाशीयम (रसौत का सत्त्व)

बुखार, रक्तार्श निर्बलता और आंखोंके दुखनेमें काम आताहै मात्रा ३ हिस्सेसे १ ड्राम तक ।

१२५–एक्सट्राक्ट सिमीसीफ्यूजिनारिजिन ।

थोडी मात्रासे डिजाटेलिसके माफिक मुकव्वीदिल, ज्यादा मात्रा से दिलको कमजोर करनेवालाहै । मानिन्द मीठेतेलिया व

हेलीबोर व अर्गट के माफिक इसका असर बच्चेदानीपर खूब होता है । गांठिया, रींगनके दर्दको और दर्द कमरको मुफीदहै । खांसीको दूरकरताहै । मात्रा १ से ४ ग्रीन तक ।

१२६—एक्सट्राक्ट सिनकोना लिकोइड (सिनकोना का पतला सत्व)

शीतज्वर, नित्यज्वर, तृतीयक, चातुर्थिक ज्वरमें देतेहैं । तिल्ली को दूरकरताहै । ज्यादहगुण इसका कोनैनमें लिखाजायगा कारण कि इसीसे कोनैन बनतीहै । मात्रा १० से ३० बूंद तक ।

१२७—एक्सट्राक्ट कोसीपतला—अर्थात्—ऐक्सट्राक्ट कोका लिकोइड ।

इसके खानेसे होश व हवाश तेजहोजाते हैं । थकानकोभी दूर करदेता है । हारे हुये आदमीको देनेसे हार उतरजाती है । तमाम बदनमें ताकत मालूम होती है । पट्ठोंकी कमजोरीमें यह दवा दीजाती है । पट्ठोंके दर्दको मुफीद है । फायदा इसका मानिंद काफीनके है । और अफीयून की आदत छुडानेको उम्दा दवा है । मात्रा ½ से १ ड्राम तक ।

१२८—एक्सट्राक्ट फिलिक्समास पतला ।

पेटकेकीडे और कद्दूदानोंके मारनेके वास्ते इस्तेमाल करते हैं । जवान आदमी को इसकी मात्रा ३० बूंद है । और १२ घंटके पीछे एक जुलाब काष्ट्रोयल और दूधका देवे जिसमें मरे कीडे बाहर आजावें ।

१२९—एक्सट्राक्ट जलसीमीयम् ।

शिरका दर्द, पट्ठेका दर्द, नीचेके जोडोंका दर्द, तपेदिकमें जो कफके साथ रुधिर आता हो और सखतरहेममें बच्चेदानीका मुँह फैलानेके वास्ते इसको देते हैं ।

१३०—एक्सट्राक्ट जल्सीमीयम् समपीरीवीएन्स ।

इसको बुखार, गांठियां, खांसीमें देनेसे परीक्षित दवाहै। दर्दपट्ठा और चेहरेको मुफीद है । मात्रा ½ से १ ग्रेन तक ।

१३१–एक्सट्राक्ट हीमेटाक्सीलाय ।

आमरक्तातिसार पुराना,अजीर्ण मैंसिल रुधिरका पडना और बच्चोंके हैजेमें देतेहैं तो फायदा होताहै मात्रा १० से ३०ग्रेन तक।

१३२–एक्सट्राक्ट जबोरेन्डी।

यह गुरुदेकी बीमारी, कासश्वास, बच्चेदानीके रोग, उपदंश को मुफीद है। जहरोंके असरको दूर करता है। बालोंको बढाताहै। त्वचाके रोगोंको मुफीद है, इसकी पिचकारी दाँतोंके दर्द को मुफीद है। मात्रा २ से १० ग्रेन तक।

१३३–एक्सट्राक्ट किरामीरया।

इसको मंजनमें डालते हैं। गलेके आजानेमें इसकी कुरली करते हैं। कांचनिकलने और सोजाकमें भी इसकी पिचकारी लगाई जाती है। मात्रा ५ से २० ग्रेन तक।

१३४–एक्सट्राक्ट जलापी या जैलप (जुलाफेका सत्व)

कब्ज वा सोजनकी बीमारीमें सुगंधित तेलोंके साथ दिया जाताहै। जिसमें पेचिश और दर्द न होनेपावे। जलंधर और पेट-के केंचवे मारनेको क्रीम औफटारटरपोटासायसल्फ--याकैलोमेल के साथ खिलाते हैं। मात्रा ५ से ३० ग्रेन तक गोली।

१३५--एक्सट्राक्ट लकरऐ।

फायदा इसका अफीमके समानहै। जब अफीम मुवाफिक नहीं आती है तब इसको देते हैं। मात्रा ५ से १५ ग्रेन तक।

१३६–एक्सट्राक्ट केले वारबीन।

जब आंखोंको रोशनी नहीं सहारसक्ती तब इसको आंखोंमें डालते हैं। अकडवायु के प्रारंभ होतेही देते हैं। कुचलेके जौहरके जहरको मुफीदहै। मात्रा ८ से ४ ग्रेन तक।

१३७–एक्सट्राक्ट कस्केरासिगरेडा ।

भूख तेज करताहै। और मेदेको वलवान् करताहै। जिसको हमेशा कब्ज रहताहोवै उसके वास्ते वडा फायदा होताहै। इसके देनेसे एकदफे दस्त साफ होजाता है।कितनेहीदिनोंसे कब्ज क्यों न रहताहो परंतु यह दवा उसको दूर करदेती है। मात्रा ½ से१ड्राम तक ।

१३८–एक्सट्राक्ट टाईनासपोरा (गिलोय का सत्व)

इसको नित्यज्वर और शीतज्वर अजीर्ण और निर्बलतामें मादनी तेजाबोंके साथ देनेसे फायदा होताहै।मात्रा५से१०ग्रेनतक।

१३९--एक्सट्राक्ट सालममिसरी–(सालममिश्रीका जौहर)

इसको ताकत लानेके वास्ते देतेहैं। धातुको खूब पुष्ट करता है, परीक्षा कियाहुवा है। मात्रा २ मासे आधासेर दूधमें पकाकर खिलावै।

१४०–एक्सट्राक्ट इवीनिंगपिरायमरोज ।

इसको निकास जिल्दी और दादमें बहुत इस्तेमाल करते हैं। दमा और खांसीमें भी मुफीद है।

१४१–एक्सट्राक्ट एवा या कैव ।

इसको सोजाकमें देनेसे तुर्त फायदा होताहै।

१४२–एक्सट्राक्ट विलैकहा ।

यह गर्भ गिरते हुयेको रोकताहै। बच्चेको अपनी जगहपर कायमरखताहै। गर्भपात चाहे किसीकारणसे क्योंनहो,रोकदेताहै।

१४३–एक्सट्राक्ट वालसीमीना।

इसको जलंधरकी बीमारीमें देनेसे फायदा होताहै।

१४४-एक्सट्राक्ट केलेनडयूला ।

इसको कंपवायु, कंठमाला, बवासीरमें देनेसे फायदा होताहै। मात्रा अर्क की ४ से ६ बूंद तक ।

१४५—एक्सट्राक्ट चीनीपोडी ।

इसको उस स्त्रीके वास्ते जो अच्छी तरह खुलकर स्त्रीधर्मसे नहीं होती देनेसे ठीक होने लगती है । मात्रा ४ से १६ ग्रेन तक ।

१४६—एक्सट्राक्ट मोनेसीयाबार्क ।

इसको खूनथूकने और आमरक्तातिसारमें देनेसे फायदा होताहै । मात्रा ४ से ८ ग्रेन तक ।

१४७—एक्सट्राक्ट नारसीसी ।

इसको खांसीमें देनेसे फायदा होता है।मात्रा ½ से १ ग्रेन तक ।

१४८—एक्सट्राक्ट वेराईटेरीया ।

इसको जलंधर में देतेहैं।

१४९—एक्सट्राक्ट डाक्सीकोडीनडिरान ।

इसको मृगी में देनेसे फायदा होताहै । मात्रा १ से८ग्रेन तक।

१५०—एक्सट्राक्ट इंडियनहेंप ।

नारकोटिक वायटे नाशक चौथाई ग्रेन गोली।

१५१—एक्सट्राक्ट औफ डंडीलियम ।

अनुलोमन,मुलयैन, पित्तरेचन-५ से ३० ग्रेनतक गोली या मिकचर ।

१५२—एक्सट्राक्टएसीटिफ ।

वायुहर्ता, खरास पैदा करता विष १ ग्रेन ।

१५३—एक्सट्राक्ट लिकरस । (मुलेठीका सत्त्व)

अनुलोमन, कफहर्त्ता ५ से ३० ग्रेन गोली ।

१५४—एक्सट्राक्ट औफ हौप्स ।

बलकर्ता,नींदलाने वाला । ५ से १५ ग्रेनतक।

अव इस्प्रिट लिखेजातेहैं ।

१५५–इस्प्रिट ईथर नैट्रोसाय ।

इसको जुकाम और बुखार में पसीना लानेके वास्ते और जलंधरमें मूत्रलानेके वास्ते बुखारोंमें शर्दी पहुँचानेको १ ड्राम पेशाव लानेको २ से ३ ड्राम।और हैजेमें प्यास बुझानेके वास्ते अंगूरी सिर्केके साथ देते हैं। इस्प्रिट और ईथर वावटे ऐंठनका नाश करवालाहै ६० बूंद मिकचर ।

१५६–इस्प्रिट वायन गियालीसाय ।

इसमें आलहोहल अर्थात् नशेवाली चीज९३ हिस्से होतीहै। मुकव्वी मेदा और ताकतवरहै। ज्वरमुक्त रोगीकी निर्वलता,हैजा और दर्दको मुफीदहै।

१५७–इस्प्रिट हालेन्डी ।

इसकानाम जिनभी है। इसमें नशेकी चीज ५७ हिस्सेहै।

१५८–इस्प्रिट जेमेकीनसिस।

इसकानाम विस्की भीहै। इसमें नशेवाली चीज ५४ हिस्से है। उपरोक्त चारों इस्प्रिटोंके पीनेसे-रंग और पट्ठोंकी तहरीक होतीहै दीन व दुनियाकी चिंता दूरहोजातीहै।खुशी पैदा होतीहै। मुकव्वी मेदाहै। दर्द, आफरा, बदहज्मी, उलटीके वास्ते बडी जल्दी फायदा होताहै। खराब किस्मके बुखारोंमेंभी देतेहै।इससे १ मिकचर बनता है।

१५९–इस्प्रिट रेकटीफीकेटस ।

इसमें आलको होल नशेवाली चीज हमराह१६ दीसदीपानी के मिलाहुवा निहायत नशा करने वालाहै इसको अत्यन्त निर्बलतामें देतेहै। हैजेके वास्ते मुफीदहै। छाले और जले हुयेपर परकी कलमसे लगाते हैं। स्तनों को कठिन करनेके वास्ते भी लगाया जाताहै, गलेके रोगोंमें कुरले किये जाते हैं। गर्भवती स्त्रीके पेटपर

मलने से गर्भको गिरनेसे बचाता है। वस्ती स्थानपर लगानेसे बंद पेशाब को जारी करदेता है और शोथभी दूर होजाता है। मात्रा १ से २ ड्राम तक पानी मिलाकर, पानीमिलीहुई को इस्प्रिटटेज्यूर या पिरुफ इस्प्रिट कहतेहैं ।

१६०—इस्प्रिट पाईरोक्सीलिकम् वा मीडीशनलनफ—वा—उड इस्प्रीट ।

कफको निकालने वाला, तपेदिक, पुरानीखांसी, अकडवायु, गांठिया, अतिसार, पेचिश, बवाई, हैजेमें मुफीद है। इसको सिलकी बीमारी और जीम चलानेमें देते हैं। मात्रा १० से ३० बूंद तक दिनमें ३ दफे देवै ।

१६१—इस्प्रिट एमोनिया ऐरोमेटिक ।

रसादिकोंमें तेजीकरनेवाला, इसको खांसी और बडेभारी बुखारोंमें देते हैं। निहायत कमजोरीमें जब बीमार निढाल होजाता है । तब इसके देनेसे होशमें होजाता है। मात्रा २० से ३० बूंद तथा १ ड्राम तक मिकचर ।

१६२—इस्प्रिट एमोनिया फोइटीडस ।

इसको स्त्रियोंके वायशूल और वायगोले में देनेसे फायदा होता है बूढे आदमीको जुकाम कासश्वास होतो इसको देनेसे फौरन् आराम होता है, मात्रा १ से २ ड्राम तक ।

१६३—इस्प्रिट केजुपुटाय ।

बायशूल, बायगोला, जलंधर, पुरानी गांठिया में देनेसे फायदा होताहै। मात्रा ½ से १ ड्राम तक ।

१६४—इस्प्रिट केम्फर ।

इस्को हैजे और खासीमें देनेसे आराम होता है। मात्रा ५ से ३० बूंद तक ।

१६५–इस्प्रिट क्लोरोफारम ।

क्लोरोफारमवत् दमा, खांसी, दर्दपेट, दर्दगुर्दा, औरभी बहुतसी बीमारियोंको मुफीद है । मात्रा १० से ६० बूंद तक ।

१६६–इस्प्रिट जूनीपर ।

इसको जलंधरकी कमजोरी दूर करनेके वास्ते और पेशाव लानेके वास्ते देते हैं । मात्रा १ से २ बूंद तक ।

१६७–इस्प्रिट औफपेपरमैन्ट ।

शूलनाशक पाचक। मात्रा १ ड्राम मिकचर ।

वाइनभी रूहका नाम है,शोरासे बनतीहै,और सातदिनमें तैयार होती है । वाइनम् अवसिंथी वाइनमएलोज़, वाइनमएन्टीमोनी, वाइनम्कोल्वीचीसाप, वाइनमकालोसिंथ, वाइनमडीजीटेलिस, वाइनमफ़ी, वाइनम्एपीकेक, वाइनम् ओपियम, वाइनमपेपसीन, वाइनमकोनैन, वाइनमरियाय, यह सब वायनोंका गुण इन्हीं इन्हीं दवावोंके टिंचर या एक्सट्राक्टके बराबरहै। वाइनऔफरूवर्व मेदेको बलदायक अनुलोमन । मात्रा१से२ड्रामतकड्राफ्टमिकचर।

अब टिंचर जो रूह वनस्पति और धातुवों का बनताहै उसका स्वभाव गुण मात्रा भी उसी औषधके समान जानना।

१६८–टिंचर एकोनाइट ।

दर्दोंको मौकूफ करनेवाला, बुखार उतारनेवाला, दिलकी हरकत कम करनेवाला, बाकी फायदे सब। एक्सट्राक्ट एकोनाइटके समान है । मात्रा ५ से १० बूंद तक ।

१६९–टिंचर पोडोफीलीनरीजीना ।

वनस्पतिका पारा उपदंश और जिगरकी बीमारियोंको दूर करता है । देखो पोडाफीलीन को उम्दा अमीराना जुलाब है। मात्रा १५ बूंदसे ½ ड्राम तक ।

१७०--टिंचर एकटोरसमोसा ।

दर्दोंको खोनेवाला, पट्ठों को ताकत देनेवाला, दर्दकमर, गांठियाको मुफीद है। वहरअर्क इसका जोडोंकी सूजनपर लगाते हैं। मात्रा ½ से १ ड्राम तक।

१७१--टिंचर एलोज ।

फायदा इसका मानिंद एक्सट्राक्ट औफ एलोजके है। दायमी कब्ज और वायगोलेको तथा अफरा और अजीर्ण वगैरहको मुफीद है। तिल्ली और दर्दगुर्देको मुफीद है। मात्रा १ से २ ड्राम।

१७२--टिंचर एलोज एटमुर ।

जब स्त्री धर्म्म बंद या तकलीफसे आताहो तो इसका देना मुफीद है। बाहर रसोलियोंपर लगाते हैं। मात्रा ५ से ३० बूंद तक।

१७३--टिंचर एमोनिया ।

दर्दपट्ठा दर्दकमर को दूरकरता है, खांसी और वदहजमीको मुफीद है, मात्रा ५ से १० बून्द तक।

१७४--टिंचर आरनीकामोनटीना ।

पेशाब, पसीना और स्त्रीधर्म्मको जारीकरनेवाला। लकवा और शिरमें पानी जमा होकर वढगयाहो उसमें, खराब बुखारोंमें मुफीदहै बाहर इसको मोंच और चोट पर लगाते हैं। आतशकके जखमोंपरभी लगाते हैं। सोजाकमें पिचकारी करते है। मात्रा १ से २ ड्राम तक।

१७५--टिंचर आसाफोटीडा ।

पुरानी खांसीको मुफीदहै। पट्ठेकी बीमारी, वायगोला, आफराके दूरकरनेको देते हैं। मात्रा १ से २ ड्राम तक।

१७६--टिंचर आरेन्शीयाय।

इसको मेदेकी ताकत बढाने व भूँख लगानेको देते हैं। आफरे को दूर करताहै। मात्रा, १ से २ ड्राम तक।

१७७–टिंचर बेनजोईनीको ।

खांसी और फेफडेसे खून आनेको बंद करदेताहै । मात्रा ½ से १ ड्राम तक ।

१७८–टिंचर वेलेडोना ।

दर्दपट्टा, खांसी, लकवा, और गांठियामें देते हैं। मात्रा १ से १० बूंद तक ।

१७९–टिंचर वौल्डो ।

मेदेके पुष्ट करनेवाला, निर्बलता नाशक और जिगरकी बीमारियोंको दूरकरताहै। अजीर्णमेंभी देते हैं । मात्रा १० से २० बूंद तक ।

१८०–टिंचर ब्यूक्यू ।

पेशाबलानेवाला, पसीना निकालनेवाला, और ताकतवरहै। असर इसका मसाने औररतूवतीपरदेपर होताहै। मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, अजीर्ण, पुरानीगांठिया, जलंधर, पुरानी जलनमसानेकी सोजाक, मसाने और गुरदेके रेतको वन्दकरताहै । मात्रा १ से २ ड्राम तक ।

१८१–टिंचर कोल्मबी ।

मेहा और दीमाग को पुष्टकरनेवाला, क्षुधाको बढानेवाला इसको फौलादके साथ खिलाते हैं उस कमजोरीमें जो बादबुखार छूटजानेके होतीहै । या किसीबीमारीसे आराम होजानेके बाद जो कमजोरी रहती है सो इसके देनेसे दूरहोजाती है । कंठमाला और गांठियामें भी देतेहैं । मात्रा ½ से १ ड्राम तक ।

१८२–टिंचर केम्फर कम्पौन्ड ।

दमा, खांसी और हैजेको परीक्षा कीहुई दवाहै–इसको बच्चों के दस्तबंद करने के वास्तेभी देते हैं । मात्रा ५ से २० बूंद तक ।

१८३—टिंचर केनेविसको ।

इसको खानेसे नींदआतीहै और दर्द बन्द होजाताहै । बहुत-जोर की खांसी और अकडवायु, बावलेकुत्तेकाविष,स्वरभंग,दमा और पट्ठेके दर्दको यह दवा मुफीदहै । मात्रा ५ से २० बूंद तक ।

१८४—टिंजर केन्थारीडिस ।

इसको पुराने अर्द्धङ्ग और फालिज में तथा सोजाक, नामर्दीमें खिलाते हैं । यह बड़ी अनुभूत दवाहै । इसको छाला उपाडनेके वास्ते छाती इत्यादिकोंपर लगाया करते है । और वीर्य प्रमेह को यह दवा रोकदेतीहै । धातुके पुष्टकरनेको बहुत मुफीदहै।मात्रा५-से २० बूंद तक ।

१८५—टिंचर कोर्ड़सोम्मको ।

मेदेको पुष्ट करताहै, वायुका नाश करताहै, आफरेको उतार-ताहै कोनैन मिकचरमें सुगंधिदेने और कोनैन की गरमी दूरक-रने को मिलाते हैं । मात्रा १० से ३० बूंद ।

१८६—टिंचर केप्सीसाय ।

इस दवाको कोनैनके साथ बुखारकी बारी रोकनेको देते हैं । हैजेकी बीमारीको मुफीदहै । बदहजमीको रोकताहै दरिया या उसके किनारेपर रहनेसे जो बीमारी होती है उसको दूर करताहै और गलेके जखमोंमें इसकी कुल्ली कराते हैं ।

१८७—टिंचर कास्करीला ।

वदहजमी,दस्त,और पेचिशको दूरकरताहै और बुखार रोक-नेके वास्तेभी देतेहैं । मात्रा ½ से १ ड्राम तक ।

१८८—टिंचर केसटोरी ।

इसका गुण कस्तूरीके माफिकहै । पट्ठेकादर्द, वायगोला,और मृगीमें देनेसे फायदा होताहै । मात्रा ½ से १ ड्राम तक ।

१८९–टिंचर केटीक्यू ।

इसको दस्त और पेचिश रोकनेके वास्ते देते है। चाकमिक- चरके साथ मिलेहुयेकी मात्रा १ से २ ड्राम तक ।

१९०–टिंचर चिरायता ।

बुखार और उपदंशरोगीको देते है। मेदेको पुष्टकरताहै । मात्रा ½ से १ ड्राम तक ।

१९१–टिंचर क्लोरोफार्म ।

दमा, अकडवायु, और बायगोलेके वास्ते यह दवा अक्सीरहै। बमनरोकनेके वास्ते अकसीर का काम कर दिखातीहै । मात्रा– ½ १ से ड्राम तक ।

१९२–टिंचर सिनेसोमाय ।

कामशक्तिको बढाताहै। हाजिमहै । भूँखबढ़ाताहै । आफरा और रीहको दूरकरताहै ।मात्रा ½ से २ ड्राम तक ।

१९३–टिंचर पिपरलागम ।

पाचकशक्तिका रखनेवाला, और तिल्लीको दूरकरनेवाला, धातुको पुष्टकरता और पेशाबको लानेवालाहै । रात्र्यांध और चातुर्थिक ज्वरको दूरकरताहै । मात्रा १ से २ ड्राम तक ।

१९४–टिंचर सन्कोना ।

बल और भूँखको बढाताहै। बदहज़मी, पुराना बुखार और कमजोरीकी हालतमें देते हैं। दुबले आदमीको मोटा बनादेताहै। मात्रा ½ से १ ड्रामतक ।

१९५–टिंचर कोल्वीसाप ।

सब तरहकी गांठियाकी बीमारीको मुफीदहै। मात्रा १० से ३० बूंद तक।

१९६–टिंचर कोनायस।

इसके इस्तेमालसे कफ पतला होकर बाहर निकलजाता है और खांसी दूर होजातीहै। विशेषगुण इसका एक्सट्राक्टकोनायस में देखना चाहिये। मात्रा ½ से १ ड्राम तक।

१९७–टिंचर क्यूबेब।

यह दवा सोजाकके वास्ते मुफीदहै। मात्रा ½ से२ड्रामतक।

१९८ टिंचर कसपेरिया।

इसको खराब किस्मके बुखारोंमें देनेसे फायदा होताहै। पेचिशके वास्ते मुफीदहै। मात्रा १ से २ ड्राम तक।

१९९–टिंचर कन्वी लेरिया।

इसको पेशाब लानेके वास्ते देतेहैं। दिलको पुष्ट करता है। मानिंद डिजीटैलिसके मात्रा ½ से १ ड्राम तक।

२००–टिंचर किरीसी।

इसका टिंचर रंगतके काम आताहै। खानेसे कामशक्तिको बढाताहै। नेत्रकी ज्योतिको भी बढाताहै। होश व हवासको दुरुस्त करताहै और पेशाब लाताहै। मात्रा ५ से२० बूंद तक।

२०१–टिंचर डीजीटेलस।

यह पेशाब ज्यादह लाताहै। और नाडीकी तेजी वा चालको कम करताहै। इसीकारण दिलके धडकने और हौलदिलीमें देतेहैं। मात्रा १० से ३० बूंद तक।

२०२–टिंचर इर्गट।

मूत्ररोग, सोजाक, स्त्रीधर्मका नहोना और फेफडेसे खूनके थूकने को मुफीदहै। जब गर्भवतीको दर्द होताहै और बच्चा बाहर नहीं आता तो यह दवा उसवक्त गर्मदूधमें देनेसे बच्चा बडी जल्दी पैदा होजाता है। मात्रा ½ से १ ड्राम तक।

२०३–टिंचर फ्रीपरकलर ।

दीमाग़को ताकत देताहै । भूँखको बढाताहै।और धातुको बहुत पुष्ट करताहै । पड़ते हुये रुधिरको रोकताहै । इसवास्ते रक्तार्श और रात्रिमें ज्यादा पेशाब आनेवालेको देतेहैं तो फायदा होताहै और दस्तों कोभी बन्द करताहै । सोजाकको जडसे मिटादेताहै । मात्रा ५ से ३० बूंद तक ।

२०४–टिंचर गाला ।

अत्यंत कब्जी करनेवालाहै । इसवास्ते–जारीखूनके बन्दकरने को और अतिसार पेचिश के रोकनेको देतेहैं।यह बालोंकोभी काला करताहै,इसको मिस्सियों में भी डालतेहैं। मात्रा ½ से १ड्राम तक।

२०५–टिंचर जन्शीयन ।

इसको पुष्टाई मेदेके वास्ते देतेहैं तो भूँखको बढ़ादेताहै । मात्रा से १ ड्राम तक ।

२०६–टिंचर गुवाईसाय एमोनी एसिड ।

इसको पुरानी गांठिया और कमजोर आदमीको तथा उपदंश के कारण हड्डियोंके फूलजानेमें और स्त्रीधर्मके कष्टमें देतेहैं । मात्रा ½ से १ ड्राम तक ।

२०७–टिंचर हेलीवौरस ।

मेदा और कामशक्तिको पुष्ट करताहै।बुखार, दमा, खांसी और पित्तको मुफीदहै । मात्रा ½ से १ ड्राम तक ।

२०८–टिंचर हेलीवोरनिगरा ।

खुजली, उन्माद, कांचका निकलना, जलंधर, मृगी, स्त्रीधर्म का कमतीहोना, कुष्ठ, गांठिया और बुखार को फायदा करताहै। पतले दस्त लगाताहै। पुराना नजला और आधासीसीको मुफीद है । मात्रा ५ से १० बूंद तक ।

२०९–टिंचर हायरे सियामी।

पट्ठोंका दर्द, मसानेकीजलन, अत्यंतखांसी दूरकरनेके वास्ते उम्दा चीजहै। मात्रा ½ से १ ड्राम तक।

२१०–टिंचर आयोडीन।

जिगरका सोथ, तिल्ली, उपदंशका सोथ और गिलटी, दूर करनेके वास्ते बाहर लगातेहैं, और बहुत थोडी मात्रासे खिलातेहैं। मात्रा ५ से२० बूंद तक। रुधिरको साफकरनेवाला,जहरके असरको दूर करनेवाला, जलंधर और रतूबतको रोकनेवाला, अंडकोश और कंठमाला मेंभी लगातेहैं। तथा गांठिया और रसौलियों के बैठानेको भी लगाया जाताहै।

२११–टिंचर जलापा।

जलंधर, कब्ज, और वायगोलेमें दस्तलानेके वास्ते देतेहैं। मात्रा ½ से २ ड्राम।

२१२–टिंचर कमीला।

बच्चोंके पेटके कीडे और कद्दूदानों के मारनेकेवास्ते बतौर जुलाब के देतेहैं। मरहम इसका मुरदासंगके साथ रतूबत बंद करनेके वास्ते बाहर लगातेहैं। मात्रा ½ से २ ड्राम तक।

२१३–टिंचर काईनो।

इसको दस्त बंद करनेके वास्ते देतेहैं। मात्रा ½ से२ड्राम तक।

२१४–टिंचर किरामीरया।

काबिजहै इसको दस्तों के बंद करनेको देतेहैं। मात्रा १ से २ ड्राम तक।

२१५–टिंचर लेवेनजुला।

इसको इन्द्रियके उठनेके वास्ते बाहर लगातेहैं। बालोंपर लगानेसे बाल मजबूत और स्याह होतेहैं। पेटका आफरा, वायगोला और पट्ठोंके दर्दको आरामकरताहै। मात्रा १ से २ ड्राम तक

२१६–टिंचर लीमोन्सपील।

जब मेदेमें खार ज्यादा होताहै तो देतेहैं। मेदेको पुष्ट करता और हाजिम है। मात्रा १ से २ ड्राम तक।

२१७–टिंचर लोवेल्याइंथर।

पुरानी खांसी और नज़ला तथा ज़ुकाम और ऐंठन को मुफीदहै। मात्रा १० से ३० बूंद तक।

२१८–टिंचर यूकेलिपटस।

जाड़के बुखारों को मिस्ल कुनैनके बहुत मुफीदहै। मात्रा १० से ३० बूंद तक।

२१९–टिंचर–ल्यूपयूलाय।

यह अत्यन्त उत्तम हाजमा करनेवाला है। धातुको पुष्ट करता है। नींदलाताहै। जब अफीम मुवाफिक नहीं आती तो इसको देतेहैं। इसके तकियेपर शिर रखकर सोनेसे दर्द सर जातारहताहै। वेचैनी और कमजोरीमें देनेसे फायदा होताहै।

२२०टिंचर–जल्सीमी।

चेहरेका दर्द, पट्ठा, जाडेका बुखार, गांठिया और खाँसीको मुफीदहै मात्रा १ से १५ बूंदतक।

२२१टिंचर–गमरुवस्म।

दस्त बंद करनेको मुफीदहै। मात्रा २० से ४० बूंद तक।

२२२–टिंचर हीमेमेलस।

रक्तातिसार रक्तांश और रुधिरके बहनेको मुफीदहै। मात्रा १० से ३० बूंद तक।

२२३–टिंचर हाईडिसासटिस।

यह दवा थूंक और राल को ज्यादा करती है। भूंख बढातीहै। भोजनको हज़मकरती है। जिगरको फायदा देती है। सोजाकको

बडी मुफीद है। अमरीकावाले इसको कौनैनके जगह खर्च कर-तेहैं मात्रा १ से ३ ड्राम तक ।

२२४—टिंचर जेवोरेन्डी ।

थूक राल और दूधको बढाता है। मात्रा १ से ३ ड्राम तक ।

२२५—टिंचर मेटीको ।

खूनीबवासीर, सोजाकं, तपेदिक रोगीके दस्त, खून और रतू-बतोंको बद करनेके वास्ते देतेहैं। मात्रा १ से २ ड्राम तक।

२२६—टिंचर लारीसिस ।

पुरानी खांसी में देते है तो फायदा होता है । मात्रा २० से ३० बूंद तक ।

२२७—टिंचर मुशक्स ।

धातुपुष्ट करनेको और जल्दी खलासहोजानेमें, चिंता और उन्मादमें, जोफदिल, लकवा, खांसी, शरदीमे देते हैं। पट्ठे और दीमागको पुष्टकरनेवाला और बच्चोंके श्वासका नाशकहै । मृगी रोगमें इसकी परीक्षा कीगईहै । मात्रा १० से ३० बूंद तक ।

२२८—टिंचर मुर—या—वोरेक्स ।

इसको एडीकीलान से बनाते हैं । जो स्त्रीधर्म्म नहीं होताहो अथवा तकलीफसे होताहो तथा जाबडेका रुधिर या दर्द या दां-तके उखडनेके पीछे रुधिरका जारीहोना इससे वंद होजाताहै । मात्रा १० से ३० बूंद तक ।

२२९—टिंचर नक्सवोमिका ।

इसको पट्ठोंकी बीमारीमें देतेहैं पट्ठोंको पुष्ट करताहै, इस सव-वसे नामर्दीकी दवा है और लकवेको फायदा करता है । मात्रा १० से २० बूंद तक ।

२३०–टिंचर ओपियम् ।

दस्तोंके बंद करने और दर्दके हटानेके वास्ते देतेहैं। खांसी को मुफीदहै। वीर्यको रोकताहै। मात्रा १० से ३० बूंद तक।

२३१–टिंचर परेरा।

गुरदा और मसानेका जखम और रेत तथा पथरीमें दिया जाताहै। झिल्लीकी सूजनको दूर करताहै। पेशाब लाताहै। मात्रा १ से २ ड्राम तक।

२३२–टिंचर पिसरोली।

कोढको फायदा करताहै। मात्रा १ से २ ड्राम तक।

२३३–टिंचर पाईरथी।

इसको पिलट्रीरूटभी कहते हैं। सुस्तीकी बीमारीमें इसको इंन्द्रियपर मलतेहैं। कीडा खाई डाढको मुफीद है। गांठियाके दर्दपर लगाते हैं। खांसीको मुफीद है। राल और थूंकको बढाता है। इसकी कुरलीभी करते हैं। काग गिरेहुयेको उठादेताहै। मात्रा २ बूंद रुईमें लगाकर दांतके दर्दमें लगावे।

२३४–टिंचर कुवासीया।

मेदेको पुष्टकरके भूखको बढादेता है। कमजोरी और बुखारोंको दूर करता है। मात्रा १ से २ ड्राम तक।

२३५–टिंचर कोनैन सल्फास।

जाडेका बुखार इसके देनेसे दूर होजाताहै।

२३६–टिंचर कोनैन अमोनीएटिड।

खांसी, तपेदिक और फेफडेकी बीमारीको मुफीदहै। मात्रा १ से २ ड्राम तक।

२३७—टिंचर फाईसेलिस

इसको महीन बुखार और पेशाब लानेके वास्ते देतेहैं। मात्रा ½ से १ ड्राम तक।

२३८—टिंचर रूबर्ब।

दस्तावरहै, कब्जको दूर करता है। मेदे और जिगरके रोगोंको मुफीद है।मात्रा १ से २ ड्राम तक।

२३९—टिंचर सेनायना या सेवन।

पेटके कीडे और गांठिया को दूरकरताहै वंदहुये स्त्रीधर्म्मको जारीकरताहै। इससे दस्त और उल्टी जारी होतीहै। इसवास्ते गर्भवतीको नहीं देनाचाहिये क्योंकि इससे गर्भ तुर्त गिर जाता है। मात्रा १५ से ३० बूंद तक।

२४०—टिंचर सिल्ली।

करडे कफको पतला करताहै और वाहर निकालदेताहै। खांसी को मुफीदहै। जलंधरको दूरकरताहै। मात्रा १५ से ३० बूंद तक।

२४१—टिंचर सनेगा।

पुरानी खांसी, बूढे आदमी और कमजोरको एमोनियांके साथ देतेहैं। छातीके दर्द और कफके रोगमेंभी दिया जाताहै। पेशाब और स्त्रीधर्म्म को जारीकरताहै। बुखार, बदहजमी और पेटके आफरेमें देनेसे पतले दस्त होकर आराम होजाताहै और आंतोंको साफ करदेताहै। इस्प्रिटएमोनिया ऐरोमेट के साथ देने से ज्यादा फायदा करता है। मात्रा १ से ४ ड्राम तक।

२४२—टिंचर सर्पेन्टेरिया।

चातुर्थिकज्वरके रोकनेको एमोनियां के साथ देते हैं।बदहज्मी और गांठियाको मुफीदहै। मात्रा ½ से २ ड्राम तक।

२४३–टिंचर सम्बुल।

दस्त और पेचिश तथा हैजेके दस्तोंको मुफीदहै। दमा, वायगोला, मृगी, बुखार, और वबाई हैजेको मुफीदहै। मात्रा १० से ३० बूंद तक।

२४४–टिंचर टाक्सी कोडेन्डीरान।

इसको लकवेमें देते हैं। फालिजकोभी मुफीदहै। गांठियेको भी दूरकरताहै। मात्रा ½ से १ ड्राम तक।

२४५–टिंचर टोलो।

पुरानी खांसी, नजला और दमाकी बीमारी इससे रुकजातीहै गांठियाके वास्ते मुफीदहै।

२४६–टिंचर वेलीरयाना।

मृगी, वायगोला, खांसी, बदहजमी और छातीके दर्दको मुफीदहै। मात्रा दूसरे मुरक्कब एमोनियाके साथ ½ से १ ड्राम तक।

२४७–टिंचर बेनेलो।

धातुको पुष्ट करनेवाला, मृगी नाशक और वायगोलेके वास्ते मुफीदहै। मात्रा ½ से १ ड्राम तक।

२४८–टिंचर हेलीबोरवेरीडी।

थोडी मात्राहीके देनेसे दिलको कमजोर करताहै। ज्यादा देनेसे वमन लाताहै। फेफडेका शोथ दर्द और गांठियेमेंभी दिया जाता है। मात्रा ५ से २० बूंद तक।

२४९–टिंचर जिन्जर।

आफरा, पेटकादर्द और रीहको नाशकरताहै। मेदेको पुष्ट करता और दस्तावरहै। दर्दोंके दूर करनेवाला और पाचकहै। १० से ३० बूंद तक जिन्जारीनाकी १ से २ ग्रेन तक।

२५०—टिंचर वर्वर्जी या फीवर डिरापस।

जाडेके बुखारोंके वास्ते परीक्षा किया हुवाहै। स्वाद इसका अत्यंत कडुवाहै परंतु दूसरा मीठाभी है-दोनों चौथिया, तिजारी और नित्यज्वर जाडेके बुखारको दूरकरदेताहै। मात्रा १०से२०बूंद तक।

२५१—टिंचर एनटीआर्थीरीटीका।

यह पुरानी गांठिया और नकरसकी बीमारीको मुफीदहै। मात्रा १ से २ ड्राम तक।

२५२—टिंचर डल्फीनाई।

यह दवा दमेके वास्ते परीक्षा कीहुईहै। मात्रा १०से२०बूंद तक।

२५३—टिंचर जगलेन्डस।

काडलिवर आयल का जायका छिपानेके वास्ते उत्तमहै। मात्रा १ से २ ड्राम तक।

२५४—टिंचर लूओडेन्डी।

इसको पुष्टाई और पसीना लानेके वास्ते देते हैं। मात्रा ½ से १ ड्राम तक।

२५५—टिंचर पोडोफीलीनरीजीना।

यही नवाताती पारेसे वनताहै। अमीरोंके वास्ते उम्दा जुलाबहै क्योंकि वैसेही दस्त आतेहैं जैसे पारेके कुश्तेसे आते हैं। और इसका जुलाव मानिन्द जलायेकेहै। इसको टिंचरवेलेडोना के साथ य-हायोसीयामी या एलोज़ अथवा कालीसिंथ के देते हैं। आतशक और मवाद सौदावी को मुफीदहै। मात्रा ½ से १ ग्रीन तक।

२५६—टिंचर फ्रीएसीटेटिस।

इसको सोजाक और धातु पुष्टकरनेके वास्ते देते हैं।

२५७--टिंचर फ्रीएमोनियाक्लिोराइड ।

यह काबिज और पुष्टहै, स्त्रीधर्म लाताहै, मेदेमें ताकतलानेके वास्ते देतेहैं । कमजोरी और वायगोलेको मुफीदहै। छातीके रोगों-को दूरकरताहै । मात्रा ½ से १ ड्राम तक ।

२५८--टिंचर ऑफ औरंजपील ।

सुगन्धित सुस्वादु कर्ता । मात्रा १ से २ ड्राम तक ।

अब पिलविस याने पाउन्डर या सफूफ अर्थात् चूर्ण लिखेजाते हैं ।

२५९--पिलविस आरोमेटिकस् ।

यह रीहके दर्दको मौकूफ करता है।मात्रा २०से ६० ग्रेन तक ।

२६०--पिलविस केटीक्वि ।

यह दस्तों को बन्द करता हैं । मात्रा १५से ३० ग्रेन तक ।

२६१--पिलविस सीनेमोन ।

यह पाचकहै इसको दस्त बन्द करनेके वास्ते देते हैं । मात्रा ५ से १० ग्रेन तक ।

२६२--पिलविस चाक अर्थात् चाकपौन्डर ।

इसको दस्तोंके बन्द करनेको देते हैं । मात्रा२०से६०ग्रेन तक।

२६३--पिलविस अलाटेरियम् ।

जब बन्द पडजावै तो १ से २ ग्रेन तक देनेसे खुलजाता है ।

२६४--पिलविस एपीके कम्पौन्ड ।

यह नींदलानेको और पुराने दस्तोंको रोकनेके वास्ते बड़ा उत्तम है । खांसीको मुफीद है । मात्रा ५से १० ग्रेन तक ।

२६५--पिलविस जलप कम्पौन्ड ।

उम्दा जुल ाब बिला पेचिश है । मात्रा ३० से ६० ग्रेन तक ।

२६६–पिलविस काइनोको ।

यह दस्त बंदकरनेको मुफीद है । मात्रा ५ से ३० ग्रेन तक ।

२६७–पिलविस ऐन्टीएगो ।

इसकेदेनेसे बुखार तेइया, चौथेइया, नित्यज्वर, तुर्तही जातारहता है । और तिल्लीभी दूरहोकर भूख लगने लगती है, इसने लाखों आदमियोंका बुखार खोदिया है । मात्रा ५ ग्रेन ।

२६८–पिलविस ओपियम ।

इसको दस्त और पेचिश बंदकरनेके वास्ते देते हैं । मात्रा २ से ५ ग्रेन तक ।

२६९–पिलविस रियाईको ।

हाजिम और मुलैयन दस्तावर हे पीछेसे आपही दस्त वद हो जाते हैं । नित्यके कब्जमें मुफीद है, ऐसा मुजर्रब है कि जिस्का ठिकाना नहीं ।

२७०–पिलविस कमोनिया ।

निहायत उमूदा दस्तावर है । मात्रा ३ से १० ग्रेन तक ।

२७१–पिल्वसोडा ।

इसको सिटलिस पौन्डर भी कहते हैं । इसकेसाथ एसिडकी भी पुडिया होती है। चित्तको ठीककरनेवाला दस्तावर है,प्यासको दूर करनेवाला बदहज्मीको खोनेवाला और चढेबुखारको उतारता है । हाजिम और ठंढा है । मात्रा १ ड्राम ।

२७२–पिल्व ट्रेगेकेन्थको ।

इसको दस्त और पेचिश में देनेसे फायदाहोता है । मात्रा १० से ६० ग्रेन तक ।

२७३–पिल्व एलोमिन्स ओपीएटस ।

खूनजारीको बंद करता है,दस्तोंके खूनकोभी बंद करता है,मात्रा १० ग्रेन दिनमें ३ दफे देनेसे फायदा होता है।

२७४—पल्व एन्टीईपीलेपटीकस ।

थोडी मात्रासे बच्चोंकी मृगीको और ज्यादा मात्रासे बडेकी मृगीको खोता है ।

२७५--पल्व आर्टीमिस्या ।

इसको राशे और मृगीमें देनेसे फायदा होता है ।

२७६—पल्व यूरूपीयन आसरम ।

इसको छींक लानेके वास्ते देतेहैं । बडेभारी शिरके दर्दको और पुरानी आंखोंके दर्दको, दिमागकी बीमारी और लकवामें, मुख जीभ और दांतोंके दर्दको मुफीदहै ।

२७७—पल्व आरी ।

रुधिरको साफ करनेवाला होनेके कारण उपदंशको दूर करताहै और बलको बढाताहै ।

२७८—पल्व आरीकमफेरो ।

उपदंशको मुफीद है, रसकपूरके ज़हरको मारताहै ।

२७९—पल्व बेलाडोना कम्पौन्ड ।

इसको बुखार और खांसीमें देतेहै ।

२८०—पल्व हाईपोफासफेट्सेकेचेरस ।

इसको निर्बलता, खांसी, तपेदिक, और ज़ुखाममें देनेसे फायदा होताहै । उसीवक्त गुण दिखाताहै । मात्रा८से१०ग्रेन तक ।

२८१—पल्व केलोमीलस कम् आर्सनीकोलस ।

इसको तिल्ली और शीतज्वरमें देते है । जिगरकी बीमारियोंमें देनेसे फायदा होताहै और त्वचाके रोगभी दूर होतेहैं ।

२८२--पल्व केम्फर ।

यह बुखार, हैजा, खांसी को मुफीद है ।

२८३—पल्व पयूसीनोरम।

इससे दीमागके कीडे झडतेहैं।

२८४--पल्व प्रवीऐनवार्क।

यह तिजारी, चौथैया, रोजानाज्वर और तिल्लीको खोता है।

२८५--पल्वक्यूवेव।

इसको सोजाकमें देनेसे वडाभारी फायदा होता है।

२८६--पल्व गुवाईसायओपीएटस।

यह चूर्ण गांठियाको खोता है।

२८७--पल्व सोडासेलीसीलास।

यह चूर्णभी गांठियाको अक्सीरहै।

२८८--पल्वजेसटिस्या।

इसको डिंसपेपशया और अजीर्णमें देनेसे फायदा होताहै।

२८९—पल्व नक्स वोमिका।

इसको धातुपुष्टहोने और मुकव्वी मेदेके वास्ते देते हैं।

२९०—पल्व क्यूनियाईरेटिस।

इसको शीतज्वर में वारीके भीतर देते हैं। चढेहुये बुखार उता-रनेके वास्ते मानिन्द फीवरमिक्श्चर व एन्टीपाईरीनके मुफीदहै।

२९१—पल्व कोनैन।

इसको शीतज्वर आनेसे २ घंटे पहले देनेसे शीतज्वर और तिजारी चौथिया तथा शिरकादर्द और आधासीसी जातीरहतीहै।

२९२--पल्व इस्केमोनी कमू फुलजाइन।

यह १ फासनएबिल प्रगेट्यूवा उम्दा जुलाब है।

२९३—पल्व सल्फर।

यह डाईसेंनट्री यानी पेचिश ववासीर और खुजलीको मुफीदहै।

२९४–पौन्डर ऑफ रूबंब कम्पौन्ड ।

अनुलोमन लघुरेचन २० से ६० ग्रेन तक ।

२९५–पौन्डर ऑफ एन्टीमूनी ।

पसीना लानेवाला, स्थिरकरता । ३ से १० ग्रेन तक ।

· अब पिल अर्थात् गोली लिखीजाती हैं ।

२९६–पिल एनडी कालरा ।

इसको हैजेके मर्जमे देनेसे फायदा होताहै परीक्षा कियाहुवाहै।

२९७–पिल आरसनि कम्पौन्ड ।

इसको हैजा, शीतज्वर, तिजारी, चौथिया, तापतिल्ली और त्वचा के रोगोंमें देनेसे फायदा होताहै ।

२९८--पिल विलाडोना ।

वायगोलेमें देनेसे फायदा होताहै ।

२९९–पिल कैम्फर कपौन्ड ।

जब रातको सोतेमें इन्द्रिय खडी होतीहै जिसके सबबसे बीमार को अत्यंत तकलीफ होती है । ऐसे वक्तमें इन गोलियोंसे फायदा होताहै ।

३००–पिल डीजीटेलस इटसिल्ली ।

यह जलंधर को मुफीद है ।

३०१–पिल अर्गट कम्पौन्ड ।

इसको स्त्रीधर्म्म कमती होनेवाली स्त्रीको देनेसे स्त्रीधर्म्मसे खूब होती है ।

३०२–पिल आयडो फार्म ।

इसको कंठमाला व सिल तथा तेपदिकमें देनेसे फायदा होताहै।

३०३–पिलमार्फिया कम्पौन्ड ।

दर्दगुर्दा, खांसी और वीर्यस्तंभन करनेके वास्ते खाते हैं ।

३०४—पिलपीसिसनिज्ञा।

इसको बवासीरमें देनेसे फायदा होताहै।

३०५—पिल पिलम्वायकम् ओपियो।

यह दस्तोंके बन्द करनेको आजमाई हुई है।

३०६—पिल रीयाई कम्पौन्ड।

नित्य कब्जमें दस्त लाकर बंदकरनेको उत्तमहै, बच्चोंके दस्त बन्द करने वाला तथा आफरेको खोलने वाला है।

३०७—पिलसपोनसकम्पौन्ड।

इसकोभी नित्यके कब्जमें देते हैं।

३०८—पिल सिह्ला कम्पौन्ड।

इसको कफकी खांसीमें देनेसे कफ पतला करके निकालनेके वास्ते परीक्षा की हुई है।

३०९—पिल कैलोमेल कम्पौन्ड।

दर्दगुर्दा और चढेहुये बुखारोंमें देते हैं।दस्तावरहै,दीमागी मेहनत तथा बुढापेके कारण जब कामशक्ति घटजाती है अथवा विशेष स्त्रीप्रसंग या मठोले मारनेसे जब इन्द्रियके पट्ठे सुस्त होजातेहैं जिससे इन्द्रिय चैतन्य नहीं होती या वीर्य अत्यन्त पतला होजाता है,स्त्री और पुरुष दोनोंको संग करनेका मन नहीं होता उस वखत यह गोलियां अकसीरका काम दिखाती हैं, परीक्षा कीहुई हैं।इन गोलियों से होशहवास और अकल बढती है।खून सुर्ख और तेजीसे दौरा करताहै। भोग करनेकी इच्छा ज्यादा होती है।क्षुधा बढतीहै शरीरका बोझभी बढजाताहै और बहुत दिनोंके खानेसे हड्डियों का गूदा पुर व ठोस होजाताहै।त्वचाके रोग सम्पूर्ण दूरहोतेहैं।हाथका जखम, नाकका जखम, हाथ पाँवोंका चम्ला, उन्माद,मृगी वायगोला, लकवा, राशाको भी मुफीदहै। तपेदिकके दस्तोंको

रोकता है । फेफडेके रोग, कवला वायु, और ज्यादती चरवी दिलकी हटाता है।नर्म होजाने या हिलजाने भेजे दीमाग वा रीढकी हड्डीको मुफीदहै । दर्दगुर्देकोभी मुफीदहै । नजला,खांसी,तपेदिक सिल, नासूर और भगंदरकोभी मुफीदहै । परीक्षा कीहुई है ।

३१०–पिल फास्फोरिस व सत्त्व कुचला वा इसट्रिकिनिया ।

यह गोलियां मुकव्वी और परवरिश कुनिन्दाहैं,पट्ठेकी बीमारी को दूरकरतीहैं, भूख बढाती हैं, हाजिमहै, आदतीकब्ज और अजीर्णको मुफीदहैं, ऊपरकी गोलियोंसे ज्यादा मुफीदहैं ।

३११–पिल फास्फोरस व कोनैन ।

दाममी बुखार और जाडेके बुखारोंको दूरकरतीहै,कमजोरी को खोतीहै, कण्ठमाला, उपदंश, खांसी, तपेदिकमें जो रातको पसीना ज्यादा आताहो तो उसको रोकती है ।

३१२–पिल फास्फोरस ।

कोनैन और सत्त्वकुचला,ऊपर लिखी हुई गोलियों से उम्दाहै।

३१३–पिल फास्फोरस कम् चिराय ।

पुष्ट करनेवाली, पट्ठोंको साफकरनेवाली, रुधिर और सिलकी बीमारी, कण्ठमाला, कमीखून, रींगनवायु, जो खट्टापानी मुँहसे आताहो तथा उपरोक्त गोलियोंके संपूर्णगुणभी इसमें हैं ।

३१४–पिल फास्फोरस फौलाद कोनैन व इसटिकनियां ।

फोडा, फुन्सी, उपदंश, सिल, तपेदिक और सब रोगोंको मुफीदहै । साल्टके साथ मिलीहुई बडी उम्दा होती है ।

३१५–पिल फास्फोरस व मारफीया ।

यह गोलियाँ तपेदिक और तकलीफ देनेवाली खांसीको दूर करतीहैं । नींद लातीहैं ।

३१६—पिल फास्फोरस व गांझा।

तपेदिकमें नींदलानेके वास्ते मुफीदहै। कामशक्तिको बढाती है। और नामर्दीको दूर करतीहैं।

३१७—पिल फास्फोरस व एकोनाइट।

तपेदिककी बीमारीको रोकती है।

३१८—पिल फास्फोरस जिन्क वा बालछड़।

इसको योनिके रोगोंमें देतेहैं। प्रसूत, प्रमेह, वायगोला, स्त्रीधर्म्मका कमती होना, उन्माद, प्रमेह, राशा और मृगीमें मुफीदहै।

३१९—पिल फास्फोरस कोनैन इसटिकिनिया एलवा।

पट्ठोंकी कमजोरी, स्त्रीधर्म्म कमतीहोना, फालिज, नित्यकी कब्जी, अजीर्ण, वायगोला, बुखार और शीतज्वरको मुफीदहै।

३२०—पिल एलोज एटफीराई।

यह गोली स्त्रीधर्म्मको खुलकर लातीहै। तिल्लीको आराम करतीहै। जब स्त्रीधर्म होनेके१० रोज रहजावें तब खिलाना प्रारंभकरे।

३२१—पिल एलोज एटमुर।

यह गोली स्त्रीधर्मलानेको बहुत उम्दाहैं। इनसे स्त्रीधर्म खूब खुलकर आताहै। दस्तावरभी हैं। परीक्षा कीहुईहैं।

३२२—पिल एसाफोटीडा कम्पौंड।

वायगोला, पेटका आफरा, और पुरानीखांसीको मुफीदहैं।

३२३—पिल कमूबोज कम्पौन्ड।

इसको कठिन बंद पडजानेमें और जलंधरमें बतौर जुलाबके देतेहैं।

३२४—पिल कालोसिन्थ कम्पौन्ड।

रुधिरको साफ करनेवाला जुलाब है।

३२५--पिल कोनाय कम्पौन्ड।

कलेजेका शोथ, पुरानी गांठिया और पट्ठोंके दर्दको मुफीदहै।

३२६--पिल फिराईवार्क ।

स्त्रीधर्म कम होनेवाली स्त्रीको देतेहैं तो खुलकर आताहै, मेदेको पुष्ट करती है। ताकतवरहै, रुधिर बढातीहै और खांसीको दूर करतीहै ।

३२७--पिल फिराई आयोडाइड ।

उपदंशसे जब रोगी बहुत कमजोर होजावै और आराम होने में न आसकै तो इससे आराम होताहै, कंठमालामेंभी देतेहैं ।

३२८--पिल हैडराजीराय कम्पौन्ड ।

उपदंशवाले रोगीको इतनी गोलियां खिलानी चाहिये जबतक राल आने और मसूढे दर्दकरने लगें ज्यादानहीं खिलाना चाहिये।

३२९--पिल हैड्राजीराय सवकिलोरी व पराकिलोरीडाय ।

दुरुस्ती बदन और मर्ज आतशकको मुफीदहै ।

३३०--पिलसिल्लोको ।

यह गोली जमेहुये कफको पतला करके निकालदेतीहै । और जलंधरमें पेशाब लातीहै ।

३३१--पिलसपोनिसको ।

दर्दको बंद करने वाली और नींदलाने वाली है ।

३३२--पिल नक्सवोमिका ।

पाचक, धातुपुष्ट और कामशक्ति को बढानेवाली है ।

३३३--पिल मुश्क ।

धातुको पुष्ट करनेवाली, कामशक्तिको बढानेवाली और वीर्य- को स्तंभन करतीहै ।

३३४--पिल एपीकाक ।

खांसी और पुराने दस्तोंको बंद करतीहैं। पसीना लाने वाली हैं ।

३३५—पिल एलोजएट वोरेक्स।

इसको तिल्लीके वास्ते देते हैं।

३३६—पिल वाल्सीमीना।

जलंधरके वास्ते मुफीद है।

३३७—पिल केन्सी।

यहभी जलंधरके वास्ते मुफीद है।

३३८—पिल केनेविस इन्डीका।

दर्दपट्ठा, खांसी, दमा और वावले कुत्तेके काटेहुयेको मुफीद है।

३३९—पिल जेकोविया।

इसको सोजाकमें देनेसे फायदा होता है।

३४०—पिल नारसीसी।

यह गोली खांसीको मुफीदहैं।

३४१—पिल पीरीटीरिया।

यह गोली जलंधरको मुफीद हैं।

३४२—पिल कोनैन।

यह शीतज्वर, तिजारी, चौथैया, नित्यज्वर, आधासीसी, अजीर्ण, जुकाम और बहुतसी बीमारियोंको मुफीदहै।

३४३—पिल कोनैन इसटिकिनिया।

फौलाद, फास्फोरस, केन्थ्यारिडिस, जिन्साय, वलीरीयन, इन गोलियोंका फायदा फास्फोरसके समान है। वीर्यको रोकती हैं। वीर्यप्रमेहको खोती हैं। कामशक्तिको पुष्ट करती हैं। शरीरको मोटा करतीहैं। भोगकी इच्छा बढातीहैं। नामर्दको मर्द बनाती है। बडी फायदेमंद हैं।

३४४—पिल पेपसीन ।

यह गोलियां बूढे कमजोर आदमीको भूख लगातीहै । भोजनको पचाती है । मेदेको ताकत देती हैं इनको डिनरपिल भी कहतेहैं । भोजन करनेके पीछे खानी चाहिये ।

३४५—पिल हैड्राजीराय आयोडाइड ।

......३ गिरेन की गोली पडती है । कंठमाला, उपदंश और तिल्लीको मुफीद है ।

३४६—पिल हैड्रार्जीराय वीरीडी ।

इसको उपदंशमें देते हैं । बडा हलका मुरक्कब पारेका है ।

३४७—पिल हैड्रार्जीराय कालोसिन्थ व हायो सीयामी ।

यह अमीराना उम्दा जुलाब है ।

३४८—पिल्स वायस व एसीगस ।

इसको खून थूकने और खूनकी केकरने तथा खूनके जारी होनेमें; दस्त और आॅव लहू की पेचिशमें, खांसी और तपेदिकमें देते हैं । नकसीरको बंद करती है और हैजेमें दस्त बंद करनेके वास्ते या कांच निकलती हुई बंद करनेकेवास्ते खिलाते हैं । और बाहर इसको सूजेहुये अंगोंपर तथा बहते हुये जखमों पर लगाते हैं । और पिचकारी इसकी सोजाकमें देते हैं । अर्क और मरहम इसका कब्ज करनेके वास्ते इस्तेमाल करते हैं मात्रा १ से ४ ग्रेन तक ।

३४९—पिल्स वायकार्बोनास ।

पिसाहुवा जखमोंपर छिडकनेसे जलन व रतूबत बंदहोकर आराम होजाताहै इसको वाइटलीडस पैदा कहते हैं ।

३५०—पिल्सवाय आयोडाइड ।

इसके मरहमको सूजीहुई गिलटी और तिल्ली तथा जोड और जिल्दी फोडे फुन्सीयोंपर लगाते हैं। इसकी गोली दिनमें २ दफे निगलनी चाहिये।

३५१—पिल्सवाय ऐक्साइडम् ।

इसका मरहम उपदंश, और गंजके फोडे फुन्सियोंमें परीक्षा किया हुवा है अगर ¼ गिरेनकी गोली गुलकंदमें बनाकर दिनमें तीनदफे खिलाईजावे तो उपदंशका घाव फौरन् भरआता है।

३५२—पिल्सवाय एक्साइडमूरुबरम्—रेडलीड वा मीनीअम् ।

मरहमोंके काममें बहुत आता है।

३५३—पिल औफ कार्बोंट आयरन ।

वृष्य बलदायक । मात्रा २ से ४ ग्रेन तक ।

३५४—पिल औफ मरक्यूरी ।

रेचन, रक्तशोधक । मात्रा २ से ६ ग्रेन तक ।

३५५—पिले टोरील्ट ।

दांतोंके नीचे दबानेसे दांतोंका दर्द बन्द होता है।

अब पोटास अर्थात् क्षार लिखेजातेहैं ।
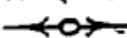
३५६—पोटासाय सल्फास ।

इसको गीली खुजली और त्वचाकी बीमारियोंमें हलका नमकीन जुलाब है। अजीर्ण बवासीरमें भी देते हैं। कब्जको दूरकरता है। इसके देनेसे दूध कम उतरता है। और दादके वास्ते मुफीद है। मात्रा २ से ८ ग्रेन तक ।

३५७—पोटासाय एसीटास ।

यह हमलवाली स्त्रियोंके रोगोंमें देनेसे बडा फायदा होता है। जलंधर और गांठियेमें मुफीद है। सोजाकमेंभी कामआता है

मात्रा १ से ६ ग्रेन तक । जुलाबके वास्ते २ से ३ ड्राम तक । पेशाब लानेके वास्ते २० ग्रेन देना चाहिये ।

३५८—पोटासाय वाईकार्बोनास ।

भोजन करनेसे पहले पीनेसे जठराग्नि दीप्त होती है । मसाना अर्थात बस्तिस्थानका शोथ और सोजाक दूर होताहै । खरासमाता और गर्मबुखार, गांठिया, दर्दगुरदा, पुराना अजीर्ण और उपदंश में इसके देनेसे फायदा होता है । मात्रा १० ग्रेन से ४० ग्रेन तक ।

३५९—पोटासाय वाईकिरोमास ।

इसको उपदंश और उपदंशके कारणोंमें देते हैं । मात्रा $\frac{१}{६}$ से $\frac{१}{४}$ ग्रेन तक ।

३६०—पोटासाय कार्बोनास ।

यह पोटास वाईकार्बोनास के समान है ।

३६१—पोटासाय किलोरास ।

मुखके आजाने तथा जल और सडजाने व पारा खायेहुयेकी राल गिरनेमें, जियावतूसमें, तपेदिक व कंठमालामें और गरमीके बुखारोंमें देते हैं । यह पोटास गर्भकी रक्षाकरने वाली है । सूजेहुये मसूढोंको फायदाकरतीहै । जब रोगी निढाल कमजोर होजावे उस वखत उसकी ताकत कायम रनेखके वास्ते दियाजाता है जोफको भी दूरकरता है जैसे कि माताके निकलनेमें और खराब किस्मके गर्मबुखार जो उतारनेमें न आतेहों तथा बस्तिस्थानके शोथको मुफीद है । मात्रा १० से २० ग्रेन तक ।

३६२—पुटासी साईट्रासा ।

यह ठंढा पेशाब और पसीना लानेवाला गर्मरोगोंको मुफीदहै । हलका जुलाब है । गुर्दे और मसानेके रोगोंको तथा कंकर रेतको बहानेवाला गांठिया और मेदेका शोथ तथा वमनको रोकता है । मात्रा २० से ६० ग्रेन तक ।

३६३--पोटासाय सलफकम् सल्फर ।

यह पोटास बवासीरके वास्ते परीक्षा की हुई है।

३६४--पोटासी नैट्रास ।

ठंढक और पसीना लानेवालाहै तथा गर्मबीमारियोंके प्रारंभ में जैसे गांठिया और जलंधरमें देनेसे फायदा होताहै। मसूढे और स्त्रीधर्म्मके रोगोंमेंभी दियाजाताहै । मूत्रकृच्छ्र और बुखारोंके उतारनेको, जलन और सोजाकको मुफीदहै । इसका तर किया-हुआ कागज सुखाले पीछे जलाकर दमेवालेको सुँघाया जावै तो दमेकी बीमारी चलीजातीहै। मेदा, मसाना, गुरदा और आंतोंके शोथमें देते हैं। मात्रा २० से ३० ग्रेन तक ।

३६५--पोटासी परमेंगेनास ।

यह खूनको साफ करनेवाला और सडनको दूर करनेवालाहै स्त्रीधर्म्मको बढाताहै । और इसका अर्क या चूर्ण जखमोंपर लगाते हैं। इसकी कुरली मुखशोथको मुफीद है। जखमोंको आराम करदेतीहै। मात्रा १ से ४ ग्रेन तक ।

३६६--पोटासाय टार्ट्रास ।

दस्त और पेशाब लानेवाला और खूनको साफ करनेवाला ठंढाहै। इसको बुखार उतारने और कब्ज खोलनेके वास्ते देतेहैं। तथा मसानेका रेत निकालनेके वास्ते, अजीर्ण कवलवायु और जलंधरमेंभी देतेहैं। मात्रा १ से ४ ड्राम तक ।

३६७--पोटासी विरोमाईडम् ।

यह खून साफ करनेवाला, नींद लानेवाला, दर्दोंको मौकूफ करनेवाला, पुरानेशोथको उतारनेवाला, इसवास्ते तिल्लीको आराम करताहै। घेंघा व शोथ, कंठमाला व जिगरकी बीमारी, पट्ठोंके रोग और उपदंश तथा दीवानगी और वायगोला, खांसी,

दमा, गले और हवाकी नालीकी बीमारियोंको दूर करताहै। मृगी और दूसरे दर्जेके उपदंशकोभी अत्यन्त मुफीदहै । सन्निपात, अकड वाय, शिरका दर्द, रक्तप्रदर, स्वप्नदोष, वीर्य प्रमेह में तो बहुतही मुफीदहै । जब रंज और फिकर तथा किसी बीमारीके कारण जब रातको नींद न आतीहो तथा दीमागके रोग और कैं-को रोकताहै । मात्रा ५ से ३० ग्रेन तक। नींदलानेको २ ग्रेन और बीमारियोंको ५ से १० ग्रेन तक देना चाहिये ।

३६८--पोटासी आयोडाइडम् ।

पारा और शीशेके जहरको दूर करनेवाला, भोजनको पचाने-वाला,शरीरको मोटा करके बोझका वढानेवाला, खांसीके सम्पूर्ण रोगोंका नाशक और फेफडेके रोगोंको मुफीदहै । दिल और जिगरका शोथ तथा फेफडेके सोथको दूर करताहै । भीतरके फोडे फुन्सियोंको दूर करनेमें एकहै । उपदंश गांठियाके जहरको शरीरसे निकालकर बाहर करदेताहै । जुखाम,दमा, दर्दशिर, पुराना घेघा, जलंधर, वमन,दाद और खाजको मुफीदहै।मात्रा५से१०ग्रेन तक।

अब ट्रोचीसाय या कुर्स अर्थात् टिकिया कहीजातीहैं।

३६९--ट्रोचीसाय बेनजायन ।

जोफ गले में जब आवाज पडजातीहै तब गानेवालोंको आवाज साफ करनेके वास्ते मुफीदहै ।

३७०--टिरोचीसाय कार्बोलिक ।

जिन रोगोंमें कार्बोलिक एसिड खिलातेहैं । उन्हीं रोगोंमें दीजाती है ।

३७१--टिरोचीसाय एसिड गालिक ।

इसका गुण गालिक एसिडवत् जानो ।

३७२—टिरोचीसाय आरम्।

इसको उपदंशमें देते हैं।

३७३—टिरोचीसाय बिसमिथी।

मेदेकी कमजोरीको दूर करता और पुराने अजीर्णको खोताहै।

३७४—टिरोचीसाय कैलोमेल।

पेट और कलेजेके दर्दको दूरकरतीहै। आतशकके वास्ते मुफीदहै और दस्तावरहै।

३७५—टिरोचीसाय कफीना।

इसके खानेसे सुस्ती दूर होजातीहै और निद्राभी दूर होजाती है। आलस पास नहीं आने पाता तथा आधासीसी को मुफीदहै।

३७६—टिरोचीसाय इमीटीनापिक्टोरल।

नित्यज्वर और खांसीको मुफीद है।

३७७—टिरोचीसाय फिरी।

धातुको पुष्ट करनेवाली, खांसीको रोकनेवाली, शरीरको तैयार याने मोटा बनानेवाली और दस्तोंको रोकनेवाली मुफीदहै।

३७८—टिरोचीसाय फिरीअमोनियासिट्रास।

यह टिकिया पुराने अजीर्ण और बदहजमीको मुफीदहै।

३७९—टिरोचीसाय—फ्रिआयोडाइड।

रोगीकी निर्बलता, उपदंश, तिल्ली और कंठमालाको मुफीदहै।

३८०—टिरोचीसाय फिलिकटेर व रिडिकटाय (फौलाद की टिकिया)

यह टिकिया वीर्यप्रमेहके वास्ते मुफीदहै, शरीरको तैयार करतीहै।

३८१—टिरोचीसाय गुवाईसाय इटएसिड बन्जायन।

गांठिया, खांसी और उपदंशको मुफीदहै।

३८२–टिरोचीसाय एपीकेक–वा नाइटकेम्फर ।

यह टिकिया खांसीको दूर करती है, पसीना लातीहै, दस्तोंको बन्द करती है।

३८३–टिरोचीसाय पिपरमिन्ट ।

हाजमा करनेवाली, कै और दस्तोंको रोकनेवाली, हैजा और बदहजमीको दूरकरनेवाली है ।

३८४–टिरोचीसाय मारफीया ।

यह नींद लानेवाली हाजिम, कफको दूर करता और खांसी को खोनेवाली है ।

३८५–टिरोचीसाय मारफीया व एपीकेक ।

यह खांसी और बुखारको दूरकरती है ।

३८६–टिरोचीसाय कोनैन ।

बुखारको खोनेवाली और हाजिमहै ।

३८७–टिरोचीसाय सैन्टोनून ।

इससे पेटके कीडे मरजाते हैं।

३८८–टिरोचीसाय इस्केमोजी व केलोमेल ।

यह मेदेको पुष्ट करती है।

३८९–टिरोचीसाय सिल्ली ।

यह खांसी और जलंधरमें मुफीदहे ।

३९०–टिरोचीसाय सोडावाईकार्बोनास ।

यह बदहजमीको मुफीदहै, हैजेमेंभी देते हैं, बुखारको उतारती और प्यासको रोकती है ।

३९१–टिरोचीसाय जिन्जर ।

यह वायुको दूर करती और दर्दोंको शांति करती है, अन्नको पचाती है ।

अब केपशूल अर्थात् बुन्दे तथा सुराहीदार गोली लिखीजाती हैं

३९२—केपशूल मोरीवाल ।

यह गोलियां शरीरको तैयार और मोटा बनाती हैं तथा खांसी और सिलकेवास्ते मुफीद हैं ।

३९३—केपशूल कोपेवा ।

प्रमेह और सोजाक तथा गांठियेको यह गोली मुफीदहैं।

३९४—केपशूल मेलफरन ।

यह गोली पेटके केंचवोंको मारतीहैं इसवास्ते बच्चोंको मुफीदहैं।

३९५—केपशूल कोपेवा व क्यूवेव ।

यह गोली सोजाकके वास्ते मुफीद परीक्षा करीगई है ।

३९६--केपशूल मेटीको ।

यह गोली खून बहने और सोजाकके वास्ते मुफीद हैं ।

३९७—केपशूल सेन्टल ।

यह गोली सोजाक और कुरहकेवास्ते मुफीद हैं।

अब कन्फेकशीय अर्थात् गुलकन्द लिखेजातेहैं।

३९८—कन्फेकशीय रोजे व आमोन्ड व ओपियम् वा पेवेबीरस वा सकमोनिया वा सन वा सल्फर ।

यह सब गुलकन्द दस्तावर हैं और बवासीर इत्यादि रोगोंको मुफीद हैं ।

अब लीकर अर्थात् अर्क लिखेजातेहैं ।

३९९—लीकर एमोन्या फारशिव ।

यह बदहज़मी और खांसीको खोताहै । दिलकी हरकत चालको बढाताहै।तमाखू, कुचला, सयानिकएसिड के जहरको दूरक-

रताहै । तथा सांप विच्छू और ततैयाके काटेहुये डंकपर लगानेसे जहरका असर जातारहताहै । सन्निपात और बुखारोंको मुफीदहै। जोडोंकी सख्ती और दर्दपर मालिश करनेसे दर्द और कठिनता दूरहोजाती है । इसके सुंघानेसे जुकाम, सिरका दर्द, दर्दपट्ठा, बेहोशी, और घुमेर जातीरहतीहै । मात्रा ३से ५ बूंद तक ।

४००—लीकर सन्कोना फेवरीफ्यूज ।

जाडेके बुखारकी बोतल इसीसे वनतीहै जिससे तिजारी चौथिया फौरन् जाताहै । आधाशीशी और दमेको खोताहै । मात्रा १० से ३० बूंद तक ।

४०१—लीकर एमोन्या एसीटास ।

गर्मीका बुखार,जुकाम,खांसी, विना समय स्त्रीधर्म होना, या स्त्रीधर्म वन्द होजानेमें गांठिया, जलंधर, बदहजमी और आंखके दुखनेमें डालतेहैं । मात्रा २ से६ ड्राम तक तथा लीकर एमोन्या सिट्रस दूसरा होताहै वहभी इसके समान गुण करताहै परन्तु यह पसीना लाकर बुखारको उतारदेताहै और दर्दोंको दूर करताहै । मात्रा इसकीभी २ से ६ ड्राम तक होतीहै ।

४०२—लीकर अर्जनटीएमोन्या किलोराइड ।

यह मृगीके वास्ते परीक्षा की हुई दवाहै।मात्रा१से१०बूंद तक।

४०३—लीकर आर्सेनिक ।

यह जाडेका बुखार और बहुतसी बीमारियांमें मुफीदहै । देखो एसिड आर्सनिक तथा रुधिरको साफ करताहै । त्वचारोग, कोढ और भगंदरको खोताहै । मात्रा २ से ५ ग्रेन तक ।

४०४-लीकरआसनिक इटहैड्राजीरायआयोडीन डीटिसड्रनविन सोलयूशन।

इसको भोजन करनेके पीछे टिंचर जिंजरमें मिलाकर देनेसे वालोंका झडना, श्वेतकुष्ठ, उपदंश, खुजली और भगंदरको मुफीदहै । मात्रा १० से १५ बूंद तक ।

४०५–लीकर एट्रोपीया ।

इसको आंखोंमें डालनेसे नेत्रकी ज्योति बढजातीहै, देखो एट्रोपीया को ।

४०६–लीकर बिस्मिथ एमोन्या सिट्रास ।

यह पाचकहै, बदहजमीको दूरकरताहैं, पुष्टहै, इसको पुरानी बीमारियोंमें सोडाके साथ देतेहैं, मंदाग्नि, पतलादस्त, बदहजमी को बंद करदेताहै । मात्रा ½ से २ ड्राम तक ।

४०७–लीकर कालसिस ।

इसको दूधमें मिलाकर पीनेसे बदहजमी दूर होकर हजम होने लगताहै । अलसीके तेलमें मिलाकर लगानेसे जलेहुयेको आराम होताहै, गर्जनके तेलमें मिलाकर लगानेसे कोढको आराम पहुँचाताहै । पारेके कुश्तेमें मिलाकर लगानेसे उपदंशका जखम भरजाताहै ।

४०८–लीकर कान्यू सर्वीसक्सी नेटस ।

इसको लिनीमेंट कन्थ्यारीडिसमें मिलाकर लगाना, पुराने दर्दोंको दूर करनेके वास्ते परीक्षा किया हुवाहै । नामर्दको मर्द बनाताहै ।

४०९–लीकर फ्री अस्सी टेटिस ।

देखो इसका टिंचर खून बंद करता और पुष्टहै ।

४१०–लीकर फ्रीकिलोरोऔक्साइड ।

यह कब्ज करता खूनको मंद करनेवाला मानिंद टिंचरइष्टीलके है ।

४११–लीकर फ्री सिट्रास ।

इसको हड्डियों को बढानेके वास्ते तथा बिनासमय स्त्रीधर्मके होनेमें और कमजोरी में देनेसे फायदा होताहै मात्रा ½ से २ ड्रामतक ।

४१२–लीकर फ्रीडाईली सिटी ।

काबिज़ और खूनको बंद करताहै । रक्तार्शमें, हैजलीनके बराबर फायदा करता है । मात्रा १० से २० बूंदतक ।

४१३–लीकर फ्रीआयोडाइड ।

पुष्ट है, खूनको साफ करता है, उत्तम इलाजहै, कंठमाला, सिल, उपदंश और खूनके नालियोंकी सूजनमें मुफीदहै । मात्रा १ से १॥ ड्राम तक ।

४१४–लीकर फ्रीपर किलर ।

इससे टिंचर इसटील बनता है, पुष्ट और खूनको बंदकरता है ।

४१५–लीकर फ्रीहाईयो फारफरास ।

इसको स्त्रीधर्म न होने या बेवखत होने तथा कमती होनेमें देतेहैं मूत्रप्रमेह और हड्डियोंके न बढनेमें अजीर्ण और पट्ठोंकी कमजोरी में देनेसे फायदा होता है । मात्रा ३ से ५ ड्राम तक ।

४१६–लीकर फ्रोमेन्स–वा–ईली ।

इसको बालोंपर फेरनेसे काले होजातेहैं, उत्तम खिजाब है, जिसमें बालोंको बांधना नहीं पडता ।

४१७–लीकर फ्रीपर नाई ट्रेट ।

यह अत्यंत काबिज है, जब स्त्रीधर्म किसी तरह बंद न होताहो तो यह दवा बंद करदेती है । तथा सोम रोगको भी बंद करदेताहै ।

४१८-लीकर सलफाइड कार्बन।

इसको दियासलाई और गिलट बनानेके काममें लाते हैं तथा फास्फोरसकी गोली बनानेमें भी काम आताहै और गांठियाके दर्दों पर मलते हैं।

४१९-लीकर हैड्रार्जीराय नाईट्रेटिस।

यह खूनको साफ करताहै, उपदंश, मस निकाला, वायु, फोडा जखम, नौरंगजेब पर लगाते हैं, और सोजाकमें इसकी पिचकारी करतेहैं तो आराम हो जाता है, मुखके घावोंमें कुरली और नेत्ररोगमें अंजन करते हैं।

४२०-लीकर हैड्रार्जीराय परकलर।

यह श्वेतकुष्ठ, त्वचारोग, पुरानी गांठिया, उपदंश और परवालको खोताहै। कलेजेके शोथको मुफीद है। मात्रा ½ से २ ड्राम तक।

४२१-लीकर आयोडीन।

कंठमाला, उपदंश को मुफीद है। मात्रा ५ से १० बून्द तक।

४२२-लीकर हैड्रार्जीराय साईनाईडी पोटासियो आयोड्राइडम्।

इसको उपदंशमें दो दफे एक दिनमें देते हैं। मात्रा १ औंस देनेसे फायदा होता है।

४२३-लीकर सेनटल पिलेवाको।

सोजाक पुराना और कुरह को मुफीद हैं। मात्रा १० से ३० बून्द तक।

४२४-लीकर कोपेवा।

सोजाकके वास्ते इससे बढ़कर दूसरी दवा नहीं।

४२५–लीकर मार्फीय हैड्रोकिलर व ऐसीटास ।

यह नींद लानेवाला ददौं को नाश करता आंतोंके पतले पतले शोथको दूरकरता है। खून थूकने को मुफीदहै खांसी हैजेकी खांसी और तपेदिक को मुफीद हैं ।

४२६–लीकर नैट्री कैम्फर ।

यह पेशाब और पसीना लाता है, बुखार उतारता है तथा सोजाकको फायदा करता है।

४२७–लीकर पिल्मवाय सबएसीटास ।

इसको दर्द और जलन तथा शोथपर फायदेकेवास्ते लगाते हैं। अंजन आंखमें डालते हैं–सोजाकमें इसकी पिचकारी लगाते हैं और बच्चेदानीसे रतूबत जारीहो तो या कुचले छिले और चोटों पर तथा मोच पर इसका तर कपडा रखनेसे आराम होताहै सोजा नहीं होने देता और आराम होजाताहै । दुखती आंखमें अफीम के साथ डालते हैं ।

४२८–लीकर पोटास ।

यह तेजाबोंका असर खोनेवाला और खूनको साफ करता है इसको गांठिया, बदहज़मी, मेदेका दर्द, अफरा, तपेदिक, कंठ-माला, उपदंश दूसरेदर्जेकी, त्वचारोग और दादको मुफीदहै। तथा मोटा आदमी जिस्में चरबी बहुतहो उसको पतला और मर्दबनानेके वास्ते देतेहैं। पेशाब लाताहै । परदोंकी सोजिशको मुफीदहै । मात्रा १० से ४० बूंद तक ।

४२९–लीकर पोटासी परमेंगेनास व कान्डी लोशन ।

इसको नौरंगजेबके ज़खमपर लगाते हैं, मुखके शोथमें कुरली कराते हैं तो बदबूभी दूर होजाती है गलेके दर्द को मुफीदहै ।

४३०—लीकर कोनैन एमार्फस ।

इसको हरतरहके बुखार और हजारों बीमारियों में तथा सब तरहके शिरदर्दमें देतेहैं। थोडी मात्रासे जैसे अफीम खातेहैं उसके बदले इसको खावै तो बदनको तैयारकरै। सम्पूर्णज्वर, तिजारी, चौथैया, आधासीसी, मंदाग्नि, निर्बलता, मृगीको दूर करताहै। धातुको पुष्ट करताहै। अजीर्णको दूरकरताहै। प्रसूतको खोताहै। प्रसूतज्वरको दूरकरताहै। खांसी, तपेदिक, फेफडेका शोथ, पसलीका दर्द, पट्ठोंका दर्द, गांठिया, तिल्ली, शीतपित्त, कंठमाला, सन्निपात, खूनका कमती पैदाहोना, बायगोला, राशा, मुखरोग, मूर्च्छा, हैजा, पेटके कृमि, मेदेके दर्दमें दियाजाताहै। अगर १ ड्रामका मरहम रीढकी हड्डीपर मला जावै तो ज्वर और शीतज्वर नहीं आता। इसकी पिचकारी त्वचाके भीतर लगानेसे भी तिजारी चौथिया उसी वक्त बन्द होजाताहै। मात्रा हावर्डकोनैन सलफास १ से १० ग्रेनतक। कोनैनलकटास—मात्रा ३ से ९ ग्रेनतक। कोनैन सेलीसीलास ३ से १० ग्रेन तक। कोनैन टेन्निस १ से ५ ग्रेन तक। कोनैन वीलीरायन १ से ३ ग्रेन तक। क्यूनेटम हिंदुस्तानी कोनैन ३ से ४ ग्रेन तक। कोनैन फेरोपरशीयस्त ३ से ५ ग्रेन तक। कोनैन क्रीआयोडाइडम् और कोनैन हैड्रायोडिस आयोडयूरेटा मात्रा २ ग्रेन। कोनैन हैड्रोबिरोमास और कोनैन फासफास इत्यादिक ऊपरके सब मुरक्कब कीमती हैं।

४३१—लीकर सार्सापरीला व चोबचीनी ।

यह उपदंशको दूरकरताहै।

४३२—लीकर सेनटल फिली वा कम् कोपेवा व क्यूबेव-इटव्यू क्यूसेटिको।

यह सोजाक और धातु पतली पडजानेमें, कुरह सोजाक में तथा जलन पेशाबमें इसके समान कोई दवा नहींहै।

४३३–लीकर फ्री फास्फास कम् क्यू नाइट इसटिकिनिया ।

इसमें चौगुना शर्बत मिलानेसे ईसटनसीरप बनताहै । धातु पुष्ट और प्रमेहको तथा नामर्दीको दूरकरताहै व कमजोरी और दमेकी बीमारी किसीके रहगई होवै तो आराम कर देताहै । मात्रा १० से ३० बूंद तक । . .

४३४–लीकर इसटीकिन्या ।

यह भूख बढ़ाताहै, पट्ठोंको ताकत देताहै, वीर्यको पुष्ट करताहै प्रमेहको दूरकरताहै, नामर्दको मर्द बनाताहै, मात्रा ५ से १० बूंद देखो कुचलेका जौहर इष्टिकिन्याको ।

४३५–लीकर टेरेक्सीसाय ।

जिगरको पुष्ट करताहै, जिगरका शोथ और बढनेको दूरकरताहै । खून शुद्ध करनेवालाहै ।

४३६–लीकर वोलेटिलिस ।

इसको दर्दोंपर मलतेहैं ।

४३७–लीकर इपिसपास टीकस ।

लीकरलीटी व वेसीकेटर व. बिलसट्रंग--इसको पुराना दर्द शोथ जोडों का दर्द और जिगरकी बीमारियों में लगातेहैं तो छाला पडकर आराम होजाताहै । नामर्दीके वास्ते इसका तिला इन्द्रियपर लगानेसे आराम होताहै ।

४३८–लीकर जिन्साय किलोरास ।

बड़े खराब जखमोंपर तथा उपदंशके जखमोंपर और कंठमालाके जखमोंपर लगाते और छिड़कते हैं ।

अब सोडा अर्थात् सालट या नमक लिखा जाता है।

४३९—सोडा कासटीका ।

इससे विषैले जानवरोंके काटेहुये दांतोंके ज़ख्म या डंकों पर लगानेसे ज़हरका असर जाता रहता है ।

४४०—सोडा टार्ट्रेण वा रोचल रोचल सालट ।

गर्मीके बुखारोंमें जब कब्ज होता है तो इसको देनेसे दस्त आकर बुखार उतर जाता है, मूत्रल है, शोथको उतारता है, पित्तको खारिज करता है, इसका नाम सोडापोटास्योटार्ट्रेट भी है, शीतला में इसको देते हैं । मात्रा १ से २ ड्राम ।

४४१—सोडा एसीडास ।

यह पेटको नर्म करता है और पेशाब लाता है । मात्रा $\frac{1}{2}$ से १ ड्राम तक ।

४४२—सोडाआर्सेनिक ।

यह सिवाय त्वचारोगोंको और भी तिजारी चौथिया और जीर्णज्वरको दूरकरनेमें काम आता है, इसको बहुतसी बीमारियोंके दूरकरने वाला समझो । मात्रा $\frac{1}{16}$ से $\frac{1}{8}$ ग्रेन तक ।

४४३—सोडा बेन्जायन ।

इसको जिगर और बारीके बुखारोंमें तथा बदहजमी और मुखके आजानेमें देते हैं । मात्रा १५ से २० ग्रेन तक ।

४४४—सोडा बाईकार्व—व—सोडा सस्कवीकार्व ।

यह मेदेकी खटाईको दूरकरनेवाला, उतारनेवाला, पाचकशक्तिको रखनेवाला, खूनको साफ करनेवाला, बदहजमीको तुर्तही दूरकरनेवाला, पुराने अजीर्णको दूरकरनेवाला, कण्ठमाला और गदूदोंको तहलील करनेवाला, अर्थात् पचानेवाला, उपदंश, जलन्धर, तिल्ली, मसानेकारेत, गांठिया और बुखारोंकी गर्मी

उतारने के वास्ते तथा शोथको दूरकरनेके वास्ते, वमनको रोकनेके वास्ते, दस्त हैजा और आंतोंका शोथ, फेंफडेका दर्द और शोथको तथा खूनकी बीमारियोंको बहुत मुफीदहै। मात्रा १० से ६० ग्रेन तक और सोडा कार्वोनास ५ से ३० ग्रेन तक।

४४५–सोडा सेट्रोट्राट्रांस इफरवेसंस वा सिट्रेट आफ मेगनैसिया।

यह बुखारोंके उतारनेके वास्ते तथा गर्मी दूर करनेके वास्ते और दस्त पसीना लानेके वास्ते मुफीद है। मात्रा १० से ३० ग्रेन तक।

४४६–सोडा सेलीसीलास।

अगर मूत्र प्रमेह या मूत्रमें मीठापन होतो देनेसे फायदा होता है और गांठिया तथा इसके साथ बीमारी हो उसके वास्ते परीक्षा कियागया है।

४४७–सोडाहाईपो फास्फास।

गर्मीका बुखार, शोथ, आंतोंका शोथ, उतारनेको देते हैं।पुष्ट करता है। खून और पट्ठोंको दृढ करता है। इसको तपेदिक,सिल खांसी, शीतला, बच्चोंका बुखार और गर्भवती स्त्रीके रोगोंमें देनेसे फायदा करता है।गांठियेमेंभी देते हैं।मात्रा सोडा हाईपोफास्फासकी५से १० ग्रेन तक वसोडाफास्फास २ से ४ ड्राम तक, पथरी और रेत जो खटाईके कारण बनाहो तो उसको भी दूरकरता है।

४४८–सोडा सल्फास–व–बाईसल्फास–व–गिलीवरसालट।

यह गर्मियोंमें शरीरकी गर्मी रफाकरनेके वास्ते,तथा बुखार और बदहज्मी या भूख लगानेके वास्ते, तथा दस्त साफ होनेके वास्ते इसका जुलाब देनेसे फायदा होता है। मात्रा ४ से ८ ड्राम तक।

४४९–सोडा किलोराइडम।

इसको जरासा ज्यादह रोज खानेसे कण्ठमाला, तपेदिक, अजीर्ण और त्वचाके रोग दूरहोते हैं। खून साफ होता है। मृगी

और बारीके बुखारोंको रोकता है। इसको हैजेके प्रारंभ होतेही देते हैं पेटके दर्दको मुफीद है। जहर खायेहुयेको.इससे कै कराते हैं मात्रा ½ से १ ड्राम तक।

४५०–सोडा वोमाईडम।

गाडीकी हाल झोल और नावमें बैठनेसे घिरनी या चक्कर और कैको दूर करता है मात्रा १० से ६० ग्रेन तक।

४५१–सोडा आवो डाईडम्।

इसका फायदा हैड्रोपोटास के समान जानो। मात्रा ५ से १५ ग्रेन तक।

४५२–सोडा सल्फोकार्वोनास।

भोजन करनेके पीछे अगर पेटमें आफरा होजावे तो भोजन करनेके पहले देना चाहिये। अगर भोजन करनेके पहलेही आफरा आजाया करताहो तो आधेघंटे बाद इस्को पीना चाहिये बीमारी रुक होजावेगी। मात्रा १० से १५ ग्रेन तक।

अव सिरप अर्थात् शर्वत कहेजातेहैं।

शर्वत बनानेकी यह रीतिहै कि कन्द सफेद आधसेर और दवा का खींचाहुवा अर्क पावभर में बिना पकाये हुये कच्चाही घोट लेवै तो डाक्टरी रीत्यनुसार शर्वत तैयार होजायगा।

४५३–सिरप सिमपिलक्स।

इसमें १५ हिस्से कन्द और ८ हिस्से दवाका अर्क होता है।

४५४–सिरप मार्फीया एसीटेट।

इसको नींद आनेके वास्ते और दर्दोंके दूर करनेको देतेहैं। पसीनाभी लाताहै।

४५५–सिरप अकाशीया।

यह खांसी पेचिश और दस्तोंको रोकता है।

४५६—सिरप एसीटी ।

इसको गर्मीके बुखारोंमें देनेसे फायदा होताहै ।

४५७—सिरप एसीटी रुबरी आईडो ।

ऊपरके शर्बतके समानहै, ठंढा है ।

४५८—सिरप एसीडी सिट्रीसी ।

इसकाभी गुण ऊपरके समान है ।

४५९—सिरप एसीडी हैड्रोसीयानीको ।

यह खांसी दमा और हैजेको मुफीदहै ।

४६०—सिरप एसिड फास्फोरस ।

यह मूत्रके रोगोंमें मुफीदहै ।

४६१—सिरप टार्ट्रीक ।

यह बुखारको उतारताहै, ठंढाहै, हाजिमहै ।

४६२—सिरप एकोनेटिया ।

इसका फायदा टिंचरके समानहै, पेटका दर्द और बुखार उतारनेके वास्ते देतेहैं ।

४६३—सिरप ईथ्रस ।

दमा खांसी बुखार और कमजोरीको मुफीदहै। अत्यंत ठंढाहै।

४६४—सिरप एली ।

यह गांठिये का दर्द दूरकरताहै ।

४६५—सिरप एलथीइ ।

तर करनेवाला दस्तावर और ठंढाहै ।

४६६—सिरप अमिगडाला ।

यह नजला और खांसीको मुफीदहै ।

४६७—सिरप एनीसी ।

यह हाजिम और बवासीरके कब्जको दूरकरनेवाला तथा दस्तावर है ।

४६८—सिरप एन्थीमीडस।

यह दर्दको बंद करने वाला हाजिमहै।

४६९—सिरप आर्मीएशा।

दर्दोंको दूर करता और हाजिमहै तथा गलापडजानेमें देतेहैं तो फायदा होताहै।

४७०—सिरप आर्टीमिस्याको।

यह बारीके रोगोंको खोताहै और स्त्रीधर्मको लाताहै।

४७१—सिरप एट्रोपीया।

देखो एक्सट्रक्ट एट्रोपीयामे।

४७२—सिरप आरेंशयाथ।

यह ठंढा और तबीयतको खुश करने वालाहै। गर्मियोंके बुखारोंमे देनेसे फायदा होताहै।

४७३—सिरप आरी,।

इसको उपदंशमें देते हैं। तथा मसूढे और जीभपर मलते हैं।

४७४—सिरप बालसमपेरू।

यह खांसी और राशेको मुफीदहै।

४७५—सिरप बालसमटालो।

यह भी ऊपरके बराबरहै।

४७६—सिरप काफीन।

यह तबीयतको खुशकरने वाला सुस्ती और थकानको उतारने वाला है।

४७७—सिरप कालसिस हाईयोफास्फास।

यह लाल शर्बत, खांसी, दमा और नजलेको मुफीदहै। कमजोरीको खोता है।

४७८–सिरप केरीयो फीलाय ।

यह बुखार और खांसीको मुफीदहै ।

४७९–सिरप केसटोरीको ।

यह दमेके वास्ते मुफीदहै ।

४८०–सिरप केटीक्यू ।

यह खांसी और दस्तोंको बंद करताहै ।

४८१–सिरप किलोरल ।

यह बुखारको खोताहै । दर्दको मौकूफ करताहै । नींद लाताहै ।

४८२–सिरप सन्कोना ।

यह कमजोरीके बुखार, मृगी, आधासीसी में फायदा करताहै ।

४८३–सिरप सिनेमोमाप ।

यह धातुको पुष्टकरता और भूखको बढाताहै । मेदेको ताकत देताहै ।

४८४–सिरप कोक्सी ।

यह रंगतके काममें आताहै ।

४८५–सिरप कोडया ।

यह खांसी और मूत्ररोगमें मुफीदहै ।

४८६–सिरप कोपेवा ।

यह सोजाकके वास्ते परीक्षा किया हुवाहै ।

४८७–सिरप किरोसी ।

यह खांसी बुखार और कमजोरीमें मुफीदहै ।

४८८–सिरप साईडोनी ।

तरकरनेवाला गर्मीको दूरकरता और दस्तोंको वंद करनेवालाहै।

४८९–सिरप डीजीटेलस ।

यह दिलकी बीमारी हौलदिली और दिलको ताकत देनेके वास्ते मुफीदहै ।

४९०–सिरप सारसा परेला व चोबचीनी ।

यह उपदंशके वास्ते अकसीरहै ।

४९१–सिरप ईमीटायन ।

यह तुर्तही वमन लाताहै इसवास्ते विषपीडित और दमेवालेको वमन करनेके वास्ते परीक्षा किया हुवाहै ।

४९२–सिरप इर्गोटीन ।

इसके देनेसे बच्चा जनानेके वखत दाईकी जरूरत नहीं पडती ।

४९३–सिरप ईरीसीमीको ।

यह पुरानी खांसी और गला बैठजानेके वास्ते मुफीदहै ।

४९४–सिरप यूकेलिपटी ।

यह तंदुरस्त करनेवाला बुखार जाडा और दस्तोंको बन्द करताहै।

४९५–सिरप कीनीक्यूलाय ।

यह आफरेको दूर करताहै ।

४९६–सिरप फ्रीयरकलर

यह खांसीमें खून थूकने और सिलकी बीमारी तथा रक्तार्शमें मुफीदहै ।

४९७–सिरप फ्री इटक्यू न्यासिट्रास ।

यह भूखके लगानेवाला कमजोरीको दूर करताहै ।

४९८–सिरप फ्री एमोनिया सिट्रास ।

यहभी ऊपरके समानहै ।

४९९–सिरप फ्री पोटास्यो सिट्रास ।

यह दर्द गुर्देको मुफीदहै ठण्ढाहै पेशाब लाताहै ।

५००–सिरप फाई आयोडाइड ।

यह उपदंशके कमजोर बीमारको मुफीदहै और कण्ठ मालाको आराम करताहै ।

५०१—सिरप फ्री आयोडाइड ।

यहभी ऊपरके बराबरहै ।

५०२—सिरप फ्री इटक्यून्या आयोडी ।

इसकाभी ऊपरके मुवाफ़िक फायदाहै ।

५०३—सिरप फ्री लेकटेटिस ।

यहभी ऊपरके बराबरहै ।

५०४—सिरप फ्री पोटास्पोट्राट्रेक ।

यह रुधिरको साफ करता और ताकत लाताहै । यह कब्ज नहीं है । तिल्लीको दूरकरता है ।

५०५—सिरप फ्रीसल्फेटिस ।

यह ताकतवर और भूख लगाता है।

५०६—सिरप फ्रीपरसल्फ्यूरीटी।

इसको १ ड्राम दिनमें २ या ३ दफे देनेसे कण्ठमाला और त्वचाके रोग जाते रहते हैं । शीशा ताँबा और पारेके जहरको दूर करता है ।

५०७—सिरप फ्रीहाईपोफास्फेटिस ।

जोफ दीमाग और कमजोरी पट्ठोंकी दूर होजाती है । नेत्रकी ज्योति को मुफीद है ।

५०८—सिरप फ्री फास्फेटिस कमक्यून्याइट इसाटिकिन्या ।

साथ सालटके मिलाहुवा या सादा दोनोंहीका नाम इसटन सिरप है । यह दीमाग और वीर्यको पुष्ट करताहै । सारे शरीरको बलवान् करता है । पट्ठों और मेदेको करडा बलवान् कर देताहै ।

५०९—सिरप जिन्शीयन ।

यह मदको पुष्ट करता है ।

५१०—सिरप ग्लीसीराईजा ।

यह कफ खांसीको खोता है और दस्तावरहै ।

५११ सिरप पोमग्रेनेट।

यह ठंढाहै। ताकत लाताहै। बुखारों को दूर करताहै। प्यास को रोकता है।

५१२—सिरप ग्वाईसाय।

यह गांठियाके वास्ते परीक्षा किया है।

५१३—सिरप गमएमोन्यासाय।

यह नजला खांसी और जुखाम को मुफीद है।

५१४—सिरप हीमीडिस्माय।

यह उपदंशके वास्ते मुफीद है।

५१५—सिरप हाईयोस्यामी।

यह खांसीको मुफीद है।

५१६—सिरप लेट्यूस।

यह ठंढाहै, और गरमीके बुखारों को दूरकरता है।

५१७—सिरप एपीके कम्पौन्ड।

यह खांसीको मुफीद है।

५१८—सिरप हीसापस।

यह जलंधर, खांसी, छातीका शोथ, कूंखका शोथ, लकवा और वायगोलेके वास्ते मुफीदहै।

५१९—सिरप लोबेल्या।

यह श्वासरोग के वास्ते मुफीद है।

५२०—सिरप ल्यूपयूलाय।

यह मेदेको ताकत देताहै, तबियत खुश्क करता है।

५२१—सिरपसेना।

यह दस्तावर है और गर्मीके बुखारोंमें देतेहै।

५२२—सिरप मार्फीयाहैड्रीक्लिर।

यह दर्दों को मौकूफ करताहै और पसीना लाता है।

५२३–सिरप पीपरमेन्ट ।

यह पाचक है और उल्टीको रोकता है तथा दर्दोंको दूरकरताहै ।

५२४–सिरप मोराय ।

यह ठंढाहै इसवास्ते गर्मीके बुखारोंमें देतेहैं प्यासको दूरकरताहै।

५२५–सिरप जेकोराइस अस्ली ।

यह शरीरको मोटा करताहै, ताकत लाताहै और खांसीको दूर करता है ।

५२६–सिरप पेंपेविरस ।

यह खांसी नजला जुखाम को खोताहै ।

५२७--सिरप पीसिस ।

यह तपेदिक और खांसीको मुफीदहै ।

५२८--सिरप पोटासी आयोडाइट ।

यह उपदंशके वास्ते मुफीदहै सोजाकमेंभी देतेहैं ।

५२९–सिरप कोनैन सिट्रास ।

यह बुखारको मुफीदहै, गर्मीके बुखारोंमें देतेहैं ।

५३०--सिरप कोनैन लिक्टेटिस ।

यह बच्चोंके शीतज्वरको दूर करताहै ।

५३१--सिरप कोनैन व काफीन ।

यह शीतज्वरको मुफीद है ।

५३२--सिरप रेपी ।

यह खांसीको मुफीद है ।

५३३--सिरप रीपाय आरोमेट ।

आफरा कब्ज बदहजमी दूरकरताहै और मेदेको पुष्ट करनेवाला है ।

५३४--सिरप रीबीअम ।

यह अत्यंत ठंढाहै, इसको गर्मी के बुखारोंमें देनेसे फायदा होताहै ।

५३५--सिरप रूबी आईडी ।

ऊपरके समान है ।

५३६--सिरप रोजे ।

यह तबियतको खुश करनेवाला काबिजहै ।

५३७--सिरप रूटे ।

यह वायगोलेको खोताहै ।

५३८--सिरप सेलीसीन ।

यह तिजारी चौथैया शीतज्वरको दूर करदेताहै ।

५३९--सिरपसेम्ब्यू साय ।

यह कास श्वास और खून थूकनेको रोकताहै ।

५४०--सिरप सेपोने रीया ।

यह उपदंशको मुफीदहै ।

५४१--सिरप सार्सापेला ।

यह उपदंशको फायदा करताहै ।

५४२--सिरप सार्साफीरस ।

यह भी उपदंशको मुफीदहै ।

५४३--सिरप सिल्ली ।

यह खांसी और जलंधरको मुफीदहै ।

५४४--सिरप सनेगा ।

यह पुरानी खांसीको दूर करताहै ।

५४५--सिरप सना ।

यह दस्तावरहै । मात्रा १ ड्राम से आधा औंस तक ।

५४६--सिरप सोडाहाइपोफासफेटिस ।

यह तपेदिक और सिल, पुरानी खांसी और राशेमें फायदा करता है ।

५४७--सिरप इस्ट्रेमोनाय ।

यह दमा और ख़ांसीको मुफीदहै ।

५४८--सिरप इष्टिकिन्या ।

भूख लगाता और ताकतवरहै । पट्ठोंको पुष्टकरनेवाला, कमरके दर्दको खोताहै ।

५४९--सिरप वाईयोलेट ।

यह दस्तावर है ।

५५०--सिरप जिन्जर ।

(शर्बत सूंठ) यह आफरेको खोता और भूख लगाताहै । सुगंधित पाचक और शूलको दूर करनेवालाहै । मात्रा १ ड्राम ।

५५१--सिरप टेनिन ।

यह खून बंद करता है ।

५५२--सिरप फ्री विरोमाईडम ।

यह खांसी और तिल्लीको मुफीदहै ।

५५३--सिरप औफ हमीडसमस ।

(शर्बत अनंत मूल) रुचिकारक रक्तशोधक और पसीनालाने वाला है । मात्रा १ ड्राम ।

५५४--सिरप मिलबरी ।

(शर्बत सहतूत) रुचिकारक अनुलोमन मात्रा १ ड्राम ।

५५५--सिरप लिमन् ।

(शर्बत नीबू) रुचिकारक । मात्रा १ ड्राम ।

५५६--सिरप औफ रोज ।

(शर्बत गुलाब) पाचन सुगंधित । मात्रा १ ड्राम ।

५५७--सिरप आफ इस्कोइल ।

मूत्रल कफहर्ता मात्रा १ ड्राम तक ।

५५८–सिरप औरंज (शर्बत संतरा)

सुगंधित सुस्वादु बृंहण १ ड्राम।

५५९–सिरप आफ आयोडाइड आफ आयरन, टानिक।

बलकर्त्ता बृंहण मात्रा १ बूंद आधे ड्राम पानीके साथ।

५६०–सिरप रूबर्ब।

सुलय्यन कुछ दस्तावर १ ड्राम से आधा औंस।

५६१–सिरप औफ पापीज (होस्तका शर्बत)

काबिज नींदका लानेवाला मात्रा १ ड्राम।

५६२–सिरप औफ रिडपापी।

थोडानारकोटिक और दवाओंको सुगंधित करनेवाला। मात्रा १ ड्राम।

अब जूस या सक्कुस, अर्थात् स्वरस लिखाजाताहै जिसमें सक्कुस निखालिस रसको कहतेहैं।

५६३–जूस औफ ब्रूम्।

मल मूत्र रेचन करताहै। मात्रा १ से २ ड्राम तक ड्राफ्ट मिक्चर।

५६४–जूस औफ विलाडोना।

नींद लानेवाला स्थिरता कारक। मात्रा ५ से १५ बून्दतक।

५६५–जूस औफ लिमन (नींबूका रस)

चित्तको प्रसन्न करनेवाला रुचिकारक। मात्रा १ ड्राम से २ औंस तक।

५६६–जूस मलवरी (सहतूतका रस)

यह रुचिकारकहै। मात्रा १ ड्रामसे २ औंस तक।

५६७–सक्कुसविलाडोना, सक्कुस कोनायम, सक्कुस हायोसीयामी, सक्कुस पोमग्रेनेट, सक्कुसमोराय, सक्कुसलिमन, सक्कुस इस्को

फेराय, सक्कुस एकोनाइट, सक्कुसकोल्बीसाय, सक्कुसडीजीटेलिस, सक्कुस गिलीसी राइजा । इन सब सक्कुसों का फायदा इन्होंके ऐक्सट्राक्ट अर्थात् सत्त्व में देखो ।

अब इनफ्यूजन तथा डिकोकशन अर्थात् क्काथ लिखेजाते हैं ।

४६८–इनफ्यूजन औफ चिरायता ।

बलकर्ता, रक्तशोधक, और ज्वरको दूरकरनेवाला है । मात्रा२ औंस ड्राफ्ट ।

५६९–इनफ्यूजन औफ जंबूरंडी ।

होपिंकाफर्मे । मात्रा १ से २ ड्राम तक मिकचर ।

५७०–इनफ्यूजन सना ।

मुलय्यन दस्तावर मात्रा १ से २ औंस तक ड्राफ्ट ।

५७१–इनफ्यूजन क्लोझ या प्लोब्ज (लौंगका क्काथ)

मुहर्रिक, ऐरोमेटिक, सर, मात्रा ४ औंस तक ड्राफ्ट ।

५७२–इनफ्यूजनयू कैटीक्यू ।

(कत्थेका क्काथ) ग्राही काबिज मात्रा २ औंस तक ।

५७३–डिकौकशन औफ ओकबार्क ।

ग्राही काबिज यह पिचकारीके वास्ते काम आताहै ।

५७४–डिकोकशन औफ पापीज ।

(पोस्तका क्काथ) काबिज शोथहर,बाहर सेकना या तरडेदेना ।

५७५–डिकोकशन सारसापरेला (उसबेका क्काथ)

बलदायक रक्तशोधक कुष्ठनाशक उपदंशहर । मात्रा २ से ४ औंस तक ड्राफ्ट मिकचर ।

अब वाटर अर्थात पानी लिखेजातेहैं।

५७६-वाटर औफ इस्पिरमेन्ट ।

हलका पाचन रीह और वायुहरता। मात्रा १ से २ औंस तक मिकचर ।

५७७-वाटर औफ पीपरमैन्ट ।

उपरोक्त गुण सहित प्यास और शूलको हरताहै। मात्रा १ से २ औंस तक मिकचर ।

५७८-वाटर औफ सिनामन ।

वातहर मात्रा १ से २ औंस तक ।

६७९-वाटर औफ फलल (सौंफ)

पाचन दीपन १ से २ औंस तक ।

५८०-वाटर कैम्फर (कपूर)

पाचन शूलहर १ से २ औंस तक ।

अब इनहैलीशन अर्थात् धूनी लिखीजाती हैं।

५८१-इनहैलीशन औफ आयोडीन ।

शोथहर धूनी ।

५८२-इनहैलीशन क्लोरियल ।

दुर्गंधनाशक धूनी ।

सोल्यूशन अर्थात् पानीमिली पतली दवा।

५८३-सोल्यूशन औफ आर्सनिक ।

विष है वारीके रोगोमें मात्रा २ से ५ बूंदतक मिकचर ।

५८४-सोल्यूशन परक्लोराइड औफ मर्क्यूरी ।

उपदंश और सोजाकमें देना मात्रा १ से २ ड्राम तक मिकचर।

५८५-सोल्यूशन आयोडाइड औफ आरसनी ऐन्ड मरक्यूरी ।

जैसे त्वचाके कठिनरोग कुष्ठादि उपदंशमें १० से २० ग्रेन तक मिकचर देना ।

५८६–सोल्यूशन औफ साइट्रक औफ एमोनियम् ।

यह ज्वरमें पसीना लानेवालाहै मात्रा २ से ६ ड्राम तक ड्राफ्ट मिकचर ।

अब कार्वोंट अर्थात भस्म लिखीजातीहैं ।

५८७–कारवोट औफ एमोनियम् ।

पाचक, पसीनालानेवाला, अम्लतानाशक, मात्रा ३ से १० ग्रेनतक मिकचर ।

५८८--कार्वोट औफ विसमिथ ।

ग्राही, काविज, बलकरता, ५ से १० ग्रेन चूर्ण ।

५८९--कार्वोट औफ पोटासियम् ।

अम्लतानाशक मूत्रल मात्रा १५ ग्रेन पानीमें ।

५९०--कार्वोट औफ आयरन (लोहभस्म)

बलदायक पाण्डुमें मात्रा ½ से १ ग्रेन तक शक्करके साथ ।

अब पलास्टर अर्थात् चिपकानेवाला चौडा फोहा या पट्टी कहाजाताहै ।

५९१--इम्पलाष्ट्रम् फिराई ।

वास्ते सहारेके कमजोर जोडों पर लगाते हैं ।

५९२--इम्पलाष्ट्रम विलाडोना ।

जहां दर्द या वायटा और कँपकँपी होवे वहां लगानेसे आराम होताहै ।

५९३--इम्पलाष्ट्रम् केन्थारीडिस ।

दर्दकान और बहरेपनके वास्ते कानके पीछे और आंखोंके दुखनेमें कनपटीपर और खांसीमें छाती पर तथा सुस्तीमें इन्द्रिय पर लगाकर रतूबत नसोंकी निकालतेहैं छाला पडकर फूटताहै ।

५९४—इम्पलाष्ट्रम् ग्लाल्बेनाय ।

इसको पट्ठोंका दर्द पुराणीरसोली और फोडेपर लगातेहैं ।

५९५—इम्पलाष्ट्रम् हैड्रार्जीराय ।

जिगरकी सूजन दूर करनेके वास्ते लगातेहैं ।

५९६—इम्पलाष्ट्रम् हैड्रार्जीरायकम् एमोन्याईकम् ।

इसको गिलटियोंके बढजाने और गिलटियोंपर लगातेहैं ।

५९७—इम्पलाष्ट्रम् ओपयाय ।

गांठियेके दर्दकेवास्ते मुफीदहै ।

५९८—इम्पलाष्ट्रम पाईसिस ।

कमर, पुरानीगांठिया और जोडोंका दर्द, पुरानी खांसी और छातीके रोगोंमें लगानेसे फायदा होताहै ।

५९९—इम्पलाष्ट्रम् पिल्मवाय ।

दर्द और जोडोंकी सूजनको दबाताहै । तथा छिले और कटे हुये ज़ख़मोंका मुँह दोनों तर्फ मिलाकर रखनेसे आराम होता है।

६००—इम्पलाष्ट्रम् आयोडाइड ।

इसको बढीहुई तिल्ली और कलेजेपर लगानेसे आराम होताहैं।

६०१—इम्पलाष्ट्रम रीजीना ।

इसको इसटीकनका फोहाभी बोलतेहैं । फोई फुन्सी और ज़ख़मोंको आराम करताहै ।

६०२—इम्पलाष्ट्रम् सपोनिस ।

ज़ख़म और जुडेहुयेजोडोंपर लगानेसे हाथ पैर खुलजाते हैं ।

६०३—इम्पलाष्ट्रम् कोनायम् ।

इसको छातीका दर्द और पुरानी खांसीमें कफ पतला करनेके वास्ते छातीपर लगातेहैं बडा फायदा होताहै ।

६०४–इम्पलाट्रूम् इसट्रैमोनियम् ।

गांठियाके दर्दोंपर तथा दमा और पुरानी छातीकी बीमारी पर छातीके ऊपर लगाते हैं ।

अव एनी माया हुकंना अर्थात् जुलाव इत्यादिकी पिचकारी गुदामें लगाना ।

६०५–एनीमा मेगनेसिया सल्फ ।

पिचकारी जुलाबके नमककी गुदामें लगानेसे पतला दस्त होकर आफरा उतरजाता है ।

६०६–एनीमा एलोज ।

हुकना एलवेका वचोंकी गुदामें लगानेसे चुनमुने मरजाते हैं ।

६०७–एनीमा असफोटीडा ।

आफरा और पेटके दर्दको इसकी पिचकारी गुदामें करनेसे आफरा और दर्द दूर होजाता है ।

६०८–एनीमा टेरेविन्थ ।

नित्यकी कब्जी और पेटके केचवे मारनेकेवास्ते तथा कँपकँपी मरोडा और ऐंठनके वास्ते इसकी पिचकारी गुदामें लगाना मुफीद है ।

६०९–एनीमा कालोसिन्थीडिस ।

अत्यंत कब्ज और पेटके दर्दमें इसकी पिचकारी गुदामें लगाने से फायदा होता है ।

६१०–एनीमा ऐलब्यमिनम ।

अलसीके क्राथमें २ या ३ अंडेकी जर्दी मिलाकर पिचकारी करनेसे पुराने दस्त आने वंद होजाते हैं ।

६११—एनीमा सवडिला।

इसके अर्ककी पिचकारी बच्चोंकी गुदामें लगानेसे चुनमुने मरजाते हैं।

६१२—एनीमा कियोजूट।

पेचिश और आमरक्तातिसारमें इसकी पिचकारी मुफीद है।

६१३—एनीमा पिल्मबाई।

इसकी पिचकारी अण्डकोशमें आंत उतरआनेके वास्ते तथा अण्डकोशमें पानी जमाहोजानेको आराम करता है।

६१४—एनीमा एटान्या।

इसकी पिचकारी गुदाके फटजानेको फायदा करती है।

अव इन्जकशन् अर्थात् त्वचाके भीतर पिचकारी लगाना लिखाजाता है।

६१५—इन्जकशन् सवक्यूटेनीस (मारफीया वा कोनैन)

अर्क कोनैन और मार्फीयाहैडिरोकलर।

वजरिये पिचकारीके चन्दबूंद नीचे त्वचाके पहुँचानेसे फौरन शीतज्वर भागता है।

६१६—हाईपोडर्मिक इन्जकशन् आयोडिकएसिड।

इसकी पिचकारी घेघा और गलगंडके फूलेहुये हिस्सेमें लगानेसे आराम होता है।

६१७—हाईपोडर्मिक इन्जकशन पकिलोराइड औफ मर्क्यूरी।

इस अर्ककी पिचकारी दर्जे दोयम आतशकमें बहुत मुफीद है।

६१८—हाईपोडार्मिक इन्जकशन् मार्फीया हैडिरोकलर।

एट्रोपयासल्फ—व-जौहरकी अफीमके अर्ककी पिचकारी नीचे त्वचाके लगानेसे दर्दगुरदेको उसीवखत वन्द करता है मात्रा जिस्की१ से ६ बूंद तकहै। आफटर पेनमें। मयूरी मिकन्वलशनको

खून जारीमें, डिस्लोकेशनमें, डिसपेपशीयामें, दिलकी बीमारियोंमें, कुचकी और कमर के दर्दमें भी इसीकी पिचकारी करतेहैं।

६१९—हाई पोडर्मिक इजन्कशन् इसटिकिनिया।

इस अर्ककी पिचकारी १ से ५ बूंदतककी त्वचाके नीचे करनेसे दर्द पट्ठा,-दर्द हाथ और दर्द पैरका एक दो दफेके करनेही से जाता रहताहै।

६२०—हाई पोडर्मिक इन्जकशन् आपोमारफीया।

जिसकिसीने जहर खाया हो तो उस्को उल्टी करानेके वास्ते १/२ ग्रेन अर्क काफी है।

६२१—हाईपोडर्मिक इंजकशन् कफीनोसोडा सेलीसीलास।

जलंधरमें पेशाबलानेको इसके अर्ककी ५ से १५—बूंद तककी पिचकारी काफी है।

६२२—हाईपोडर्मिक इन्जकशन् कोकीन व मारफीयाकी।

अफीमकी आदत छुटानेको, बद दुम्बल रसौलीके चीरनेको १/४ गिरेनकी पिचकारी कीजाती है।

६२३—हाईपोडर्मिक इंजकशन् जीबोरानडी।

इसके १/१८ गिरेनके अर्ककी पिचकारी तपेदिकमें कीजावै तो फायदा होता है। १/२ ग्रेनकी पिचकारीसे बच्चा जननेका दर्द होना शुरू होजाता है, हैड्रोफोबयाकी बीमारीके भी फायदा होताहै। दांतका दर्दभी इसकी पिचकारीसे जाता रहता है।

६२४—हाईपोडिक इन्जकशन टार्ट्रिक औफ मारफीया।

इसके अर्ककी पिचकारी १ वा २ बूंदकी काफी है।

६२५—हाईपोडर्मिक इन्जकशन् ऐट्रोपीया।

इसके अर्ककी पिचकारी दमेको मुफीदहै, हैजेको आरामकरती है, दर्दपट्ठा और गांठियेके प्रारंभमें, रींगनवायुमें, जाबडेके दर्दमें इसकी पिचकारीसे फायदा होता है।

अब आइंटमेंट अर्थात् मरहम लिखेजाते हैं ।

६२६–आइंटमेंट आयोडीन (मरहम आयोडीन)

इसको तिल्ली और जिगरकी सूजनपर लगानेसे बडा फायदा होताहै । गांठियाकी सूजन और चोटोके दर्दको खोताहै । सब तरहकी सूजन और उभारको तथा दर्दको दूर करताहै । जखमों-पर लगानेसे जखम आराम होजाताहै ।

६२७–आइन्टमेन्ट एसीडाईबोरीसाय ।

उपदंश के सडे हुये जख्म जिनसे बदबू और पीप आती हो फौरन् आराम करताहै अगर नाकका बांस उपदंशसे बैठगया हो तो इसके लगानेसे आराम होता है ।

६२८–आइंटमेन्ट एसीडाय कारबोलीसाय ।

यह मरहम हरकिस्मके ज़खमोंको आराम करताहै और बहुत जल्दी जादूका काम दिखाताहै ।

६२९–आइन्टमेन्ट जाइनो कार्डिया ।

इसको कोढके जखमोंपर लगानेसे बडा फायदा होताहै ।

६३०–आइन्टमेन्ट एसिड सेलीसीलेट ।

गांठियांकी सूजन और दर्द जोडोंपर लगानेसे आराम होताहै ।

६३१–आइन्टमेंट अकोनेटिया ।

गांठिया वगैरह सब तरह के दर्दोंपर लगाते हैं । दर्द जाबडा, दर्द कलेजा, और हाथपांवोके दर्दपर मलनेसे फौरन् आराम होताहै ।

६३२–आइन्टमेन्ट टार्ट्राइमेटिक ।

छातीकी पुरानी सूजन और जलन तथा फेफडेका जब कोई हिस्सा सडजाताहै जिससे सिल या दिक की बीमारीहोतीहै ऐसे रोगमें इसको १ ड्रामकी ताक़तका मरहम बनाकर हंसलीकी हड्डी के नीचे लगानेसे आराम होताहै ।

६३३–आइन्टमेन्ट ऐटरोपीया ।

नेत्रकी ज्योतिके कमतीहोनेमें तथा नेत्रोंके दुखनेमें तथा नेत्र-के सोजेमें तथा जलस्रावमें इसको आंखोके बाहर लेप करनेसे आराम होताहै, दर्द पट्ठा, गांठियाके दर्द करनेवाले जोडोंपर और अंडकोशकी सूजनपर लगानेसे फायदा होता है ।

६३४–आइन्टमेन्ट केन्थारीडिस ।

वास्ते नामर्दीके दूरकरनेको इन्द्रियपर लगाते हैं और गांठिया के सुस्त जुडेहुये जोडोके दर्द और सोजेपर लगाते हैं तो आराम होजाताहै तथा गंजपर लगानेसे बाल निकलते और बढतेहै ।

६३५–आइन्टमेन्ट क्रियोसोकेनिक वा गोवापाउन्डर ।

दाद चकत्ते खारिश को बडीजल्दी आराम बिला किसी तकलीफके करदेताहै उम्दा मुजर्रबदवाहै ।

६३६–आइन्टमेंट क्रियो जूट ।

बाहरके खून बंदकरनेके वास्ते परीक्षा कियाहुवा है और सूखी-खुजलीमें तो इसके मलनेसे तुर्तखाज बन्द होजाती है गंज झाई और दादको मुजर्रबहै ।

६३७–आइन्टमेन्ट इलीमाय ।

इसको पुराने दुर्गंधित घावोपर लगातेहैं, सीटन यानी वह फीता जो पागलोंकी गुद्दीमें डाला जाताहै और उसमें मवादजा-रीहोती है उसके तर रखनेको लगाते हैं ।

६३८–आइन्टमेन्ट यूकेलिपटाय् ।

इसको लगाकर अगर मोमजामा बांध दियाजावे तो छाले पैदा होजाते हैं अगर इसका मरहम तेज रीढकी हड्डीपर मलाजावे तो जा-डेका बुखार रुक जाताहै और छातीपर लगानेसे तपेदिकका कफ और बुखार कम होताहै खांसीको आराम होताहै बड़ा मुजर्रब है।

६३९--आइन्टमेन्ट गाले कम्पौन्ड।

इसको बवासीरी मसोंपर लगानेसे खून और अकड बन्द होती है दर्द मौकूफ होताहै।

६४०--आइंटमेन्ट गिलसरीन।

वा स्यूगरलेड इसकोभी बवासीरके मसोंपर खून बन्दहोनेके वास्ते लगाते हैं।

६४१--आइन्टमेन्ट हैड्रार्जीराय कम्पौन्ड।

तेज मरहम लगानेसे जिस्मके अन्दर इसका असर होताहै रसौली, कखलाई, और शोथपर लगानेसे आराम होताहै जब उपदंशमें मुख लाकर आराम करना मंजूर होतो इसको बगलोंमें मलै फौरन आराम होताहै और आतशकके जखमोंकोभी आराम पहुँचताहै।

६४२--आइन्टमेन्ट हैड्रार्जीराय एमोनी एटा।

इसको खूनीखाज, गंज, दाद और घावके साफकरनेको लगाते हैं जूमको मारताहै।

६४३--आइंटमेन्ट हैड्रार्जीराय रुवराय आयोडाय।

कंठमाला, घेंघा, तिल्ली और जिगरके बढ जानेको मौकूफ करताहै इसको बहुत देरतक लगे रहनेसे छाले पडजातेहैं।

६४४--आइंटमेन्ट हैडिराजीराय सब किलोरीडाय वा परकिलीरीडाय।

इसको दाद गंज और आतशकके जखमोंपर लगाते हैं मिस्ल रसकपूरके है।

६४५--आइंटमेन्टहैड्रार्जीराय नाइट्रेटिस।

घावको साफ करनेवाला। झाई जो गालोंपर कालेधब्बे पड़जाते हैं इसको दूर करनेवाला। आंखोंके दुखनेको आराम करनेवाला जबकि इसके फोहे कनपटियोंपर लगाये जावें तो

आँखोंका दर्द दूर होजाताहै । आतशकके ज़खमोंके वास्ते मुफीद है । शिरके गंजादिको आराम करताहै ।

६४६–आइंटमेन्ट हैड्रार्जीराय ऐक्साईडाय रूबराय ।

पुराने सडे और सुस्त जखमोंपर लगाया जाताहै आंखोंके दुखनेमें लगानेसे फायदा होताहै ।

६४७–आइंटमेन्ट आयडोफार्म ।

इसको गंदे जखम और उपदंशके जखमोंपर लगानेसे फायदा होताहै और ज़ख्म जल्दी ही भर आताहै दाद और गंजपर लगाने से भी फायदा होताहै ।

६४८-आइंटमेन्ट रीजीना ।

इसको इस्तटीकन का फोहा भी कहते हैं जखमोंपर लगानेसे आराम होताहै ।

६४९--आइंटमेंट सवाइना ।

छाले--पलस्तर और सीटन के ज़ख्मोंसे मवाद जारी रखनेके वास्ते मरहम केन्थारीडिस से उम्दा है ।

६५०-आइंटमेन्टवेसलीन,पाराफीलीन व सटोसीयाये अर्थात् सादामरहम ।

यही और मरहमोंकी जडहै और आप भी फोडे फुनसी और जख्मोंको आराम करताहै ।

६५१--आईन्टमेन्ट सल्फ्यूरस ।

इसको गीली खुजली और पुरानीगांठियापर लगाते हैं ।

६५२--आइंटमेन्ट आयोडीन कम्पौन्ड ।

इसको बढीहुई रसौली और सूजीहुई जगहपर लगातेहैं गंज और सूखी खुजलीको मुफीद है, जिसके अंडकोश बढ़गयेहों या सूजगयेहो तो इस्में पारे और आयोडीन का मरहम दोनों आधे आधे मिलाकर लगावे तो आराम होताहै ।

६५३-आइन्टमेन्ट टीरीविन्थ ।

मरज सोजशीमें इस्की मालिश करते हैं ।

६५४--आइन्टमेंट जिसाये ऐक्सइड ।

गीलीखुजली और फोडेको जिसमें जलन हो ऐसे घावोंको अग्निदग्ध और फूटेहुये छालोंपर लगानेसे ठंढक और आराम होता है ।

६५५--आइन्टमेन्ट पीसिसलीकोइड ।

जिल्दकी पुरानी बीमारी और गंजपर लगानेसे फायदा होताहै ।

६५६--आइन्टमेन्ट पल्मवाय एसीटास ।

इसको सूजन सडेहुये और पीबदार घावोंपर लगानेसे आराम होता है ।

६५७—आइन्टमेन्ट पलम्बाई कार्वोनास ।

ठंढक डालनेके वास्ते जखमोंपर लगातेहैं ।

६५८—आइन्टमेन्ट औफ कारवो औकलिड ।

सफेदका मरहम—यह जखमोंको भरदेताहै ।

६५९—आइन्टमेन्ट औफ मरक्यूरी ।

त्वचाके रोगोंमें लगाना ।

६६०—आइन्टमेन्ट औफ सल्फर ।

गंधक का मरहम पामा खारिशमें मालिश करना ।

६६१--आइन्टमेन्ट औफ आयोडाइड औफ सल्फ ।

गंज भैंसादाद इपटाइकोमें मलना ।

६६२—मर्हम पिल्मवाय आयोडाइडम् ।

फोडा और जखम तथा वहुत दिनोंकी उठीहुई गांठ और तिल्ली व जिगरकी सूजनपर लगानेसे आराम होताहै ।

६६३—आइन्टमेन्ट केडमी आयोडाइड ।

इसको जोडोंकी सूजनपर लगातेहैं ।

६६४—आइन्टमेन्ट आल्की होलीनम् ।

इसको कोढ और खाज पर लगातेहैं ।

६६५—आइन्टमेन्ट एलोइज कम्पौन्ड ।

लडकोंके पेटपर लगानेसे दर्द और आफरा तथा कीडे मरजातेहैं ।

६६६—आइन्टमेन्ट अर्जनटाईनाईट्रास ।

इसको सूजनोंपर लगाते और दुखती हुई आँखोंपर तथा सोजाकमें वत्ती लगाते हैं ।

६६७—आइन्टमेन्ट इसट्रानजनट ।

इसको अंडकोशके बढजानेके काममें लाते हैं ।

६६८—आइन्टमेन्ट आरी ।

यह सोने धातुसे बनताहै । इसके इस्तेमालसे गांठियेको फायदा होता है ।

६६९—आइन्टमेन्ट बालस्मपेरु ।

इसको स्तनोंके जखमपर लगाते हैं ।

६७०—आइन्टमेन्ट कालारसिओपीएटम् ।

इसको बवासीरपर लगाते हैं ।

६७१—आइन्टमेन्ट केलोमिसलेनस ।

इसको दूधके जलेपर लगानेसे फायदा होताहै ।

६७२—आइन्टमेन्ट कालसिस किलोराइड ।

इसको पुरानी गदूदोंकी सूजनपर लगातेहैं ।

६७३—आइन्टमेन्ट कन्थारीडिसकम् हैड्राजीराय ।

इसको पुराने फोडेपर लगाते हैं ।

६७४—आइन्टमेन्ट कैटीक्यू कम्पौन्ड ।

इसको उपदंशके जखम भरनेको लगाते हैं ।

६७५—आइन्टमेन्ट गाले कम कुपराय ।

यह खोपडीके दादको मुफीद है ।

६७६—आइन्टमेन्ट हैड्रार्जीराय कम एमोनिया किलर॥

इसको गडूहोंके बढनेमें लगाते हैं ।

६७७—आइन्टमेन्ट हैड्रार्जीराय बाईकिलोराइड।

इसको दाद गंज और उपदंशके ज़ख़मोंपर लगातेहैं ।

६७८—आइन्टमेन्ट एन्यूला ।

इसको खुजलीपर लगानेसे फायदा होताहै ।

६७९—आइन्टमेन्ट जड्रीफा ।

इसको बवासीरके मसोंपर लगातेहैं ।

६८०—आइन्टमेन्ट लिकोपोडी ।

इसको रगड और नामर्दी में लगानेसे फायदा होताहै ।

६८१—आइन्टमेन्ट नकथालीने ।

इसको दादोंपर लगातेहैं ।

६८२—आइन्टमेन्ट कोनैन ।

इसको शीतज्वरवालेके कमरकी हड्डीपर मलतेहैं ।

६८३—आइन्टमेन्ट कालोसिथ ।

इसको वस्तीस्थान पर लगानेसे दस्त होतेहैं ।

६८४—आइन्टमेन्ट स्यूबीरिसअसटी ।

इसको बवासीरके मसोंपर लगानेसे फायदा होताहै ।

अब लिनीमेन्ट अर्थात् दर्दोंपर मलनेकी दवा या तेल लिखे जातेहैं ।

६८५—लिनीमेन्ट एकोनाइट ।

जिसजगह अत्यन्त दर्दहो जैसे गांठिया इत्यादि में तो इसके मलनेसे फौरन आराम होताहै ।

६८६–पेनकिलर ।

बाहर मलनेसे दर्दको आराम होताहै और डंकका जहर मरताहै । खिलानेसे पेटका दर्द आराम होताहै मात्रा २० बूंदतक ।

६८७–लिनीमेन्ट एमोनिया ।

त्वचाको लाल करनेवाला, इसको गले और गांठियेके दर्दमें मलतेहैं ।

६८८–लिनीमेन्ट विलाडोना ।

इसको पट्ठों और गांठिआके दर्दपर मलतेहैं ।

६८९–लिनीमेन्ट एमोनिया कम्पौंड ।

दर्दोंपर मलनेसे फायदा होताहै । लिनीमेन्ट किरारीनेदस खुजली तथा दादपर मलनेसे फायदा होताहै ।

६९०–लिनीमेन्ट विलाडोना व किलोरोफार्माई ।

इसको रीढपर लगानेसे कमरका दर्द जाता है ।

६९१–लिनीमेन्ट कालोसिंथ ।

इसको १ ड्राम सवेरे और रातको मलनेसे दस्त आताहै और शोथ दूर होताहै ।

६९२–लिनीमेन्ट गिलीसीरीन ।

गांठिया और पट्ठोंके दर्दपर मलनेसे फायदा होताहै । मोच और कुचलेहुये, जले तथा छिलेपर, फटे तथा गले हाथ पैरों पर लगानेसे आराम होताहै । स्तनोंके घाव और शोथके वास्ते वेखौफ दवाहै ।

६९३–लिनीमेन्ट जूनीपर ।

इसको गंजपर लगानेसे आराम होताहै ।

६९४–लिनीमेन्ट जकोराइस असली ।

कण्ठमाला और गलेके जखमोंको मुफीदहै ।

६९५—लिनीमेन्ट सपोनिस कम्पौन्ड ।

खुजली और दर्दोंको आराम करताहै ।

६९६—लिनीमेन्ट अम्बर मुश्क ।

सुस्तीवालेकी इन्द्रियके पट्ठोंपर लगानेसे आदमी कामका होजाताहै । अफीमके साथभी लगातेहैं ।

६९७—लिनीमेन्ट टेरेविन्थ ।

इसको दर्द और जलेहुये पर लगानेसे आराम होताहै ।

६९८—लिलीमेन्ट टेरेविन्थ एसीटीकम् ।

इसको तपेदिक और सिलकी बीमारीमें छातीपर मलनेसे फायदा होताहै ।

६९९—लिनीमेन्ट केम्फर ।

इसको दर्दोंपर लगानेसे दर्दको दूर करताहै । चोट और मोच तथा गांठियाके दर्दोंपर मुफीदहै ।

७००—लिनीमेन्ट केन्थारिडिस ।

यह पुराने दर्द और चोटके दर्दको उखाड करके खो इसी से सुस्तीमें इन्द्रिय पर उपाड करतेहैं ।

७०१--लिनीमेंट किलोराफार्मायको ।

किसी अंगमें जब दर्दकी बडी तकलीफ हो तब इसको लगातेहैं।

७०२--लिनीमेंट क्रोटोनिसको ।

यह तिला और मालिशका तेलहै । दर्द और सुस्तपट्ठोंपर लगातेहैं । नामर्दीमें इन्द्रियपर मलतेहैं । नामर्दीको वडा मुफीद परीक्षा कियागया है ।

७०३--लिनीमेन्ट हैड्रार्जीराय ।

इसको पुरानी रसौली और पट्ठोंपर मलनेसे फायदा होता है जोडोंके दर्दको खोता है। पुराने घावोंपर इसका तर किया हुवा कपडा रखनेसे आराम होताहै।

७०४--लिनीमेंट आयोडीन केम्प ।

जोडोंका दर्द शोथ और वायगोले तथा फोडे और रसोली व घेघेपर लगानेसे आराम होताहै ।

७०५--लिनीमेन्ट ओप्याईको ।

दर्दोंपर इसकी मालिश करनेसे फौरन आराम होताहै ।

७०६--लिनीमेन्ट सपोनस ।

यह गांठिया और जोडोके दर्दको फौरन् खोताहै ।

७०७--लिनीमेन्ट ऑफ सोप ।

मोचमें मालिश करना ।

७०८--लिनीमेन्ट लाइमकेर आइल ।

जलनेमें मालिश ।

७०९--लिनीमेन्ट मरक्यूरी ।

कफहर फैलानेवाला मालिश ।

अब मुत्फरकात दवाएँ अकारादि क्रमसे लिखीजातीहैं।

७१०--ओलीइट जिंक ।

इसको शिरके त्वचारोगोमें बुरससे लगाकर कपडा ढकना ।

७११--ओलीरीजन क्यूवीवसी ।

यह सुजाक और ज्यादह छीक आनेमें ५ से ३० बूंद तक सोल्यूशन ।

७१२--औक्साइड औफ विसमिथ ।

ग्राही काबिज बृंहण बलदायक ५ से १५ ग्रेन चूर्ण गोंदमें ।

७१३--अर्जन टाई नैट्रास (चांदीका तेजाब)

इसको मृगी,राशा,छातीका दर्द,दर्दमेदा,रुधिरपडना,आंतोंका ज़ख्म, जोफ मेदा,और पुरानी संग्रहणीमें देनेसे फायदा होता है । सुस्ती और आतशकके घावोपर बाहर लगाते हैं । दुखतीहुई आं-

खोंके वास्ते कनपटियों पर लगानेसे आराम करता है। साँप और बावलेकुत्तेके काटे हुये जखमको मुफीद है सोजाक, प्रसूत और अतिसारमें इसकी पिचकारी करते हैं। मात्रा $\frac{१}{६}$ से $\frac{१}{३}$ ग्रेन तक।

७१४–अर्जन टाईओक्साईडम्।

पुराना अजीर्ण और मेदेके रोगोंमें खूनथूकने या खूनके जारी होनेमें पुरानेदस्तोंमें इस्को थोडी अफीमके साथ देते हैं। आतशकके जखम, कलेजेका दर्द, मृगीको दूरकरता है। मात्रा $\frac{१}{४}$ से २ ग्रेन तक।

७१५–अर्जन टाईसाई नाईडम्।

आतशकके मर्जोंमें देनेसे या बाहरलगानेसे आराम होता है। मात्रा $\frac{१}{१६}$ से $\frac{१}{२}$ ग्रेन तक।

७१६–अर्जन टाईकिलोराईडम्।

मृगी, उपदंश, पुरानीपेचिश, बदहजमी और तपेदिकमें इसको देते हैं। मात्रा १ से ५ ग्रेन तक।

७१७–अर्जन टाईआयोडाईकम्।

इसको राशा, मृगी, आतशक, पट्ठेका दर्द, दर्दमेदा, और बदहजमीमें देते हैं। मात्रा $\frac{१}{४}$ से $\frac{१}{३}$ ग्रेन तक।

७१८–आरम गोल्ड व सोना।

इसको उपदंश, कंठमाला, कोढ, कमीहैज में देते हैं। जबना और मसूढोंपर बाहर मला करतेहै। मात्रा $\frac{१}{४}$ से १ ग्रेन तक।

७१९–आरम किलोराईडम्।

यह उपदंशके दूसरेदर्जेमें बहुत मुफीद हैं माफिक रसकपूरके मात्रा $\frac{१}{२०}$ से $\frac{१}{१०}$ ग्रेन तक।

७२०–आरम सोडोकिलो राईडम्।

इसको भी उपदंशमें देते हैं तो फायदा होताहै मात्रा $\frac{१}{४०}$ से $\frac{१}{१२}$ ग्रेन तक।

७२१—आलमीन ।

यह खूनको साफ करनेवालाहै ।

७२२—अलाटेरिन ।

यहपानीके माफिक दस्तलाती है । मात्रा १/४० से १/१० ग्रेन तक।

७२३—आकाशया गमाय ।

लुवाब इसका आँव लहू की पेचिश बंदकरनेको देते हैं । खां-सीको दूर करता है जलेहुयेपर इसका पलस्तर लगाते हैं । मसाने और इन्द्रियकी जलनमें भी देते हैं ।

७२४—आरसनिक (शंखिया) ।

तीक्ष्ण विषहै, खुश्कीकरता, वारीके रोगोंमें मात्रा १ ग्रेन का आठवां भाग गोली या सोल्यूशनमें ।

७२५—ऐसंस औफ पीपरमेन्ट ।

पाचक । मात्रा १० बूंद मिकचर ।

७२६—ओपियम (अफीम) नारकोटिक ।

काबिज, विष १/२ से २ ग्रेन ।

७२७—औड चारकोल ।

ऐटीसिपटिक ६० ग्रेनतक चूर्ण ।

७२८ ओलीइट आफ मर्क्यूरी (पारेसे बनता है)

फिरंग सूजन या शूल पर लगानेको ।

७२९—औक्साइड ऑफ जिंक ।

मृगीमें २ से १० ग्रेन तक गोली ।

७३०—औक्साइड औफ सिलवर ।

बलदायक, मृगीमें १/२ से २ ग्रेन गोली ।

७३१—औक्साइड औफ लिड ।

बाहर लगाना ग्राही काबिज खाया नहीं जाता ।

(आयोडाइडऔफ़सोडियम्)

मृगी, आतशक, गांठियामें ५ से १० ग्रेनतक चूर्ण ।

७३२-आलकोहोल एमाईलीक्म व अवसोल्यूट ।

इसका नाम फ्यूसेलआयल है, जरासी गरमीसे जल उठता है, सख्तजहर है ।

७३३-अमायल नैटिरास ।

नींद लाता है । दमेकी बीमारीको फौरन् रोकता है । कलेजेका कठिन दर्द, और शिरके दर्द को रोकता है, आधाशीशीकोभी दूर करताहै । जब दमके उठनेमें या दिलके काममें दर्द हो अथवा सांस न लियाजावे तो इसको लगानेसे फायदा होता है । हैजा और गाडीकी हाल झोल तथा चढेहुये बुखारमें नब्जपर मलनेसे बुखार उतर जाता है । इस टिकिनिया और कुचलेके चढे हुये जहरको उतारता । इसको २ या ३ बूंद सुंघाते हैं ।

७३४-अमाईलम् पल्व (सतगेहूं)

सूजनको बिठानेवाला इसको पिचकारीकी तरह गुदामें देनेसे गुदाका सोथ, जलना, आँव, लहूकी पेचिश, अतिसार और बुखारोंमें फायदा करता है ।

७३५-आयोडीन ।

खूनको साफ करनेवाली । जहरका असर खोनेवाली । जलानेवाली । कीडे और फोडेका नाशक उभारोंको दबाने वाली अक्सीर दवाहै । पुरानी रतूबतको रोकतीहै । जलंधर, कण्ठमाला, उपदंश, जोडोंका दर्द और सूजनको दूर करतीहै । मोच और चोटके दर्दकोभी दूरकरतीहै । कलेजेकी तिल्ली, दर्द जखम जो उपदंशसे हुवा हो भाफ इसकी दूर करदेतीहै । बढेहुये अण्डकोशोंको और मृगीको खोती है चूंचियों को छोटी और सख्तकरती है । मात्रा ½ से २ ग्रेन तक ।

७३६–आयडोफार्म ।

खांसी और तपेदिक वाले रोगीको जब किसी चीजसे फायदा नही होता तो इसको देनेसे होजाता है । उपदंशके जख्मको तो तुर्तफुर्तमे भरताहै। एकपैरका दर्द और नीचेके धड़को तथा पट्ठोके दर्दको कण्ठमाला और आतशकको आराम करनेके वास्ते बाहर लगातेहै। गंज, बवासीर, गुदा, अग्निदग्ध और गीली खुजलीको मुफीदहै। मात्रा ½ से २ ग्रेन तक।

७३७–अरगोटीन ।

हमलके बच्चा जनानेको और सोजाकको अगर पसीना न रुकनाहोतो इससे रुकजाताहै। मात्रा १ से ५ ग्रेन तक।

७३८–अरगट ।

आर्तव वाह रीह नाशक और अर्गोटीनके भी सम्पूर्ण गुण इससे पायेजातेहैं। मात्रा ३० ग्रेन खेशांदा ।

७३९–इस्कोयल ।

संचालन, कफहर। मात्रा २ ग्रेन चूर्ण।

७४०–इस्केमोनियम (सकमूनिया)

रेचन दस्तावर १० ग्रेन चूर्ण ।

७४१–ईन्थर (खालिस)

दमा, मूर्च्छा, दर्द छाती, मेदेकी ऐंठन,वायगोला,हुचकी,पट्ठोका धडकना, शिरदर्द, पित्तेकी पथरी, दीमागकी सोजिश, पसीना, मूत्राघात,जुकाम,खांसी को फायदेमन्द है। अगर जो आंत फोतेमे उतर गई हो या फँसगई हो तो उसपर यह दवा डालनेसे आंत पेटमें चलीजातीहैं।इसका नाम ईथरसल्फभीहै इसीसे इस्प्रिटईथर सल्फ बनताहै । इसीसे वर्फभी जमाते हैं। मात्रा ३० से ९० बूंद तक

७४२–ईथरऐसीटिक ।

दमा नकरस अर्थात् गांठिया, वायगोला, हैजा, खांसी और गांठियेके जोडोंपर लगाते हैं। इसके द्वारा छाला लानेवाला अर्क उम्दा बनताहै। मात्रा २० से ६० बूंद तक।

७४३–इन्डीगोनील ।

इसको मृगी, वायगोला और राशामें देते हैं। बवासीरके मसोंपर लगातेहैं। मात्रा २० से ६० ग्रेन तक।

७४४–इस्को पेरायन ।

यह पेशाब लानेवाला है।

७४५–इष्टिकिनिया ।

कुचलेका जौहर–यह बाह अर्थात् कामशक्तिको पुष्ट करती है बुखारको दूर करती है, पाचक है, पट्ठोंको ताकत देतीहै, मृगीमेंभी देतेहैं, दर्दोंको दूर करती है, वातव्याधिके वास्ते उत्तम दवाहै मात्रा ⅓ एक ग्रेनका तीसवां हिस्सा गोली में।

७४६–ईरीडीन ।

खुन साफ करनेवाला, थूक पैदा करनेवाला और पेटके केचनोंको मारनेवाला है। मात्रा १ से ५ ग्रेन तक।

७४७–इसटिल्लीनजिन ।

इसको सबतरहकी खांसीमें देनेसे फायदा होताहै–मात्रा १ बूंद लुवाबके साथ।

७४८–इलान्थस ।

इसको पेचिश, सोजाक, प्रमेह और धातुके पतली पड जानेमें देते हैं।

७४९–ईपोतार्इनिन ।

इसको जिगरकी एँठन और कब्जमें देतेहैं। मात्रा ½ से २ ग्रेन तक।

७५०—इमीटीना ।

इससे जहर खायेहुयेको उल्टी करातेहैं तथा कफके निकालनें कोभी वमन करातेहैं । खांसी, दमा, उपदंश, गांठिया और जलं-धरमें खिलाते हैं ।

७५१—इर्रीडाइन ।

यह उल्टी, दस्त और मूत्र लाताहै दिलको पुष्ट करता है और ऑतोंके कार्य्यको बढाताहै । गुरदे और मसानेकी बीमारीको मुफीदहै । मात्रा ½ से ⅙ ग्रेन तक ।

७५२—एलोज (एलवा)

यह दोकिस्म का होताहै । एक सोकोतरीन दूसरा बारबेडोज ज्यादा खर्चमें आता है । कब्ज, वायगोला, बदहज्मी तथा जवान स्त्रीका ऋतुनाश खुलजाताहै । इससे पिचकारी बच्चोंकी गुदामें करनेसे चुनचुने मरजातेहैं और यह उत्तम जुलाब है । मात्रा २ से २५ ग्रेन तक ।

७५३—एन्टीमोनीटार्टरेटम् ।

इसको टार्ट्राइमीटिक भी कहते हैं । इससे बुखार उतर जाताहै फेफडेकी बीमारियोंको मुफीद है । भोजन और हवाकी नालीके शोथ को उतारता है । बवासीर सख्तखांसीको खो देताहै । हैजा, जुकाम सोजाक और गांठियामें देनेसे फायदा होताहै । मात्रा $\frac{1}{16}$ से ½ ग्रेन तक ।

७५४—एन्टीमोनीकिलोराईडम् लीकर ।

यह जलानेवाली दवा है । इसको फोडे फुनसी और बदोंके बिठानेको बाहर लगाते हैं ।

७५५—एन्टीमोनी ओक्साईडम् ।

पसीना लानेवाला, त्वचारोग, गांठिया, बुखार और खांसीमें देनेसे फायदा होताहै । मात्रा १ से ३ गिरेन तक ।

७५६–एन्टीमोनीपलविस।

जेमिस पौन्डर वा जेकोवाई वेराई-गर्मीके थोडे बुखारोंमें तथा शोथ फेफडे और आवाजकी नालीमें बतौर खून साफ करनेके और वास्ते दस्त लानेको देतेहैं। जलंधर और पित्तकी बदहज्मी को दूर करताहै मात्रा १ से ६ ग्रेन तक।

७५७–एन्टीमोनीसल्फ।

खूनको साफ करनेवाला, पसीना लानेवाला, वमन लानेवाला पुरानी गांठिया और दोयम दर्जे उपदंशमें गिलिटियोंके बढजाने और कलेजेके पुराने रोगोंमें देतेहै मात्रा १ से ५ ग्रेन तक।

७५८–एकोनेटिया।

इसका मरहम जाड़ोंके दर्दको मुफीदहै। गांठियाके दर्दकोभी मुफीदहै।

७५९–एलोइन।

दस्तावरहै हैज लाताहै। मात्रा १ हिस्सेसे १ ग्रेन तक।

७६०–एट्रोपीया।

इसको आंखोंमें डालनेसे ज्योतिको फायदा होता है।

७६१–एसकिलेपीडीन।

कफको निकालनेवाला, पसीना लानेवाला और पुष्ट करनेवाला है। मात्रा १ से ५ ग्रेन तक दिनमें ३-६ दफे देना।

७६२–एसाफोटीडा।

कफको निकालताहै, कास, श्वास, वायगोला, पट्ठोंकी कमजोरी हैजा और बदहजमीको मुफीदहै। मात्रा ५ से २० ग्रेन।

७६३–एपीकाकाना।

कफहर्ता वामक ग्राही। मात्रा ½ से २ ग्रेन तक कफहर्ता, २० ग्रेन तक वामक चूर्ण।

७६४–एमोनिया वेन्जाइटिस ।

इसको पसीना और पेशाब लानेके वास्ते देतेहैं। पुरानीगांठिया, खांसी, नजूल, मसाना, जलंधर को मुफीद है पेशाब लाता है। मात्रा १० से २० ग्रेन तक ।

७६५–एमोनिया कार्ब ।

वायगोला, मृगी, मूर्च्छा, बूढेकी पुरानी खांसी और कफ या दमा को मुफीदहै ज़हरके असरको खोताहै। मात्रा १० ग्रेन तक।

७६६–एमोनिया फास्फरस ।

इसको गांठिया और पेशाबकी पथरीमें देतेहैं। सूजनको उतारताहै। मात्रा ५ से २० ग्रेन तक ।

७६७–एमोनिया विरोमाइडम् ।

यह नींद लानेवाला खूनको साफकरनेवाला और दर्द को दूर करनेवालाहै। जब पट्ठोंकी बीमारीमें नींद नहीं आती होतो इससे आजाती है। उन्माद और वायगोलेको मुफीद है। आधाशीशी और मृगीमेंभी देतेहैं खांसीको दूर करतीहै। तिल्लीके वास्ते यह दवा परीक्षा कीगई है। मात्रा ५ से २० ग्रेन तक।

७६८–एमोनिया किलोराईड ।

अर्थात् क्लोराइड ऑफ एमोनियम् स्त्रीधर्मलाताहै, ठंढाहै, पट्ठेका दर्द, कंठमाला और गर्मीकी बीमारीसे जो गदूद फूल जावे उसको बिठाताहै। दर्द कलेजा, पेचिश, आंव,दस्त बुखार, कलेजेके रोग, अन्डकोशोंमें पानी उतर आना, रसौली और मसोंको मुफीद है। दर्द छातीको खोताहै। तपेदिकमें फायदा करताहै। मात्रा ५ से २० ग्रेन तक।

७६९–एमोनिया आयोडाईडम्।

फायदा इसका मानिन्द आयोडाइड पोटास यानी हैडिरोपोटास से अच्छाहै। जब उपदंशमें हैड्रोपोटास काम नहीं देता तो यह फायदा करताहै आतशककी वढी हुई रसौलीको अच्छा कर देताहै मात्रा ३ से ५ ग्रेन तक।

७७०–एल्यो मेनेटिड कापर।

यह काष्टिकवत् बाहर लगाया जाताहै।

७७१–एसीटेन्ट औफ पोटासियम्।

विरेचन तेजपाचन। मात्रा १० से ६० ग्रेन तक मिकचर।

७७२–इसीटेट औफ कापर (जंगार)

सडे जखम और उपदंशमें लगाया जाताहै।

७७३–एलम (फिटकडी)

काविज़ वारीके रोगोंमें। मात्रा १० से २० ग्रेन तक चूर्ण।

७७४–एमूनाइकम् (उस्क)

वलग़मनाशक मात्रा १० से २० ग्रेन तक।

७७५–एनीमल चारकोल।

(जातविक कोयला) यह मारफीया और एकोनाइटका विपनाशक और सडन को नाश करता है, मात्रा २ से ६० ग्रेन चूर्ण।

७७६–केलसिस हैड्रास।

इसको लीकर दूधमें मिलाकर पीनेसे दूध जिसको हज़म न होताहो तो होने लगैगा अगर अलसी के तेलमें मिलाकर झुलसे और जलेहुये पर लगायाजावे तुरत आराम होगा और ठंढक पड जायगी और इसीसे विलैकवाश वनता है, ज़ो उपदंश के जखम और सोजेको फौरन उतारताहै।

७७७--केलसिस हाईपो फासफरास ।

इसको खांसी और तपेदिकमें तथा कमजोरीके वास्ते अक्सीर जानो ।

७७८--किरोटन फिलोरल हैडरेट ।

दर्दको रोकता और दस्तावर है । तथा खांसीकोभी दूर करता है । इस्के देनेसे निंद्रा खुब आती है । दर्द गुर्देको दूर करता है । दस्त पेचिश और हेजा तथा श्वास और जावडेके दर्दमें देनेसे फायदा होता है, पित्तके दर्द सर को भी मुफीदहै ।

७७९--किलोराफार्म ।

यह दर्दोंका दूर करनेवाला है, पट्ठोंके दर्दमें इसको देते हैं, उलटीको रोकताहै, खांसी और दमेके वास्ते मुफीद है तथा सूखीखाजका पक्का इलाजहै, गुर्देकी कंकरियोंको बाहर निकाल देताहै। अकडवायु को मुफीद है, दर्द मेदा और बायगोले को खोता है, इसको जर्राहीकी चीर फाड के वास्ते बेहोश करने के लिये सुँघाते हैं तथा वावटे दूर करताहैं । गफलत और वेचैनी का रक्षक है । मात्रा २ से १० बूंद तक ।

७८०--किलोरोडीन ।

खांसी, जुकाम, बायगोला, अतिसार, आँवकी पेचिस, बुखार गांठिया और हैजेमें देते हैं । तो बडा फायदा होता है, उत्तम है । तथा किलोरोडीन कालिसब्रोनकी उत्तम होती है । उससे उतरकर रिचर्ड फीमनकी होती है बाकी देसीभी बनती है जिसका नुसखा कम्पौन्ड दवाइंयोंमें लिखाजायगा ।

७८१--कुपराय सल्या ।

यह पट्ठोंको पुष्ट करताहै । वमन कराताहै । विष पीडित और उपदंशरोगीको खिलाते हैं। नींबूके अर्कके साथ खूनको बंद करताहैं।

इसको दस्त और मरोडोंमेंभी देते हैं। मृगी और खांसीको खोताहै राशेको मुफीदहै। गीली खुजली और दुखतीहुई आंखों को मुफीद है उपदंश और सोजाकके जखमोंको पिचकारी लगानेसे आराम करताहै। मात्रा ¼ से २ ग्रेन तक।

७८२ कुपराय सब असीटास।

इसका मरहम लगातेहैं तथा सिर्के या शहतमें मिलाकर गांठ मसे और रसोलियों पर मलते हैं।

७८३ कुपराय एलोमेनस।

इसकी पिचकारी सोजाक में मुफीदहै। आंखोंकी सब बीमारी को दूरकरती है। रतूवतोंको बन्द करती है।

७८४–क्रियोंजूट।

इससे उपदंशके घावोंको फायदा होताहै, डाढ और दांतके दर्द को दूर करताहै। जारीखूनको बंद करताहै। गिरनी और चक्कर तथा दौरेको मुफीदहै। गांठिया, उन्माद, हैजा, सोजाक, और कुरहको मुफीदहै। बायगोला और गर्भवती स्त्रीकोभी मुफीद है। जले व भुलसे और त्वचाके रोगोंपर इसका मरहम लगाते हैं यह खांसीके बलगमको खोताहै। छर्दि और सडन नाशक है। मात्रा२ बूंद ड्राफ्ट।

७८५–कोडिन या कोडीना या कोडिया जियावतूस।

पेशाबका ज्यादा आना और मीठा होनेमें देतेहैं थोडी नींद लाताहै और क्षयी खांसी को दूर करताहै तथा शर्कराप्रमेहको हरताहै। मात्रा ½ ग्रेनसे १ या २ ग्रेन तक।

७८६–कोनैन या कीनीया।

कोनैन भूख बढातीहै, हाजिमहै, कमजोरी और कमी खूनकी बीमारियोंमें तथा पट्ठेका दर्द और आधासीसीमें जाड़का दर्द या तिजारी चौथैयेमें या जाडेका बुखार और नित्य ज्वरमें दो २

पहले २॥ रत्ती देनेसे बुखारका आना बंद होजाताहै प्यास और भोजनके वास्ते उसदिन दूधदेना चाहिये और बारीके दिन १ मात्रा २॥ रत्तीकी उसदिन सबेरेभी देनी चाहिये । बाकीमात्रा इसप्रकार जानना चाहिये—हावर्ड कोनैन १ से १० ग्रेन तक ।कोनैन लकटास ३ से ९ ग्रेन । कोनैनसेलीसीलास ३ से १० ग्रेन ।कोनैनटोनिस २ से ९ग्रेन ।कोनैनविलीरयन १ से ३ ग्रेन । क्यूनेटम हिंदुस्तानी कुनैन ३ से ४ ग्रेन ।कोनैन फेरोपरशीअस ३ से ५ ग्रेन । कोनैन फ्री आयोडाईडम और कोनैन हैड्रायोडिस आयोडयूरेटा२ग्रेन।कोनैन हैड्रोबिरोमास,कोनैनफस्फास यह सब ऊपर के मुरक्कब कीमती हैं ।

७८७—कैपसीनीन ।

जाडेका बुखार जैसे तिजारी चौथिया तथा हैजा और अतिसार तथा बदहजमीमें कोनैनके साथ देतेहैं और राईके साथ दर्दों पर लेप करते हैं ।

७८८—कोनीया अर्थात् कोनायम का जौहर ।

इसको खांसीमें देनेसे फायदा होताहै बडा, मुफीद है ।

७८९—कोनीवा ।

यह खूनको साफ करनेमें उसबेके समान है ।

७९०—कोटो ।

इसको दस्त, गांठियावाय, डाढ तथा गांठियेके दर्दमें देतेहैं ।

७९१—कालोफाइलिन ।

पुष्टहै, खूनको साफ करनेवाला है । असर इसका बच्चेदानी पर होताहै, मात्रा $\frac{1}{4}$ से १ ग्रेन तक ।

७९२—काफीन ।

तबियत चुस्त व चालाक करताहै,नींद और सुस्तीको दूर करताहै, दिलको पुष्ट करताहै, जलंधर और खांसीको मुफीद है ।

७९३—किराईसेरवीयन अर्थात् गोवापाउन्डर।

चमला दाद और गंजपर लगाना चाहिये।

७९४—क्नी हैड्रोकिलोरस।

यह कुनैनके बराबर है।

७९५—कोनीन हैड्रोकिलोरास अर्थात् हैड्रो क्लोरेट औफ कोनैन।

भोजन, हवा की नाली, गर्भाशय, और सब गुदाके जखमोंपर जब दवा लगाईजाती है तो दर्द जाता रहताहै। अफीमकी आदत छुडाता और कमजोर पट्ठोंको ताकत देताहै, अंगको शून्य करता, कारनिया और प्रेकस आदिकी स्पर्शशक्ति को घटाताहै। इसका असर ३मिनटसे आधे घन्टे तक रहताहै। मात्रा ½ से १ ग्रेन तक।

७९६—कैटीक्यू पिलीडम्।

इसको दस्त रतूबत और रक्तातिसार तथा खांसीके बंद करने को देतेहैं, मरहममें डालतेहैं। मात्रा १० से ३० ग्रेन तक।

७९७—क्रिमिस मिनरल वा एन्टी मोनीसल्फ।

इसको फेफडेका शोथ और गांठिया वाय में देतेहैं। मात्रा १ से ५ ग्रेन तक।

७९८—कालो संयपल्व (इन्द्रायण का गूदा)

तेजरेचन करता। मात्रा ८ ग्रेन गोली।

७९९—काडलिभर आयल (मच्छीका तेल)

बलदायक, क्षयी नाशक, १ ड्राम से १ औंस तक दूधके साथ।

८००—काइन।

चीनियां गोंद-काबिज ग्राही गर्भधारणकरता। मात्रा १० से ३० ग्रेन तक शक्करके साथ।

८०१—क्लोराइड औफ एमोनियम (साफ नौसादर)

पाचन गुल्मशूल प्लीहाहर्ता । मात्रा ५ से १० ग्रेन मिक्चर या चूर्ण ।

८०२—काष्टर आयल ।

दस्तावर अनुलोमन । मात्रा १ से ४ ड्राम तक ड्राफ्ट दूधके साथ ।

८०३—गमएमोनिया एसाय ।

इसको कफनिकालने और पित्तकी कमी करने को तथा निकालने को देतेहैं । पेशाव और स्त्रीधर्म लानेके वास्ते देते हैं । बाहर फोडा बैठानेके वास्ते लगातेहैं । मात्रा १० से २० ग्रेन तक ।

८०४—गमवोज्या ।

इसका जुलाब जलंधर की बीमारीमें देते हैं, मात्रा२से५ग्रेन तक।

८०५—गमरूवरम् वायुके लिपटिस ।

इसको दस्त और आंव बन्द करनेके वास्ते देतेहैं । तिजारी चौथियेमेंभी देतेहैं । मात्रा १० से ३० ग्रेन ।

८०६—गम वाईकम् ।

यह उपदंश गांठिया में मुफीदहै । मूत्र स्त्रीधर्म्म और पसीना लाताहै।खूनको साफ करताहै।मात्रा १०से२०ग्रेन तक उसबेके साथ।

८०७—गमजूनीपर ।

पसीना और पेशाब लाताहै । जलंधर को मुफीदहै । मात्रा १ से ३० ग्रेन तक ।

८०८—गमकाईनी ।

रुधिरको बंदकरनेवाला काविजहै । दस्त और पेचिशमेंभी देतेहैं । शीतज्वरके वास्ते मुफीद है । सोजाक को फायदा करताहै मात्रा १० से ३० ग्रेन तक ।

८०९—गममेसटिस ।

इसको दस्त बंद करनेके वास्ते देतेहैं ।

८१०—गममुर ।

इसको स्त्रीधर्म्म जारीकरनेके वास्ते, पुरानी खांसी और खून बंद करनेके वास्ते देतेहैं । अंडकोश और तिल्लीके बढजानेको मुफीदहै, मात्रा १० से ३० ग्रेन तक ।

८११—गमइस्केमोनी ।

जलंधरके वास्ते जुलाबहै वदहजमी आफरा और कब्जके वास्ते मुफीदहै । मात्रा १० से १५ ग्रेन ।

८१२—गाल्ज (माजूफल)

काबिज ग्राही । मात्रा ५ से १५ ग्रेन तक ।

८१३—गिलसरीन ।

नर्म करने वाला १ से २ ड्राम तक मिकचर ।

८१४—जिनसाय एसीटास ।

इसकी पिचकारी सोजाक और शतरकी रतूबतको बंद करतीहै । दुखती हुई आंखोंमें डालनेसे आराम होताहै मुटाई शरीरके वास्ते मात्रा १ से २ ग्रेन तक, विपखायेको उल्टी करानेके वास्ते मात्रा १० से २० ग्रेन तक इसको खानेके वास्ते कम देते हैं ।

८१५—जिन्साय ओसाइडम् ।

राशा मृगीमें देतेहै मात्रा १ से २ ग्रेन तक ।

८१६—जिन्साय कार्बकिलेमायन ।

यह मरहमोंके काम आताहै ।

८१७—जिनसायलक्टास ।

मृगी और राशेको मुफीदहै । मात्रा २ से ५ ग्रेन तक ।

८१८–जेल्समिन ।

इसको छाती और फेफडेके शोथमें तथा वायगोलेमें देतेहैं मात्रा १/४ से २ ग्रेन तक ।

८१९–जिरेनीन ।

यह खूनके बंद करनेको देतेहैं काबिजहै मात्रा १ से ५ ग्रेन तक ।

८२०–जगलेन्डीनि ।

यह कलेजेके पुराने रोगोंमें मुफीदहै और कब्जको दूर करताहै मात्रा २ से ४ ग्रेन तक ।

८२१–जिसियनरूट ।

बलकर्ता १० से २० ग्रेन चूर्ण ।

८२२–जूनीपर ।

मूत्रल वस्तीशूलहर ४ ग्रेनसे २ ड्राम खेशांदा ।

८२३–जैलप ।

कैथारिटिक विरेचन ३ से १० ग्रेन चूर्ण ।

८२४–जिन्साय क्लोराइडम् ।

इसको उपदंशके जखमोंपर लगातेहैं इसके पतले अर्ककी पिचकारी सोजाकमें करते और जखमोंको धोते हैं ।

८२५–जिन्साय साईनाईडम् व जिन्साय फोसाईनाईडम् ।

इसको राशे और मृगीमें देते हैं, मात्रा १/१६ से १/१२ व दूसरे की १ से ४ ग्रेन तक ।

८२६–जिन्साय साईनाईडम् ।

खनाजीरी अर्थात् गलेके शोथमें आंतों तथा आंखोंके दुखनेपर इसका अंजन डालतेहैं गद्दूदोंके बढजानेमें मरहम इसका लगातेहैं शर्बत इसका उपदंश कंठमालामें देतेहैं । मात्रा १ से ५ ग्रेन तक ।

८२७—जिन्साय ओकसाइडम्।

इसका मरहम जखमोंपर लगानेसे आराम और ठण्ढक पड-जाती है। मात्रा २ से १० ग्रेन तक।

८२८—जिन्साय सल्फ।

कमजोरी और खूनके जारीहोनेमें बायगोला राशा मृगी और जाबडेके दर्दमें तथा कैकरानेवालेको देतेहैं, मुखके भीतरकी बीमारियोंको खोता है सोजाकमें पिचकारी इसकी मुफीदहै। मात्रा १ से २ ग्रेन कयकरानेको १० से २० ग्रेन तक।

८२९—जिन्साय वीलिर्यन।

इसको पुष्टाईके वास्ते नामर्दीमें राशा मृगी बायगोला दर्द पट्ठा प्रमेहको फायदा करताहै,उम्दा मुरक्कबहै। मात्रा १ से २ग्रेन तक।

८३०—ट्रैगेकेन्थ।

इसको खांसी और दस्तबन्द करनेके वास्ते देतेहैं कामशक्तिको कम करता है। मात्रा २० से ६० ग्रेन तक।

८३१—टेयूया।

इसको उपदंशमें देतेहैं और सोजाकमें इसकी पिचकारी करते हैं।

८३२—टीपीवोका।

हलका भोज्य। दूधके साथ पकाकर यथा रुचि खाना।

८३३—डाइल्यूट वाईट्रक एसिड।

पाचन शूलहर उपदंशहर मात्रा ५ से २ बूंद पानी यह [कटु क्वाथमें।

८३४—डाईल्यूर पारपोरिस एसिड।

बलदायक वाजीकरण मात्रा ५ से २० बूंद पानीके साथ।

८३५—डट्टरायन।

यह दमेके वास्ते बहुत मुफीद है।

८३६–डीजेटेलीन ।

दिलको पुष्ट करता है, जलंधर और गुरदेके रोगोंको छाती और पेटमें मीनी जलंधरकाजमा होजानेमें और कमी खूनमें देते हैं।

८३७–ड्रेगिन्स विडल ।

भीतरसे खून आनेको बन्द करता है जखमोंको भरताहै आम रक्तातिसारको बंद करता है आंखोंको मुफीद है । मात्रा $\frac{1}{2}$ से १ ड्राम तक ।

८३८डाईल्यूट एसीटिक एसिड ।

रुचिकारक १ से २ ड्राम पानीके साथ ।

८३९–डाईल्यूटसलफ्यूरिक एसिड ।

रुचिकारक वलकर्ता पाचन ५ से २० बूंद शर्वतके साथ ।

८४०–डिसकस औफ एट्रोपीन ।

इसको नेत्र रोगोंमें लगाते हैं इस्में $\frac{1}{20}$ ग्रेनमें $\frac{1}{5000}$ ग्रेन सल्फेट आफ एट्रोपीन होताहै ।

८४१–डिसकस औफ कोकियन ।

शरीरका भाग शून्य करनेको वाहर लगाते हैं । इस्में $\frac{1}{[illegible]}$ ग्रेनमें $\frac{1}{800}$ ग्रेन हैड्रोक्लोरेटआफ कोनैन होता है ।-

८४२–थाईमाल ।

इसको बुखार, फेफडा और पसलियोंका सोंथ या दर्दमें देतेहैं वस्ती स्थानके रोगोंको दूर करताहै हैजेमें भी दिया जाता है। मात्रा १ से २ ग्रेन तक ।

८४३–नार्कोटीन ।

वारीका बुखार जैसे तिजारी चौथिया आदिको रोकता है । मात्रा ५ ग्रेन ।

८४४-नीकोटीना।

इसको नजलेमें नस्यलेनेसे छीक आजातीहै दमा, उन्माद, जलंधर तथा कुचला और इष्टिकिनिया के जहरको उतारने वालाहै और पेशाब खूब लाताहै।

८४५-नायट्रिक औफ पोटासियम् (शोरा)

मूत्रल तीक्ष्ण क्षार, मात्रा १० से २० ग्रेन मिकचर।

८४६-नायट्रिक औफ पाइलोकारपियन।

यह वस्तीशूल और शर्करामें हमेशा हित है।

८४७-पाराफीली या वेसलीन।

यह मरहम वनानेके काममें आता है।

८४८-पेलोशिया।

पुरानी जलन मसाना और गुरदेको मुफीद है।

८४९-पाईप्रीन।

वातार्श, सोजाक और जाडेके बुखारको मुफीद है।

८५०-पाईरोथ्रीन।

इसको नामर्दीमें लिंगपर मालिश करते हैं।

८५१-पोपयूलीन।

ताकतवर और वारियोंको रोकनेवाला है, मात्रा ४ से ८ ग्रेन तक।

८५२-प्रुनिन।

पुष्टहै, कफ़को निकालता है, मात्रा १ से २ ग्रेनतक।

८५३-पाईलोकार्पीन।

यह दवा थूक और पसीना लानेवाली, दूध और रतूवतको वढानेवाली, अगर ½ ग्रेनकी पिचकारी त्वचाके भीतर की जावे-तो, पसीना दूध और रतूवत अन्दरकी टपकने लगती है। और

इसका अर्क नेत्रकी ज्योति वढानेके वास्ते आंखोंमें डालते है। तथा कास, श्वास, गलेका रोग, कागका बैठजाना, गर्भाशयकेरोग और उपदंशको मुफीद है। दांतोंका दर्द दूरहोताहै इसकी पिचकारी त्वचाके भीतर लगानेसे तपेदिकको आराम होता है। गर्भाशयमें इसकी पिचकारी $\frac{१}{२}$ ग्रेनकी लगानेसे बच्चा पेटसे बाहर हो जाताहै मात्रा $\frac{१}{२०}$ से $\frac{१}{२}$ ग्रेन तक।

८५४–पोडोफिलिनरीजीना।

यह बायगोलेके वास्ते परीक्षा किया हुवा है मात्रा $\frac{१}{२}$ से १ ग्रेन तक।

८५५–पेनकिलर।

इसको बाहर मलनेसे दर्दको आराम होताहै और डंकका जहर मारताहै। इसको खिलानेसे पेटका दर्द आराम होताहै। मात्रा २० बूंद तक।

८५६–पेपटेन्डीन।

यह जिगरकी बीमारी दस्त और पेचिशमें मुफीद है बुखारोंमें भी देते हैं। मात्रा २ से ४ ग्रेन तक।

८५७–पेपसियन (माल्टे पिपसियन)

मंदाग्नि, अजीर्ण, कृमिरोगमें देना चाहिये२से५ ग्रेन तक चूर्ण।

८५८–परक्लोराइड औफ मरक्यूरी।

उपदंशहर रक्तशोधक मात्रा $\frac{१}{१६}$ ग्रेनसे $\frac{१}{८}$ तक सोल्यूशन।

८५९–प्रीपियर्डचाक (खडियामट्टीसाफकीहुई)

काबिज ग्राही अम्लतानाशक १० से ६० ग्रेन तक चूर्ण मिकचर।

८६०–प्लास्टरएमोना ईकम ऐन्ड मरक्युरी।

गिलटियोंकी सूजनपर लगाना।

८६१—पासफोरिस ।

पट्ठोंकी कमजोरीमें १/२० से १/१६ ग्रेन तक गोली ।

८६२—फ़िरेड कटाय ।

थोडी मात्राके खानेसे रंगत खूनकी लाल लाल होजातीहै । ताकत और भूख बढतीहै । पट्ठे और जाबडेके दर्दको दूरकरती है वीर्यप्रमेहको दूरकरके धातुको पुष्ट करदेतीहै । तिजारी चौथिया और बारीके सम्पूर्ण ज्वर तथा मृगी तिल्लीको दूरकरती है । रुधिरके बंद करनेकेवास्ते मानिन्द टिंचर फ्रीके है । काबिज नहींहै । सोजाकको मुफीदहै । पारेके जहरको मारतीहै । तथा स्त्री रोगोंके वास्ते मुफीदहै । मात्रा १ से ५ ग्रेन तक ।

८६३—फ्रीएलबोमिन्स ।

इसको भूखलगाने और भोजनको हजमकरने तथा मृगी, बुखार, कमजोरीके दूरकरनेको बाईकार्बोनेट आफ पोटास और सायट्रिकएसिडके साथ जोशखानेवाला गिलास मानिन्द सोडावाटरके बनातेहैं । मात्रा १० से १५ ग्रेन तक ।

८६४—फ्रीआर्सेनिक ।

जो बीमारी त्वचाकी किसी दवासे आराम न होवै तो यह दूर करदेतीहै । भगंदरके वास्ते बहुत मुफीदहै । उपदंश और चौथैया तिजारी तथा हाथपाँवोंको मुफीदहै । नाकके ऊपरके जखमोंको दूरकरताहै । मात्रा १/८ से १/२ ग्रेन तक ।

८६५—फ्रीबिरोमाईडम् ।

खूनको साफ करनेवाला पुष्ट और काबिजहै । खूनको बंद करनेवाला, बच्चेदानीके रुधिरको बंद करता है और शिरके दर्दको मुफीदहै । कंठमालाको दूरकरता है । मात्रा १ से ४ ग्रेन तक ।

८६६–फ्रीकार्बोनास सि हीचेरम ।

यह अत्यंत पुष्ट करनेवाला । इसको कमीखून, कमीहैज, आमकमजोरी, बच्चोंका अतीसार और खांसीके बंदकरनेको मुफीदहै । इसको जिगरकी बीमारीमें भी देतेहैं । बवासीरकोभी आराम करताहै । मात्रा ५ से २० ग्रेन तक ।

८६७–फ्रीकिलोरोऔक्साईडीलीकर ।

यह काबिज और खूनको बंदकरनेवाला है । मात्रा १० से ३० बूंद तक ।

८६८–फ्रीसेट्रास ।

यह आम कमजोरीके वास्ते मुफीदहै । खांसी और जोफ मदको खोताहै । मात्रा ३ से १५ ग्रेन तक ।

८६९–लीकर फ्री डायालासेटी ।

यह काबिज खूनको बंद करनेवाला है । मात्रा १०से३०बूंद तक ।

८७०–फ्री इटएमोनिया सिट्रास ।

यह खूनको बढानेवाला पुष्टकर्ता मेदेको ताकत देनेवाला तपेदिकको रोकनेवाला आम कमजोरीको खोनेवाला पट्ठोंका दर्द और शिरके दर्दको आराम करने वालाहै । मात्रा ५ से १० ग्रेन तक ।

८७१–फ्रीइष्टिकिनियासिट्रास ।

पुष्ट करनेवाला और पुराने बुखारोंको दूरकरताहै । मात्रा १० से १५ ग्रेन तक ।

८७२–फ्री आयोडाइट ।

पुष्टकर्ता, खुन शुद्ध कर्ता, सिल और तपेदिकको खोनेवाला तथा पसलीके दर्दको दूरकरनेवालाहै । बदहजमी और वमनको दूरकरताहै । उपदंश और कंठमालाको खोताहै । मात्रा १ से ५ ड्राम तक ।

८७३–फ्री ओक्साइडम् मेगनीटीकम्।

पुष्टिकर्ता, कमीखूनमें खून बढाता और सुर्ख करता है। जावडा और पट्ठेके दर्दको मुफीदहै मात्रा १ से १० ग्रेन तक।

८७४–फ्री परक्लर लीकर।

इससे टिंचरफौलाद बनताहै। इसका अर्क खूनके बंद करनेको देते हैं और लगाते हैं मात्रा इसकी टिंचरमें देखो।

८७५–फ्री परनाईट्राईटेटिस लीकर।

काबिज और पुष्टकर्ता है। पुराने दस्तोंको रोकताहै। पट्ठोंकी कमजोरीके वास्ते मुफीदहै। स्त्रीधर्मकी अधिकताको रोकताहै रतूबतकोभी रोकता है। मात्रा १० से ४० बूंद तक।

८७६–फ्री ओक्साईडम् ह्यूमीडम्।

यह संखियेके जहरको मारता है। मात्रा २ से ४ ड्राम तक।

८७७–फ्री प्रओक्साईडम् हैट्रोटम्।

इसको जावडेका दर्द और कमजोरीके दस्तोंमें तथा बदहजमी और खून या रतूबत के जारी होनेमें देनेसे फायदा होताहै। मात्रा ५ से ३० बूंद तक।

८७८–फ्री फास्फरस।

यह पट्ठोंको पुष्ट करताहै। कमी खूनके कारण जो स्त्रीधर्म कमती होताहो उसके वास्ते मुफीद है। मूत्रप्रमेह शर्करा और बदहजमीमें फायदा करता है तथा भूंखको बढाता है। मात्रा ५ से १० ग्रेन तक।

८७९–फ्री सल्फास।

काबिज और पुष्ट करनेवालाहै। बारीके ज्वरोंको रोकनेवाला और तिल्लीको दूर करने वालाहै। स्त्रीधर्म लानेवाला। तपेदिक को दूर करनेवाला है। खूनके थूकनेको रोकताहै। जावडेके दर्दको

खोताहै । मेदेके दर्दको खोताहै खूनीबवासीरको मुफीदहै । पेटके कीडे मारताहै । मात्रा ३ से ५ ग्रेन तक ।

८८०—फ्रि सल्फग्रेन्यलेटिड ।

यह फ्री सल्फसे ज्यादह साफहै । और फायदेमेंभी उससे उम्दाहै । मात्रा २ से ५ ग्रेन तक ।

८८१—फ्री सल्फ ईकजाकेटा अर्थात् डिराइडसल्फेट औफ आईरन ।

कमीखून और पट्ठोंके दर्द व तिल्लीको दूर करताहै । तैयारी लाताहै । सनकोनेके साथ मात्रा २ से ४ ग्रेन तक ।

८८२—फ्रीएमोनिया ट्राट्रास ।

तिल्लीको मुफीद दस्तावर है । मात्रा ४ से ६ ग्रेन तक ।

८८३—फ्री औक्सी फास्फरस ।

दीमाग और कामशक्तिको पुष्ट करनेवाला मात्रा ५ से १० ग्रेन तक ।

८८४—फ्री वाई फास्फरस ।

वास्ते कमजोरी पट्ठा नामर्दी और कमीखूनमें मुफीद है । मात्रा १ से २ ग्रेन तक दिनमें २ या ३ दफे देना चाहिये ।

८८५—फ्री इटएल्यू मिनसवाई सल्फ ।

खूनको रोकताहै सोजाक बवासीर खूनीको मुफीदहै योनिरोगमें इसकी पिचकारी मुफीदहै । मात्रा ५ से १० ग्रेन तक ।

८८६—फ्री टेन्निस ।

इसको मुखसे खट्टापानी आनेमें देनेसे फायदा होताहै मात्रा २ से ३ ग्रेन तक ।

८८७—फ्री वीलीर्यन ।

वायगोलेको मुफीदहै दमा और पट्ठोंका दर्द खांसीको दूर करता है मात्रा २ से ३ ग्रेन तक ।

८८८–फ्री टार्ट्रम।

इसको बच्चोंकी सख्तबीमारीमें और कमीखूनमें तथा दुबलेपन में साथ काडलिवर आयलके देते हैं, कठमालाको दूर करताहै स्त्रीधर्म लाता है। मात्रा ५ से १० ग्रेन।

८८९–फ्री एमोनिया सल्फर।

यह ताकतलाने और हाजमा दुरुस्त करने तथा खून बन्द करनेको मुफीदहै। मात्रा २ से १० ग्रेनतक।

८९०–फ्री इटक्यूनीसिट्रास।

यह वारीका बुखार और रोगनिवृत्तिके पीछेवाली कमजोरीको मुफीदहै। मात्रा ५ से १० ग्रेन तक।

८९१–फ्री इटक्यूनीसिट्रास कमइसटिकिनिया।

इसको कमजोरी और कामशक्तिको बढानेके वास्ते देनेसे फायदा होताहै ताकत लाताहै भूख बढाताहै कमीखूनको दूर करता है, मात्रा २ से ५ ग्रेन तक।

८९२–फ्री हाईयो फास्फरस।

कामशक्तिको पुष्ट करनेवाला दीमाग और नेत्रकी ज्योतिको खोलनेवाला स्त्रीधर्म जारी करनेवाला भूखको बढानेके वास्ते मुफीद मात्रा ४ से १० ग्रेन तक।

८९३–फ्री सेलीसीलास।

गांठियेका बीमार जो वहुत कमजोर हो गयाहो उसके वास्ते मुफीद है। मात्रा १ से ४ ग्रेनतक।

८९४–फासफोरिस।

पट्ठोंकी कमजोरीमें मात्रा $\frac{1}{100}$ से $\frac{1}{30}$ ग्रेन तक गोली।

८९५–फास्फेट औफ आयरन।

बलदायक। मात्रा ५ से १० ग्रेन तक चूर्णगोली।

८९६–फोस्फेट एमोनियम ।

शर्करामेहमें मात्रा ५ से २० ग्रेन मिकचर ।

८९७–फिरंग्लूलावार्क ।

बवासीर पुरानाकब्जमें देना चाहिये बलदायक है । मात्रा एक्सट्राक्टमें देखो ।

८९८–फनलफ्रूट (सौंफ)

पाचन शूलहर । मात्रा १ ड्रामकी डिकोकशन अर्थात् क्वाथ ।

८९९–बेजनोल–वा–फनायल ।

जिल्दपर लगाने और जखमोके काममें आता है ।

९००–विसमिथ सबनै ट्रास ।

दर्द मेदा और कलेजेको मुफीद है,बदहजमी और पुरानी बमन को रोकता है । मुखसे खट्टा पानी आनेकोभी रोकता है । जखेममेदा और दस्ततपेदिकमें देते हैं । सोजाक और कुरहमें इसकी पिचकारी करतेहैं । हैजेमें भीदेते हैं । मात्रा ५ से १५ ग्रेन तक ।

९०१–विसमिथ कार्बोनास ।

इसको बदहज्मी और अजीर्णमें देनेसे फायदा होताहै । बच्चे दानीके खून जारी होनेमें देनेसे बन्द होताहै । मात्रा ५ से १० ग्रेन तक ।

९०२–बालसम पेरूवीनम् ।

जुकाम,दमा, गांठिया, प्रमेह, सोजाक और खुजलीको मुफीद है । बेवाई और स्तनोके घावपर लगानेसे फायदा होताहै । बदके बैठानेको मुफीद है । बालोको बढाताहै । मात्रा१०से१५ग्रेन तक ।

९०३—बालसम टाली ।

इसको फास्फोरसकी गोलियोंमें डालते हैं मानिन्द ऊपरके मुरक्कब है मात्रा १० से ३० ग्रेन तक।

९०४—बालसम कोपेवा ।

लुवाब गोंदमें मिलाकर देते हैं और दालचीनीका तेलभी इसमें डालते हैं। इसको सोजाक, कुहर, ववासीर, खांसी, खुजली, सिल, तपेदिककी बीमारीमें देना चाहिये । मात्रा २० से ६० ग्रेन तक।

९०५—वालसम इसटीरेक्स प्रिथार्डमिया सायला ।

इसको पुरानी खांसी, सोजाक, लिकोरियामें देनेसे फायदा होताहै, मात्रा १० से ३० बूंद तक।

९०६—ब्यूटायल किलोरल हैड्रेट ।

यह नींदलानेवाला, बेचैनीको दूरकरताहै,उन्माद और सन्निपातमें उत्तम है, बायगोला खांसी और शिरका दर्द दूर करनेके वास्ते कपूरके साथ मलते हैं ।

९०७—वीराटेरया ।

जावडा और पट्ठेके दर्दमें तथा पुराना शोथ और जोडोंके शोथपर तथा कठिनतापर तथा जुंवोंके मारनेके और खालफटगई हो उसपर लगाते हैं ।

९०८—वैपटिसटिन ।

ववासीरके मसोंपर लगानेसे आराम होताहै इसको जिगरकी बीमारीमें देते हैं । मात्रा $\frac{1}{2}$ से $\frac{1}{4}$ ग्रेन तक देतेहैं।

९०९—विरोसमिन ।

पेशाब लाताहै और खूनको साफ करताहै तथा ऐंठन वावटे को दूरकरता है । मात्रा २ से ४ ग्रेन तक ।

९१०—बेनजायन ।

यह कफको निकालता है रुधिरको बन्द करता है पुरानी खांसी और आदती कब्जको खोताहै । आवाजके मारे जानेमेंभी देते हैं । मात्रा १० से २० ग्रेन तक ।

९११—बारबेडोज एलोज ।

विरेचन आर्तव प्रवर्तक मात्रा २ से ५ ग्रेन गोली ।

९१२—बोरेक्स (सुहागा)

मूत्रल, आर्तवप्रवर्तक, पाचक, मात्रा ६ से २० ग्रेन पानीके साथ ।

९१३—मार्फीया एसीटास व मारफीया हैड्रोक्लिर ।

यह तबियतको खुश करताहै बेकरारीको दूर करताहै, दर्दको मौकूफ करताहै पसीना लाताहै इसको दस्त खांसी और दर्दके रोकनेको देतेहैं । नशा और स्त्रीधर्मको रोकता है निद्रा लाताहै पागलोंके वास्ते मुफीदहै । मात्रा $\frac{१}{८}$ से $\frac{१}{२}$ ग्रेन तक ।

९१४—मारफीया एपो अर्थात् एपोमारफीया ।

इसके देनेसे उसीवक्त उल्टी अर्थात् वमन होजाताहै विष-रोगीको इसीके द्वारा वमन करातेहैं । मात्रा मार्फीटाट्रेट २ बूंद गर्मपानीमें १ ग्रेन हल करके १ या २ बूंद देतेहैं ।

९१५—मोईरीसीन ।

यह कांपने और कब्जको फायदा करता है । मात्रा ३ से १ ग्रेन तक ।

९१६—मिक्चर आफ इस्केमोनी ।

अनुलोमन, बच्चोंका रेचन २ से आधा औंस तक ।

९१७—मिक्चर औफ आमंड ।

और दवावोंको हल्का करनेके वास्ते १ से २ औंस तक ।

९१८–मिकचर औफ वरान्डी।

मादक पाचन नींदलानेवाली १ से २ औंस तक।

९१९–मिकचर औफ चाकर (चाकमिकचर)

काबिज अतिसारमें १ से २ औंस तक।

९२०–म्यूसलिग औफ गम (लुवाव समग अरवी दूसरी दवा)

हलकी कर्नेके वास्ते जिसकदर जरूरत हो।

९२१–मरक्यूरी (साफ पारा)

मालिशमें।

९२२–मरक्यूरी ऐन्ड चाक (ग्रे पाउन्डर)

अनुलोमन शोधक मात्रा ३ से ६ ग्रेन तक चूर्ण।

९२३–मास्टर्ड (राई)

त्वचा लाल करनेवाली उपाडकर्ता अतिपाचन।

९२४–मास्टर्ड पेपर (राईलगा कागज)

त्वचाके ऊपर लगाते हैं।

९२५–यूपेटोरायन।

यह पेशाव लाताहै। मात्रा २ से ५ ग्रेन तक।

९२६–यूकोर्विन।

कै लाताहै दस्तावरभी है,कफनिकालताहै मात्रा ½ से१ग्रेन तक।

९२७–यलीज समन (नैलसीमीम)

दर्दपर रीहाका मुँह खोलनेको लगानेसे पुतली फैलती है और खानेसे सुकडती है। एक्सट्राक्ट या टिंचर देना।

९२८–रुमिन।

मेदेको पुष्ट करताहै वदहज़मीको दूर करताहै। मानिंद रेवंद-चीनीके है।

९२९–रिजीसिड आयरन ।

बलदायक १ से ५ ग्रेन ।

९३०–रिजन आफ गोइकम् ।

पसीना लानेवाला गांठियामें गर्म १०से३० ग्रेन चूर्ण अवलेह।

९३१–रूवर्ब पाउन्डर (रेवतचीनी चूर्ण)।

अनुलोमन दस्तावर बलदायक ५ से २० ग्रेन चूर्ण।

९३२–लाइन्टमेगनेसिया ।

अम्लताहर अनुलोमन ३ से १० ग्रेन चूर्ण टिंचर ।

९३३–लोवीलिया ।

कफहर्ता १० से ३० ग्रेन चूर्ण टिंचर ।

९३४–लैकटिक एसिड डाईलूट ।

बदहज्मीमें १ से २ ड्राम तक सोलूशन।

९३५–ल्यूपोलम ।

नींद नआनेमें मद्यके नशेमें दिया जाताहै २ से ५ ग्रेन तक।

९३६–लाईकोपीन ।

यह खूनके जारीहोनेमें और मूत्रप्रमेहमें तथा पेचिशमें देनेसे फायदा होताहै। मात्रा २ से ३ ग्रेन तक।

९३७–लीनट ।

इसको लिनीमेन्टमें तरकरके जखमों और दर्दोंपर रखनेसे आराम होताहै।

९३८–लाजिज औफ ओपियम ।

काबिज नारकोटिक १ से ६ संख्या तक टिकिया।

९३९–सल्फो कारवोट औफ जिंक ।

सोजाक ल्यूकोटियामें पिचकारी २ या ३ ग्रेन १ औंस पानी में मिलाकर।

९४०—सल्फेट औफ जिंक ।

(सफेद तूतिया) वामक काबिज विप बलदाई १ से २ ग्रेन तक बलदाई काबिज १० से ३० ग्रेन तक ।

९४१—सल्फेट आफ कापर ।

(सब्ज तूतिया) वामक काबिज $\frac{1}{4}$ से २ ग्रेन तक ।

९४२—सल्फेट औफ मगनेसिया ।

कैथारटिक ४ ग्रेनसे आधा औंस पानीमें ।

९४३—सिनीमन बाक—दालचीनी ।

सुगंधित बलदायक ५ से १० ग्रेन चूर्ण।

९४४—सनकोना ।

बलदायक बारीके तापमें १० से ४० ग्रेन तक ।

९४५—साम पेलिया वा पेलोशीया ।

पुरानी जलन मसाने और गुर्देको मुफीद है ।

९४६—सनटोनिन अर्थात् सैन्टूनु या सांटोनीयम् ।

यह पेटके केंचवे व चुनमुने मारनेके वास्ते मुफीद है मात्रा ५ से २० ग्रेन तक या २से ६ ग्रेन तक। दूसरा सांटोनीका भी होताहै वहभी कीडोंको मारता है। मात्रा २०-से ४० ग्रेन तक होती है ।

९४७—सेवग्यूईनेरिन ।

पुष्ट करनेवाला और दिलको ताकत देनेवाला है मात्रा $\frac{1}{2}$ से १ ग्रेन तक ।

९४८—सिमासीफ्यूजिन व मिक्रोटिन ।

पट्ठोंको पुष्ट करता है और रुधिरको साफ करता है । इसको जाडेका बुखार तिजारी और चौथेयेमें देते हैं। मात्रा१से६ग्रेनतक।

१४९–सीमीफ्यूचीरी या ईजोम ।

दिलको पुष्ट करता है और गर्भाशय पर मानिंद अर्गटके खूब असर करता है कफको निकालताहै। दर्दकमर, रींगन, गांठिया, और जोडोंके दर्दको मुफीद है ।

१५०–सियकोना ईडीन सल्फास ।

इसकी मात्रा ५ से १० ग्रेन तक है ।

१५१–श्यूगर ऑफ मिल्क (दूधका सत्त्व)

जिन लोगोंको दूध नहीं पचता या मुसाफिरीमें मिलना कठिन है वह लोग इस सत्त्वको वखूबी वर्षोतक अपने पास रखसक्ते हैं और खा सकते हैं और जितनी औषधियोंके सत्त्व कडवे जहरके समान असर करते हैं उन दवाओंको इसमें मिलाकर देवे तो तकलीफ कम होतीहै और जो बीमार दूध न पीवे उसको यही खिलाते हैं मात्रा ½ से २ ड्राम तक ।

१५२–सायट्रेट ऑफ आयर्न ऐन्ड एमोनियम ।

बलदायक ५ से १० ग्रेन तक ।

१५३–सवक्लोराइड और मरक्यूरी ।

पित्तरेचन शोधक ½ से ५ ग्रेन ।

१५४–सल्फेट ऑफ आयर्न (हीराकसीस)

छेदन काबिज वामक १ से ५ ग्रेन ।

१५५–हैड्रार्जीराय परकलर ।

साफ करनेवाला खूनको है इसवास्ते उपदंश और कोढमें देते हैं बहुत थोडी मात्रासे मफीद है क्योंकि बहुत कडी तेज दवा उपदंशकी है।इसको जहर दूर करनेकेवास्ते गायका कच्चा दूध और हैड्रोपोटास व क्रीरीडकण्ठाय व अंडेकी सफेदी व जलेबी और श्यूगर

आफलिड मारतीहै इसको सालसापरेला और दूधके सतमें मिला कर देते हैं दाद और परवाल और नेत्रके रोगोंको मुफीद है त्वचा-के रोगोंको खोताहै मात्रा १/२ ग्रेन ।

९५६–हैड्राजींराय सवकलर ।

यह खून साफ करता, दस्तावर, शोथोंका नाश करता, उपदंश, कंठमाला, पसलीकादर्द, जिगरका रोग, कमलवायु, बोखार, गर्मी, हैजा, बालरोग और बच्चोंको मोटा ताजा करनेके काम आता है, त्वचारोग, बदहजमी और दूध खराब होनेके कारण बच्चों-की मौतको दूर करता मुफीद है । शोथके नाश करनेको २ ग्रेनमें अफीम ग्रेन के साथ दस्त लानेके वास्ते मात्रा १ से ४ ग्रेन तक । खून साफ करनेकी मात्रा १/५ ग्रेन । सत्तेकी बीमारीको तथा सन्निपातको, कब्ज और पागलपनेको मुफीदहै ।

९५७–हैड्रोजीराय एमोनिएटम् वा इटमीसीपोटेंट औफ मर्करी ।

इसको त्वचाके रोगोंमें तथा खुजलीमें मर्हम बनाकर लगाते हैं।

९५८–हैड्राजींराय कम् क्रीटा वा गिरेपाउन्डर ।

यह पारेका हलका मुरक्कब बच्चोंके वास्ते मुफीदहै । बच्चोंके दांतोंको जल्द निकालता है । बच्चोंको जितने त्वचाके रोग, अति-सार, बदहजमी और मसानेके रोग होतेहैं उसमें मुश्क व इसटीमि-कपौन्डरके साथ देनेसे जाते रहतेहैं यह दवा महीनेभरके बच्चोंको देसक्ते हैं मात्रा २ से ९ ग्रेन तक ।

९५९–हैड्राजींराय साईनाईडम् ।

यह जहर है परंतु उपदंशके जहरको यही मारताहै। मात्रा १/३२ से १/१६ गिरेन तक ।

९६०–हैड्रार्जीराय आयोडाईडम रूबरम ।

इसका फायदा मिस्ल रसकपूरकेहै । उपदंशमें खिलाते हैं । बाहर तिल्ली, घेवा, मस, उपदंशके घाव, नाकका घाव, नाकका शोथ पर लगातेहैं और जुकामके बिगडजानेमें इसका सुरमा आँखमें डालते हैं । मात्रा $\frac{1}{16}$ से $\frac{1}{8}$ ग्रेन तक ।

९६१–हैड्रार्जीराय आयोडाइडम वीरीडी।ग्रीनआयोडाइडऔफ मरक्यूरी ।

(हराकुश्तापारेका)

यह दूसरे व तीसरे दर्जेकी आतशकमें गोली बनाकर देते हैं । ऊपरकी दवासे ताकतमें कमहै । इसवास्ते बच्चोंकोभी उपदंशमें देतेहैं । मात्रा १ से २ ग्रेन तक ।

९६२–हैड्रार्जीराय नाईट्रेटिसलीकर एसिडस एसिडशल्यूशन औफ मर्करी।

यह जलानेके वास्ते जखमपर लगाते हैं । औरंगजेब और उपदंशके ज़खमोंपरभी लगाया जाताहै । सोजाकमें इसकी पिचकारी करते हैं । आंखोंकी बीमारी और छीपपर भी लगाते हैं ।

९६३–हैड्रार्जीराय ओल्यास ।

यह जोडोंकी सूजन और दादको मुफीदहै ।

९६४–हैडार्जीराय ओक्साईडम फिलीवम ।

इसका मरहम बनाकर आंखोंके अंदरकी बीमारीमें डालतेहैं । पीछे इस्पन्ज से धो डालते हैं ।

९६५–हैड्रार्जीराय ओक्साइडम् रूबरम् ।

इसका मरहम आंखोंकी बीमारीमें अंदर लगातेहैं । उपदंशके घाव फोडा और फुन्सीके ऊपर लगाते हैं । जखमोंपर लगानेसे फौरन् आराम होताहै । मात्रा $\frac{1}{2}$ से १ ग्रेन तक ।

९६६–हाईपोड्रमसीरन्ज ।

इसके लगानेसे एक हाथ या पैर तथा गुर्देके दर्दको मौकूफ करताहै।

९६७—हायोसीयामीन।

इसका फायदा विलाडोनाके समान है। जब बस्तीमें जलन और मूत्र कमती आता हो तो यह आराम करताहै। खांसीके वास्ते मुफीदहै।

९६८--हीमेमेलन वा हैजलिना।

यह रक्तार्शको मुफीदहै। काबिजहै। मात्रा १ से ९ ग्रेन तक।

९६९--हैड्रासटीन।

मेदेको पुष्ट करताहै। मात्रा ३ से ९ ग्रेन तक। अमेरिकावाले इसको कोनैनकी जगह वर्ततेहैं। यह राल थूकको बढाताहै। भूखको तेज करनेवाला हाजमा है।

९७०--हैड्रार्जीराय।

राल और पित्तको निकालनेवाला है। उम्दा जुलाब है। इसको उपदंश, जिगरके रोग, कब्जी, खूनका गुर्देमें जमजाना इन रोगोंमें देतेहैं। आंतोंका पानी निकालताहै। पेशाब और पसीना बढाताहै। रतूबतोंको चूसताहै। नई और पुरानी सोजशी बुखारोंमें जुलाबके तरह कालीसिंथके साथ देतेहैं। बाहर इसको जलंधर, शोथ, त्वचा रोगमें लगातेहैं, और उपदंशके वास्ते धूनी इसकी देतेहैं। मात्रा विलूपिल ३ से ९ ग्रेन तक। रसौली और कखलाईपर, शोथपर इसको मलनेसे फायदा होताहै। उपदंशमें ९ ग्रेनमें अफीम ½ ग्रेन मिलाकर गोली खिलानेसे मुँह आकर आराम होजाता है,जिगरका शोथ और कंवलवायु, बदहजमी, सीप, जलंधर,चेचक, और गदूदोंके बढजानेमें देते हैं।

९७१—हैड्रार्जीराय विरोमाइडम् इटवाई विरोमाइडम्।

हैड्रार्जीराय आयोडाइडके बराबर यह फायदा करता है। मात्रा १ ग्रेन व वाई विरोमइड की ⅛ ग्रेन से १ ग्रेन तक इसद्

शलुशन पोटासीयो आयोडाइडमें हल होजाता है और श्यूगर आफ मिल्कमें गोली बनाते हैं।

१७२–हैड्रार्जीराय एसीटास या हैड्रार्जीराय फासफरस या हैड्रार्जीराय सल्फ्यूरेहम या हैड्रार्जीराय सल्फास।

यह चारों सब पारेके कुश्तोंको, कोढ, उपदंश और त्वचाकी बीमारियोंमें तथा अन्डकोश बढजानेमें देनेसे फायदा होताहै।

१७३–हमलौकलीन्ज।

यह विषहै, हैफोनाटिक नींद लाताहै। मात्रा २ से ६ ग्रेन तक चूर्ण।

१७४–हैड्रोक्लोरेट औफ कोनैन।

अंग शून्यकरता कारनियां और प्रेकस आदिकी स्पर्शशक्तिको घटाता है मात्रा ½ से १ ग्रेन तक। इसका असर २ मिनटसे आधे घंटेतक होता है।

इति प्रथमखण्ड निघंटु समाप्त।

॥ श्रीः ॥

डॉक्टरी चिकित्सार्णव।

२ द्वितीय निदान और चिकित्साखण्ड।

अथ सर्वज्वर चिकित्सा।

प्रायः सबही चिकित्सकोंने सर्व रोगोंमें ज्वरकोही मुख्य समझा है, अतएव निदान ग्रन्थोंमें तथा चिकित्सा ग्रन्थोंमें पहले ज्वरहीके विषयमें लिखागयाहै इसका कारण यहीहै कि, इसकी उत्पत्ति अतिसामान्य कारणोंसे होनेके कारण इसके दूर होनेका उपाय जानलेनाभी बहुतही आवश्यकहै, ज्वरके लक्षण और सब अवस्था जाननेके लिये थारमामेटरसे समझकर यहभी ध्यान रखना चाहिये कि ज्वर प्रायः कोष्ठ परिष्कार न होनेहीके कारण होता है इसलिये बुद्धिमान डाक्टर और वैद्यलोग रोगीको औषध देनेसे पहले कोठा साफ होनेकी दवा देतेहैं, दवादेनेके विषयमें जो नियम और रीति इसपुस्तकके अन्तमें लिखीजायगी उनको ध्यानपूर्वक समझकर पीछे दवादेनेका साहस करना चाहिये। विना उननियमोंपर ध्यानदिये दवा देनेसे लाभके बदले हानि होनेकी सम्भावना है, जब देखो कि रोगीको अजीर्णके कारण ज्वर हुवा है, और भूख नहीं लगती दस्त नहीं साफ होता पेट भारीहै तो नीचेलिखी रीतिपर इलाज करना चाहिये।

एलोपेथिकचिकित्सा।

एकड्राम से ४ ड्राम तक सलफेट आफ मेगनेसिया या आधी छटांक काष्ट्रायल देवै यह दवा बुखार न रहनेकी हालतमें देना चाहिये यदि पसीना आताहो तो नीचेलिखी दवा देना ठीकहै।

लाइकर एमोनिया एसिटेटिस १॥ ड्राम, नाइट्रक ईथर३० बूंद

नाइट्रेट आफ पुटास ३० ग्रेन यह सब चीजें २ औंस पानीमें मिलाकर दिनमें ४ दफे तीन २ घंटाके अन्तमें पिलानी चाहिये।

यदि माथेमें दर्द हो तो ४–५ ग्रेनके हिसावसे विविरन तीन चार दफे खिलानी चाहिये ।

जब ज्वर न रहे तब १२ ग्रेनसे ३० ग्रेन तक एक२घंटाके अंतरसे दो तीन दफे कुनइन देनी चाहिये। जबतक रोगी अच्छी तरहसे बलवान न हो तबतक दोसे ५ ग्रेन तक बराबर कुनइन खाता रहै इससे दुबारा लौटकर बुखार आनेका डर नहीं रहता है और शरीर बलवान होजाता है ।

खानेके लिये दूध और साबूदाना देना चाहिये ।

होमियो पेथिकसे कंप और शीत आनेसे पहले बुखारमें चाय न देना चाहिये, यदि जाडा मालूम पडही चुका होतो गर्म चाह बनाकर पिलावै और गर्म कपडा पहरनेको दे बोतलमें गर्म पानी भरकर वदन और पैरोंमें सेंक करना चाहिये ऐसा करनेसे पसीना आवेगा उसे पोंछकर दूसरे कपड़े पहिराने चाहिये ज्वरकी गरमी कम करनेको आध२घंटेके अन्तरमें एकोनाइट और बहुत पसीना आता हो तो, फास्फरिकएसिड और पेटमें घबराहट और कै बंद करनेके वास्ते इपिकाक देना चाहिये,२घन्टेबाद आर्सनिक देनेसे बुखारका आना बंद होजायगा पथ्य पहिलेके समान देना चाहिये।

रेमीटेन्ट फीवर वात श्लेष्मज्वर या संततज्वर ।

एलोपेथिक लक्षण ।

यह बुखार बहुत कम समयके लिये छोडताहै और छोडजानेके समयमेंभी उसके लक्षण चले नहीं जाते ऐसा ज्वर आनेके पहले भूखेकी कमी, जी मचलाना, कमजोरी, जीभ सूखना,शरीर गर्म,

पेट भारीहोना मुखपर थोडी लाली, आंखोंमें पानीभरना और लालहोना, हाथ पैर कमर और माथेमें दर्द होकर ६ से १२ घंटे तक भारी बुखार रहताहै। इस बुखारमें कभी खांसी कभी मूर्च्छा कभी पेशाब बहुत होना और पेट फूलना आदिभी होते हैं। होमियोपेथिकसे लक्षण। यह ज्वर जरा रोमांच होकर चढताहै। अधिक गरमी वा सरदी नहीं लगती कई दिन तक बराबर बनारहताहै। जीभ मैली होतीहै। कभी दस्त कभी वमनभी होनेलगतीहै कभी बेहोशीभी होती है। कभी हाथ पांव शरीरभी अकड जाताहै। कभी रोगी बडबडाने लगताहै। इसमें मैलेरिया इंटरमेटिंटफीवरसे भी अधिक होताहै और देरतक शरीरमें रहताहै।

एलोपेथिकचिकित्सा।

कोष्ठबद्ध होतो कालोसिन्थ ३ ग्रीन, कैलोमेल ३ ग्रीन इस्केमोनि३ ग्रीन इन तीनोंकी गोली बनाले डाक्टरी मतानुसार गोली २॥ ग्रीनसे अधिक नहीं होती।

बुखार हो तो पुटास नाइट्रास १० ग्रीन। लाइकर एमोनिया एसिटस १ ड्राम। स्प्रिटईथर नाइट्रिक १५ बून्द। केम्फर वाटर१ औंस। २ या ३ घंटेके अंतरसे एक एक मात्रा दे माथेमें दर्द हो तो हजामत बनवाकर माथा ठंढा रखना चाहिये यदि शरीरमें जलन हो तो गर्मपानीमें कपडा भिगोकर सबशरीर पोंछदे।

कै और जी मचलता होतो छोटे छोटे बर्फके टुकडे खिलावे और पाकाशयके ऊपर राईका पलास्तर लगावे। या कार्बोनेट औफ सोडा १० ग्रीन, टार्टरिक एसिड ५ ग्रीन, क्लोरोफार्म ३बूंद मिलाकर पिलावे।

पेट फूलगया होतो तारपीनके तेलकी मालिश करै और गर्मपानी बोतलमें भरकर पेटपर फेरै ।

यदि हाथ पैर कांपतेहों या रोगी बकता हो तो छातीपर राई-का प्लाष्टर देना चाहिये ।

शरीर दुर्बल हो तो दूध आदि पुष्ट करनेवाली चीजें देनी चाहिये जैसे कस्तूरी ५ से १० ग्रेन तक, एमोनिया ५ से १५ ग्रेन तक, वर्क १० से ६० ग्रीन तक भी खिलाया जासक्ता है । अथवा स्पिरिटईथर क्लोरिक ३ ड्राम, लाइकर एमोनिया एसिटिस ६ ड्राम, ब्राण्डी आधा औंस, डिकोक्सन सिनकोना ५ औंस, इन सबकी ६ खुराक बनाकर दोदो घंटेके अंतरमें देनेसे बहुत फायदा होताहै ।

जब देखै कि ज्वर आताही नही तब जिससमय ज्वर ठढा पडजावै उस बखत कुनैन यथोचित मात्रासे देना चाहिये ।

होमियोपेथिकसे चिकित्सा ।

ज्वरके पहिले जाडा लगै और प्यास हो तो ब्रायोनिया देना चाहिये ।

यदि ज्वर अधिक बढगया हो तो बेलाडोना देना चाहिये,सब शरीरमें बेकली और माथा दुखता हो, कंप, खांसी, छातीमें दर्द हो तोभी बिलाडोना देना उचित है ।

अगर दिल धडकता हो तो कोफिया देनाचाहिये माथा घूमना और रोगी मनमाना बकता हो तो उपियम देना चाहिये ।

यदि यकृत हो तो, मर्क्यूरियस देना चाहिये ।

श्वास और खांसीका कष्ट हो तो फास्फारिस, देना चाहिये,कम-जोरी दूरकरनेके लिये, अर्सनिक, चायना और फास्फारिस दिया जाता है ।

बिलियट रेमिटेन्ट फीवर—पित्तश्लेष्मज्वर।

यह पित्तज्वर अनेक कारणोंसे उत्पन्न होताहै। जीभके कोनोंमें और आगेके भागमें ललाई होना, दोचार दिनके पीछे किसीरकी आंख लाल और मूत्र पीला होजाता है। होमियोपेथिकसे इसके लक्षण इसप्रकार होतेहैं जैसे बहुतथोडा समय ऐसा होताहै जिसमें यह ज्वर दबजाताहै नहीं तो यह ज्वर सदैवही बना रहताहै। रोगीके पेटमें तकलीफ मालूम पडती है, जिसवखत ज्वर कम होताहै उसी समय पतला दस्त रोगीको आता है, कभी ऐसा भी होता है कि रोगी को दो एकदिन दस्त नहीं भी होते।

एलोपेथिकसे चिकित्सा।

पाकस्थलीका उत्तेजन हो तो सरसों या राईका प्लाष्टर देना चाहिये परंतु आजकलके बुद्धिमान डाक्टरोंकी यही सम्मतिहै कि जब ज्वरको कम देखै तो ऐसी हालतमें उचितरीतिपर कुनइन जरूर देनी चाहिये पेटकी तकलीफ दूरकरनेको बोतलमें गर्मपानी भरके पेटपर फेरना चाहिये। यदि देखे कि रोगी दुर्बल होगया है तो नीचे लिखी दवा देनी चाहिये।

डिकक्सन सिनकोना	५ औंस
वाइनम बूत्रम	१॥ औंस
स्पिरिट ईथर क्लोरिक	३ ड्राम
लाइकर एमोनिया एसिटिस	६ ड्राम

इसकी छः खुराक बनाकर ३ घंटेके अंतरसे १–१ खुराक देनी चाहिये।

होमियोपेथिकसे चिकित्सा।

यदि पेटकी बीमारीसे बुखार मालूम पडे तो आर्सनिक, ब्रायोनिया, डिजिटेलिस इनमेंसे कोई १ देनी चाहिये।

अगर पेटमें दर्द हो तो फास्फारिकएसिड, विरेट्राम, रसटक्स देना चाहिये ।

यकृतमें चायना, नक्सवोमिका, या मर्क्यूरिस देना चाहिये ।

माथा बहुत दूखता हो तो रसटक्स, नेट्रमूम्यूर, स्पाईजिलिया देना चाहिये ।

सरदी और खांसी हो तो कोनायम, बेलाडोना, नक्सवोमिका हियार देना चाहिये ।

अगर छातीमें दर्द और श्वासलेनेमें कष्ट हो तो सिपिया, ब्रायोनिया, चायना, आर्निका,आर्सनिक देना चाहिये । ज्वरके जाडेमें प्यास लगे तो ब्रायोनिया और केप्सिकम् । ज्वर आनेके पहले प्यास लगै तो सिंकोना और आरनिका देना चाहिये। जाडा और कंप आनेसे पहले प्यास हो तो थूजा, सेवाजिला देना चाहिये। घबराहट और प्यास दोनों एक साथही हों तो कलकेरिया और वेलेरियन देवे । गरमी की घबडाहटके बाद प्यास लगै तो ओपियम और रामनमूर देना चाहिये ।

टाइफस फीवर याने सन्निपात ।

एलोपेथिकसे लक्षण ।

एलोपेथिकके मतसे यह पीड़ा संक्रामक अर्थात् एकसे दूसरोंको होनेवालीहै साधारणतः जब अकाल पडताहै और लोग भूखे मरते हैं और हवाका अच्छी तरह न चलना और अच्छी२चीजें खानेको न मिलना थोडी जगहमें बहुतसे मनुष्योंका रहना शरीर और मनसे बहुत परिश्रम करना भूखे या अनुचित वस्तुओंके भोजन करनेवाले मनुष्योंके शरीरकी दुर्गंध अथवा मुरदेकी खराबहवा शरीरमें प्रवेश करनेसे टाइफसफीवर उत्पन्न होता है इस ज्वरमें पहले जाडा

मालूम पडताहै माथेमें दर्द हाथ पैरोंका भडकना आलस्य किसी कामकी इच्छाका नाश नाडी बलहीन और शीघ्र चलनेवाली हो जाती है,भूख कम लगतीहै वमन होनेकी इच्छा बनी रहतीहै, दोचार दिन ऐसे लक्षण दीखकर पीछे स्पष्टरूपसे ज्वर दिखाई देने लगताहै। ज्वरके समयमें शरीर गर्म होजाता है, प्यास बहुत लगती है, माथेमें दर्द होताहै, मुखँ लाल पडजाताहै इस ज्वरसे४दिनमें रोगी इतना दुबला होजाताहै कि खाटसे उठाभी नहीं जाता ऐसी हालतमें नींद्-का अच्छी तरहसे न आना, मनमाना बकना, स्वप्न बहुत देखना, थोडाँ पेशाब लाल का भी आना यह लक्षण दीखकर पांच सात दिनहीके बीचमें लाललाल चकत्ते दिखलाई पडने लगतेहैं जब तो रोगीसर्वदा व्याकुल रहकर बेजोडबातैं बकने लगताहै।रोगीकेश्वास से बदबू आने लगतीहै,नाडी कमजोर पडजातीहै।रोगी धीरे धीरे बेहोश होकर बहरा होजाताहै मुख थोडा फटजाताहै जिससे लोग नहीं पहँचानसक्के हाथपांव काँपना शय्याकी चीजोंका खींचना आदि लक्षण दिखाई पडतेहैं यदि इस पीडामें औषध देनेसे आराम होता चला जाय तो समझना चाहिये कि,आराम होजावेगा नहीं तो फुसफुसकी नलीमें रक्त बहकर चला जानेके कारणसे रोगी मर जाताहै।यह बीमारी यदि थोडी अवस्थावालेको हो तो जीनेकी आशा कीजातीहै बडी अवस्थावालेका बचना कठिन होजाताहै।

होमियोपेथिकसे लक्षण।

यह एकसे दूसरेको लगनेवाला एकतरहका स्थिर तपहै जो१४ से२१दिनतक बराबर रहताहै,कभी धीरेधीरे चढताहै कभी एकबा-रही घोर होजाताहै, कभी शरदी लगकर चढता है इसमें अरुचि, श्वास,उबकाई,कब्ज और जीभ मैली होती है। इसके दोष विशेष

वढजानेसे शिरमें दर्द,बेहोशी,भ्रम,कंप,बायटे शरीर और संधियों-में पीडा, मलमूत्रकी अज्ञानता होती है।इसका कारण निर्बलता, मैलीहवा, अजीर्ण और एक प्रकारका जहर जो रोगीके श्वास या पसीने आदिसे दूसरोंको लगै इसप्रकार जानना ।

एलोपेथिक चिकित्सा ।

इसरोगमें रोगीको स्वस्थता करनेवाली चीजें खानेको देनी चाहिये जहां साफ हवा आतीहो ऐसे मकानमें रखना चाहिये । सोने और पहरनेके कपडे हमेशा साफ रखने चाहिये और नीचे लिखी दवाको देना चाहिये ।

पल्भरूवर्ब	२ औंस
लाइट मेंगनेशिया	३ औंस
पिल्भ जिंजर	१ औंस

सब चीजें एकसाथ मिलाकर २० से ३० ग्रीन तक एकदफे रोगीको देनी चाहिये इसको ग्रेगरिजपाउन्डर वा रूवर्बपाउन्डर कहते हैं इसके उपरांत यह दवा देनी चाहिये ।

हाइड्रो क्लोरिक एसिड डिल	२ ड्राम
मेलिमाडिपूरेटी	१ औंस
डिकोक्सन होर्दियाई	१ पाइंट

इसतरह दोतीन घंटेके अन्तरसे दिनमें दोतीनबार देवे और किसी कपडेको पानीमें भिगोकर शरीर साफ करदेना चाहिये । माथेपर ठण्ढा पानी समयानुसार काममें लाना चाहिये पथ्यमें दूध चाह काफी इत्यादि देना योग्यहै ।

जब देखें कि रोगी कमजोर होगयाहै चेहरेपर कमजोरीके लक्षण दीखतेहैं तब नीचेलिखी चीजें देवे ।

हंस या मुरगीके अंडे	नग २
पानी	८ औंस
बराण्डी शराब	८ औंस

पहले अंडोंको तोडकर उसमें पानी डाले उपरांत बराण्डी मिलाकर पिलावे यदि पेशाब कम हो तो शराब कम देनी चाहिये या न भी देना उचितहै। बेकली और नींद न आती हो तो उसके लिये बीचबीचमें थोडी थोडी अफीम देनी मुनासिब है।

जब देखें कि रोगी स्वस्थहै तो नीचे लिखी दोनों दवाओंमेंसे किसी १ दवाको देना चाहिये।

सल्फेट ऑफ कुनाइन	१२ ग्रीन
सल्फूरिकएसिड एरोमेटिक	३० बूंद
इनफ्यूजन कासिया	८ औंस
लाइकर इष्टिकिनिया	३० बूंद

इसकी छःमात्रा बनाकर दिनमें दो तीन दफे देनी चाहिये परंतु दवा खाली पेटमें देना उचित नहीं रोगीको कुछ खिलाकर देवे।

सलफ्यूरिक एसिड एरोमेटिक	३० बूंद
टिंचर सिन्कोना	९ ड्राम
सिरप ओरेन्सियाई	आधा औंस
इनफ्यूजन सिनकोना	६ औंस

पहिली औषधिके समान इसको भी देनी चाहिये।

होमियोपेथिक चिकित्सा।

जब जाडालगे और केकी इच्छा या के होतीहो तो एक२घन्टे-के अन्दरमें, वेरेट्राम विराइट देवे अगर इससे पूरा फायदा न होतो ब्रायोनिया और रस दोदो घन्टेके अन्तरसे देवे, बहुत बेहोशी न हो तो दो घन्टेके अन्तरसे बिलाडोना देवे अगर शरीर ठंढा पड़

गया हो तो एक एक घन्टेके अन्तरसे आर्शनिक देना चहिये ।
शिरमें दर्द ज्यादा हो तो आर्निका या फास्फरिस या आर्सनिक, सिपिया, पलसेटिला, इग्नेसिया और चायना दिया जाताहै।

शरदी और खांसी बहुत हो तो, एकोनाइट, साबाडिला, लाकेसिस, सलफर, रसटक्स, कोनायम, काममें लावै।

यकृत हो तो, आर्शनिक, मर्क्यूरियस, चायना, नक्सओमिका देना चाहिये।

पेटकी बीमारी हो तो आर्निका, केमोमिला, चायना, कालोसिन्थ, एपीकाक देना चाहिये।

आंखें लाल या बेंहोशी होतो ओपियम, पलसेटिला एण्डिमटार्टर, हाइयो, सायमस देसक्ते हैं।

यदि छातीपर बोझसा मालूम हो और श्वास अच्छीतरह न आवै तो लाकेसिस, एण्टिमणि, फास्फरिस, ब्रायोनिया, सल्फर, पल्सेटिला देना उचित है।

यदि गरमीके समयमें प्यास बहुत होतो, सिकेली, सिनकोनाहियार, सलफर, नेट्रमम्यूर, साइलिसिया और वेरेट्रम देना पड़ैगा।

माथेमें खून बहुत होनेसे, एकोनाइट, लाकेसिस, पलसेटिला रसटक्स ब्रायोनिया देवै।

कमजोरीमें–नक्सओमिका और ऐसिडफास्फरिक देना उचितहै।

शरीरमें वेदना होतो चायना और इग्नेसिया, हेलिओरास और विरेट्रम देना उचित है।

नाडी बहुत देरमें दीखै तो सिनकोना, लाकेसिस, नाइट्रिक एसिड और फास्फरिकएसिड देना उचितहै।

यदि नाडी लुप्त होगई हो तो एकोनाइट, कोनायम, कुप्रम-सिकेली, साइलिसिया और ष्ट्रामोनियम देनाचाहिये।

बदहज़मी और कोष्ठबद्ध हो तो आर्सनिक, लाईकोपोडियम, नेट्रेमम्यूर, भेरेट्रम, देना चाहिये और रोगीके रहनेका स्थान और वस्त्रादि सब स्वच्छ रहनेचाहिये जिसमें रोगीको उत्तमवायु मिल-नेके कारण कष्ट न हो। रोगीका मुँह और हाथ हमेशा गरमपानीसे धोकर साफ करना चाहिये।तथा प्रतिदिन कपड़े बदलाने चाहिये।

इंटर मेटिंट फीवर—विषमशीतज्वर।

यह तप शरदी लगकर चढ़ताहै,शरदी उतरतेही गर्मी मालूम पडती है कभी पसीना आकर उतरताहै,कभी बेपसीना आयेभी उतरजाताहै।इसमें शरदीकी अधिकता५ मिनटसे लेकर २ घंटेतक और गर्मीकी अधिकता १५ मिनटसे १ घंटेतक होतीहै। कभी शिरमें बहुत दर्द कभी जी मचलाता और कै होतीहै।इसका कारण प्रायःकरके मेलेरिया याने वृक्षोंआदिकी पत्तियोंको सडनेके का-रण जो विष हवा या पानीमें मिलताहै वह मनुष्योंको पीडा देता है। यह प्रायः करके वर्षाके अंतमें होताहै। इसके ३ भेदहैं पहिला कोटीडेइन अर्थात् नित्यशीतज्वर एकांतरा जो२४घंटेपीछे चढै। दूसरा टरसनफीवर अर्थात् तिजारी जो ४८ घंटेपीछे चढै।तीसरा करटनफीवर जो ७२ घंटेपीछे चढै। उसको चौथिया बोलतेहैं। २४ घंटेपीछे चढनेवालेमें मैलेरिया अधिक होताहै४८ घंटे पीछे चढनेवालेमें मैलेरिया कुछ कम होताहै ७२ घंटेपीछे चढनेवा-लेमें उससेभी कम मैलेरिया होताहै।

एलोपेथिक चिकित्सा।

सबसे श्रेष्ठ दवा इसकी बारी रोकनेके वास्ते कुनेन बताते हैं जो बुखार चढनेसे२या १॥ घंटे पहले १या २ रत्तीके उनमानसे देनी

चाहिये।शरदी अधिक आतीहो तो खाली कुनैनकी गोली १
चुल्लू पानीकेसाथ देनी चाहिये।अगर शरदी कमतीहो तो अनुमा-
नमें शर्बत वनफसा या मिश्रीका शर्बत देना चाहिये । अगर बुखा-
रके चढनेका समय ठीक ठीक प्रतीत न हो तो प्रातःकालसे लेकर
दोदो घंटेके अंतरसे कईबार देना चाहिये । जिसदिन वारी न हो
उसदिनभी १ वार जरूर देनी चाहिये । अगर कुनइन न हो तो
सिनकोना देसक्ते हो अथवा भुनी फिटकडी ४या ५ रत्तीको देनेसे
भी वारी रुकजाती है । मौका और ताकत हो तो हलकासा जुला-
बभी देसक्ते हो अगर कालीमिरचोंको तुलसीपत्रके रसमें घोटकर
गोली बनालेवे तो यहभी कुनइनसे कुछ कम नहींहै तुर्त वारीको
रोकदेती है ।

कंटीन्यूड फीवर–पित्तज्वर ।

इसके २ भेदहैं पहिला कंटीन्यूड फीवर और दूसरा आरडंट
कंटीन्यूड फीवर । पहले कंटीन्यूड फीवरके लक्षण लिखेजाते हैं ।
इसमें शरीर गर्म, नब्ज तेज, जीभ खुश्क, कब्जी, मूत्र कमउत-
रना, पसीनेका अवरोध और विना शर्दीलगे चढता है ।

दूसरा आरडंट कंटीन्यूडके लक्षण–चेहरा लाल, शिरघूमना,
रोशनी और शब्द बुरा लगना, शरीर बहुत गर्म, नाडी बहुत तेज,
हडफूटन, पित्तकी वमन, कभी कब्ज, कभी पित्तके दस्त आना,
मूत्रका कम उतरना, मूत्रका रंग लाल या पीला होना, शिरमें दर्द,
जीभ पीली या लाल किनारेकी या मैली नहीं रहना । कभीकभी
भ्रम होना, इसमें पहलेकी अपेक्षा गरमी अधिक होतीहै । दोनों
प्रकारका ज्वर ऋतुके वदलने या विशेष गरमी होनेसे या धूप,
परिश्रम, शोक, अतिनशा, कब्ज, या मलके रोकनेसे होता है ।

एलोपेथिक चिकित्सा ।

यदि कटीन्यूड फीवर हो तो हलका जुलाव देकर फीवरमिक्चर देना चाहिये अगर आरडंट कंटीन्यूड फीवर हो तो रोगी के पास रोशनी नहीं रखनी चाहिये,न पुकारकर बोलना चाहिये और कैलोमेलसे करडा जुलाव देकर पीछे टारटारएमिटकका मिक्श्चर देना चाहिये और पानीमें सिरका मिलाकर कपडा भिगोवे और उस कपड़ेसे कभी कभी शरीर पोंछे ।

डेंगू फीवर–कफपित्तोल्बण सन्निपात ।

यह ज्वर बहुधा हिन्दुस्तानमें नहीं होता,इसमें बारबार रोमांच होना, शिरमें दर्द,मुख लाल,आंसू जारी, जीभ काली या लाल, काले रंगकी वमन होना,हिचकी,नब्ज तेज,और बेकायदे चलना, कभी कभी कुछ घंटों नित्य रहकर३–४दिनमें आराम हो जाताहै कभी वढताही जाताहै । रोगीको ३–४–११ दिन करडे होतेहैं पीछे आराम होनेकी आशा होजाती है । कारण इसका गरमीकी अधिकता, शोक, कुपथ्य, मैलेरिया बतातेहैं ।

एलोपेथिक चिकित्सा ।

एपीकाकाना देकर वमन कराना चाहिये सनाय, चिलप या कैलोमेलका जुलाब देना चाहिये । पीछे कोई साधारण दवा देना चाहिये ।

टाइफाइड फीवर–दुर्गंधजनितज्वर ।

यह तपभी आदिमें अकसर शरदी लगकर चढता है।चेहरा फीका और सुकडासा होजाता है । रातको गरमी, बेचैनी और प्यास अधिक होतीहै,नब्जकी चाल९ से १२ तक होती है । यकृत् और प्लीहा भी वढजाता है । कभीकभी लालधब्बे होजातेहैं, बहकना कभी के होना, हुचकी,कभी रुधिरके दस्तभी होते हैं । इसमें२०

दिनसे ३० दिन तक डर रहता है। इसका कारण मरे पशु और पक्षियोंके सडनेसे दुर्गंधिकाहोना, जिसके द्वारा एकप्रकारका जहर पैदा होकर नाक या श्वासकी राहसे हवाके साथ शरीरमें पहुँचनेसे यह ज्वर पैदा होताहै तथा गर्म खुश्क ऋतु और गर्म खुश्क भोजन करनेसे होजाता है।

एलोपेथिक चिकित्सा ।

आदिमें कब्ज हो तो ४ ड्राम,कास्टेल देकर पीछे थोडाथोडा पारेका मुरक्कबात जैसे कैलो मेल इत्यादि देना चाहिये। जिसमें दस्त अधिक होकर कोठा साफ होजावे पीछे बंद करनेको अफीम या तारपीनका तेल १० से २० बूंद तक देना चाहिये।

फ़ीमन फीवर,गला,सडा अन्न खानेसे उत्पन्नहुवा ज्वर-यह अचानक शरदी लगकर चढता है। शिरमें दर्द, अंगोंका टूटना, पीछे वहुत जोरसे बुखार चढना, शरीरकी गरमी १०९ से१०७ डिगरी तक होजातीहै। पित्त या स्याहरंगकी वमन होनेलगती है, कभी दस्त भी होते हैं, कभी जोडोंमें दर्द होता है। इसका कारण गला सडा अन्न खाना या अकालमें भूखे मनुष्योंके शरीरसे जो जहर पैदा हो उसके कारण यह ज्वर पैदा होताहै।

एलोपेथिक चिकित्सा ।

यदि वमन हो तो खूब होनेदे और दस्त अधिक होतेहो तो अफीम देकर रोकदे और फीवर पाउन्डर देवे।

पाईएमिया--रक्तविकारज्वर ।

किसी अंगमें शोथ होकर पीब पडजातीहै जिसके कारण रुधिर विगडकर तप चढ जाताहै। कभी सफेद धब्बे पडजातेहैं। कभी जोडोंमें दर्द भी होने लगताहै। इसका कारण खूनबिगडना,खूनमें पीवका पडजाना, अग्निसे बहुत तापना आदि।

एलोपेथिक चिकित्सा।

खूनसे पीब निकालना अथवा पीब आदि मल सुखाकर खूनको साफ करना जिसकेवास्ते उसवा या चिरायतेका अर्क देना चाहिये।

लेरिंजायटिस–वातपित्तज्वर।

इसमें जाडा लगकर ज्वर चढताहै, आवाज बैठजातीहै, सूखी खांसी तथा श्वास होताहै, गला आजाताहै, इसका कारण गर्मी पर शरदी लगना, मेहमें भीगना, हवा लगना, इत्यादि होते हैं यदि बहुत कब्ज और चेहरा नीला तथा श्वास हो तो असाध्य जानना।

एलोपेथिक चिकित्सा।

कैलोमेल १ ग्रीन, टारटारएमेटिक पाव ग्रीन, अफीपून आधी ग्रीन, मिलाकर देना कहाहै।

केटारफीवर–वातकफज्वर।

इसमें जाडा देकर ज्वर चढताहै, शिरमें दर्द और बोझसा रहै, छाती जकड़ीहुई, नाकमें कफ, छींक आवैं, नेत्र लाल और पानी पडतारहै, कारण इसका शरदी लगनी, बादीकी वस्तु खाना और कब्ज रहना इत्यादि होतेहैं।

एलोपेथिक चिकित्सा।

रातको १० ग्रीन कैलोमेल खाकर गर्मपानीसे पांव धोना-या चाय नमकीन पीकर मुख ढांककर सोरहै तो आराम हो जायगा।

प्लोराटिस–पित्तकफाधिक्यसन्निपात।

यह शरदीका तप। पहले छाती भारी, फेर स्तनोंके नीचे पसलीमें दर्द सूखी खांसी, कफआना, श्वास, मूत्र लाल और कमती उतरै और जीभ मैलीरहै। इसरोगमें पहले प्लोरा अन्तडीमें सूजन

होकर पीछे खून भरकर पानी भरजाताहै। कारण वायु कफ निर्बलता दूसरे शरदी मेह चोट बोझउठाना अतिश्रम करना इत्यादि होतेहैं ।

एलोपेथिक चिकित्सा ।

केलोमेल २ ग्रीन, अफीम १ ग्रीन ३–४ घन्टेके अन्तरसे देना चाहिये ।

टानसीलाइटस–जिह्वक सन्निपात ।

पहले शरदी लगती है, पीछे गरमी पीठ हाथ और पांवोंमें दर्द गलेमें गरमी और खुश्की, निगलनेमें तकलीफ, बोलनेमें कठिनता, कंठमें सुरखी, जीभ मैली और सफेदपापडी जमीहुई होती हैं ज्यों ज्यों रोग बढता जाता है कानोंमें दर्द और बुखारका जोर होता है, श्वास बढता है, सुनाई कम देने लगताहै, मुख खुला रहजाताहै, और बेहोशी पैदा होतीहै, कारण इसका फिरंग, आतशक, कमजोरी, शरदी और गरमीमें अतिठण्ढा पानी पीना, तीक्ष्णवस्तु निगलना, इत्यादि होते हैं ।

एलोपेथिक यत्न।

इसका यत्न वह है जिस्में पानी सूखे जैसे अफीम कोनइन इत्यादि देना चाहिये।

हेकटिकफीवर–श्लेपक ज्वर तपेदिक।

यह बुखार एसियाके मुल्कमें विशेप होता है, इस्में थोड़ीसी शरदी लगकर तप चढता है हथेली और तलवे अधिक गर्म रहते हैं। भूख कम लगती है, धीमा बुखार रहताहै, जीभ मैली और कभी पसीना बहुत आयाकरता है।कभी दस्त लगते हैं, विख्यात है कि जब किसी अंगमें पीव पैदा होगई हो तो तपेदिक पैदा होताहै कभी विना पीवके भी पैदा हो जाता है पहिचान इस्की यह है कि जहां पीव पैदा होताहै वहां कलमलाहट बीझनी मालूम पड़तीहै। थकान और दर्द रहताहै इसका कारण कमजोरी, क्षीणता, धातुकी क्षीणता, प्रमेह, मंदाग्नि अतिमैथुन आदि होते हैं।

एलोपेथिक चिकित्सा।

दर्जे बदर्जे ताकत बढ़ाना चाहिये और मुकव्वी दवा जैसे, कोनैन और कारवोट औफआयरन याने फौलादका अंगरेजी कुश्ता १ या २ रत्ती प्रतिदिन देना चाहिये या नारकोटीन आदि भी देना योग्यहै पथ्यमें दूध देना चाहिये।

निमोनिया-राजयक्ष्मा उरक्षत-सिल।

ऐलोपेथिकसे लक्षण।

इसके ५ भेदहैं १ निमोनिया २ लब्यूलर या वंकोनिमोनिया ३ पुराना वा इंटर ष्टिशियेल निमोनिया ४ फुफ्फुसकीगें ग्रीन ५ फुस-फुसमें केन्सर, यह ५ भेद हैं जिसमेंसे पहिले एमोनियाके लक्षण लिखे जाते हैं। इसको निमोनिया वा फुसफुसका प्रदाह कहते

होकर पीछे खून भरकर पानी भरजाताहै। कारण वायु कफ निर्बलता दूसरे शरदी मेह चोट बोझउठाना अतिश्रम करना इत्यादि होतेहैं ।

एलोपेथिक चिकित्सा ।

कैलोमेल २ ग्रीन, अफीम १ ग्रीन ३–४ घन्टेके अन्तरसे देना चाहिये ।

टानसीलाइटस–जिह्वक सन्निपात ।

पहले शरदी लगती है, पीछे गरमी पीठ हाथ और पांवोंमें दर्द गलेमें गरमी और खुश्की, निगलनेमें तकलीफ, बोलनेमें कठिनता, कंठमें सुरखी, जीभ मैली और सफेदपापडी जमीहुई होती. है ज्यों ज्यों रोग वढता जाता है कानोंमें दर्द और बुखारका जोर होता है, श्वास वढता है, सुनाई कम देने लगताहै, मुख खुला रहजाताहै, और वेहोशी पैदा होतीहै, कारण इसका फिरंग, आतशक, कमजोरी, शरदी और गरमीमें अतिठण्ढा पानी पीना, तीक्ष्णवस्तु निगलना, इत्यादि होते हैं ।

एलोपेथिक चिकिसा ।

थोडा रोग हो तो जुखामका यत्न करना। दूध और पानी गर्म करके कुरले कराना, वफारा देना । तथा कार्बोंटऔफ आयरन देनाचाहिये। तथा अफीम भी देसक्तेहैं । तथा फीवर पाउन्डर देना वहुत अच्छा इलाजहै ।

हाइडरोथारेक्स–वातक्लास ज्वर ।

इस रोगमें एक या दोनोंतरफ ल्पोराथैलीमें पानी भर जाता है । पाँवोंपर सूजन, कासश्वास, पेट भारी और भूख कमती लगती है, यदि इसमें वायुका भी मेल हो तो, हलानेसे ढलढल करैगा इसके कारण भी वही होते हैं ।

एलोपेथिक यत्न।

इसका यत्न वह है जिस्में पानी सूखे जैसे अफीम कोनइन इत्यादि देना चाहिये।

हेकटिकफीवर-प्रलेपक ज्वर तपेदिक।

यह बुखार एसियाके मुल्कमें विशेप होता है, इस्में थोड़ीसी शरदी लगकर तप चढता है हथेली और तलवे अधिक गर्म रहते हैं। भूख कम लगती है, धीमा बुखार रहताहै, जीभ मैली और कभी पसीना बहुत आयाकरता है कभी दस्त लगते हैं, विख्यात है कि जब किसी अंगमें पीव पैदा होगई हो तो तपेदिक पैदा होताहै कभी विना पीवके भी पैदा हो जाता है पहिचान इस्की यह है कि जहां पीव पैदा होताहै वहां कलमलाहट बीझनी मालूम पड़तीहै। थकान और दर्द रहताहै इसका कारण कमजोरी, क्षीणता, धातुकी क्षीणता, प्रमेह, मंदाग्नि अतिमैथुन आदि होते हैं।

एलोपेथिक चिकित्सा।

दर्जे बदर्जे ताकत बढ़ाना चाहिये और मुकव्वी दवा जैसे, कोनैन और कारबोट औफआयरन याने फौलादका अंगरेजी कुश्ता १ या २ रत्ती प्रतिदिन देना चाहिये या नारकोटीन आदि भी देना योग्यहै पथ्यमें दूध देना चाहिये।

निमोनिया-राजयक्ष्मा उरक्षत-सिल।

ऐलोपेथिकसे लक्षण।

इसके ५ भेदहैं १ निमोनिया २ लव्यूलर या वंकोनिमोनिया ३ पुराना वा इंटर स्टिशियेल निमोनिया ४ फुफ्फुसकीगेंग्रीन ५ फुस-फुसमें केन्सर, यह ५ भेद हैं जिसमेंसे पहिले एमोनियाके लक्षण लिखे जाते हैं। इसको निमोनिया वा फुसफुसका प्रदाह कहते

हैं।फुसफुसमें बहुत दाह या फुसफुसके दाहिने और बायें बहुत दाह होती है और नीचेकी तरफ बहुत पीड़ा होती है । बीमारी प्रगट होनेसे पहिले ज्वर, कंप, खांसी कभी बहुतदिन पहिले भूखकी कमी,निर्बलता,हाथपैर और वक्षस्थलमें वेदना श्वासका जोरसे चलना नाडी द्रुतगामिनी, जिह्वा और होठ नीले होजातेहैं।धीरेधीरे इस रोगमें रोगीको चैतन्यता होकर मृत्यु होजातीहै। यह रोग साधारणतः ६से १० दिनतक अत्यंत कष्ट देनेवाला होताहै।खांसी बहुत आतीहै।श्वासमें कष्ट होताहै। इस रोगके प्रारम्भसेही खांसी उत्पन्न होतीहै । उठकर बैठनेसे या बड़ा श्वासलेनेसे खांसी होतीहै और धीरेधीरे उसके साथकफ निकलताहै और जब बीमारी ऐसीहोजाती है कि जिसमें रोगीके मरनेका डर हो तो ऊपर लिखे लक्षण कम या बिलकुल जाते रहतेहैं इसमें कफ पहले तो शरदीलगनेके समान पतला पीछे दो एक दिनमें या कहीं कहीं दो एक घन्टेहीमें आटेके माफिक करडा हो जाताहै कुछ ललाईलिये होताहै यद्यपि कफके साथ खूनका चिह्न नहीं रहता परन्तु रक्तका भाग कुछ अवश्य मिला रहताहै और रोगीको बुखार बढताही जाताहै पहले दिन १०२ से १०४ डिगरी तक, तीसरे दिन १०७से१०९डिगरी तक देखागयाहै परन्तु जब १०९डिगरी तक बुखार होजाताहै तो रोगीका जीना कठिनहै । नाडीकी गति यद्यपि सबजगह समान नहीं होती परन्तु जबभी तीसरे और चौथे दिन१२० से १३०तक हो जाती है। माथेमें पीडा होतीहै, निद्राका नाश और बेकली भी होजाती है । पेशाबके साथ खून या खूनकी झलक लाली लियेहुये होतीहै उसके साथ धातु भी मिली रहतीहै इस रोगका दूसरा भेद लव्यूलर या बंकोनिमोनियाहै इसके लक्षण निमोनियाकेसेही होते हैं केवल इतना विशेष होताहै कि साधारण निमोनिया में जो कंप-

आदि लक्षण दीखपड़तेहैं वह इसमें नहीं होते। शरीरकी गरमी १०३से–१०५डिगरीतक होतीहै कभी ज्वर बंद और कभी बढ जाताहै, नाडी अधिक चलती है। तीसरा पुराना अर्थात् इंटरप्रिशियेलनिमोनिया का लक्षण। पहिले लिखाहुवा निमोनिया पुराना हो जानेसे पसलीके १ तरफ खिंचाव, श्वासका कष्ट और खांसीकी प्रधानता होतीहै। कफ अतिकष्टसे निकलता है और उसमें बहुत बदबू होतीहै यह लक्षण दीखते हैं, चौथा फुफ्फुसकी गेंग्रीन याने पुरानानिमोनिया होकर जंतुके विषसे या खूनके विषसे सिफलिस याने उपदंशसे भी यह पीडा होजाती है, जिसके द्वारा फुफ्फुसमें कष्ट होता है। पांचवां फुफ्फुसमें केन्सर। यह बीमारी बहुत कम देखी जाती है इसे कोई संक्रामक और कोई कुलज बताते हैं इसमें खांसी, श्वास, वक्षस्थलमें तीरभेदनवत् पीडा या वेदना, दबानेसे पीडाका बढना और खांसीके साथ कफ निकलता है। फुफ्फुससे खून भी निकलता देखागया है। ज्वर, रात्रिमें पसीना, बलक्षीण इत्यादि लक्षण होतेहैं यह ५ भेदका है। अब निमोनियांके सामान्य लक्षण लिखेजाते हैं इसमें पहले फेफडा अर्थात् फुफ्फुसमें सूजन होतीहै और करडा पड़जाताहै, पीछे गलनेलगजाताहै, इसके आदिमें जाड़ेका तप, छाती ज्यादागर्म, मुख और आँख लाल शिरमेंदर्द, प्यास, जीभ मैली, क्षुधाका नाश, छातीमें मीठामीठादर्द, सूखीखांसी या कभी कफ निकलताहै। व्याधिके विशेष बढजानेपर कफमें कुछ रुधिरभी पडने लगता है। श्वासमें तंगी, थूक ल्हेसदार दुर्गंधयुक्त होताहै। कारण इसका शरदी ऋतु बदलना, कईप्रकारके ज्वर, अतिश्रम, अतिमैथुन, ज्वरमें शीतवस्तुखाना, कुपथ्यकरना इत्यादि होते हैं। होमियोपेथिकसे निमोनियाके ४ भेद हैं जिसमें पहिले निमोनियाके लक्षण कहते हैं। ठंडी हवा लगनेसे या और

किसीकारण ठंड लगनेसे यह पीडा उत्पन्न होती है । कंप, ज्वर, छातीमें खिंचाव,श्वासप्रश्वासमें कष्ट,खांसी,मैले रंगका कफ निकलना और बोलनेमें कष्ट विदित होताहै। दूसरा प्लूसरीके लक्षण। इसमें ऊपर लिखे सब लक्षण होते हैं परंतु बाईं या दहिनी पसलीमें दर्द होता है । ज्वर, माथेमें दर्दहोना इसका मुख्यलक्षण है ।

तीसरा क्वीन्सीका लक्षण । जिस रोगीके कंठकी नलीमें घाव होकर उसका दर्द बढताही जावै उसे क्वीन्सी कहते हैं उसकी जलन और बढवार पीवनिकलने तक बढतीही जाती है। चौथा केन्सर। इस पीडाको संघातिक और भीतिजनक कहना चाहिये। जब छाती में दर्द हो तभीसे इसका इलाज करना प्रारंभ करे ।

एलोपेथिक चिकित्सा ।

इसमें चिरायतेका क्वाथ या टिंचरस्ट्रील देना चाहिये अथवा नीचे लिखी दवा देना बडाउत्तम होताहै ।

कारबोनेट औफ एमोनिया	३० ग्रेन
टिंचर एकोंनसाइट	४० बूंद
टिंचर सिनकोना	४ ड्राम
पीपरमैन्ट वाटर	६ औंस

सबको मिलाकर १ औंस दिनमें ३दफे देना चाहिये तथा अनेक डाक्टर अपनी जुदी २ रीतिसे इसकी चिकित्सा करते हैं। इसकी पहिली हालतमें रोगीका उदर परिष्कार करनेके वास्ते काष्ट्रौयल या किसी नमकका जुलाव देना चाहिये रोगीके घरको साफ और गर्मपानीकी भाफसे गर्मरखना चाहिये अगर बहुत बुखार हो तो नीचेलिखी दवा देवै ।

लाइकर एमोनिया एसिटेटिस	१५ बूंद
वाइनम एपिकाक	५ बूंद
पानी	१ औंस

यह १ मात्रा दवाहै इसको दिनमें ३ या ४ बार पिलानी चाहिये अथवा।

साइट्रेट आफ पुटास	१२० ग्रीन
लाइकर एमोनिया एसिटिस	४ ड्राम
स्पिरिट एमोनिया एरोमेटिक	२॥ ड्राम
टिंचर एकोनाइट	२० बूंद
पानी	१॥औंस

इसकी छः खुराक बनाकर चार या ६ घंटेके अंतरसे देवें अथवा एमोनिया मिकचर जो नीचे लिखाजाता है देना चाहिये।

कारबोट औफ एमोनिया	५ ग्रीन
स्पिरिट क्लोरोफार्म	१५ बूंद
लाइकर एमोनिया एसिटेटिस	॥ ड्राम
म्यूसिलेज एकेसिया	१ औंस

यह एकमात्रा एमोनियामिक्श्चर हुवा रोगीको दुर्बलताकी दशामें देना चाहिये अगर कफके साथ खून निकलता हो,खांसी और छातीमें दर्द हो या नाडी शीघ्र चलती होवे तो नीचे लिखी दवा देनी चाहिये।

अर्गट	॥ ड्राम
पानी	७॥ ड्राम

यह १ मात्रा दो दोघंटेके अंतरसे पीनेको देवे। किसी२ डाक्टरों की सलाह हैं कि इस रोगमें बहुतसी दवा न देकर स्वाभाविकशक्तिसे रोगका शमन करै अगर रोगी मनमाना बकताहो,नाडी

अतिवेगसे चलै या दुर्बल हो, या किसी और रोगका उपसर्ग यह रोग हो या रोगी अत्यंत बलहीन होगया हो तो विना गर्म दवा देनेके दूसरा इलाज नहीं है ऐसी दशामें नीचे लिखी दवा देवै ।

वाईनम गेलिसाई	१ ड्राम
कारवोनेट ऑफ एमोनिया	५ ग्रीन
क्लोरिक ईथर	१० बूंद
टिंचर केम्फर	१० बूंद
टिंचर मास्क	५ बूंद
साफ पानी	१ औंस

यह१ मात्रा है रोगीकी हालत देखकर देनी चाहिये छातीके दर्द पर अलसीकी पुलटिस, पोस्तके डाढलोंका सेंक करना जरूरीहै नींद न आती हो और दर्द हो तो ओपियम दी जासक्ती है इसके देनेसे कफ निकलनेसे बंद होनेका डर हो तो हाइड्रेड आफ क्लोरेल देवै। इस रोगमें पुष्टिकारक औषधैं और उसके साथ ब्रान्डी देनेसे ज्यादा फायदा होताहै जब रोग अच्छा होजावै तब ५ बूंदके हिसाबसे काडलीवर ओयल देतारहै इसीप्रकार पाँचोभेदोंकी चिकित्सा करनी योग्यहै परंतु निमोनियाकी परमौषधि डाक्टरीमतानुसार काडलिवरओयल है जिसकी १ ड्रामसे लेकर १ औंस तक दूधके साथ मात्रा दी जासक्ती है ।

होमियोपेथिकचिकित्सा ।

कंपके बाद रोगीको बिछौनेपर सुलाकर फी १० मिनटमें एकोनाइट देवै, श्वासका कष्ट अधिक हो तो दोबार एकोनाइट देकर एकबार फास्फरिस देना चाहिये । ज्वर कम होनेके बाद अगर खांसी बढजाय और कुछ पीला कफ निकलै तो फी घंटे पर्यायक्रमसे ब्रायोनिया देवै ।

यदि मुख,मलीन होगया हो और श्वास आने जानेमें बहुतही कष्ट प्रतीतहो और रोगी दुर्बलहोगयाहो तो एण्टिमटीर और आर्सनिक पहले १५ मिनटके अंतरसे पीछे आधघन्टेके अंतरसे देनाचाहिये।

प्लोरिस होतो पहिले एकोनाइट,पीछे ब्रायोनिया देवे।ज्वर दूर होनेके उपरान्त पसलीका दर्द दूर करनेके वास्ते मार्क्यूरियस देवै या फी दोघन्टेके अन्तरमें पर्यायक्रमसे,विलाडानो और मर्क्यूरिस देवे। गलेकी पीडामें एपिस और हियार देवे।

केन्सरकी दशामें हाईडास्ट्रीस, आर्सनिक, कोनियम, बेलो डोना और गेलियम व्यवहार करे।

इस्कार लेटीना अर्थात् पानीझरा।

एलोपेथिकसे लक्षण।

ज्वर और गर्मीकी अधिकता, मुखका आना छाती गला और शरीरपर नन्हे २ दाने दीखना इसका कारण १ प्रकारका जहर जिसके द्वारा शीतला निकलती है उसी प्रकारका दूसरा गर्मीकी अधिकता और खून या मलका उफान है इसके ४ भेद हैं १ समपकसल, २ इनजाइनोजा, ३ मेलिगना, ४ लेटिंट इसका यह ४ भेद है। समपकसलके लक्षण। तप,मुखआना और हल्की सूजन होती है इसकापरिणाम बहुत बुरा नहीं है इनजाइनोजका लक्षण। बुखार,गलेका शोथ,कागका भसना,और नाककानसे पीब बहना इसका परिणाम बुराहै। मेलिगनाका लक्षण। मुख और गले में घाव होताहै इसका परिणाम बहुतबुरा है।लेटिंटका लक्षण। नाक-कानोमें घाव, हाथपैरोंमें शोथ,जोडोंमें दर्द होताहै यहभी बुराहै।

एलोपेथिकचिकित्सा।

१बोतल पानीमें२औंस अर्कसिलफोरस मिलाकर कुरले करावे।

ब्योरेला-खसरा ।

इसमेंभी जुकाम होकर बुखार चढजाताहै। छोटेछोटे दाने निकलतेहैं । नेत्र दुःख, जुकाम, श्वासमें कष्ट,प्यासकी अधिकता,वमन और रोगी बहुत सुस्त होजाताहै इसमें जो भीतरका गुब्बार कम निकलताहै इसके कारण दाने कमनिकलतेहैं दूसरेप्रकारका खसरा और होताहै जिसको चिनकयाक्स बोलते हैं इसमेंभी पहले ज्वर होकर छोटे छोटे दाने पीठपर निकलते हैं और चौथे पाँचवें दिन आपही मुरझा जाते हैं दोंनों का कारण १ प्रकारका जहर होताहै जो चेचकमें होताहै । इसका इलाज सब इस्कारलेटीना याने पानीझरेके समान किया जाताहै यह साध्यरोगहै ।

आस्मालपाक याने शीतल ।

एलोपेथिकसे लक्षण ।

पहिले ज्वर चढकर सारेशरीरमें मसूरके बराबर फुंसी निकल आती हैं कभी छोटी कभी वडी भी निकलती हैं जिसमें छोटी और छीदी सफेद फुनसी अच्छी होती हैं और गहरी, चपटी,ऊदी काली या लाल अच्छी नहीं । इसका कारण १ प्रकारका जहर जो मादेमें होताहै या शीतलवालेका संसर्ग है ।

एलोपेथिकचिकित्सा ।

डॉक्टरीमतानुसार इसका इलाज उत्तम टीका लगानाही है।

प्यौरपेरलफीवर-याने-प्रसूत ज्वर ।

यह बुखार ७ महीनेकी गर्भवती स्त्रीसे लेकर बालक उत्पन्न होनेके ४० दिन पीछे तक होसक्ता है । कारण इसका गर्भाशयमें गंदे रुधिरका बाकी रहजाना या बिगडकर पीव आदि पडना या और किसीप्रकार मैल रहजानेसे होता है ।

एलोपेथिक चिकित्सा।

गंदे खून या मैलको सुखाना उचित है।

ज्वरके असाध्य लक्षण।

एलोपेथिकके मतसे जो ज्वर पित्तसे उत्पन्न होताहै वह धीरेधीरे रोगीको आक्रमण करताहै। सन्निपात ज्वरकी तरह अपने आक्रमणकालमें रोगीको दुःख नहीं देता। प्रारंभ होतेही पेटमें दर्द, भूख क़महोना, माथेमें दर्द, बेकली, सबशरीरमें दर्द या भडकन होना, कै होनेकी इच्छा, जीभ सफेद, जीभके कोनोंमें कुछ ललाई, यह लक्षण प्रतिदिन बढतेही जातेहैं, चारपांचदिनके बीचहीमें रोगीको शय्यासे उठनेकी सामर्थ्य नहीं रहती, पेट फूलजाता है, दाईंपसलीमें दर्द और निद्राकी अवस्थामेंभी रोगी स्वस्थ नहीं रहसक्ता और मनमाना बकताहै। विद्वान् डाक्टरोंने निश्चय कियाहै कि इस ज्वरकाभी विरामहै। केवल उसी समयमें रोगी अपनेको स्वस्थ समझताहै किन्तु यह विराम बहुतही न्यूनसमयका है। पेशाबका थोडाहोना, होठोंका सूखना और दस्त होतेसमय पसीना आजाता है। यदि रोगीसे कोई बात पूछीजावे तो असम्बद्ध उत्तर देता है। रोगी किसी बातको साफ नहीं कहता अर्थात् अधूरी बात कहाकरताहै। इसज्वरमें बहुत खांसी, दाह, थूकमें खून और दस्तोंका लगना इत्यादि उपद्रव बढकर रोगीकी मृत्यु होजाती है। ऐसी हालतमें रोगीको अकेला छोडना या रात्रिमें शय्यासे उठकर बाहर जाने देना उचित नहीं यहां तक कि दस्तके लियेभी घरसे बाहर रोगीको न जानेदे और पहले उदरामयको साफ करै जब देखे कि उदरामयमें लाभ नहीं होता तब ज्वर दूरकरनेके लिये, वेप्टिसिया, दोदो घंटेके अन्तरमें देनाचाहिये। पेट फूलगया हो तो

बिलोडोना और म्यूरेटिकएसिड, अदलबदल करके ३-३ घंटेके अन्तरसे देनाचाहिये । पथ्यादिक जैसे पहले कहे गयेहैं । वैसेही कराने चाहिये । बाकी ज्वरोंमें डाक्टरीमतसे कुनइनको सलफ्यूरिफएसिडमें खरल करके देनी चाहिये । सच तो यह है कि ऐसा रोगी बचता नहीं इसवास्ते परलोकके कृत्योंकी तरफ ध्यान देवै कि जिसमें परलोक सुधरै ऐसे रोगीका बचना असम्भव है ।

इति ज्वरनिदान चिकित्सा. समाप्त ।

प्याइसिसपिलमोनेलस याने क्षयकास ।

एलोपेथिकसे लक्षण ।

पहले विना ज्वर और शरदीके सूखी खांसी होकर श्लेष्माके साथ लाली लिये हुये या साफसाफ खून निकलने लगताहै, हाथेली तलवे सदाही गर्म रहतेहैं,गलेमें खरास,पसलीमें दर्दका अभाव या थोडाथोडा दर्दका होना और फुफ्फुसके ऊपर १तरहका खराश शब्द होता है । माथेमें दर्द, अजीर्ण, भूखकी कमी, किसीकाममें चित्तका न लगना, कमजोरी, रातमें बेकली और रोगी अपनेको सदा बेचैन समझताहै । केशपतन, अंगुलियोंका अग्रभाग मोटा, सवेरे और रातको खांसीकी अधिकता होती है और परिश्रम करनेसे खांसी बढजाती है और श्रमके पीछे जल्दीजल्दी श्वास आने लगता है । कभीकभी ज्वरभी होजाता है । और जीभपर सफेद लेपसा दिखलाई पडने लगता है, यदि स्त्री हो तो उसके रजोधर्मका अभाव या अधिक होना या एकदम बन्द होजाना इत्यादि लक्षण दिखाई पडतेहैं इलाज करनेसे अच्छा होजाय कुछदिनों पीछे फिर प्रगट हो, पैर फूलना, ज्ञानकी शून्यता यहभी होजा-

ताहै,यह रोगी मृत्युयन्त्रणामें अधीर होकर प्राणत्याग करताहै । कारण इसका कमजोरी, अति मैथुन, श्रम या पुश्तैनी हो । जुकाम, शरदी लगना, तेजवस्तु सूंघना इत्यादि होतेहै ।

होमियोपेथिकसे लक्षण ।

भूख कमहोना, पाचकशक्तिका अभाव, प्यास, उल्टी, उल्टी होनेकी इच्छा, थोड़ी खांसी, वक्षस्थलमें वेदना, कमजोरी, देहमें गरमी,हवा खातेही जाडा मालूमहोना यह लक्षण दिखाई पडतेहैं। यह रोग प्राय: १२ से २२ वर्षकी अवस्थावालोंको अधिक होता है इसकी यहभी परीक्षाहै कि नखोंका अग्रभाग नीचा होजाताहै ।

एलोपेथिक चिकित्सा ।

दूध, सोरवा, माखन, अंडा, रोटी इत्यादि पुष्टिकारक चीजें खानी चाहिये । खटाईकी चीजें बिलकुल नहीं देनीचाहिये । रहनेके स्थानकी आबहवा साफ रखनी चाहिये । गर्मकपड़े पहरना और खारीपानीसे स्नान करके शरीर पोंछना चाहिये । और यह दवा देना योग्यहै ।

कोनैन	१॥ मा.
जंतियाना	१॥ मा.
मारफीया	२ रत्ती.

इनकी २६ गोली बनाकर दोनों वखत १ । १ देवै । अजीर्णके लक्षणोंकी प्रबलतामें नीचेलिखी दवा देनी चाहिये ।

एरोमेटिक स्पिरिट औफ एमोनिया	१० बूंद
टिंचर अरेंसाई	१० बूंद
टिंचर कार्डिममकम्पौन्ड	१५ बूंद
इनफ्यूजन कलम्बा	१ औंस

ऐसी १ मात्रा बनाकर दिनमें ३–४ दफे देवै, अगर खून पड़ै तो नीचेलिखी दवा देना चाहिये ।

गेलिक एसिड	१२ ग्रीन
पल्व इपिकाक कम् उपियाई	५ ग्रीन

ऐसी १–१ मात्रा बनाकर आठघंटेके अंतरसे देवै, खांसी हो तो नीचेलिखी दवा देना चाहिये ।

लाइकर मारफीया हाइड्रोक्लोरेटिस	४० बूंद
सीरप सिलि	५॥ ड्राम
हाइड्रोसेनिक एडिस डिल	२० बूंद
म्यूसिलेजिनिस एकेशिया	५॥ औंस

३–४ घंटेके अंतरसे चायपीनेके बडे चमचेका १ चमचा भरकर पिलावै, रातमें बहुत पसीना आताहो तो नीचे लिखी दवा देनी चाहिये ।

ओक्साइड औफाजिङ्क	१२ ग्रीन
एक्सट्राक्ट कनियाई	अवश्यक्तानुसार
वेलहाइउसायमि	१८ ग्रीन

इसकी ६ गोली बनाकर रातको सोते वखत १–१ गोली खावै अगर पेटकी बीमारी हो तो नीचेलिखी दवा देनी चाहिये ।

टिंचर क्रोमेरिया	११॥ औंस
सीरप प्यापेभरिस	५॥ ड्राम
इनफ्यूजन मेटिका	१॥ औंस

३ या ४ घंटेके अंतरमें चाहके बड़े चमचेकी बराबर भरकर प्यावै दर्द हो तो सेकपुलटिस वा टिचर आयोडीन लगावै बुखार हो तो आगेलिखी दवा देनी चाहिये ।

सल्फेट औफ कुनंइन	५ ग्रीन
सलफ्यूरिकएसिडऐरोमेटिक	५ बूंद
इनफ्यूजन क्यासिया	१ औंस

इसकी १ मात्रा बनाकर ऐसीही दिनमें ३–४ मात्रा देवै, कमजोरी दूर करनेके वास्ते नीचे लिखी दवा देवै ।

काडलिभर आयल	१० बूंद
सीरफ औफ फास्फेट औफ आयरन	१० बूंद
हाइयोफास्फेट औफ लाइम	१० बूंद

यह १ मात्रा है दोनों बखत दूधके साथ सेवन करावे ।

होमियोपेथिकसे चिकित्सा ।

इस रोगकी चिकित्साके वास्ते किसी बडे चिकित्सककी आवश्यकता है क्योंकि इस रोगमें प्रकृति समान नहीं होती।

अजीर्ण दूरकरनेके वास्ते नक्सवोमिका, पलसेटिला, कल्फेदिया, एन्टी मोनियम क्रूडम, कार्वोवेजिटे विलिस, केलवाई कोमिकम, लाईयो डियम देवै ।

खांसी होतो फास्फरिस, विलाडोना देवै ।

रातकी सूखी खांसीके वास्ते हाइयोसापेमस देवै ।

पसलीके दर्दमें ब्रायोनिया, देवै ।

रातके पसीनेमें ष्टेनाम, देवै ।

कै दूर करनेको क्रियासोडम, देवै ।

और और उपद्रवोंमें फाईटेलका, देवै ।

होपिंगकाफ याने शुष्क कास ।

यह दोवर्षके बालकसे लेकर १६ वर्षकी उमरतक प्रायः करके होती है कभी बडी अवस्था वालोंकोभी होजाती है देरमें खांसीका उठना,कै या थोडा ल्हेसदार पानी मुखसे आकर शांति होजातीहै।

लंबीसी आवाज मुखसे खांसीके साथ निकलती है,मुख खुलजाता है, यह कभी वबाईसी होकर बहुतोंमें फैलजाती है कारण इसका ऋतुबदलना कभी जुकाम या बुरी हवा होती है ।

एलोपेथिकचिकित्सा ।

२-३ रत्ती हैडरेट औफ क्लोरलको सहतके साथ देना चाहिये और मुरक्कबात फौलाद टिंचर स्ट्रील भी देना योग्यहै तथा जैतूनका तेल१ भाग,रोगन बलसान आधा भाग, लौंगका तेल आधा भाग मिलाकर छाती पर मलना परंतु मालिश १० दिन पीछे करनी चाहिये ।

ब्रांकाइ याने सामान्य खांसी ।

एलोपेथिक लक्षण ।

वायु नलीके श्लैष्मिक झिल्लीके प्रदाहसे इस रोगकी उत्पत्ति होती है। इससे फुसफुसके दोनों अंश या एक अंश बिगड जाता है । इसमें थोडा २शीत अनुभव होताहै, पीछे धीरे २ शरीर गर्म होजाताहै, जिसका परिणाम थर्मामेटरसे ९९ डिगरीसे लेकर १०५डिगरी तक या १०२ डिगरीसे लेकर१०५ डिगरी तक हो-जाताहै। कमजोरी, हाथपैरोंमें दर्द, नाकसे पानी निकलना,गलेमें दर्द इत्यादि खांसीके लक्षण दिखलाई पडते हैं। कभी २खांसीमें कफके साथ खून निकलता है । कुछ दिन पीछे कफका परिणाम अधिक होकर लारके समान पतला और कुछ पिलाई लिये हुये होजाता है, श्वास लेनेमें कष्ट प्रतीत होताहै, जब नखोंका अग्रभाग नीला होजावै उस वखत समझना चाहिये कि रक्तसंचालनक्रियामें कुछ व्यतिक्रम होगयाहै यदि इसकी ठीक रीतिसे चिकित्सा न हों तो यही सब लक्षण बढकर रोगीकी मृत्युतक होसक्ती है। इसका

दूसरा दर्जाके पूलरीब्रांकाईटिस कहाता है जिसमे कैशिकनली सब घिरकर यह रोग उत्पन्न होता है इस दर्जेमें फी मिनटमें ९० बार अथवा इससेभी अधिक बार श्वासकी गति रहती है और उसके साथ सां,सां, शब्द होता है और ऐसा मालूम होता है मानो श्वास रुकगया अतिकष्टसे कफ निकलने और बुखार १०३ डिगरी का या इससे भी अधिकका होजाता है, और जब ब्रांकाईटिस पुराना पडजाता है तब बहुतदिन तक खांसी ठहरकर रोगीको अत्यंत कष्टदायक होजाती है।

होमियोपेथिकसे ब्रांकाइ याने खांसीके लक्षण।

कंठ और वक्षःस्थलके प्रदाहके कारण यह रोग होताहै इसमें नित्यही अतिकष्टदायिनी खांसी होती है इस रोगमें कंठकी परीक्षा अवश्यही करनी चाहिये।

एलोपेथिकसे चिकित्सा।

जब रोगका प्रकाश हो, उसी बखत १ ग्रीन अफीम या चौथाई ग्रीन मार्फिया, ९ ग्रीन कार्बोनेट औफ एमोनिया या थोडीसी शराब पिलादेनेसे फायदा होसक्ताहै।

यदि कोष्ठ बद्ध हो तो किसी साल्टका जुलाब देवे, इसके उपरांत इपिकाकस्कुईल वा एसियाटेट और कार्बोनेट आफ पुटास काममें लावे, अथवा—

सिरप सिलि	१ ड्राम
स्पिरिट ईथर नाइट्रिक	॥ड्राम
टिंचर हाइयो सामस	२० बूंद
एकोवारोग	१ औंस

यह १ मात्रा है सेवन करानी चाहिये। अथवा—

पुटास नाइट्रेस वा पुटास साइट्रेट	१० ग्रीन
वाइनम इपिकाक	१० बूंद
एको वा केम्फर	१ औंस

जैसी १ मात्रा जरूरत होवै जैसीही काममें लावै यदि रोगीको कमजोरी बढगई हो तो स्पिरिटएमोनिया एरोमेटिक देवै । और छातीके दर्दको राईका पलास्तर या तार्पीनका तेल मालिश करना चाहिये । अथवा डिकक्सनसिनकोना और २ दवाइयोंके साथ देना चाहिये । केपूलरीब्रांकाईटिस हो तो पीठपर पुलटिस बांधनी चाहिये । रहनेके मकानमें गरमी ६० से ६८ डिगरी तक होनी चाहिये । खानेको दूध, अलालोट इत्यादि देना योग्य है रोगीकी दशा और अवस्थाके अनुसार डाक्टरको सोचकर चिकित्सा करनी चाहिये । बहुतसी जगह एमोनिया, सेनिगा, इपिकाक, क्लोरोफार्म इत्यादि काममें लाया जाता है ।

होमियोपेथिकचिकित्सा ।

निरंतर नाक सूखी बंद रहै और बराबर पानी भरै और भारी जुखामके साथ खांसी हो तो २ छोटी गोली या एक बडीगोलीमें मर्क्यूरियस फी चार घंटे पर देना चाहिये ।

माथेका अगला भाग यानें कपाल भारी मालूम पडे, छाती दबीसी रहै तो जबतक बीमारी दूर न हो तबतक डाल्कामार देना चाहिये ।

संध्याके समय सुखी खांसी हो या इसके साथ औरभी उपद्रव दीखपडें तो इन सब खांसियोंमें बेलोडोना, देना चाहिये ।

शर्दऋतुकी खांसीमें ब्रायोनिया, देना चाहिये ।
बालकोंकी खांसीमें केमोमिला, देना चाहिये ।
पुरानी खांसीमें फास्फरिस देना चाहिये ।

आस्मा या एजमा याने श्वास।

एलोपेथिकसे लक्षण।

बीचबीचमें श्वास लेनेमें कष्ट, उसीके साथ फुसफुसकी नलीमें आवाज, छातीमें खिंचाव, मनमें घबराहट, खांसतेसमय कष्ट यहां तक कि खांसते खांसते कै भी होजाती है। पेट फूलना, अजीर्णके लक्षण दिखलाई पडना, माथे और नेत्रोंमें भारीपन, रातको या दोपहरके पीछे दुःख देनेवाला दमा उठताहै, बल्कि कभी कभी फुसफुस नलीमें वायुके न रहनेसे रोगी अत्यंत बेचैन हो जाताहै, नाड़ी सूक्ष्म और कमजोर, मुखमण्डल उद्वेग युक्त, आंखें फूली-हुई और लाल ठंढी पडजाती हैं। जब कुछ कफ निकल जाता है उस बखत कुछ तकलीफ कम होजाती है।

होमियोपेथिकसे श्वासके लक्षण।

कष्टसे श्वास आनाही इस रोगका मुख्य लक्षण है। श्वास लेते समय छातीमें खिंचाव, पेट फूलना, माथेमें दर्द इत्यादि अनेक उपद्रव उपसर्गरूप दीखतेहैं कारण मातापिताका वीर्यविकार, शरदी, निर्बलता, वृक्षका विष, कुचला, अफीम आदिकी अधि-कता इत्यादि होते हैं।

एलोपेथिक चिकित्सा।

विद्वान् डॉक्टर इसकी दोप्रकारसे चिकित्सा करते हैं एक तो जब रोग उठे, दूसरे जब कि रोग १ या दो दफे होचुका हो।

पहिली चिकित्सामें यदि पाकाशयमें मल दीखै तो दस्तावर दवा देनी चाहिये। यदि खायाहुवा अन्न अजीर्ण अवस्थामें हो तो वमनकारक दवा देवै, रोगीका स्थान साफ और हवादार रहना चाहिये, रोगीको किसी तरहभी बोलने न दे यहांतक कि जो

उसके जरूरतकी चीजें हों सब उसके पास धरदे जिसमें उसे कोई चीज मांगनी न पड़े। और इस रोगमें डिप्रेसेन्ट याने कमजोर करनेवाली सिड़ेरिभ अर्थात् अवसादक, ष्टिम्यूलेन्ट याने उत्तेजक औषधें देनी चाहिये।

कमजोरी करनेवाली दवाइयोंमेंसे कै करानेके वास्ते इपिकाकु यानहा देनेसे १५ मिनटमें कै होजातीहै।

अवसाददवाइयोंमें धतूरेके पत्ते चिलममें रखकर धूमपान करनेसे श्वासको फायदा करताहै।

एक्सट्राक्ट ष्ट्रामोनियाई	एकग्रीनका तीसरा हिस्सा
एक्सट्राक्ट वेलोडोना	एकग्रीनका तीसरा हिस्सा
कोनाई	२ ग्रीन

इस अन्दाजकी १ गोली बनाकर रातको सोते वखत खानेसे श्वासका कष्ट नहीं होता।

किसी किसीको देखाहै कि क्लोरोफार्मके सूंघनेसे श्वासके वास्ते फायदा हुवाहै।

क्लोरोडाइन १० से १५ बूंद तक पीनेसे भी श्वासको फायदा पहुँचता है।

उत्तेजक औषधोमें काफी विनादूध और चीनीके पीनी अथवा गर्म पानीके साथ ब्रांडी, ह्वीस्की अथवा जिन इत्यादि थोडी थोडी पीनी चाहिये।

होमियोपेथिकसे श्वासकी चिकित्सा।

नीदके समय मूर्च्छा हो, जल्दी२श्वास चलै और कष्ट हो, छातीसे सांसां वा झांझां का शब्द सुनाईपडे और मुख मैला रहै तो एपीकाकाना देना चाहिये, इसकी २ छोटी गोली या १ बडी गोली

अथवा १ बून्द अर्क आधीछटांक पानीके साथ जबतक बीमारी अच्छी न हो एक या आधे घन्टेके अन्तरसे जैसी जरूरत हो काममें लावे, यदि इससे फायदा न हो तो पूर्वोक्त प्रकारसे आर्सेनिक देवे। जो श्वास लेनेमें कष्ट और छाती दबीसी जातीहो तो फास्फरस, देवै। शर्दी वा और कोई हृदयके रोगोंके साथ दमा हो या परिश्रम करनेसे रोग बढता हो तो पूर्व रीतिसे ब्रायोनिया देवै।

न्यूमोथोरिक्स अथवा एकोनिया याने स्वरभंग।

एलोपेथिकसे लक्षण।

जब प्लोएकी थैलीमें हवा भरजाती है उस बखत श्वासलेने और बोलनेमें पूरीपूरी तकलीफ होती है, याने स्वरभंग होजाता है भूख कम लगने लगती है और यह रोग अतिसामान्य कारणोंसे उत्पन्न होताहै किसी किसीकी जबान बिलकुलही बन्द होजाती है वह भी इसीमें परिगणितहै परंतु जो ईश्वरहीके कोपसे मूकहैं उनका अच्छा होना तो कठिनहै यदि गलेमें घाव होजानेके कारण या कंठनली-के नीचे कोई पीडा होनेसे या माथेमें दर्द होनेसे यह रोग हुवा होगा तो आराम होना मुश्किल है। और होमियोपेथिकमें भी इसके कुछ विशेष लक्षण नहीं होते।

एलोपेथिकसे चिकित्सा।

इस रोगमें ५से १० बूंद तक टिंचरफेरीपर क्लोराइड या और कोई लोह घटित औषध देनेसे फायदा होताहै।

स्वर देनेवाली नलीके पास कोई फोडा वगैरह होगया हो तो ४०से ८० ग्रीन तक नाईट्रेट ऑफसिलफर १ औंस पानीके साथ, लोशन बनाकर लगानेसे फायदा होताहै।

होमियोपेथिकसे चिकित्सा ।

कमजोरीसे स्वरभंग हो तो दोनों वखत फास्फारिस, देना चाहिये ।

खांसी और कांसेके शब्दके समान शब्द हो तो हियार सल्फर दोनों बक्त देवै । बहुत बोलने या गानेके पीछे यह पीडा हो तो हिमामिलस दिनमें ३ दफे देवै ।

डिसपिपसिया याने अजीर्ण बदहजमी ।

एलोपेथिकसे लक्षण ।

भोजनका पाक ठीक ठीक न होना, कभी पेटमें गडबड या दर्द, कभी जी मचलाना, दस्त साफ न होना, खट्टी डकारोंका आना, पेट फूलना, आँतोंमें वायु भर जाना, कै होनेकी इच्छा होना, अथवा बमन होना, श्वासमें बदबू आना, मुखमें बराबर पानी भरना, माथेमें दर्द होना इत्यादि लक्षण होते हैं ।

होमियोपेथिकसे अजीर्णके लक्षण ।

बमन, भूख कम लगना, छातीमें जलन, भोजन करनेके बाद पाकस्थलीमें वेदना बाकी सब लक्षण ऊपर कहे हुये होतेहैं, कारण इसका करडी या गरिष्ठ वस्तु खाना, अति चिकना पदार्थ भोजन करना, अजीर्णमें खाना या बिनासमयके भोजन करना इत्यादि होते हैं ।

एलोपेथिक चिकित्सा ।

पेटमें दर्द हो तो गंधकका खट्टा तेजाब १ या २ बूंद पानी या बताशेके साथ देना चाहिये । जी मचलाता हो तो पीपरमेंट देने से फायदा होता है और सम्पूर्ण अजीर्णके वास्ते ।

दूध	४ औंस
लाइम वाटर	॥ औंस

ऐसी १ मात्रा वनाकर दिनमें दोवार देवे अथवा–

पेप्सिन पोर्साई	२ से ५ ग्रीन तक
मार्फिया	॥ ग्रीन
ग्लिसरीन	गोली वनाने योग्य

इसकी १ गोली वनाकर नित्यही देनी चाहिये। यदि पाकाशय कमजोर होगया हो तो नीचे लिखी दवा देवे।

पेप्सिन पोर्साई	२ से ५ ग्रीन तक
ष्ट्रिकिन्या	१ ग्रीनका चोवीसवां हिस्सा
ग्लिसरिन	गोली वनानेके लायक

इसकी १ गोली वनाकर दिनमें १ दफे खानेको दे और कै वन्द करनेके वास्ते।

वाईकार्वोनेट ऑफ सोडा	१० ग्रीन
हाइड्रोसेनिक एसिडडिल	२ बूंद
क्रियोजूट	१ बूंद
इनफ्यू जन कलम्बा	१॥ औंस

यह दो मात्रा दवा है। इसमेंसे १–१ मात्रा दवा दो दो घन्टेके अन्तरसे देनी चाहिये। और सव प्रकारके अजीर्णमें देखागयाहै कि स्पिरिटकेम्फर ५ बूंदसे १० बूंद तक वताशेके साथ देनेसे आश्चर्य युक्त फल दिखाई पडता है। और इस रोगमें दवावोंकी अपेक्षा पथ्यकी विशेप आवश्यकता है जैसे नियमित श्रम करना और विश्राम करना, स्नान करना और तैरना फायदा करता है। घोड़ेकी सवारी इत्यादि हानिकारक हैं।

होमियोपेथिकसे चिकित्सा।

सव प्रकारके अजीर्णमें नक्सवोमिकाकी गोली या उसका मदरटिंचर १–१ बूंद पानी तो० २॥ के साथ चार चार घंटके

अंतरसे देना चाहिये। यदि मुखसे खट्टा २ पानी निकलताहो, और पेट फूलगया हो तो सल्फरकी ३ गोली किंवा १ बूंद मदर-टिंचर आधी छटांक पानीके साथ दोदो घंटेके अंतरमें देना चाहिये। हरा या पीला दस्त होताहो तो कालोसिन्थ विशेष लाभ दिखाता है। मात्रा १ या २ बूंदकी है।

डायरिया अर्थात् अतिसार।

एलोपेथिकसे इसके ४ भेद हैं। क्लौसडायरिया याने पक्कातिसार जिस्में पतले दस्त हों कुछ गाढा और पीला। दूसरा म्योकसडायरिया जिसमें कुछे गाढा और पतला गांठोंसहित मल आवै। तीसरा सेरसडायरिया, जिस्में बहुत पतले पानीके समान दस्त हों। चौथा संपीथेटिकडायरिया। इस्मेंभी पतले गाढे नानारंगके दस्त आतेहैं। यह चार भेद हैं। इसके एलोपेथिक मतानुसार यह लक्षण होतेहैं जैसे दस्त, वमन, जीभ मैली, श्वासमें बदबू, पेट फूलना और पेटमें दर्द, थोडेहीमें जाडा लगना, कमजोर होना यह लक्षण दिखाई पडते हैं। कारण इसका गर्म देशोंमें अत्यंत गर्म भोजन करना, तीक्ष्णवस्तु खाना, लंघनके पीछे गर्मवस्तु सेवन करना, आहारादिकका व्यतिक्रम, बालकोंके दांत निकलनेका समय तथा गर्भ और प्रसूत के समय शोक, भय और जुलाबके पीछे भी होजाताहै। अगर इसरोगीकी कुपथ्यमें इच्छा रहै, धीरे-धीरे शरीर कमजोर हो, मुख पीला पड़जाय, शरीरमें शोथ हो, जीभ और मुखपर सफेदी अथवा मूर्च्छा हो तो उसको असाध्य समझना चाहिये। होमियोपेथिकमें भी डायरिया कहतेहैं।

एलोपेथिकसे चिकित्सा।

कुछ दिन तक दस्तोंको जारी रक्खे बंद न करै चिकनाई और गरिष्ठ वस्तु खानेको न दे; पतले दस्त हों तो शीघ्र ही बंद करने

चाहिये पानीमिला गंधकका तेजाव १० बूंद, टिंचर ओपियम १० बूंद , दालचीनीका अर्क १ औंस मिलाकर इसी हिसाबसे दिनमें ३ वार देना चाहिये अथवा–

काइनो	१० ग्रीन
चाक	५ ग्रीन
सोडावाईवार्क	३ ग्रीन

ऐसी ऐसी दो तीन मात्रा पीनेसे फायदा होता है अथवा–

ओपियम	१ ग्रीन
केलोमेल	५ग्रीन
इपीकाक	३ ग्रीन

ऐसी १ मात्रा दिनमें दो तीन दफे पीनेसे फायदा होता है अथवा–

पल्भरियाई कम्पोन्ड	३ ड्राम
सोडा वाईवार्क	२ ग्रीन
टिंचर ओथाई	१५ बूंद
पीपरमेन्ट वाटर	१ औंस

इस मात्रासे पिलावे तो वडा फायदा हो। यदि कभी पीला या हरा दस्त होता हो, मलद्वारपर जलन और पेटमें दर्द हो तो नीचेकी दवा दे।

सोडा	१० ग्रीन
टिंचर ओप्याई	१० बूंद
पीपरमेन्ट वाटर	१ औंस

ऐसेही ३ मात्रा बनाकर पिलावें यदि पेटमें दर्द हो तो तारपीनका तेल मालिश करके गर्मपानीसे भरीहुई बोतल पेटपर फेरे अथवा सरसों किंवा राईका प्लास्टर बनाकर लगावै और नीचे लिखी दवा खानेको दे।

पल्भ इपिकाक कम्पौन्ड	५ ग्रीन
हाइड्राजकमक्रिटा	५ ग्रीन
सोडा	८ ग्रीन

ऐसेही ३ मात्रा बनाकर दिनमें ३ दफे देवै यदि जुलाबकी आवश्यकता समझै तो काष्ट्रोयल १ औंस और १० बूंद टिंचर ओप्याई देवै परन्तु इस रोगमें पहलेही ऐसी दवा न देवै जिससे दस्त एकदम बन्द होजाय क्योंकि बिना समयके रुकाहुवा मल अनेक रोगोंको उत्पन्न करताहै ।

होमियोपेथिकसे चिकित्सा ।

यदि शरदीसे अतिसार हुवा हो तो प्रत्येक दस्त होनेके बाद मर्क्यूरियस देवै, खराब चीजके खानेसे हुवा हो तो आर्शनिक देवै, पित्तसे या पेटमें दर्द हो तो कमोमिला देवै,यदि ऐसी हाल-त हो कि रोगी दस्तके वेगको न रोकसकै तो मर्क्यूरियस देवै। कमजोरी हो तो आर्शनिक देवै, पीला या फेनदार दस्त हो तो रयूम देवै। रातको सबेरेके वक्त दस्त होनेके उपरांत ही सल्फर देना चाहिये ।

डेमेन्टरी-प्रवाहिका आमातिसार ।

एलोपेथिकसे लक्षण ।

इसके ३ दर्जे होतेहैं, पहिलेमें म्योकसमेवर परदेमें अर्थात् बडी आंतमें सूजन होतीहै। जिसके कारण मरोडेके साथ थोड़े पतले दस्त आतेहैं। दूसरा खामेडस परदेमें कुछ कुछ ज़खम पड जाता है, उस वखत दस्त ऑव और खूनके अते हैं। तीसरे दर्जेमें वह पडदा स्याह और मुर्दार पड़जाता है तब दस्त हरे पीले काले नाना रंगके आतेहैं। क्षुधाका नाश, अत्यन्त कमजोरी, पेटमें सुईछेद-

नेके समान पीडा,थोडी थोडी देरमें दस्त जानेकी हाजत, थोडी प्यास, भोजन करनेकी इच्छाका नष्टहोना,पेटमें आफरा,रोगीके शरीरमें बदबू आने लगे, डेमेन्टरीके यह मुख्य लक्षण होते हैं, यदि रोग प्रतिदिन बढताही जावे तो असाध्य समझना चाहिये। यह रोग पहले दर्जेमें सुखसाध्य, दूसरेमें कष्ट साध्य और तीसरे दर्जेमें असाध्य होजाताहै कारण इसको अत्यन्त गर्मी गर्म खुश्क वस्तु खाना, कच्चाफल, कच्चा अन्नादि गरिष्ठ भोजनकरना है, कभी इसका हेतु मैलेरियाभी होताहै उसवखत यह उपाधि ववाई होतीहै होमियोपेथिकमें भी इस रोगको डिसेन्ट्री ही कहते हैं।

एलोपेथिकसे चिकित्सा।

यदि यह बीमारी सामान्य और पेटमें थोडा ही मल हो तो अंडीके तेलके साथ टिंचर उपियाई,वा क्लोरोफार्मसे कोष्ठको परिष्कार करें और १५ या २० ग्रीन एपीकाकाना खानेको देवै। यदि आवश्यकता रही हो तो ५–७घंटेके पीछे फिर यही दवा देवैं यदि इसदवा देनेके पहिले रोगीको कुछ खिलाया न जावै और दवा खाकर रोगीका शरीर कुछ स्वस्थ रहे तो समझना चाहिये कि रोगी बहुत जल्दी अच्छा हो जायगा।

रोगीको बंदस्थानमें रखकर कै दूर करनेके वास्ते २० बूंदसे लेकर ३० बून्दतक टिंचर ओपियायी अथवा २० बून्द क्लोरोफार्म देकर एक या आधे घन्टेके उपरांत एपीकाकाना देवै। जिससे मल अपनी ठीक दशामें आजावैगा और इस दवासे रोगीको खूब पसीना आकर नींद अच्छी आनेलगेगी। यह सिर्फ १ दिनके वास्ते व्यवस्था दीगईहै, पीछे तो ४–५ दिनतक सिर्फ एपीकाक सेवन कराना चाहिये। यदि कै होतीहो या कै होनेकी

इच्छा हो तो सरसों या राईका पलास्तर लगाना चाहिये। प्यास बहुत हो तो बर्फ वा बर्फका पानी देना चाहिये । पेटमें दर्द हो तो तारपीनतेल या क्लोरोफार्म लिनीमेन्ट देवै और गर्मपानी बोतलमें भरकर पेटपर फेरै ।

यदि मैलेरियासे यह रोग हो तो पहिली दवाइयोंके बीच २में थोडी २ कुनइन देनी चाहिये। किसी २ विद्वान् डाक्टरोंका मत है कि इस रोगमें १० से २० ग्रीनकी मात्रासे कुनइन जरूरही सेवन करावे ।

पहले दर्जेमें काष्ट्रोयल पहलेही दे जिसमें अयोग्य मल निकल जावे। पीछे १२ रत्ती अफीम देकर अपीकाक्काना ९ से १९ बून्द तक ३–३ घन्टेके अन्तरमें देना चाहिये ।

दूसरे दर्जेमें एपीकाक्काना	॥ ड्राम
कोनैन	१॥ मा.
ओपियम	१॥ रत्ती

इसकी १२ गोली बनाकर दिनमें ३ दफे एक एक गोली देवै।

तीसरे दर्जेमें एपीकाक्काना।	॥ रत्ती
सोडा	२ रत्ती

इस मात्राकी पुडिया बनाकर दो दो घंटेके अन्तरमें देवे ।

होमियोपेथिकसे चिकित्सा ।

एक घंटेमें ३ दफे एपीकाक्काना देवै। इसके पीछे मर्क्यूरियस, करोसिवम्, १ घन्टेमें ३ दफे देवै जैसे २ रोगीको फायदा होता-जावे वैसेही वैसे दवा देनेके वखतमें देरी करताजावे। यदि रोगी कमजोर होगया हो दस्तमें खून आता हो तो आर्सेनिक देना चाहिये ।

क्रानिकडायरिया या क्रानिक डिमन्ट्री डायरिया अर्थात् ग्रहणी।

एलोपेथिकसे लक्षण।

यह रोग अजीर्ण और अतिसारसे ही पैदा होजाता है। जब अतिसारकी चिकित्सा उत्तमरीतिपर न कीजावै उस वखत यह रोग पैदा होजाताहै। इस रोगवालेको कभी कभी ५–१० दिनके वास्ते दस्त बंद होजाते हैं। पीछे फिरभी रोग अपने रूपको धारण करलेता है, वहुत दिनतक यह रोग रहनेसे अंतमें ज्वरभी बराबर बना रहने लगता है।

होमियोपेथिकसे लक्षण।

इसके आरंभमें जो लक्षण दिखाई पडते हैं वह पुराना होनेपर बदल जातेहैं। प्रायः करके जल वायु और स्थान बदलनेसे यह रोग कम होजाता है। इस रोगके वहुत बढजानेसे और भी सैंकडों रोग उत्पन्न होजाते हैं। बल्कि कभी कभी रोगीके मरनेकी संभावना होजाती है।

एलोपेथिकसे चिकित्सा।

एसिटेट औफ लेट	२ ग्रीन
ओपियम	॥ ग्रीन

इसमात्रासे दिनमें २–३ दफे देवै। अगर रोगीका शरीर दुर्बल और भूख कम होगई हो तो। लाइकरफेरीपरनाइट्रेटिस १५–२० बूंदके हिसाबसे देना चाहिये। अथवा–

डिकक्सन सिनकोना	१ औंस
सल्फेट औफ जिंक	॥ ग्रीन
ओपियम	॥ ग्रीन

ऐसी १ मात्रा बनाकर दिन रातमें ८ दफे देनेसे विशेष फायदा होता है ।

होमियोपेथिकसे चिकित्सा ।

कोइकोई डाक्टर संग्रहिणीमें कुछ दिन तक फास्फरिस खिलाने की सम्मति देतेहैं । रसटक्स अथवा पलसेटिला देनेसे भी फायदा होता है ।

कालरा-हैजा याने विषूचिका ।

एलोपेथिकसे लक्षण ।

बहुत परिश्रम करना, खराब जगहम रहना, मैली और खराब चीज खाना, अच्छी तरह निद्रा न आना, यह सब कारण कालरा पैदाहोनेके मुख्य हेतु हैं । इसके ४ दर्जे हैं । आक्रमणावस्था १ वर्धमानावस्था २ पतनावस्था ३ और प्रतिक्रियावस्था ४ (पहले आक्रमणावस्थाके लक्षण लिखेजाते हैं) शरीर शिथिल, पेट भारी मालूम पडना, मनमें घबडाहट, मुख मलीन और फीका पडना, माथा घूमना, कर्णमें झनझनाहटका शब्द होना, कै और दस्त होना, बुरे रंगका पानीके समान थोडा मल मिलाहुवा दस्त होतेही शरीर अत्यंत दुर्बल होजाता है (दूसरी वर्द्धमानावस्थाके लक्षण) प्रायः देखा गया है कि यह रोग रातहीम आक्रमण करता है । पतला दस्त होकर पीछे कै होती है । पतला दस्त भी कुछ मल मिलाहुवा होता है इस्के पीछे बिलकुल पानीके माफिक बहुतसा दस्त आताहे । कहीं २ फेनयुक्तभी दस्त लगते हैं, पेटमें कांटा चुभानेके समान पीडा याने कोई काटता है ऐसी तकलीफ सहन नहीं होती । दस्तोंमें कुछ देर पीछे देखनेसे अन्नके छोटे छोटे टुकडे दिखाई पडते हैं (तीसरा पतनावस्थाके लक्षण) इस अव-

स्थामें शरीरकी ऐसी व्यवस्था होजाती है कि रोगी मरेके समान मालूम पडने लगजाता है । रोगीको उठनेकी सामर्थ्य नहीं रहती बीच २ में कपडोंको फेंककर ठंढा पानी पीना और ठंढी हवा खानेकी इच्छा वारंवार करता है, कभी कष्टको असह्य समझकर चिल्ला उठता है । श्वास लेने और त्यागनेमें कष्ट विदित होता है, मुख सिकुडकर फीका पडजाता है, आंखें बैठजाती हैं । नीचेके पलक नहीं चलते । माथेपर थोडा पसीना दीखता है । कभी२शरीरमें ही पसीना आजाता है । मनुष्योंके साथ लापरवाहीकी बात करता है इस रोगसे ग्रसित रोगीका मरणसमय तक ज्ञान नष्ट नहीं होता । इस अवस्थामें के और दस्त नहीं रहते । सिर्फ ९० से ९६ डिगरी तक गरमी बाकी रहती है (चौथी प्रतिक्रियावस्था) वह कहाती है जिस्में इलाज होता है और रोगीको आराम पहुँचता जाता है ।

होमियोपेथिकसे कालराके लक्षण ।

मुखकी शोभा बिगडजाना, प्यासका बहुत लगना, जीभ लाल और मैली होना, पेशाब न उतारना, आंखें लाल होना, माथेमें दर्द, निद्रा आनेकी इच्छा, यह लक्षण कालराके होमियोपेथिकवालोंने निश्चय किये हैं, और मद्यपानको ही विशूचिकाकी उत्पत्ति मानते हैं ।

एलोपेथिकसे चिकित्सा ।

यद्यपि एलोपेथिकमें इसके जुदे जुदे अंशोंको दूर करनेके वास्ते जुदी जुदी औषधियां लिखी हैं परंतु आजकलके परीक्षक लोग अर्क कपूरसे बढकर कोई दूसरी दवा नहीं बताते । अर्क कपूरकी १० बूंदसे लेकर २० बूंद तक दो दो या तीन तीन घंटेके अंतरमें बताशेके साथ देना चाहिये।जब देखै कि रोगीको फायदा होता चला जाता है उस बखत औषधकी मात्रा और समयमेंभी कमती करता जावै

अर्ककपूर देनेके पीछे किसीप्रकारके भी रोगीको कमसेकम १ घंटे तक पानीपीनेके वास्ते नहीं देना चाहिये।हैजेमें तो जहांतक होसके पानीको न देना ही अच्छा है । अगर वहुत ज़रूरत समझी जाय तो पोडशांश पानी पकाकर देना चाहिये । अगर वार २ के होजानेके कारण दवा पेटमें न ठहरसके और दर्द हो तो नाभिसे ऊपर राईका पलास्तर लगाना चाहिये । कोई डॉक्टर के दूर करनेके वास्ते मार्फीयाकी पिचकारी देनेकी सलाह देते हैं, यदि वहुत प्यास हो तो वरफ भी देसक्ते हैं। जव अर्ककपूरसे रोगीको फायदा न हो तव नीचे लिखी दवा देनेसे तुर्त ही फायदा होता है और रोगी सोजाता है ।

क्लोरोडीन	१० से ३० बून्द तक
आयल पीपरमैन्ट	२ बूंद
क्लोराइड औफ एमोनियम	५से १० ग्रीन तक
सौंफका अर्क	२ औंस

ऐसी १ मात्रा बनाकर हरउल्टीके पीछे देना चाहिये, जवतक रोगी न सोवै देता रहै सोजानेके पीछे दवादेना वन्द करदे अथवा—

हींग	२ ग्रीन
लाल मिर्च	१ ग्रीन
ओपियम	१ ग्रीन

इस हिसाबसे गोली बनाकर दो दो घंटेके अन्तरसे देनी चाहिये ऐंठनके वास्ते सूंठमलना चाहिये । हिचकी हो तो अफीम देवै । कै दस्त अधिक हों तो टिंचर ओपियम और पीपरमैन्ट देवै । पेशाव न उतरता हो तो कमरके ऊपर राईका पलास्तर लगावै । दस्त अधिक होते हों तो रोकदे ।

कालरासे यथासंभव बचावकी रीति।

जब ज्यादा गरमीकी शंका हो तब जातविकमलसे बहुत ही बचै, खूब सफाई रक्खे, समूहमें न बैठे, गरिष्ट और बासी भोजनसे बचै, बासी दूध, रबडी, खोवा, खट्टा दही, दुर्गंधित घृत, बासी मांस, खानेसे बचना। कच्चे सडे फल, ककड़ी, खरबूजा, आडू, कोहला, टींडसी नहीं खाना। अपने घरमें गूगल या लोबान की धूप नित्य ही देना अथवा कपूर और गन्धक जलाना, कपूरको अपने पास हर वखत रखना। यहांतक कि क्षणमात्र भी अलग न होनेदेना। ताजा हलका चरपरा स्वादु भोजन करनेसे कालरा होनेका भय थोडा रहताहै अथवा साफ कुयेंका साफ ठण्ढा पानी पीना। पोदीना, हींग, मिर्च पीपरमैन्ट इत्यादि पाचक चीजें नित्य ही खाना बहुत ही उत्तम है।

होमियोपेथिकसे चिकित्सा।

जब पहले ही दस्त होवैं तब केम्फर जब मुखकी शोभा बिगड़चली होऔर बहुत कै होती हो तो ३८ क्रम (डाईल्यूसन) का—वेरेट्रम एलबम देना चाहिये। यह दवा पंद्रह २ मिनटके अन्तर में देनेसे फायदा होताहै यदि इससे फायदा न हो तो कुप्रम देना चाहिये। बाकी सब लक्षणोंमें केम्फर देना योग्य है।

अजीर्णके कारण या शराब पीनेसे कालरा हुवा हो तो नक्स ओमिका देना चाहिये। शरीर गर्म और पेशाब न होता हो तो केन्थारिस, ३क्रमका देना चाहिये। लाल दस्त आते हों तो मर्क्यूरियसकरो ३८ क्रमका देना चाहिये। अगर लाल दस्तके साथ आंव न हो तो एपीकाकाना देना उत्तम जानते हैं।

गेशट्राइटिस अथवा लासट्राइटस-अम्लपित्त।

एलोपेथिकसे लक्षण ।

पाकाशयमें दाह, जो कि उत्तेजक वा विषके द्वारा पाकाशय बिगडकर पाकाशयमें अतिप्रबल दाह होताहै। दवानेसे तकलीफ दूनी मालूम पडती है, प्यास बहुत लगती है, अत्यंत कष्ट देनेवाली कै होनेकी इच्छा अथवा पानी पीते ही वमनका होजाना, नाडीकी गति तेज,हाथ पैर ठंढे,कोष्ठबद्ध और पेटफूलना,पेशाव थोडा लालरंगका उतरना, कभीकभी हिक्का आना, यह लक्षण दिखाई पडते हैं इस बीमारीमें दुर्बलता अधिक होनेसे मृत्यु भी हो जाती है। यदि रोगी पथ्यपूर्वक बर्ताव करे और उत्तम रूपसे चिकित्सा करावे तो आराम होसक्ता है नहीं तो पुराना पडनेसे असाध्य होजाता है। होमियोपेथिकवाले इसको इन्फ्लामेशन औफदी वायोलस कहतेहैं और एलोपेथिकमतानुसार लक्षण बढकर ज्वर उत्पन्न होजाताहै। रोगीका मुख देखनेसे मालूम होताहै कि मानो रोगीको वडी तकलीफ हुईहै। जरा शरीर छूनेसे ही कष्ट विदित होताहै । यहांतक कि तकलीफ होनेके कारण रोगी श्वास लेनेसे भी डरताहै। किसीप्रकारकी चोट लगनेसे या शराव पीनेसे यह रोग हुवाहो तो उसका आराम होना कठिन है ।

ऐलोपेथिकसे चिकित्सा ।

यदि किसीप्रकारका जहर पेटमें हो और उसीके कारण यह रोग हुवा हो तो गर्मपानीके साथ सल्फेटआफजिंक-सरसोंका चूर्ण अथवा एपीकाक्काना आदि वमनकारक दवा देनी चाहिये। इस रोगकी पहिली हालतमें अंडीका तेल किंवा सल्फेट या कार्बोनेट आफ मेगनेसिया आदि दस्तावर दवा देनी चाहिये तथा-

कार्बोनेट ऑफ एमोनिया	५ ग्रीन
सोडा वाईवार्क	५ ग्रीन
हाईड्रोसेनिक एसिड डिल	२ बूंद
टिंचर कार्डिमम	१० बूंद
पानी	१ औंस

ऐसी १ मात्रा बनाकर२या३घंटेके अंतरसे देनी चाहिये अथवा—

ओपियम	॥ ग्रीन
गोंदका पानी	१ औंस
हाइड्रोसेनिक एसिड डिल	३ बूंद

इस मुताबिक १ मात्रा बनाकर ३–४ घंटेके अंतरसे देनी चाहिये।

अगर बीमारी बहुत बढगई हो तो नाभिस्थलसे२अंगुल ऊंची जगहपर जोक लगाना चाहिये यह बहुत जरूरत होनेसे लगाई जाती है नहीं तो पुलटिस ही बांधीजाती है। पथ्यमें दूधके साथ अलालोट, प्यास लगै तो ठंढा पानी,बर्फका टुकडा, सोडावाटर अथवा उसके साथ थोडी २ ब्रांडी और सेम्पेन, पीनेको देवै।

होमियोपेथिकसे चिकित्सा।

जबतक ज्वर न हो तबतक १–१ घंटेके अंतरसे एकोनाइट और मर्क्यूरियस देवै। पाकस्थलीकी तकलीफ दूर करनेके वास्ते बोतलमें गर्म पानी भरकर सेंक करै। केवल परियाय क्रमसे ककुलश और नक्सवोमिका देवै।

कै हो तो कार्बोबेजिटेबिलिश१५मिनटके अंतरसे देना चाहिये। सुबह और शामको आर्सनिक देना चाहिये। इस बीमारीमें चाह काफी आदिका पीना नुक्सान करता है। और होमियोपेथिक चिकित्साके समयमें कार्बोनाट आफ सोडा हानिकारक है।

हिमारेज अथवा इस्कारवी याने रक्तपित्त ।

एलोपेथिकसे लक्षण ।

यदि नीचेके द्वारसे खून पडै तो उसको मेलेना कहतेहैं । यदि ऊपरके अंगोंसे पडै तो उसको हेमाटेमेसस बोलतेहैं । इससे खून बिगडजाता है, मुखसे दुर्गन्ध आतीहै, मसूढे फूसे और जखमी होजाते हैं, शरीरपर ऊदे नीले या लाल चकत्ते भी होजाते हैं । औरभी रोगीके अवस्थानुसार अनेक लक्षण दीखतेहैं यदि शरीर में खून बहुत हो तब तो खून निकलजानेके उपरांत रोगी अपनेको स्वस्थ समझताहै और खूनकी कमी होनेसे उसके विपरीत फल होताहै । हाथ पैर ठंढा, नाडी मन्द पडे व खडे रहनेसे माथा घूमना, दूरकी चीज न दीखना इत्यादि लक्षण होतेहैं, कभी २ आत्मबोध शून्य और नितांत निस्तेज होकर रोगी प्राणत्याग करताहै । इस्के पृथक्द्वारोंसे रक्तस्राव होनेके पृथक् २ नामोंसे विख्याति हैं जैसे ।

(१) हिमाटी वोसिस–यानी खालसे खून पडै ।

(२) एपिथ्यफिम्स–यानी नकसीर जारी हो ।

(३) अटरेजिया–कानसे खून गिरै ।

(४) प्रमाटोरेजिया–मुख और गलेसे खून गिरै ।

(५) हिमपटिसिस्–फुसफुससे खून गिरै ।

(६) हिमेटिमिसिस–गुदा या पाकाशयसे खून गिरै ।

(७) हिमाट्यूरिया–मूत्रद्वारसे खून गिरै ।

इसके यह ७ भेद कहेहैं और स्त्रियोंको यह रोग रजोधर्म्म न होनेसे होताहै और मनुष्योंको अतिपरिश्रम करनेसे होताहै ।

१–हिमाटीवोसिसके लक्षण यानी खालसे खून पडै।

त्वचाका रक्तस्राव कभी २ शरीरके सब स्थानोंके ऊपर खून वा खूनमिली कोई चीज दिखाई देती है।

२–एपिथ्यफिमूमके लक्षण याने नकसीर।

इसमें दूसरे स्थानोंकी अपेक्षा नाकके भीतरकी झिल्लीसे खून गिरताहै। ज्वरके पहिले वा पीछे जो खून नकसीरद्वारा निकलताहै वह इसी बीमारीके सबबसे होताहै।

३–अटरेजिया–कानसे खूननिकलनेके लक्षण।

किसी चोटके कारण कानकी नली बिगडकर उससे खून निकलपडता है या कानमें फोडा होनेसे यह रोग होजाता है। वा स्त्रियोंका रजोधर्म बंद होनेसे कानोंके रास्ते भी खून पडने लगजाता है

४–ष्टमाटोरोजिया–मुख गलेसे खून पडनेके लक्षण।

दरजी या लिखाईका काम करनेवालेको हमेशा नीचा माथा रखनेके कारण पीठकी रीढ टेढी होकर फेफडा बिगडजानेसे मुखके रास्ते खून आने लगता है। खून निकलनेसे पहले छातीमें दर्द, छाती भारी, छातीमें जलन, मुख लाल, थोडी खांसी इत्यादि लक्षण दिखाई देतेहैं।

५–हिंमपटिसिस।

फुसफुसके द्वारा कभी ऊपरके अंगोंसे कभी नीचेके द्वारोंसे खून पडने लगजाता है।

६–हिमेटिटैसिस।

गुदासे खूनका पडना ही इसके मुख्य लक्षण होते हैं यह खून पाकाशयसे आताहै।

७–हिमाटूरिया ।

मूत्रस्थानसे रुधिर पडना कब होता है कि जब रक्तविकारसे पेशाबकी पीडा हो तब उसकी पहिली दशामें पेशाबके साथ खून आने लगता है मूत्रमें जलन, मूत्राशयमें पथरी, कमरमें दर्द, कभी कभी वातज्वर, निमोनिया और टाइफस फीवर इत्यादि भी होजाते हैं ।

एलोपेथिकसे चिकित्सा ।

सम्पूर्ण रक्तपित्तमें नीचे लिखी दवा देना चाहिये ।

गेलिक एसिड	१० ग्रीन
सलफ्यूरिक एसिड	१० बूंद
टिंचर सिनेमन	१ ड्राम
पानी	१ औंस

ऐसी १ मात्रा बनाकर रोगीके अवस्थानुसार देवे । लोहेकी दवाईमें टिंचर फेरीम्यूरियेटिकम, हमेशा काममें लाना चाहिये। भीतरी रक्तस्रावमें कोई २ डाक्टर एपीकाक्काना बहुत फायदेमन्द बताते हैं । शरीरसे खून गिरनेकी हालतमें बलकारक दवा देनी चाहिये ।

नाकसे खून गिरे या बहुत नकसीर जोरकी दिखाई पडे तो टिंचर फेरीपर क्लोराइड, टिंचरफेरी म्यूरिपेटिस और फिटकडीके पानीसे पिचकारी लगानी चाहिये और जुलाब देना चाहिये ।

फुसफुससे खून गिरता हो तो ठंढा पानी पीनेके बाद १०ग्रीनके हिसाबसे गेलिक एसिड २–२ घंटेके अन्तरसे सेवन कराना चाहिये । यदि रोगी दुर्बल हो तो ५ से १० ग्रीन तक, एमोन्यू-सलफेट औफ आयरन देना चाहिये । ठंढा पानी और बर्फ भी दवामें मिलाना चाहिये ।

खूनकी उल्टी होती हो तो रोगीको कुछकाल तक स्थिरभाव-पूर्वक सुलाकर खानेका निषेध करदे। ठंढा पानी वर्फ और गेलिक एसिड देना चाहिये।

मूत्र मार्गसे रुधिर गिरै तो जबतक कारण निश्चय न किया जावै औषधि देना भूल है, कैन्सर याने पथरीके कारण यह रोग हो तो संकोचक औषधी देना चाहिये जैसे टिंचर फेरीपर क्लोराइड गेलिक एसिड, सलफेरिक एसिड देवैं। यदि मूत्राशय से ही खून आता हो तो फिटकडी या टानिक एसिडकी पिचकारी देवैं अथवा—

गेलिक एसिड	१२ ग्रीन
पल्वएपिकाक कम ओपिआई	५ ग्रीन

ऐसी १ मात्रा २ घंटेके अन्तरसे देनी चाहिये।

होमियोपेथिकसे चिकित्सा।

रोगीको स्थिरभावपूर्वक रखकर ठंढी चीज खानेको देवै। वर्फका प्रयोग अधिक रक्खे और परियाय क्रमसे हेमामिलस एपीकाक्काना, एक वा आध घंटेके अन्तरसे देवैं। इसके पीछे दिनमें ३ दफे फास्फारिक एसिड देना चाहिये।

नाकसे खून गिरै तो फिटकडीके चूर्णका नस्य लेनेसे खून बन्द हो जाता है। हेमोमिलससें फायदा न हो तो आर्निका देवे। प्रायः सबतरहके रक्तस्रावमें हेमोमिलस ही उत्तम औषधि है।

कोलिक या कालक अर्थात् शूल।

एलोपेथिकसे लक्षण।

शूलरोगका कारण आंतोंमें अधिक पित्तका पड़ना ही है। इस रोगको साधारणतः विलियसकोलिक याने पित्तका शूल

कहते हैं । अगर खानेकी चीजोंके न पकनेसे आंतोंमें पवन भर-कर आंतोंको बिगाडदे और शूलकी विषम वेदनाको उत्पन्न करै अथवा उत्तेजक पदार्थ, खट्टाफल, खट्टीशराब, पीनेसे जो शूल पैदा होताहै उसको एन्टारालजिया कहते हैं । अगर आंतोंका १ अंश जिसमें कडा मल फलादिकोंके बीज और कीडे आदि इकट्ठे होकर शूलरोगको उत्पन्न करते हैं उसको इन्टाष्टाइनल आफष्ट्रक बोलते हैं अर्थात् अंत्रावरोध कहते हैं परंतु यह रोग चाहे जिस कारणसे क्यों न हो परंतु आंतोंमें खराबी पैदा होने हीसे शूलकी भारी व्यथा होकर कैकी इच्छा या कै होना इत्यादि लक्षण दिखाई पडते हैं ।

शूलके लक्षण ।

अकस्मात् आंतों और पेटमें दर्द हो जैसे कोई तीर मारता है यह रोग प्रायः नाभिके नीचेसे उठकर और स्थानोंमें फैल जाताहै जिसको दबानेसे कुछ फायदा मालूम पडता है तकलीफके वखत कै होती है अधिक यातनामें नाडी दुर्बल होजाती है। पेटमें गांठ पड़ जाती है और अपानवायु निकल जानेके पीछे रोगीको कुछ आराम मालूम पड़ताहै दर्द ऐसा उठताहै मानो कोई चबाये डालता है,पित्त मिश्रित वमन,कोष्ठबद्ध या थोडासा मल उतरना,अन्त्रा-वरोधशूल हो तो पेटमें गड२शब्द होताहै कभी२वमनके साथ विष्ठा भी निकल आतीहै यह लक्षण होते है, आन्टराइटिसमें आंतोंका दाह,कंप, त्वचाका गर्महोना, प्यास, नाडी तेज,अतिशययंत्रणा देनेवाली कै, प्रलाप, वमनमें दुर्गंधि, कभी कभी मल मिलीहुई वमन भी होतीहै और स्त्रियोंको यह रोग मासिकधर्मकी रुकावटके कारण भी होजाताहै ।

होमियोपेथिकसे लक्षण ।

होमियोपेथिक वाले इसको कोलिकपेन बोलते हैं,स्त्रियोंको यह

रोग मासिकधर्मकी रुकावटसे होजाता है और पुरुषोंको जो कारण एलोपेथिकमें कहेहैं वही कारण होमियोपेथिकसे होते हैं। यदि वायु उदरमें उत्पन्न होकर शूलको उत्पन्न करै उसको होमियोपेथिकवाले लेडकालिक बोलते हैं। यह रोग तस्वीर खींचने वाले, रंगसाज, कंपोजीटिरी आदिके करनेवालोंको ही विशेष करके दिखाई पडता है।

एलोपेथिकसे कालिकपेन चिकित्सा।

इस रोगकी चिकित्सा जुदे जुदे कारणोंको जानकर जुदी २ रीतिसे करनी चाहिये पीडाकी सामान्य अवस्थामें रोगीकी तकलीफ दूर करनेके वास्ते–

टिंचर व्यालेरियन कम्पौन्ड	॥ ड्राम
स्पिरिट क्लोरोफार्म	१५ बूंद
मार्फिया हाइड्रो क्लोरिक	॥ ग्रीन
एको वा एनिसाई	१ औंस

ऐसी १ मात्रा बनाकर दिनमें दोवार देनी चाहिये अगर जरूरत हो तो इसके साथ सोडा और कार्बोनेट आफ मेंगनेशिया भी मिलाया जासक्ता है।

एन्टारालजिया हो तो खोपियम, हाइयोसामस, क्लोरो डाइन, क्लोरिकईथर, कोनायम, कैम्फर, एमोनिया आदि औषधोंके देनेसे फायदा होताहै इन सब दवाइयोंके साथ फोमेन्टेशन याने गर्मपानी भरकर सेंकना और तारपीनके तेलका ष्टूप याने मलना अथवा तेज लिनीमेन्ट मलनेसे फायदा होताहै और पीठकी रीढपर विलाडोनाकी मालिश करना दर्दको उसीबखत कम करदेताहै जब तकलीफ कम होजावे उसबखत काष्ट्रोयल पिलाकर जुलाब देवें।

एन्टाराइटिस याने आंतोंको दाह हो तो इसकी अफीम ही

उत्तम दवा है।और पेटपर हमेशा पुलटिस और फोमेन्टेशन अर्थात् बोतलमें गर्मपानी भरकर सेंकना चाहिये । जब दर्द कम हो जावै तब काष्ट्रोयल का हलका जुलाब देवै । यदि रोगी निर्बल हो तो बलकारक औषधी देना योग्य है ।

इन्टेष्टाइनल औफ इनट्राक्सन याने यंत्रावरोध हो तो पथ्यकी तरफ विशेष दृष्टि देनी चाहिये और दवाइयोंमें अफीम खिलाना, फोमेन्टेशन याने गर्मपानी बोतलमें भरकर सेकना, पुलटिस बांधना तारपीनका तेल मलना इत्यादि उपयोगी होतेहैं ।

होमियोपेथिकसे कालखपेन याने शूलकी चिकित्सा ।

रोगीको यदि अधिक कष्ट हो तो शय्यापर सुलाकर गर्म जलका फोमेन्टेशन करावै । इससे तकलीफ कम हो जावेगी । पीछे फी ५ मिनिट या १० मिनिटके अंतरसे कालोसिंथ देवै यदि इससे फायदा न होतो इसीतरह नक्सवोमिका देवै कभी कभी पेटमें कीडे होनेके कारण यह पीडा होती है ऐसी अवस्थाके लिये आधघंटेके अंतरसे सिना अथवा कैमोमिला देनेसे फायदा होता है और पाकस्थलीके ऊपर कुछ कपड़ा बांधदेनेसे भी दर्द कम होजाता है। परंतु वह क्षणिक सुख समझना चाहिये।

अगर लेडकालिक हो तो फी३घंटेके अंतरमें ओपियम अथवा सल्फ्यूरिकएसिड देनेसे बड़ा फायदा होता दिखाई पड़ता है ।

इलसर औफ दीटीमक याने परिणामशूल ।

इस बीमारीमें भोजन करनेके पीछे मेदेमें दर्द होता है । ज्यों ज्यों भोजनका पाक होताजावै दर्दभी कमती पडताजाता है प्रायः करके यह शूल मेदेकी कमजोरीसे होता है । इस रोगमें मेदेको ताकत देनेवाली दवा और पतला हलका पथ्य देवै ।

स्प्लीन अर्थात् प्लीह ।

एलोपेथिकसे लक्षण ।

यह एक प्रकारकी रग अथात् आंत है जो लम्बी, कोमल, स्थितिस्थापक और धूमरे रंगकी होतीहै इसका वजन लगभग५औं सके होताहै इसकी लम्बाई ५ इंच और चौड़ाई ३ इंचसे कुछ ज्यादा होतीहै इसी प्लीहासे सम्पूर्ण जीवधारियोंके खून के बिंदु बनकर शरीरकी सहायता करते हैं यह प्लीहा सबहीके पेटमें होती है परंतु इसमें रुधिरका अधिक होजाना या इसका बढजाना रोग समझा जाता है । कभी ऊपरको बढती है कभी नीचेको कभी अगाड़ीको दिखलाई पडने लगती है जब इसमें रुधिर विशेष होजाता है उस वखत बहुत भारी तकलीफ होती है अगर ज्वरके साथ प्लीह हो तो तकलीफ नहीं मालूम पड़ती । किंतु प्लीहाके स्थानमें बोझसा मालूम पड़ता है जब यह रोग बहुत दिनोंका होजाता है तब पाकस्थलीकी क्रियाको बिगाडकर मंदाग्नि इत्यादि रोग उत्पन्न करके शरीरको दुर्बल और रक्तहीन करदेता है प्लीहावालेकी विष्टा काली और मूत्र मैलेरंगका होताहै। कारण इसके शरदीके बुखारमें ठंढा पानी इत्यादिका पीना या अधिक कफकारक आहार विहार करना इत्यादि होते हैं होमियोपेथिक वाले कहते हैं कि यह आंत पाकस्थलीके १ तरफमें है और सूत्रके समान पदार्थोंसे बनाई गई है और पाकक्रियाके वास्ते यह रक्तको बनाती है अधिक दिनोंतक ज्वरके रहनेसे यह उत्पन्न हो जातीहै इसके लक्षण प्रायः करके ज्वर, कोष्ठबद्ध, अरुचि, मंदाग्नि, मुखमें पानी भरना इत्यादि दीखते हैं।

एलोपेथिकसे प्लीहाचिकित्सा सम्पूर्ण प्लीहरोगियोंके वास्ते ।

कुनइन	४८ ग्रीन
फेरीसल्फ	३६ ग्रीन

एप्सन साल्ट	४ औंस
सलफ्यूरिक एसिड डिल	१ ड्राम
एडिल कार्बोलिक	॥ ड्राम
साफ पानी	२४ औंस

कुनइनको सल-फ्युरिक एसिडमें घोटकर सब चीज कपड़छान करके मिलादे यह दवा १२ दिनके वास्ते होगी १ दफेमें १॥। तोलेके हिसावसे दिनमें ३ दफे पीनी चाहिये और तिल्लीके ऊपर टिंचर आयोडीन लगाना चाहिये कोई डाक्टर कहते हैं कि, साल्ट आयरन का यथोचित सेवन और हरी तरकारी कुछ अधिक खानी चाहिये ।

होमियोपेथिकसे चिकित्सा ।

आर्सनिक, केप्सिकम, केमोमिला, चायना, मिजिरियम, नक्स ओमिका, इसकी प्रधान औषधें जाननी चाहिये। अगर प्लीहमें जलन हो तो सल्फर देना चाहिये । कोष्टवद्ध दूर करने के वास्ते ब्रायोनिया, केलकेरिया, नक्स ओमिका देनी चाहिये।

हेपेटाइटिस याने लीवर अर्थात् यकृत ।

एलोपेथिकसे लक्षण ।

मनुष्यके शरीरमें लीवरही प्रधान आँत है। इससे पित्तरस निकलकर परिपाक क्रिया और रक्तकी पोषण क्रियाको करताहै। यकृतका घेरा लगभग १२ इंचका और अगाडी पिछाडी का व्यास लगभग ९ इंचका होता है, पूरी जवानीमें मनुष्यका यकृत १ से २ सेर तक वजनमें होजाता है । अनेक कारणोंसे यकृत की क्रिया विगडकर उसके बढनेसे मृत्यु तकका हेतु होता है। यकृतकी पीडा अनेक प्रकारकी होतीहै जैसे यकृतमें दर्द होना१,

यकृतमें खूनका बढजाना २, यकृतमें जलन ३, यकृतका फट जाना ४ यह ४ भेद होते हैं जिसमें यकृतमें दर्द हो तो ऐसी वेदनामें मनकी कमजोरी होजाती है। कभी कभी दर्द और कै भी होतीहै और जब यकृतमें खून बढता है, जिसका हेतु स्वाभाविक नियमसे अधिक भोजन करना, बहुत मीठा खाना अथवा शराब पीनेसे ऐसी हालत होजाती है, यकृतमें सदैव दाह और वेदना प्रतीत हो दबानेसे दर्द मालूम पडै। कभी यह वेदना कंधेपर अधिक होती है इससे २-३ दिन बाद कमल वायु उत्पन्न होकर वमन और भूखकी कमीको उत्पन्न करता है अगर यकृतमें जलन हो तो वह भी अनेक प्रकारकी होतीहै। जैसे पेरिहियाटाइटिस याने यकृद्वेष्टप्रदाह, डिफियून्डपापनफाइमेटस याने यकृत पदार्थका विस्तृत प्रदाह तथा यकृत पदार्थका परिमित प्रदाह या स्फोटक प्रदाह, सिरमिस, याने पुराना प्रदाह इतने भेद हैं जिसमें से यकृद्वेष्टप्रदाहमें कभी २ दाह न होकर उसकी झिल्लीमें दर्द होताहै दबाने और हिलनेसे तथा लंबीश्वास लेनेसे थोडा दर्द होता है और विस्तृतप्रदाहमें मनमें घबडाहट टाइफस ज्वर, मलेरियाज्वर का प्रकोप दिखाई पडता है और यकृतका स्फोट भी २ प्रकारका है पहिला गर्म देशका दूसरा पाईमियासे उत्पन्नहुवा। गर्मदेशका जिसे उष्णदेशीय कहते हैं उसमें पहिले रक्ताधिक्यके लक्षण दिखाई पड़ते हैं पीछे कफके साथ ज्वरका होना वह ज्वर भी अल्पविराम होता है तथा यकृत भारी और तकलीफ देनेवाला होता है। दाहिने कंधेपर दर्द और शरीर पीला पडजाता है जब यकृतमें पीब पडजाता है उस वखत शरीर दुर्बल और हक्टिक फीवरभी होजाता है। किंतु पाइमियांके ज्वर समान इसमें वहुत कंप या दांतमें पसीना नहीं होता। कहीं २ इस रोगमें रोगीको

प्राणत्याग करते भी देखागया है और यकृतकी क्रानिकएट्राफी की तरफ विना ध्यानदिये धीरे धीरे यह रोग बढता जाता है पट फूलना, कोष्ठबद्ध इत्यादि होकर देहकी क्षय और इसीसे मृत्यु होजाती है ।

होमियोपेथिकसे यकृत अर्थात् लीवरके लक्षण ।

यकृत अर्थात् लीवर मनुष्यके शरीरमें यह आंत सबसे बडीही नहीं है प्रत्युत इससे पित्तरस निकलकर खाईहुई वस्तुका परिपाक और रक्तसंचालनक्रिया होती है और दूसरे दूसरे दूषित पदार्थोंसे शारीरिक क्रियाको बचाये रहता है । इस आंतकी क्रिया सहजहीमें बिगडकर विकार उत्पन्न करती है । कारण ठीक भोजन करनेमें असावधानी, ठीकसमयमें भोजन न करना, अधिक भोजन करना, ठंढ सहना इत्यादि होते हैं इसके विशेष लक्षण वही है जो एलोपेथिकमें कहेगये हैं ।

एलोपेथिकसे लीवर अर्थात् यकृत चिकित्सा ।

म्यालेरियाके कारण यकृत हो तो ऐसी हालतमें कुनइन देनी चाहिये । हाईड्रोक्लोरेट ऑफ एमोनिया । इसकी एक प्रधान औषधी है इसको चार २ घंटेके अन्तरसे आधा ड्राम दवा सेवन करावै तो अवश्य ही फायदा होगा जब देखें कि यकृतमें रक्त अधिक है तो खून निकलवाना चाहिये । नहीं तो राईका पलास्टर और पुलटिस बांधनेसे फायदा दिखाई पडताहै और कोष्ठबद्ध हो तो ।

सोडा	२० ग्रीन
टारटरिक एसिड	३० ग्रीन
सोडिपुटासिटाई	३० ग्रीन

ऐसी १ मात्रा पानीमें मिलाकर झाग उठनेके समय रोगीको पिलादे इसका नाम सिडलिस पाउन्डर है ।

अगर पेटमें और कोई विकार हो तो उसको एकदम बन्द न करदे पथ्यमें गर्मपानीका स्नान थोडा दूध और चीनी खाना और किसी प्रकारकी शराब, तेज मसाला, मांस और देरमें पचनेवाली चीजें खानेको न दे यदि पेटमें कुछ गडबड दिखाईपडे तो कै लानेवाली दवा देवै,जब देखै कि रोगी मैलेरियासे आक्रांत है और मैलेरियाने प्रधानरूपसे अपना अधिकार जमालिया है,तब उस वखत।

एक्सट्राक्ट टाराक्सिकम्	३० ग्रीन
एक्सट्राक्ट जन्जन्	२० ग्रीन
नाइट्रो म्यूरियेटिक एसिड	२० बूंद
कुईनि सल्फ	१० ग्रीन

इसकी चार मात्रा बनाकर दिनमें दो बार देवै। चाहे कोष्ठबद्ध हो या न हो किन्तु रोगकी पहिली अवस्थामें नीचे लिखीहुई विरेचक औषधी देनी चाहिये।

सबक्लोराइड ऑफ मर्करी	१ औंस
सलफ्यूरेटेड मर्करी	१ औंस
गोयाकमरेजिन पाउन्डर	२ औंस
काप्ल्रायल	१ औंस

इन सब दवाइयोंकी बडी मटरसे कुछ बडी गोली बनावे और रोगीकी दशा देखकर खिलावे इसको ब्लूपिल कहतेहैं यदि यकृत्का स्फोटक हो तो।

कीनिसल्फ	३० ग्रीन
नाइट्रोम्यूरिपेटिक एसिड डिल	१ ड्राम
डिकक्सन सिनकोना	६ औंस

यह ६ मात्रा दवा है दिनमें ३–४ मर्तबे पिलाया करे यदि

यकृत् स्फोटहोनेके कारण दर्द, कास और नींद न आती हो तो उसके दूर करनेके वास्ते ।

मारफिया	१ ग्रीन
हींग	१५ ग्रीन
कैम्फर	१० ग्रीन

इसकी ६ गोली बनाकर रातको १ गोली सोते वखत खिलादे ।

होमियोपेथिकसे लीवरकी चिकित्सा ।

दिनमें २ दफे नक्सवोमिका व्यवहार करना चाहिये यदि इससे फायदा न दिखाई पडे तो मर्क्यूरियस देवै उसके पीछे पडोफिलम देना चाहिये पथ्यमें हलकी और पुष्टिकारक चीजें देवै चाह काफी शराब इत्यादि बिलकुल न दे अथवा-

अडूसा	१ तोला
चित्रककी छाल	१ तोला
अपामार्ग	१ तोला
कुम्हडेका डंठल	१ तोला
सहॅजनेकी जड	१ तोला
सूंठ	१ तोला
वेत	१ तोला

इन सब चीजोंकी भस्म करके हींग भुना १॥ तोला, लहसन १॥ तोला मिलाकर वटी मटरके बराबर बनावे दोनों वखत खानेको दे।

कान्स्टेपीशन याने विष्टब्ध अर्थात् कब्जी ।

एलोपेथिकसे लक्षण ।

दस्तका नहीं लगना, पेटका भारी रहना, पेट गुम होना, भूखका ठीक ठीक न लगना इत्यादि लक्षण दिखाई पडते हैं,

कारण किसी आंतकी स्वस्थता,बनावट या काममें फरक आजा-नेसे या अति गरिष्ठ खाने या दुष्ट मलकी गांठि पड़जाने अथवा शरदी लगनेसे होता है ।

एलोपेथिकचिकित्सा ।

कम्पौन्ड एवर्व पिलके देनेसे बहुत फ़ायदा होता है,यदि बहुत दिनका कब्ज हो तो ।

एलवेका सत्त्व	॥ रत्ती
हीराकसीस	१ रत्ती

इस हिसाबसे गोलियां बनाकर दिनमें ३ दफे देवें परंतु भोजन के पीछे देना चाहिये जैसे २ आराम होता जाय घटाते जावें और होमियोपेथिकवाले मदरटिंचर देना बहुत श्रेष्ठ बताते हैं ।

पेरी टोनाइटिस याने मलरोधक उदावर्त-बद्धपडना ।

एलोपेथिकसे लक्षण ।

पहिले कुछ सरदी लगकर पेटमें दर्द होता है । और थोडी ही देरमें सारे पेटमें फैलजाता है । बहुत जोरका दर्द होता है । शरीर गर्म, दस्तमें कब्ज, मूत्र कम और लालरंगका उतरता है।व्याधिके बढनेपर बेहोशी और शरीर ठण्ढा पडजाता है ।आठ पहरके पीछे यह व्याधि भयंकर रूप दिखाने लगती है कारण भोजनके अजी-र्णमें और भी गरिष्ट अयोग्य भोजन करना, सदैव कब्जी या सरदी लगना इत्यादि होते हैं ।

एलोपेथिक चिकित्सा ।

इस रोगमें तेज दस्तावर दवा जैसे कैलोमेल इत्यादि देनी चाहिये पेट साफ होने पर हाजमा ठीक करने और मलको इकट्ठा न होनेदेने वाली दवा देनी चाहिये ।

ट्वोवरक्योंलरपरीटोनाइटस याने उदररोग ।

एलोपेथिकसे लक्षण ।

इस बीमारीमें पेट बढता२बहुत चढ जाता है कभी कब्ज होती है कभी दस्तआने लगते हैं और पेट खिचा तना मालूम पडता है और पेटमें दर्द होताहै, कै भी होने लगती है, दबानेपर कभी २ गोलेसे मालूम पडते हैं कारण शरदी कमजोरी मेहनत नहीं करना इत्यादि ।

एलोपेथिकसे चिकित्सा ।

पेटपर टिंचर अयोडीन लगाना चाहिये और मुरक्कवात, आइडनेट इत्यादिका सेवन कराना चाहिये तथा प्लीहादिककी दवा देनेसे फायदा हो ता है इस वास्ते क्षारादिक उत्तम दवा है ।

आसाइटिस याने जलोदर ।

एलोपेथिकसे लक्षण ।

इसबीमारीके कारण पेटमें पानी भरजाता है हाथ पैर और मुखपर शोथ, श्वासलेनमें कुछ तकलीफ और प्यास अधिक होजातीहै अगर किसी अंतडी या नस अथवा और किसी जगह पानी भरजावै तो उसे ड्रायसी बोलते हैं । कारण पानी सुखानेवाली रगोंका निर्बल पडजाना, उन्होंकी हरकतमें फरक पडना इत्यादि ।

एलोपेथिकचिकित्सा ।

पेटका पानी निकालकर ऐसा करना चाहिये जिस्में फिर न बढे । जिस्के वास्ते गर्म खुश्क दवा अथवा मुरक्कबात फौलाद इत्यादि देना चाहिये ।

वर्मसु अर्थात् कृमि ।

एलोपेथिकसे लक्षण ।

डाक्टरी मतानुसार मनुष्योंके भीतर ७ प्रकारके कीडे पाये जाते हैं जिसमेंसे ४ तो पेटमें रहने वाले और तीन प्रकारके ठोसकीडे होते हैं। बहुधा इन्हीं तीनोंमेंसे दुःखदाई हुवा करते हैं पहिला लाजेरा वन्दवर्म्मस याने केचवा, यह ५ से १४ इंच तक लंबे होजाते हैं रंग इन्होंका कुछ कुछ पीला होता है इसके होजाने पर प्यासकी अधिकता,नींदका कमती आना, चेहरा पीला पडना, पेट बढना, भूख कमती लगना, पेटमें दर्द और दस्तोंमें आंव आती है। दूसरा–स्मालथेड वर्म्मस याने चुनमुने, यह सूतसे पतले और आध अंगुल लंबे होते हैं यद्यपि बहुधा यह बुरे नहीं होते परंतु कभी कभी अधिक होनेसे बवासीर, गुदभ्रंश, मृगी इत्यादि दारुण रोगोंको पैदा कर देते हैं। तीसरा, टीयवर्म्मस अर्थात् कदूदाने, यह अलग २ होते हैं परंतु सब आपसमें मिलनेके कारण एक लंबासा जन्तु ५ गज लंबा तक होजाता है भूख कम, शरीररूखा, जठराग्निका बिगडना इत्यादि इसके मुख्य लक्षण होते हैं। कारण इसका अति मीठा, सडा और बासी भोजन करना इत्यादि होते हैं।

एलोपेथिकसे चिकित्सा ।

कैमोमिला, दहीमें मिलाकर देना सब कीडोंके वास्ते उत्तम दवा है अथवा कैमोमिला १ ड्राम, म्योसलिज २ ड्राम, शीरा३ ड्राम, पानी २ ड्राम सवेरे पिलावे यह प्रायः करके कदूदानोंको हितकारी है और तारपीनका तेल भी देसक्ते हैं। परंतु शैन्टचून५ ग्रीनसे १० ग्रीन तक मीठेके साथ देना सर्वकीडोंको मारकर निकालनेके वास्ते परमोषधि जानना।

मूत्र रोग।

एलोपेथिकमें मूत्रयंत्रका कंजेशन किसी तरहका ज्वर वा फोडेसे उत्पन्न हुवा ज्वर ठंढ या तारपीनतेल, सोरा, क्यूवेव, कोपेवा आदि औषधियोंका अधिक खानेसे या हृतपिंड इत्यादि की पीडासे रक्तसंचालनमें वाधा पडनेसे यह रोग उत्पन्न होता है इसके कई भेद हैं जैसे—

निकटाइटिस याने मूत्रदाह या मूत्राघात।

यह रोग एमाधातुवाले लोगोंको स्पष्टकारणके विना ही देखा जाताहै गीलेमें रहना, अनेक प्रकारके यंत्र सम्बन्धी अपकार करना, थोडा खानेके साथ बहुत शराब पीना इत्यादि कारणोंसे यह रोग होता है। कमरमें दर्द और शूल चलना, ऊरुदेशमें स्पर्शशक्तिका न होना, अंडकोशोंका खिंचना, कंप, ज्वर, कै या कै होनेकी इच्छा, प्यास, नाडी तेज और जल्दी चलै, पेट फूलना इत्यादि लक्षण होते हैं दूसरा डाइयूरिसिस—मूत्राधिक्य प्रमेहको कहते हैं इसमें नित्य ही पाण्डुवर्ण अधिक मूत्र निकलता है शर्करा पथरीका तो नाम मात्र भी नहीं रहता बहुत प्यास, मूत्रका अधिक होना इस रोगके मुख्य लक्षण होते हैं। तीसरा काइलस-यूराइन अर्थात् शर्करा याने मूत्राशयके मेदपदार्थका छोटा२हिस्सा वह दूधके समान सफेद होकर निकलताहै उस्में दूधके समान सफेद पेशाव, कभी२लालीयुक्त अगर अधिक वढ जावे तो कमजोरी, शरीरकी शीर्णता, कमरमें दर्द इत्यादि लक्षण दीखते हैं। चौथा मूत्रपिंड काकेन्सर याने रक्तप्रमेह यह पीडा वहुत थोडे कारणोंसे उत्पन्न होती है जिस्में मूत्रके साथ रुधिरका आना, सदैव कै होनेकी इच्छा और मूत्रकी परीक्षा करनेसे मूत्रमें रुधिरके कण दिखाई पड़ते हैं। पांचवां कलक्यूलसडाय थिसिस

अर्थात् पथरी-शरीरके अनेक कारणोंसे पेशावके साथ कोई कड़ी चीज देखी जाती है। वह कडी चीज कुछ दिनोंमें मिलकर पथरी होजाती है। छठा रिनालकलक्यूलाई अर्थात् मूत्रपिंडमें कांकरी, पेशावकी गांठमें जो पत्थर देखेजाते हैं वह सब अक्सर यूरिकएसिड और अगज़ेलेटऔफलाइमसे बनतेहैं–उस्के छोटे २ भाग मिलकर बड़े होजाते हैं अथवा इकट्ठा हुवा खून,काईब्रीन अथवा और किसी पदार्थके चारों ओर लिपटकर यह रोग उत्पन्न होताहै इसके द्वारा–कमरमें दर्द अधिक होना, मूत्रपिंडमें सुई चुभोनेकेसी पीड़ा, बीचमें कैहोनेकी इच्छा, मूत्रके साथ खून या काईब्रीन मिलाहुवा देखाजाता है क्षण २ में पेशाब होनेकी इच्छा, मूत्रपिण्डमें जलन, शरीरमें ज्वर और कभी२ पेशाबमें पीव भी निकलती है, जब मूत्रपिंडमें कंकड इकट्ठे होजाते हैं तो कुछ दिनोंके उपरांत पेशाबके रास्तेसे भी बाहर निकलने लगते हैं यह कंकड अगर छोटे और साफ हों तो निकलनेके वखत रोगीको विशेष कष्ट नहीं होता,यदि बडे खरधरे और आडे तिरछे या तिकोने हों तो पेशाबकी नलीमें अटककर मूत्रको रोक लेतेहैं जिससे मूत्र न निकलनेके कारण मूत्र अपने स्थानमें अधिक इकट्ठा होकर मूत्रस्थानको खराब करदेता है जिस करके रोगीको अनेक प्रकारके उपद्रव होकर अंतमें प्राणत्याग करना पड़ता है। सातवां मूत्रस्थानकास्पाजम अर्थात् आक्षेप जैसे शरीरके और स्थानोंमें आक्षेप होता है वैसेही मूत्राशयमें भी होताहै। आठवां मूत्राशयका पेरालिसिस याने पक्षाघात, मूत्राशय की कोई क्रिया बिगडकर स्नायुसंबंधी पीड़ासे दुर्बलता होकर मूत्रयंत्र निकम्मा होजाता है पीछे उससे कोई काम नहीं होसक्ता। नवा लिथिकएसिडडायथिसिस अथवा इस्परमीटोरिया, याने वीर्यप्रमेह इस रोगमें धातुका

स्वाभाविक व्यतिक्रम हो जाता है लिंगसे रातदिनमें कईवार थोड़ीहीसी रगड लगानेसे या मूत्रके साथ तथा मूत्रकेपहले पीछे धातु निकल पड़ती हैं । इसमें शरीर दुर्वल और अजीर्णके लक्षण भी दिखाईपडते हैं कारण इसका अतिविषय करना, हस्तक्रिया, हरबखत बुरे विचार करना, ऊंधा सोना, कफकारक पतली वस्तु अधिक खाना इत्यादि । इसका दूसरा भेद आगजैलिकएसिड डायाथिसिस होता है शरीर और मनसे बहुत परिश्रम करना, अतिमैथुन करना, ठीकसमयमें अहार न करना, पीठकी रीढ याने पीठपर जो १ हड्डी होती है उसमें किसी तरहकी चोट लगना इत्यादि कारणोंसे यह पैदा होताहै रोगी, दुर्वल, निस्तेज, चेहरा फीका, शरीरमें फोडे, मिहनतमें थकना, स्वभावमें रूक्षता, रोगकी चिंता, रोगके निवृत्तिहोनेकी आशाका नाश, पेटफूलना, सदैवाजीर्ण अहारके उपरांत कलेजा कांपना, कमरमें दर्द, मैथुनशक्तिकी इच्छाका कम होना, कभी कभी क्षयकासके लक्षण भी दिखाई पड़ना, हमेशा- पेशाब करनेकी इच्छा, पेशाब गर्म २ उतरना तथा पेशावमें कष्ट होना इत्यादि लक्षण होते हैं, इसका तीसरा भेद फासफेटिकएसिडडायाथिसिस होता है कमजोरीही इसका प्रधानलक्षण और कारण है इस रोगमें सिर्फ कमरमें दर्द हुवा करता है । दशवां मूत्रपिण्डकाटयूवाकेंलयाने सोजाक इस रोगमें प्रथम मूत्रपिंडमें अतिशय पीडा होतीहै । हमेशा थोडा २ मूत्र निकलताहै, शरीर कमजोर, हेक्टिकफीवर भी होजाता है कुछ दिन होजाता है कुछ दिन पीछे फुसफुस या और किसी आंतमें पीड़ाका प्रकाश होताहै मूत्रका कम निकलना कभी २ मूत्रद्वारसे पीव और खून भी निकलता है इसका दूसरा भेद पेरासाइटिक कहाता है, कभी २ मूत्रपिंडमें शूलका चलना होकर शूल बढ जाता है

मूत्रपिण्डमें अतिशय वेदना कभी ऐसा मालूम होता है मानो मूत्र पिण्डके भीतर कोई फोडा होकर फट गया, हमेशा पेशाब करने की इच्छा परंतु पेशाब करनेमें असमर्थता, पीछेसे मूत्रके साथ पीब और खून आने लगता है इसके यह १० दश भेद डाक्टरी मतानुसार होते हैं।

होमियोपेथिकसे वीर्यप्रमेहके लक्षण।

दिन या रातमें सोते समय वीर्य निकल जावै यह कभी तो स्वप्नमें कल्पित स्त्री संसर्गसे और कभी बिना कामनाके भी होजाता है इस रोगीका शरीर और मन निर्बल होजाता है इस रोगमें मनुष्य कभी प्राणतक दे बैठते हैं, यह रोग हस्तमैथुन करने वा मनमें दिनरात स्त्रियोंकी चिंता करनेसे उत्पन्न होता है।

होमियोपेथिकसे सोजाकके लक्षण।

स्त्री संसर्गके समयमें स्त्रीके मूत्रयंत्रसे या मनुष्यके मूत्रयंत्रसे एक प्रकारकी विष उत्पन्न होकर इस रोगको उत्पन्न करता है। और स्त्रियोंके उत्पादन यंत्रके सदैव गीला रहनेसे भी इस रोगकी उत्पत्ति होती है। समुद्रके जलमें स्नान, अधिक परिश्रम, बहुत नशा खाना इस रोगकी उत्पत्ति होनेका कारण होताहै, मूत्रयंत्रमें तकलीफ,संकोच,बढाव सदैवही मूत्रत्याग करनेकी इच्छा,पेशाब करनेके बखत बहुत दर्द, कभी जलन, कभी तकलीफ होनेके कारण मूत्रस्थानका मुख बिलकुल बंद होजानेसे मूत्रका आना बिलकुल बंद होजाता है। बिना कारणही कामोद्दीपन अधिक होनेके कारण अधिक दर्दका होना और मूत्राशयमें पीबके जमजानेसे उसके ऊपरकी खाल चढ उतर नहीं सक्ती, पेटका फूलना, अंडकोशोंका बढना उसीके साथ ज्वर और कैका होना अगर पीब निकलनेसे बंद होगई हो या बहुत निकलने लगै जिसके

कारण किसी नाड़ीकी गांठ वायुसे आक्रांत होकर भयावनी पीड़ा को उत्पन्न करती है और बाह्यप्रमेहका लक्षण कोई होमियोपेथिक डाक्टर कहते हैं कि मूत्र नलके ऊपरले भागमें छोटे २ फोडे हो-जाते हैं और उनसे पीब निकलता है उन्हीं से जलन और दर्द होता है कुछ दिनमें लाल होजानेके कारण जलन बहुत होने लगती है । कभी ऐसा होता है कि रोगी मूत्रके वेगको धारण नहीं करसक्ता रोगीकी विना इच्छाके भी मूत्र निकल जाया करता है यह लक्षण होते हैं ।

एलोपेथिकसे मूत्रयंत्र और उसकी पीडाकी चिकित्सा ।

रोगीको शयन कराकर गर्मपानी भरीहुई बोतलके द्वारा पेडूपर सेंक करे और गर्मपानीमें कमरतक रोगीको डुबावे, बाफ से सेंक और पसीना लानेवाली दवा दे तथा जरूरतके माफिक जुलाब भी दिया जासक्ता है ।

जलन बन्द करनेके वास्ते डोवर्सपाउन्डर और अफीम देकर रोगीकी जलनको बन्द करे ।

अगर देखै कि रोगी निर्बल है और गांठमें पीब पड़गया है तो दूध अंडा सोरवासे रोगीकी बलइच्छा करताहुवा नीचे लिखी दवा देनी चाहिये ।

टिंचर फेरीपर क्लोराइड	१॥ ड्राम
फास्फेट औफ जिंक	६ ग्रीन
टिंचर कलम्बा	५॥ ड्राम
ग्लीसरीन	४ ड्राम
पानी	१॥ औंस

इसकी ६ खुराक बनाकर एक दिनमें ३ खुराक ३ दफे देनी चाहिये अथवा नीचे लिखी दूसरी दवा देवे ।

टिंचर फेरीपर क्लोराइड	१ ॥ ड्राम
डाइल्यूट एसिड हाइड्रो क्लोरिक	१ ॥ ड्राम
टिंचर हाइयो सामस	२ ॥ ड्राम
इनफ्यूजन केयासिया	७ ॥ ड्राम

इसकी ६ खुराक बनाकर १ दिनमें तीन खुराक देवै।

यदि पेशाब में पानीका अंश अधिक हो तो।

टिंचर फेरिम्यूरियेटिस	१० बून्द
पानी	१ औंस

ऐसी १ मात्रा बनाकर दिनमें ३ दफे देवै अथवा एमोन्यूसलफेट औफआयरन १५से१०ग्रीन तक दिनमें३या ४ बार देना चाहिये।

यदि इन्द्रियके ऊपरकी खाल खराब होकर उतरती चढती नहीं तो गर्मपानीकी भाफ देनी और धोना स्नान करना चाहिये।

यदि पेशाबके साथ कोई कड़ी कड़ी चीज निकलै जिस्के कारण रोगी कमजोर होगया हो तो नीचे लिखी दवा देवै।

एसिड फास्फरिस डाइल्यूट	१० बून्द
टिंचर सिनकोना	॥ ड्राम
टिंचर न्यूसिसवमिसि	५ बून्द
एको वा मेन्थपियारेटा	१ औंस

इसकी १ खुराक बनाकर ऐसीही ३ खुराक दिनमें पिलावै और काडलिवर आयल और अफीम भी इस रोगमें जरूरतके माफिक देसक्ते हैं। कोइ कोई डाक्टर इस रोगसें टानिकएसिड, औक्साइडआफजिंक, आयोडाइडआफपुटासियम, केम्फर, नाइट्रेट आफपुटास, आदि देते हैं, और ठीक पथ्य देकर रोगीके जीवनकी रक्षा करनी चाहिये तथा रोगीको बिलाडोना, मारफिया इत्यादि देकर रोगीका कष्ट कम करदेना चाहिये अथवा–

एमोनिया कार्बोनेटिस	३० ग्रीन
टिंचरलवेन्डयूलाकम्पज़िटा	॥ औंस
इनफ्यूजनसिनकोना	७ ॥ औंस

इसकी ६ खुराक बनाकर ६ घन्टेके अन्तरसे देना चाहिये। घावसुखानेके वास्ते नीचे लिखी दवा दे।

पुटासि ब्रोमाइडि	३० ग्रीन
मैग्नेसि कार्बोनेट	५० ग्रीन
पल्वेरिस गोयाईसि	४० ग्रीन

इसकी ६ पुडिया बनाकर १ दिनमें ही खिलादे।

खून बन्द करनेके वास्ते।

गैलिक एसिड	१२ ग्रीन
पल्व एपिकाक कम्पौन्ड ओपिआई	५ ग्रीन

ऐसी १ पुडिया ९ या १२ घंटेके अन्तरमें देना चाहिये और लघु भोजन करावे शराब पीनेको न दे यदि बहुत ही अवश्यकता हो तो थोडी ब्राण्डी पानीके साथ मिलाकर देसक्ते हैं मीठा बिलकुल देना ठीक नहीं। नाइट्रो म्यूरियेटिक एसिड, देनेसे विशेष फायदा दिखाई पडता है। जिंक भी फायदा करता है। किसी प्रकारकी खटाई नहीं खानी चाहिये।

जब पथरी नीचे बैठजावे उस बख़्त गर्म पानीका सेंक उपकारी होता है।

जब रोगीको इतना कष्ट हो कि रोगी उसे सह न सक्ता हो तो क्लोरोफार्म सुँघानेसे फायदा होता है।कहीं कहीं बिलाडोना दिया जाताहै कोई कोई डाक्टर अफीम मारफिया देकर नींदका उपाय बतातेहैं। इसमें सब दवाइयां सेवन करनेके बाद दूध और पानी मिलाकर पीवे अगर पथरी बडीहोनेके कारण मूत्रद्वारसे न निकल सक्ती हो तो

चीर कर निकालनेकी जरूरत पडती है परन्तु जिसको चीर फाडका अभ्यास न हो उसको इस कामके लिये साहस नहीं करना चहिये। गर्मचीज खानेसे परहेज रखना उचित है।

मूत्रमें क्षार या अम्ल अधिक हो तो नाइट्रेम्यूरियेटिक एसिड, टिंचर विलाडोनाकी १खुराक रोगीकी अवस्थानुसार देनीचाहिये.

स्त्रियोंको रजोधर्म्मके साथ यह रोग हो तो टिंचर केन्थराइडिस, टिंचर फेरिम्यूरियेटिस, पानीके साथ मिलाकर दिनमें ३ दफे देना चाहिये। जननेन्द्रियमें औक्साइड औफ जिंक और विलाडोनाकी पिचकारी देनेसे फायदा होताहै।

कभी बालकोंको इच्छाके विना पेशाब होता हो तो बिलाडोना देवै सबेरेही स्नान करावे और काडलिभरआयल पिलानेसे फायदा होताहै।

जहां पथरीका प्रकोप हो अथवा और प्रकारकी औपसर्गिकपीड़ाके कारण मूत्र बंद होगया हो तो सलाई डालकर पेशाब कराना चाहिये--परन्तु ऐसा न होने पावै कि रोगीका पेशाब बाहर निकल आवे नहीं तो रोगीके मरनेकी संभावना होती है। सलाई करनेमेंभी अभ्यासकी विशेष आवश्यकता है।

वीर्यप्रमेह हो तो नीचेलिखी दवा देवै।

कारबोनेट औफ आयरन ५ ग्रीन के उन्मान मलाई और शहत के साथ नित्य खानेसे बहुत फायदा होताहै। खटाई और स्त्रीसंग इत्यादिसे बचना उचित है।

होमियोपेथिकसे चिकित्सा।

रोगके प्रारंभमें--एकोनाइट, जेलसिनम देवै। जब पीब निकलै उस वखत केनोबिस, सेटाइवा देवै। पीबलाली लिये हो तो म्रिटसेलिनम देवै। यदि तकलीफ न हो और पीब पीला निक-

लता हो तो मर्क्यूरियस देवै । सादे रंगकी पीव निकले तो सल्फर देवे । कडा और दहींके समान पीव निकले तो पलसेटिला देवै । मूत्रत्यागनेमें कष्ट हो तो केन्थराइडिस देवै । पेशाबके साथ खून निकले तो केन्थराइडिस और पलसेटिला देवै । मूत्रयंत्र नीचेको झुकगया हो तो एकोनाइट, केम्फर, मर्क्यूरियस, पलसेटिला, देवे । मूत्रनलीके नीचेकी गांठ फूलगई हो तो मर्क्यूरियस, परसेटिला देवै । मूत्रद्वारमें जलन हो तो नाइट्रिकएसिड, सिनेबेरिसएसिड, फास्फारिक देवै । यदि इसी रोगके कारण वद उठ खड़ी हो तो मर्क्यूरियस, सिनेबेरिस देवै और गांठपर टिंचर आयोडीन १दिनमें कईबार लगावै । अंडकोशमें तकलीफ हो तो क्लिमेटीस, नाइट्रिकएसिड, देवै । मूत्रनलीके ऊपरले भाग तथा उसके ऊपर की खालसे पीव निकले और कामोद्दीपन हो तथा खाज चलै, सूजन हो तो मर्क्यूरियस देना चाहिये अगर भोजन करनेके उपरांत कच्चे नारियलका पानी पिलाया जावै तो बहुत फायदा होता है । वीर्य निकलनेके रोगमें पीव रोकने वाली दवा देसक्ते हैं, यह पीब भी १ तरह वीर्यकाही अंग होता है, इंद्रियमें घाव भीतर की तरफ हो तो जिंक ४ ग्रीनको २ औंस पानीमें हल करके पिचकारी देना चाहिये। अंडकोश फूल गये हों तो जोंक लगाना ही कहे तथा सर्वप्रकारके सोजाकमें जोंक लगाना अव्यर्थ महौषधि है ।

सिफिलिस याने उपदंश–आतशक ।

एलोपेथिकसे उपदंशके लक्षण ।

यह रोग प्रायः करके दूषित स्त्रीपुरुषके संसर्गद्वारा विषयके समयमें किसी न किसी स्थानसे एक प्रकारका विष शरीरमें प्रवेश करजाता है उसीसे यह रोग उत्पन्न होता है यह विष जब शरीरमें प्रवेश

करताहै उस वखत फोडे होनेसे पहिले भीतरही भीतर अपना दखल जमाता है। कभी २ शीघ्रही प्रकाशित होकर दिखाई पडने लगता है मूत्रेन्द्रियके ऊपर छोटी छोटी फुनसी होकर कुछ समय उपरांत उसके फूटनेपर एक बडा घाव होजाता है उस्मेंसे पानीके माफिक या गाढा पीव निकलने लगता है। जब दश या पंद्रह दिन तक यही हालत बनी रहती है। उस वखत रोगीको कई तरहके उपद्रव प्रतीत होने लगते हैं। बीच २ में ज्वर, भूख का कम लगना, कै होनेकी इच्छा, माथेमें दर्द, यह सर्व उपद्रव रातको बढते हैं और प्रातःकालमें कुछ स्थिरता प्राप्त होती है। कहीं कहीं देखा गया है कि खालके ऊपर खुजली चलती है और शरीर लाल होकर गोल २ चकत्ते बनजाते है,डेढ दो मासके उपरांत यह रोग आंखके पलकों परभी होजाता है। नख काले और टेढे पडजाते हैं किसी २ रोगीकी आंख, माथा और डाढीकेबाल गिरने लगजाते हैं, गलेकी गांठें फूल जाती हैं, कभी २ दो तीन महीनेके उपरांत जीभ, होठ और हाथ पैरोंमें अकस्मात् फोडे होजाते हैं मुख गला और त्वचापर अनेक प्रकारके विकार दिखाई पडतेहैं। यदि शरीरमें कोई फोडा होगया हो तो विषके कारण अच्छा नहीं होनेपाता। और इस रोगमें इन्द्रीपर तो थोडा बहुत जखम होताही है। कभी २ सारे शरीरमें भी चकत्ते पड जातेहैं। कभी शरीर काला पडकर भीतरमें दाह रहने लगती है। यह एक रोग है परन्तु इसके द्वारा कईरोग पैदा होजातेहै। जैसे गांठिया, वातव्याधि, नाकका बैठना, तालूफूटना इत्यादि, कभी २ इसके कारण धातु बिगडकर अत्यंत निर्बलता और नपुंसकता होजाती है यह रोग ऐसा है कि एक दफे हुए पीछे उमरभर पीछा नहीं छोडता बल्कि माबापसे बेटे बेटियों तथा पोते पोतियों तक होताहै। होमियोपेथिकसे सिफलिसके लक्षण इन्द्रियमें किसी

प्रकारका घाव होनेसे इसको सिफलिश बोलते हैं । गुपचुप आरांम होनेकी आशासे मूर्खोंका इलाज करानेके कारण बिगडजाते हैं। और रुधिर खराव होजानेके कारण जीनेकी आशा छोड वैठतेहैं ।

एलोपेथिकसे उपदंश चिकित्सा ।

इसमें कई डाक्टर तो पारा देनेकी सम्मति देते हैं कई डाक्टर पारा न देकर दूसरी दवाओंसे आरांम करना चाहते हैं, परंतु निःसंदेह इस रोगमें पारेकी अपेक्षा कोई दवा उपकारी नहीं, न इसके समान शीघ्रफल दिखानेवाली कोई दवाहै । अतएव उचित रीतिसे पारा व्यवहार करनेसे कोई क्षति नहीं होती ।

आरंभ होतेही कैलोमेल देकर करडा जुलाब दे और घावोंपर नाइट्रक औफ सिलभर लगावे और मर्क्यूरियस या सोलो विलस देना योग्यहै यदि हड्डियोंमें दर्द हो तो केलीहाई देना बहुत फायदेमंद बताते हैं । घाव दूर करनेके वास्ते ।

हाईड्रार्ज कमक्रिटा	५ ग्रीन
पल्वारिसइपिकाक कम् उपियाई	५ ग्रीन

ऐसी १ मात्राको आठ घंटेके अंतरमें देना चाहिये अथवा—

पिल्यूलाकेलोमेनस कम्पाजिटा	५ ग्रीन
एक्सट्राक्ट उपिआई	॥ ग्रीन

इसकी १ गोली बनाकर दोनों वखत खानी चाहिये इसका नाम कम्पौन्ड कैलोमेलपिल है । घाव दूर करनेके वास्ते ।

ग्लिसरिन	॥ ग्रीन
पोटासआयोडाइड	३ से १२ ग्रीन तक
टिंचरएकानाइट	२२ बूंद तक
वाइनमइपिकाक	१॥ ड्राम
सर्क्सीटरक्सी	५॥ ड्राम
डिकक्सनसारसा कम्पजिटा	७॥ औंस

यह छः खुराक दवा हुई एक दिनमें २ खुराक पीनी चाहिये। अथवा खानेसे पहले किसी खुशबूदार चीजके साथ २ से १० ग्रीन तककी मात्रासे आयोडाइडपोटास, पीनेसे विशेष फायदा होताहै। परंतु इस पुटासको बहुत दिन सेवन करनेसे कै, खांसी आंतोंका उत्तेजन, ज्वर, इत्यादि उपद्रव हो उठते हैं। इसलिये जब यह उपद्रव दीख पडैं उस वखत पीना बंद करदे। शरीरमें चकत्ते पडगये हों तो-

हाइड्राजिराई ब्रोमाइड	॥ ग्रीन
एक्सट्राक्टी सारसालिक्वीड	॥ ड्राम
डिकोक्सन सारसा कम्पजिटा	१॥ औंस

यह दवा दिनमें २ दफे पीनी चाहिये।

इस रोगमें जो घाव होजाते हैं उनको धोनेके वास्ते अनेक प्रकारके लोशन बने हैं परंतु नीचे लिखा लोशन सबसे उत्तम देखागया है इसके द्वारा घाव धोना अथवा पट्टी चढाना घावको शीघ्रही आराम करदेता है।

लाइम वाटर	१ औंस
कैलोमेल	५ ग्रीन

इस हिसाबसे मिलानेपर जब काला होजावै उस वखत कपडा भिगोकर घावोंपर धरै अथवा जब घाव लाल होजावै उस वखत आयडोफार्म बुरकाना बहुत जल्दी घावोंको सुखा देता है अथवा नीचे लिखाहुवा मरहम घावोंके सुखानेको सर्वोपरि है।

सुपारीकी भस्म	॥ ड्राम
पीलीकौडीकी भस्म	१॥ ड्राम
काथा सफेद	२ ड्राम
आयडोफारम	॥ ड्राम

कैलोमेल	१ ड्राम
घृत १०१ बार पानीसे धोयाहुवा	१ औंस

इन्होंको मिलाकर घावोंपर लगावे और इसी दवाको घृत मिलाये विना सूखीही उसके ऊपर दबादेवै तो गिने दिनोंमें हीं घाव सूखतेही दीखेंगे।

होमियोपेथिकसे सिफलिसचिकित्सा ।

पीब सहित बडेघाव होनेके कारण विछौनेमें दाग पडते हों तो मार्कफरस या मर्क्यूरियस देनेसे फायदा होता है । जब पारा देनेसे फायदा न हो तो सिनावारिस देवै जिन घावोंका किनारा ऊंचा हो खून पड़नेकी संभावना हो तो ऐसे स्थानमें नाइट्रिकएसिड देनी चाहिये । शरीरमें चकत्ते पड़गये हों तो एकोनाइट देना चाहिये । जब छोटे २ घावोंसे पीब निकलै और बढताही जावे तब अर्जेन्ट नाइट देना चाहिये । घावोंके किनारे कच्चे मांसके समान हों तो मर्क्यूरियस देना चाहिये ।

इम्पोटन्सी—ध्वजभंग याने नपुंसकता ।

एलोपेथिकसे लक्षण ।

मानसिकचिंता, अनुचारितरूपसे इन्द्रियोंको चलाना, रोजगार छूटना, मानसिक पीडा, शोक, द्वेष, प्रबल रिपुवोंकी अधीनता, किसीके ऊपर अतिशय आशक होना इत्यादि नपुंसक होनेके मुख्य हेतु हैं । इन कारणोंसे उत्पन्नहुये ध्वजभंगके दूर होनेकी आशा की जासक्ती है । मनुष्यकी मैथुनशक्तिका कम होना, इच्छा करनेपर भी इन्द्रियका उद्दीपन न होना, या कुछ होकर तत्काल शिथिल होजाना इत्यादि लक्षण होते हैं ।

होमियोपेथिकसे लक्षण ।

वीर्यको वहुत खर्च करनेसे, भय, शोक, मनकी चंचलता, कडवा, तीखा, मादक, चीजोंके अत्यंत खानेसे यह रोग होता है । मनमें

कामोद्रेक, होने पर भी वीर्यपतन वा जननेन्द्रियमें उत्तेजना नहीं रहती।मूत्रेन्द्रियमें उत्थानशक्ति भी नहीं रहती, किसी काममें मन नहीं लगता और रोगीके शरीरका पुरुषार्थ भी कमती होजाता है।

एलोपेथिकसे चिकित्सा।

यदि ज्वरादिक किसी व्याधिके कारण नपुंसक होगया हो तो बलकारक औषधि देनेसे दूर होसक्तीहै जैसे नक्सओमिका,केन्थराइडिस, इण्डियनहेम्प, हाइपो फास्फेट आफ लाइम, इत्यादि पुष्टिकारक दवा देवै।

माथेके पिछले भागमें चोट लगना या और किसी भारी कारणसे यह रोग हुवा हो तो आराम होना मुश्किल है।

बहुत तमाखू पीनेसे, परिपाकशक्ति न्यून होकर वा अनियमित इन्द्रिय सेवा करनेसे वा मूत्रेन्द्रियमें अनेक प्रकारके रोग होनेसे यह रोग हुवा हो तो।

इष्टिकिनिया	॥ रत्ती
दूधमें भीगा छुहारा	नग १

मोठके बराबर गोली बनावै दोनों वखत१–१गोली दूधके साथ दियाकरै तो फायदा होजावेगा अथवा–

कौनैन	॥ ड्राम
टिंचर इस्टील	२॥ औंस
इष्टिकिनिया	। रत्ती
पानी	१६ औंस

मिलाकर नित्य १ औंस दिनमें ३ दफे पीना चाहिये अथवा।

एक्सट्राक्ट जनसन	३६ ग्रीन
एक्सट्राक्ट नक्सवोमिका	२ से ९ ग्रीन तक
कुइंन सल्फेटिस	१८ ग्रीन

इसकी १२ गोली बनाकर सुबह और शामको एक एक गोली खानेसे वीर्य गाढा होकर पुरुषत्व प्राप्त होताहै । अथवा-

फेरियेटि एमोनि नाइट्रिस	२० ग्रीन
लाइकर ष्ट्रिकिनिया	१ ड्रामका तिहाई
इनफ्यूजन कैशिया	४ औंस

इसकी ४ खुराक बनाकर दिनमें २ बार पीनेको देवै अथवा-

सिरप फेरी आयोडाइड	२० बूंद
काडलिभर आयल	२ ड्राम
इनफ्यूजन कलम्बा	१ औंस

ऐसी १ खुराक दिनमें २दफे पीनी चाहिये अथवा फास्फरिक एसिडको५बूंदके हिसाबसे दूध या मलाईके साथ एक दिनमें २ दफे पीनेसे फायदा होता है नपुंसक और वीर्य प्रमेहके वास्ते फास्फरसपिल उत्तम दवा है जो कईरीतिसे बनाई जाती है ।

होमियोपेथिकसे चिकित्सा ।

धारणशक्तिकी कमी हो तो सल्फर देनेसे वीर्य बहुत देर तक रुकने लगैगा और किसी प्रकारकी नपुंसकता हो तो फास्फरस, नक्स ओमिका, चायना देवै ।

अंडवृद्धि ।

एलोपेथिकसे लक्षण ।

अंडकोष वातरोगाक्रांत होकर नीचेको या पीछेकी तरफ बढ जाते है, इनका बोझ लगभग १० से१२ औंस तक होजाता है ।

होमियोपेथिकसे लक्षण ।

यद्यपि इस रोगकी उत्पत्तिके अनेक कारण है, तथापि इसका मुख्य हेतु निकम्मा बैठा रहना और अधिक घी दूध खाना ही होता है इस रोगमे कभी २ ज्वर भी होजाता है ।

एलोपेथिकसे अंडवृद्धिकी चिकित्सा ।

पहले अंडकोशोंके ऊपर टिंचर आयोडीन लगाना चाहिये। यदि इससे फायदा न हो तो नीचे लिखी रीति करे ।

टिंचर आयोडीन और पानी दोनोंको मिलाकर उनको अंड-कोशोंपर डालें अथवा-

हाइड्राजिराई आयोडाइड रुब्रि	८ ग्रीन
आंगयेन्टी सिम्पलाईनिस	१ औंस

अच्छी तरह मिलाकर अंडकोशोंपर मालिश करै इसका नाम रेड आयोडाइड आयन्टमेन्ट है यदि इससे भी फायदा न हो तो अंडकोशोंको छेदकर पानी निकालदेना चाहिये ।

होमियोपेथिकसे चिकित्सा ।

अंडकोशोंकी बढवार बंद करनेके वास्ते मर्क्यूरियस, और दर्द दूर करनेके लिये आर्शनिक देना चाहिये ।

इस्कराफ्यूला अर्थात् ग्रन्थि ।

एलोपेथिकसे लक्षण ।

त्वचाके भीतर एक तरहका मादा पैदा होकर अनेक ठौर गांठेंसी बंधकर फूलजातीहैं और पककर फूटतीभी हैं प्रायः करके यह रोग जुकाम और उपदंशके कारणोंसे हुवा करता है । तथा मा वापके वीर्य दोषसे भी होता है ।

एलोपेथिकसे चिकित्सा ।

अलसीका पुलटिस बांधना गांठको नर्म करके बैठादेती है अगर बैठने लायक नहीं होती तो पकाकर फोड देती है तथा मवादको शुद्ध करके घावको भी भरलाती है यह एक पुलटिसके बांधनेसेही सब काम होजाते हैं अथवा मुरक्कबात फौलाद जैसे कार्बोट औफ आयरन, टिंचरस्ट्रील देना भी उत्तम है। और जुलाब देना भी उचित है ।

हिमरेडस या हिमरोइड अर्थात् अर्श ।

एलोपेथिकसे लक्षण ।

बहुत घोडेपर चढना अथवा दस्त लानेवाली दवा बार२खाना मूत्र और जननेन्द्रियकी पीडासे यह रोग पैदा होता है। गुदाके नीचे खूनको लेजानेवाली नाडीमें किसी प्रकारका व्यतिक्रम होजानेको अर्श कहते हैं यह २ प्रकारका होता है एक इन्टरन्याल अर्थात् भीतरका, गुह्यके भीतर हो तो उसे भीतरका बोलते हैं।
दूसरा एक्स्टारन्याल याने बाहरका जो नीचे बाहरके तरफहो उसे बाहर बोलते हैं यदि सुर्ख रंगके मसे होकर खून पडे तो उसे खूनी बोलते हैं, यदि पीडा, खाज, सूजन अधिक हो तो उसे बादी बोलते हैं और दस्तकी कबजी तो इसका प्रधान लक्षण होताहीहै।

होमियोपेथिकसे लक्षण ।

अनेक मनुष्योंका विश्वास है कि कोष्ठबद्ध होने वा निकम्मा बैठा रहनेसे यह रोग होता है । इस रोगमें गुदाके ऊपर अथवा भीतर मसे हो जाते हैं । उनमेंसे कभी खून निकलताहै इसरक्तस्रावके लिये कोई ठीक समय निर्धारित नहीं है । चाहे जब पडने लगता है ।

एलोपेथिकसे चिकित्सा ।

अगर रोगी दुर्बल होगया हो तथा खून ले जानेवाली नाडी शिथिल होगई हो तो, बलकारक औषधी हल्की तथा पुष्ट करनेवाली चीजें खवावे और हल्का जुलाब दे, भारी जुलाब देनेकी कुछ आवश्यक्ता नहीं जैसे—

बाईटाट्रेट औफ पुटास	३० ग्रीन
प्रेसिपिटेटेडसलफर	३० ग्रीन

कन्फेक्सन औफ सेना	६० ग्रीन
सिरप	॥ औंस

इसकी १ मात्रा बनाकर एकदिनके अन्तरसे रातको खिलानी चाहिये। बुढापे या जवानीके कारण अश हो तो।

कन्फेक्सन औफ क्यूवेब।	७० ग्रीन
कन्फेक्सन औफ सेना	७० ग्रीन

इसकी १ खुराक बनाकर पिलावे, दस्त होनेके पीछे गर्मजल-द्वारा गुदाको धोनेसे फायदा होताहै, भीतर मसे हों तो।

सलफेट औफ आयरन	१ ग्रीन
साफपानी	१ औंस

इन्होंको खूब मिलाकर गुदामें पिचकारी देवै, अगर वाहर मसे हों तो, कार्य्रिकलोशन लगाना अथवा हैमोमिलिशलेशनसे धोना चाहिये।

मसांमें यदि जलन हो तो गर्मपानीसे धोना, पुलटिस वा पोस्त के डोडोंका सेंक करना अगर उचित समझै तो जोंक भी लगाई जासक्ती हैं अथवा जिन औषधोंसे घाव होजाताहै जैसे नाइट्रिक एसिड इत्यादिके द्वारा जला देवै यह भीतरके मसोंके वास्ते उपकारी है और बाहरके मसोंको छुरीसे काटदे परंतु बहुतसे लोग काटना नहीं चाहते कारण कि–काटकर उन्का खून बन्द करना सहज नहीं होता जो शस्त्रविद्यामें निपुण न हो उसको काटनेका साहस नहीं करना चाहिये बाहरके मसोंकी चिकित्सा करनेसेपहले।

कनफोक्सनिकसेना	१ औंस
पुटासि टार्ट्रासिस	१ औंस
साक्सिटा राक्ससि	१ औंस

इस दवाको १ ड्राम देकर कोठा साफ करलेना चाहिये पीछे दवा देना योग्य है।

होमियोपेथिकसे चिकित्सा ।

साधारण अर्शमें प्रतिदिन सवेरे नक्सवोमिका और रात्रिमें सलफर देवै, खून बंद करनेके वास्ते रातमें हेमामिलस, सवेरे नक्सवोमिका देवै । मसा लाल और फूला हो, दर्द और खून जारी हो तो एकोनाइट देवै । अत्यंत दर्द हो तो आर्सनिक देवै परंतु सम्पूर्ण अर्शोमें पहले काष्टायलसे कोष्टको शुद्ध करके हेमामिलिस लोशनसे मस्सोंको धोवै पीछे दवाका प्रयोग करै तो वहुत जल्दी फायदा होताहै ।

लेप्रा अर्थात् कुष्ठ ।

एलोपेथिकसे लक्षण ।

यह रोग संक्रामक है अर्थात् एकसे दूसरेको लगजाताहै इसके कई भेद हैं लेप्रा अर्थात् गलितकुष्ठ १,इस्केविस २, एकेरसफलिक्यूलोर्म ३, थिराएसिम वालाउस ४, ट्रिकिनास्पाईरोलिस ५, टिनियासार्सिनेटा अर्थात् दाद ६, ल्यूकोडारमा अर्थात् श्वेतकुष्ठ ७, रस्केवेज याने गीली खाज ८, प्रोराइगो याने सूखीखाज ९, यह ९ भेद होतेहैं ।

१ लेप्रा अर्थात् गलितकुष्ठके लक्षण ।

पहिले छोटे बडे लालरंगके शरीरपर चकत्ते पडजाते हैं साधारणतः यह चकत्ते संधि अर्थात् जोडोंमें देखेजाते हैं । कोहनी, घोटू अथवा इन्होंके समीपके स्थानोमें देखेजाते है, और धीरे २ सव शरीरमें फैलजाते है । पीछे इन चकत्तोंसे सफेद या लाल पानी निकलने लगताहै, उसमें वदवू भी आती है इसके सिवाय घावोंमें दर्द होनेके कारण रोगी व्याकुल होजाता है ऐसे रोगीके आराम होनेकी आशा छोडदेनी चाहिये एक दूसराभी इसीजात का होताहै जिसमें सफेद दाग होकर खुजली उठती है पीछे उन्होंमेंसे पीव वहने लगती है ।

२—इस्केबिसके लक्षण।

हाथकी अंगुलियोंके भीतर संधिस्थान और मुँहके सिवाय सब शरीरमें फोडे होजाते हैं। परन्तु फोडे होनेसे दो तीन दिन पहिले शरीरमें खुजली आना प्रारंभ होताहै उस्के बाद लाल या धूमरे रंगके फोडे देखे जाते हैं।

३—एकेरसफलिक्यूलोमके लक्षण।

पसीनेसे इस कुष्ठकी उत्पत्ति होतीहै, इस करके कुछ रोगीको बडाभारी कष्ट नहीं होता कभी छोटे और कडे फोडे दिखलाई पडते हैं।

४—थिरायेसिमवाला उसके लक्षण।

देह खुली रहनेसे, चर्मरोगसे खाल बिगडकर यह रोग होता है इस्में सब शरीरके बाल गिर पडते हैं।

५—ट्रिकिनास्पाई रोलिसके लक्षण।

इस रोगमें शरीरके भीतर एक प्रकारका कीडा पैदा होजाताहै जिस कीडेके कारण नींद नहीं आती, भूख कम लगती है और इसमें प्रायः करके निमोनिया ज्वर होता है। कभी कभी टाइफ सफीवरके लक्षण दिखाई पडते हैं, जिस करके रोगीके प्राण नष्ट होजाते हैं।

६—टिनियासार्सिनेटा अर्थात् दादके लक्षण।

खालके ऊपर चकत्ते दीखते हैं उन्मेंसे खाज आयाकरती है इसे रिंगवर्म भी कहते हैं।

७—ल्यूकोडारमा अर्थात् श्वेतकुष्ठके लक्षण।

खालमें और कोई विकार न उत्पन्न होकर केवल सफेदी आजाती है, खालकी कमजोरी इस रोगका मुख्य कारणहै। पहले यह रोग प्रायः करके हाथ पैरोंमें देखा जाता है। स्त्रियोंकी अपेक्षा पुरुषोंके यह रोग अधिक होता है। खूनमें कफका भाग त्वचाके समीप अधिक होना ही इसका मुख्य कारण है।

८–इस्केबेज अर्थात् गीलीखाजके लक्षण ।

इसमें पहलें खुजली होकर महीन महीन सफेद फुनसी निकल आती हैं उनके टूटनेपर पानी निकलता है और हाथ तथा कूलों पर प्रायः करके होती हैं। कारण रुधिरविकार या खुजलीवालेका स्पर्श ।

९–प्रोराइगो याने सूखीखाजके लक्षण ।

इस रोगद्वारा सारे शरीरमें सूखी खाज चलाकरती है कभी खाज आकर शरीर लाल होजाता है। कभी भूसीसी उडने लगती है, कारण बदनमें खुश्की, रुधिरमें क्षारका भाग विशेष होजाना इत्यादि कारण होते हैं । इस रोगमें होमियोपेथिक मतानुसार भी यही लक्षण होते हैं कुछ भी भेद नहीं हैं।

एलोपेथिकसे कुष्ठरोगकी चिकित्सा ।

पहिले शरीरको गरम पानीसे वा साबुनसे धोकर साफरक्खे पीछे-

डिक्सन एलोज कम्पौन्ड	४ औंस
इनफ्यूजन जेन्सन कम्पौन्ड	४ औंस
लाइकर पुटास	१॥ ड्राम

इसकी ६ खुराक बनाकर दिनमें २ दफे देवै अथवा–

पेप्सिन पोर्शि	३२ ग्रीन
एक्सट्राक्ट एलोज वार्वेडोन्सस	८ ग्रीन
लिसरिन	गोलीवनानेके लायक

इसकी ८ गोली बनाकर नित्य ही भोजनके समय १ गोली खावे या।

लाइकर आर्शनिकेलिस	३० बूंद
टिंचर केन्थराईडिस	॥ ड्राम
टिंचर ओरेन्साई	४॥ ड्राम

पुटास आयोडाइड	१८ से ३० ग्रीन तक
इनफ्यूजन ओरैंसाई	५ ॥ औंस

इसकी ६ खुराक बनाकर भोजनके पीछे ही दिनमें २ खुराक पिलानी चाहिये अगर कच्छू होवै तो ।

जिस्में फोडे होजाते हैं उसे गर्मपानीसे धोकर उनपर गन्धक-का मरहम लगावै अगर १ ड्राम कार्बोनेट आफ पुटास मिलाले तो बहुत जल्दी आराम होगा ।

दद्रू होवै तो नीचेलिखी दवा काममें लावे ।

गन्धकका मरहम	१ ड्राम
क्रियोसोट	१ ड्राम
कैलोमेल	१ ड्राम

एकसाथ मिलाकर दादोंपर रगडै अथवा ।

गन्धकका चूर्ण	४ ड्राम
सुहागा	॥ ड्राम
हाइड्रो क्लोरेट औफ एमोनिया	१ ड्राम
तारपीनतेल	१ ड्राम
चरबी	२ औंस

अच्छी तरह मिलाकर मालिश करै ।

श्वेतकुष्ठचिकित्सा ।

और औषधोंमें लोहमिली औषधके साथ आर्सनिक, बाईक्लोइड आफमर्करी लोशन, टिंचरआयोडीन, गन्धकका मरहम काममें लाना चाहिये अथवा पहले सफेद दागोंपर बिलस्टर लगाकर पीछे संखिया मासे ५ मोम तेल घृत ५ मासे इन्होंका मरहम बनाकर लगावै ।

गीलीखाजकी चिकित्सा ।

गन्धकका तेजाब १ भाग, जैतूनका तेल १० भाग मिलाकर लगावो अथवा लोहबान ४ मा० कोई भी स्पिरिटमें हल करके गन्धकका मरहम आधीछटांक, मक्खन२॥तो०मिलाकर लगाना चाहिये ।

सूखीखाजकी चिकित्सा ।

नींबूके रसमें तेल मिलाकर मलना अथवा खसखसका तेल मलनेसे सूखी खाज दूर होजातीहै ।

होमियोपेथिकसे चिकित्सा ।

एक सप्ताह तक सुबह और शामको आर्सेनिक देवै । बीमारी बहुत हो तो हाईड्रास टिस देवै । पैरोंमें फोडे हों तो हिमामिलिस देवै।सवेरे और रातको सिलिशिया प्रयोग करै । शरीरमें चकत्ते हों तो सलफर देवै । दाद हो तो रातको सिपिया, सवेरे आर्सेनिक देवै। दादपर सिपिया ओयन्टमेन्ट लगावे । कीडे हों तो उन्हें पुल-टिससे पकाकर फोडकर पीव निकालदे । इसके सिवाय आर्निका देवै।बहुत दर्द हो तो एकोनाइट देवै । फोडे बिलकुल दूर करनेको सलफर देवै । अगर घावोंसे खून निकलता हो तो ठण्डेपानी या बरफसे धोकर आर्निकालोशन देवै । जहर खानेसे कोढके फोडे हों तो बिलाडोना मर्क्यूरियस देवे । जाडा लगे तो हियार देवै ।

ड्प्सि याने शोथ ।

एलोपेथिकसे लक्षण ।

स्वस्थ शरीरसे एकप्रकारका जलीय पदार्थ निरंतर निकल कर सूखने न पावे । किसी कारणसे यह जलीय पदार्थ अधिक होकर या उसकी शोषणशक्ति कम होकर सूजनको उत्पन्न करताहै शोथ युक्त स्थान फूलकर साफ होजाता है। होमियोपेथिकसे भी शोथके यही लक्षण पायेजाते हैं ।

एलोपेथिकसे चिकित्सा।

पहले कोष्ठ परिष्कार करना आवश्यक है जिस्के वास्ते नीचे लिखी दवा पीवै।

मेग्नेसिया सलफटिक	१२० ग्रीन
मेना	६० ग्रीन
टिंचर जेलप	१॥ ड्राम
एको वा कार्वी	१॥ औंस

इसको पिलाकर तीन घंटेके वाद।

केलोमेलनस	५ ग्रीन
पालवेरिस जेलप	१५ ग्रीन

एकसाथ मिलाकर पिलादे पेशाब ठीक लानेके वास्ते।

टिंचर सिलि	१॥ ड्राम
टिंचर कैम्फर कम् उपियाई	४ ड्राम
लिकारिस एमोनिया एसिटेटिस	४ ड्राम
डिकक्सन स्कोपारियाई	८ औंस

इसकी ६ खुराक बनाकर दिनमें ३ दफे सेवन करावे।

प्रायः सवप्रकारके शोथमें टिंचर आयोडीन,व्यवहारमें आता है शोथकी यह अव्यर्थ महौषधि है। उपदंशके कारण भी शरीरमें शोथ या गिलटी उत्पन्न होगई हो तो इससे उत्तम दूसरी औषधि नहीं है। होमियोपेथिकके मतसे प्रायः सल्फर देनेसे फायदा होता है और टिंचरआयोडिन भी लगाते हैं।

एपोप्लेक्सी अर्थात् संन्यास–मूर्च्छा।

एलोपेथिकसे लक्षण।

इस रोगमें अकस्मात् वेहोश नहीं होजाता, स्पर्शका अनुभव और इच्छाशक्ति नहीं रहती।इस रोगमें आक्रांत होनेसे पहिले रो-

गीके माथेमें दर्द,माथा घूमना, माथा भारीरहना, स्मरणशक्तिका न होना,मानसिकक्रियाका गोलयोग, बात कहनेमें असमर्थ, मुख लाल,कानमें कुछ२शब्द इत्यादि लक्षण देखेजाते हैं। इसके४भेद और भी हैं। पहिला केटेलेशी याने मूर्च्छा इसमें मनुष्य अचानक बेहोश होकर जा पडताहै अगर सोता हो तो जिसतरह शरीर पडा हो उसीतरह पडारहना और मूर्च्छा समयमें रोगीको ज्ञान नहीं रहता मीठा मीठा श्वास लेताहै,फुसकार मारताहै,भीतरको श्वास लेनेमें कष्ट,मुख फूला हाथ पैर क्रियारहित, किसी २ का आधा शरीर निश्चल और आधा चलायमान होताहै,नाडी कठिन और वेगवती,कभी स्वाभाविक अपेक्षा थोडी बहुत होजाती है। रोगी बात कहनेमें असमर्थ होकर भी संकेतसे आशयको प्रकाशित करताहै। दूसरा—कनकसन अफब्रेन अर्थात् मस्तिष्कविकम्प। गरमीके दिनोंमें सूर्यके सन्मुख माथा खुला रखनेसे यह रोग उत्पन्न होताहै तब रोगी अकस्मात् गिरपडता है। खाल गर्म, माथा घूमना, नेत्र लाल, कमजोरी, कै होनेकी इच्छा, वारंबार मूत्रत्यागेच्छा,कभी कभी हँस उठताहै या कभी खडा होकर मानो किसीके साथ बात करताहै, श्वास जल्दी२ चलने लगताहै,नाडी शीघ्रगामिनी होजाती है, इस रोगमें शरीरकी गरमी११२डिगरी तक होजाती है। तीसरा—कन्वेलसन् या आक्षेप। इसके आक्रमण समयमें शरीर कडा और अचल होजाताहै.होठ टेढे,माथेकी खाल सिकुडी, मुखका रंग पहले लाल फिर नीला,श्वास विषम, नाडी जल्दगामिनी, बिना इच्छाके मलमूत्र त्यागना, दो एक मिनटके बाद शांति होकर रोगका फिर आक्रमण होताहै या शांति ही रहती है, जब रोग संघातिक होजाता है तब मृत्यु होजाती है कभी कभी दिनमें५—६दफे तक आक्रमण होता है और२घंटे तक ठहरता है।लडकपनके फोडे, झिल्लीमें जलन, निमोनिया आदि

रोगोंसे यह रोग होता है। चौथा हिष्टिरिया–यह रोग आंतोंके गोलयोगसे होता है, गलेके भीतर मानो कोई गोली सी चीज अटकीसी मालूम देती है, स्नायु धातुवाली स्त्रियोंको यह पीडा जवानीमें अकसर देखीगई है। आक्रमण समयमें रोगी प्रायः सम्पूर्णरूपसे ज्ञानशून्य होते नहीं देखेगये। मूर्च्छित होकर जमीन पर गिरनेके वखत, अपनेको चोट लगनेसे, बचनेकी चेष्टा करता है, मुख विगडजाता है, आंखोंके तारे विगडजाते हैं, बहुत जांचनेसे मालूम पडता है कि मानो रोगी किसी चीजको देख रहाहै इस रोगसे मुखमें झाग नहीं निकलते यह ३ भेद मूर्च्छाके और होते हैं।

होमियोपेथिकसे एपोप्लेक्सी अर्थात् मूर्च्छाके लक्षण।

रोगी अकस्मात् अचेत और आत्मज्ञानशून्य तथा स्फुरण क्रियासे रहित होजाता है, नाडीकी गति मन्द श्वास सघन और मुखकी विकृति होजाती है, इन ही लक्षणोंको मुख्य माना गया है। हिष्टिरियाके लक्षण इसप्रकार बतातेहैं कि इस रोगमें रोगी बात समझसक्ता है परन्तु कहनेकी सामर्थ्य नहीं रहती आंखोंके पलक कांपते हैं।

एलोपेथिकसे मूर्च्छाकी चिकित्सा।

यह रोग २ प्रकारसे आराम होसक्ताहै एक वह जिन कार्यों-के करनेसे रोग बढता है उनका न करना। दूसरा यह कि जब रोगका आक्रमण हो उसी समय चिकित्सा करै अर्थात् ठंढेपानी या केवडेका छीटा देना, सुगंध सुंघाना माथेपर कपूर और चन्दन लगाना चाहिये और बहुत परिश्रम करना, बहुत स्त्रीसंग, बहुत शराब पीना, मनकी चंचलता, शरदी गरमीका सेवन, मल मूत्रादिकोंके वेगको रोकना, गर्मजलसे स्नान, माथा नीचा करके चिन्ता करना इन सब बातोंको त्याग करना चाहिये। यही सब बातें रोगीको परिमित रीतिसे काममें लानी चाहिये।

माथेमें दर्द, माथा घूमना, माथेकी नस फड़कना इत्यादि हो तो बीच २ में एकाध जुलाब देना चाहिये ।

यदि नाडीपुष्टि और ग्रीवाकी नस फूलीं हुईं और फडकती हो मुखमें शोथ और लाल होकर रोगी बेहोश होगया हो तो ग्रीवा-के पीछे बिलस्टर लगाना और पुष्टिकारक चीजें खानेको देना चाहिये, यदि ऐसी अवस्थामें उसके मरनेकी आशंका हो तो कितने ही डाक्टरोंका मत है कि थोडासा खून निकलवा दे अर्थात् फस्त खुलवादेनेसे फायदा हो सक्ताहै परंतु जिस अवस्थामें रोगीकी नाडी दुर्बल हो तो कदापि फस्त खोलनेका अवलम्बन न करना चाहिये !

सब प्रकारके मूर्च्छा रोगीको ठंढे और हवादार मकानमें रख-कर उसका मस्तक सदैव ऊपरको रखना चाहिये। बल्कि बरफसे माथा ठण्ढा रखनेकी चेष्टा करतारहे। इस रोगमें जितना उत्तम जुलाब दियाजावैगा उतना ही रोगीको विशेष लाभ होगा अर्थात्—

मेग्नेशिसलफ	२ ड्राम
मेना	१ ड्राम
टिंचरजेलेफा	२ ड्राम
एवो वा मेन्थपियः	१॥ ड्राम

इसकी १ खुराक बनाकर सबेरे ही पिलादे अगर इस दवाको न खा सकै तो चीनीके साथ २ या ३ बूँद .ओयलक्रोटन देवै और नीचे लिखी दवाकी पिचकारी लगावै ।

ओयल क्रोटन	६ बूंद
ओयल रिनिस	१ औंस
ओयल टिरिबिंथ	२ ड्राम

डिकक्सन होर्डियाई ८ औंस

इसकी पिचकारी माथे या ग्रीवापर रोगके आक्रमण समयमें देना चाहिये।

रोगीकी बेहोशी याने अचेतन अवस्थामें किसी प्रकार देहका उत्तेजन या उत्तेजक औषध न देवै। दूध आदि पुष्टिकारक औषधि देनी चाहिये। मद्यपीना और स्त्रीसंसर्ग न होना ही अच्छा है।

शरदी गरमीके प्रतिकारको दूर करनेके वास्ते १० से २० डिगरीतकके ठंढे मकानमें रोगीको रक्खे। माथा मुंडवाकर ग्रीवा और मस्तकपर ठंढे पानीके छीटे इत्यादि शीतल प्रयोग करै। रोगीको गीले कपडेद्वारा लपेटनेमें भी क्षति नहीं है। ठंढा पानी और शर्बत पिलावै। आयल क्रोटन पिलाकर या पिचकारी देकर रोगीको दस्त कराने चाहियें। जिस्में कोठा साफ होजावै अथवा काष्ट्रोयलकी पिचकारी देकर तारपिनतेल, देवै। होशमें न आवै तो लाइकर लिटिका विलष्टर देवै।

कनवलसन होवै तो रोगीको क्लोरोफार्म सुंघावै परन्तु इस दवाको सावधानीसे सुंघाना चाहिये।

खूनकी गरमीको दूर करनेके वास्ते शरीरपर बरफ फेरै, माथे पर ठंढा पानी डालै, यदि नाडी ठंढी हो तो शीत प्रयोग करना उचित नहीं। यदि इसप्रकार रोगी आराम होकर फिर भी रोगसे आक्रमित हो तो शीतल देशमें रहना और पुटासआयोडाइड, काममें लाना चाहिये।

कोरिया हो तो पुष्टि करनाही उत्तम इलाज है। पूरे जवान आदमीको ऐसी पीडा होनेसे पाकक्रिया और मूत्रमलादिकके प्रति दृष्टि रखनी चाहिये। और-

सोडीहाई फास्फेटी	४ ग्रीन
इनफ्यूजन चिरायता	१॥ औंस

इसकी ६ खुराक बनाकर दिनमें ३ दफे देनेसे कोरवा दूर हो जाताहै और खाली काडलिभरओयल देनेसे भी वह रोग शांत होताहै । नदीके जलमें स्नान और साफ हवा खाना भी उत्तम है, हिष्टिरिया होवै तो आक्रमणसमयके कपडे उतारडाले और रोगीको ठंढी हवामें लेजावै तथा एमोनिया सुंघावै, ज्ञान नष्ट हुवा हो तो मुख और मस्तकपर ठंढे पानीका छींटा दे अथवा--

मिकचर फेरी कम्पौन्ड	४ औंस
डिकोक्सन एलोज, कम्पौंड	४ औंस
जिन्सि सल्फेटिस	१२ ग्रीन

इसकी ६ खुराक बनाकर दिनमें २ दफे देवै अथवा--

पुटाइसि ब्रोमाईइड	६० से ९० ग्रीन तक
पुटासि आयोडाइड	१२ ग्रीन
पुटासि वाई कार्बोनेटिस	४० ग्रीन
टिंचर ओरेन्साई	७॥ औंस
पानी	७॥ औंस

इसकी ६ खुराक बनाकर खालीपेटमें सवेरे और रातको देवै तथा कुनइन और काडलिभरओयल भी देसक्ते हैं ।

होमियोपेथिकसे एपोप्लेक्सी याने संन्यास मूर्च्छाकी चिकित्सा ।

मुख लाल होगया हो तो फी आधा घंटे या १५ मिनटके अन्तरमें विलाडोना देवै । दवा न खासके तो छोटी गोली जीभ के नीचे रखदे मुख मलीन हो तो ऊपर लिखी रीतिसे ओपियम देवै । घवडाहट हो तो नक्सओमिका देवै ।

हिष्ट्रियामें–आंखोंके पलक कांपते हों तो पीडाके समय कपडे

उतारकर आंख और मुखमें पानीके छींटे देवै। अथवा दिनमें ३ दफे इग्रेसिया देवै। इसके १ सप्ताह उपरांत जलसिमिनम देवै।

एपिलेप्सी अर्थात् अपस्मार-मृगी।

एलोपेथिकसे लक्षण।

इसमें स्पर्शशक्तिका अभाव, आत्मज्ञानशून्यता, शरीरका ऐंठना, आंख, मस्तक, हाथ और शरीर मानो कोई मोड डालताहै और रोनेके शब्दके समान श्वासकष्ट और श्वासका रुकना, कभी २ श्वास बिलकुल बन्द होजाताहै। दांतोंका घिसना, जीभ काटना, विना इच्छाके मल, मूत्र और शुक्र त्यागना, आंखें घूमना, जल्दी२ श्वास लेना, मुखसे झाग निकलना, मुख और शरीरका मलीन होना, नाडीस्वाभाविक पसीना आना इत्यादि लक्षण कुछ सेके-न्डसे १० मिनट तक रहते हैं। इसके दूर होनेपर रोगी दुर्बल होकर आलस्यभराहुवा सोनेकी इच्छा करताहै, इस नींदसे रोगी जल्दी नहीं उठता। यह रोग माता पिताके किसी रोगमें ग्रस्त हो-नेसे, बहुत शराब पीनेसे, बहुत स्त्रीसंसर्ग करनेसे, हस्तक्रिया करनेसे, किसीप्रकारका विष खानेसे, दीमागमें खून जमा होकर दौरा करने लगताहै।

होमियोपेथिकसे लक्षण।

बेहोशी, मुखसे झाग निकलना, प्रायः यह रोग रात्रिके समय आक्रमण करता है।

एलोपेथिकचिकित्सा।

रोगीको अकेला न रहने दे। जब रोग आक्रमण करे उस वखत सावधानी रक्खे कि रोगी अज्ञानवश अपने किसी अंगमें चोट न लगाले, हवादार मकानमें रक्खे, रोगी प्रायः जीभ काटता है इसलिये दांतोंके नीचे कपडेकी पोटली या काठका टुकडा अथवा रवड मुखमें देदेवै।

मुखमें खून भर आवै तो ठंढा पानी डाले ।

आक्रमणसमयमें यदि बिजलीका यंत्र लगाया जावै तो बहुत थोडे समयमें यह उतर जाती है ।

आक्रमणसमयके बीचमें यदि स्त्रियोंको मृगी हो तो उसके रजोधर्म्मकी तरफ दृष्टि रक्खे कि न्यून है या अधिक उसे ठीक करै कम्पौन्डकालोसिन्थपिल खावै, जुलाबके पीछे कोठा साफ होनेपर बलकारक औषध खावै । इस रोगमें डाक्टर टॉनर नीचे लिखी दवा उपकारी बताते हैं ।

सोडीहाइयो फसफाइटी	८०से २४० ग्रेन तक
स्पिरिटास ईथरिस	४ ड्राम
टिंचर सिनकोनाप्लेवा	१॥ औंस

एक बडे ग्लास भरे पानीमें डालकर एक चमचाभर दिनमें२ दफे पीवै (डाक्टरीमतानुसार चमचा कहनेसे वह समझा जाताहै जिससे अंग्रेज लोग चाह पीते हैं) और डाक्टर ब्रानैसिकवार्ड नीचे लिखी दवा काममें लाते हैं ।

पुटास आयोडाइड	१ ड्राम
पुटास ब्रोमाइड	१ औंस
पुटासि वाईकार्ब	४० ग्रीन
एमोनि ब्रोमाईडाई	२॥ ड्राम
इनफ्यूजनकलम्बा	६ औंस

एक छोटा चमचा दवाका थोडे पानीके साथ सवेरेही नहारंमुख दिनमें ३ दफे देवै परंतु रातको सोनेसे पहिले२ चमचा दवा देवै ।

होमियोपेथिकसे चिकित्सा ।

मृगीमें सात रोजतक सोते समय बिलोडोना देवै । पीछे सात रोजतक उपियम देवैं । पीछे दिनमें दोदफे हाईड्रास्टीस देवै ।

एक्सटासी–हर्षोन्मत्तता।

एलोपेथिकसे लक्षण।

किसी विषयमें मनका संयोग और मनकी चंचलतासे स्पर्शानुभव और इच्छा सम्बन्धी शक्तिका अभाव, आत्मज्ञानशून्यता इत्यादि लक्षण दीख पडतेहैं, किसी २ का शरीर मुरदेके समान होजाताहै कुछ भी चैतन्य नहीं रहता।

ऐलोपेथिकसे चिकित्सा।

रोगीको डर दिखाना, ताडना देना आवश्यक है, इस रोगके दो मनुष्योंको एकजगह नहीं रहने देना चाहिये।

इनसान्टी अर्थात् उन्माद।

एलोपेथिकसे लक्षण।

इसके ४ भेद हैं पहिला एडच्सी १, दूसरा डेमनशिया २, तीसरा मेलनकोलिया ३, चौथा मेनिया ४ यह ४भेद होतेहैं, तथा पहिला एडघूसीका लक्षण, इस बीमारका जन्मसेही शिर छोटा होताहै जिस करके अकल कम होतीहै। दूसरा डेमनसियाके लक्षण, इसमें होश हवास और धारणशक्ति कम होती है, प्रायः कभी कभी बेहोश भी होजाताहै यह बीमारी नाजुक बच्चों और स्त्रियोंको प्रायः होती है, कारण इसके दिमागमें चोट लगना, दीमागकी कमजोरी, क्षीणता मगजमें खूनका कम होना, अतिनशा करना इत्यादि होतेहैं। तीसरा मेलिनकोलियाके लक्षण, इस रोगसे रोगी कम हिम्मत होजाताहै अकेले फिरना पडा रहना चाहताहै, मनमें अनेक संकल्प विकल्प वृथाही उठते रहतेहै, जीना बुरा लगने लगता है, ठीक २ विचार नहीं रहता कारण इसका शोच, फिकर, धन, पुत्र, स्त्री आदिका नाश होना है। चौथा मेनियाके लक्षण यह पूरी वेहोशी है, जि-

सको बावलापन कहते हैं परन्तु इसका दौरा हुवा करता है, कभी घट बढ भी जाताहै यही ४ भेद होतेहैं ।

एलोपेथिकसे चिकित्सा ।

दीमागमें खून कम हो तो पुष्टिकारक और रुधिर बढने वाली दवा देवै, मेलनकोलिया हो तो तसल्ली अर्थात् धैर्य्य देवै, उससे उल्टी सीधी हँसी करके विशेष पागल न बनावै । बल्कि रंजको दूर करै।मेनिया हो तो बल घटानेवाली क्रिया करै,जिससे मूर्द्धाका अशुद्ध रुधिर घटजावै और शुद्ध रुधिर पैदा हो । यह चारों बीमारियां मूर्द्धा अर्थात् दीमागसे ही सम्बन्ध रखती हैं। प्रायः दीमागकी कमजोरी आदिसे होती हैं, इसमें दिलका भी सम्बन्ध है ।

डिलेरियम टिमेन्स अर्थात् सिड ।

एलोपेथिकसे चिकित्सा ।

इस बीमारीमें आदमी बहकी हुई बातें करताहै । बहुत जल्दी जल्दी बोलताहै, मिथ्या सूरतें ध्यानमें आने लगतीहैं और यह उनसे यद्वातद्वा बातें करताहै, कभी डरता और कभी लड़ता है ।

एलोपेथिकसे लक्षण ।

इसका यत्न ऐसा करना चाहिये जिससे निद्रा अधिक आवे अथवा क्लोरोफार्म या ओपियम उन्मानसे देना चाहिये ।

पलपेटीशन अर्थात् खफगान–पागलपना ।

एलोपेथिकसे लक्षण ।

इसमें दिल बहुतही धडकताहै। जैसे दिल अपनी जगहसे हट याने उखड गया हो, जिस करके उसकी बुद्धि ठिकाने नहीं रहती, कारण; दिलकी कमजोरी, नजाकत, रंज, बारबार जुलाब लेना और जुलाबका विगड़ जाना इत्यादि होते हैं ।

एलोपेथिकसे चिकित्सा।

दिलको ताकत पहुँचाना, मुरक्कबियात देना, ज्यादा सुवाना इत्यादि करना चाहिये।

वातरोग।

एलोपेथिकसे लक्षण।

वातरोग उत्पन्न होनेके सात कारण होतेहैं १ पीडा प्रकाशित होने के पहिले कमजोरी होतीहै, रोगी सबल होनेपरभी उसकी भीतरी स्थिति अबल होजातीहै, २ पीडाकी सब दशावोंमें दर्द कभी २ बराबर कभी विरामसे भी होताहै, ३ मैलेरिया पीडित मनुष्यको प्रायः माथेमें दर्द होताहै कभी २ आधाशीशी यह भी इसी रोगके अंतर्गत है, ४ यौवन अवस्थामें २५ या २६ वर्षकी अवस्थामें यह रोग प्रायः देखा गया है, ५ बुढापेमें धनियोंको आलस्यसे, मध्य वृत्तियोंको धनचिन्तासे और दरिद्रोंको अन्नकष्टसे भी वात रोग होसक्ता है, ६ खूनकी कमी भी इसी रोगकी उत्पत्तिमें प्रधान हेतु है, ७ सबसे मुख्य कारण इस रोगका आतशक याने उपदंश और सोजाकमें प्रायः ठंढी हवा इत्यादि खानेसे गांठिया दर्द वगैरह वातरोग होजातेहैं। इसके सामान्य लक्षण इसप्रकार जानने चाहियें—संधिमें पीडा, किसी अंगमें शोथ, नीचेके अंगमें दर्द, ऊपरका शरीर स्वस्थ रहे, कभी ऊपरका शरीर दुःखी और नीचेका निरोग रहताहै, कभी एकही जगहपर दर्द होताहै वह धीरे२ और स्थानोंमेंभी फैलता जाताहै। गला गाल इत्यादिमें दर्द वातव्याधिके लक्षण प्रकाशित होते हैं और वातव्याधिके कई भेद निश्चित किये गयेहैं जैसे १ रोमाटेजम याने गांठिया। इसमें पहले शरीर अकडाहुवा दीखताहै हाथपाँवोंमें कछु २ दर्द होताहै पीछे कई या

सव जोड़ोंमें शोथ और दर्द होजाताहै, अकसर कवजीयत रह-
तीहै यह रोग कभी कम कभी अधिक होताहै,प्रायः इसका दौरा
देखागया है इसका कारण मेहमें भीगना, सरदी लगना, अति
ठंढी वस्तु खाना, फिरंग होना इत्यादि होते हैं । २ पेराप्लीजिया
अर्थात् ऊरुस्तंभ इसमें कमरसे नीचे दोनों पांव निकम्मे होजाते
हैं । ३ साइटीका अर्थात् रींगन यह झनझनाहटका दर्द चूँतडोंसे
टखनेतक होसक्ताहै हेतु इसका कब्जी शरदी आतशकका अंश
इत्यादि होतेहैं। ४ पेरालेसिस अर्थात् सुन्नवहरी, इस रोगमें किसी
अंगको स्पर्शका ज्ञान नहीं रहता और हलने आदिकी शक्ति नहीं
रहती यूंकयू रहजाताहै।५ हेमेप्लोजिया अर्थात् अर्द्धांग पक्षाघात
इसमें १ अंग मारेजानेके कारण स्पर्शका ज्ञान नहीं रहता।६फेशि-
यलपरोलेसिस—अर्दित लकवा इसमें चेहरेका १ रुख या दोनों
रुख मारे जातेहैं।ठोढी,जावडा,आंख या कनपटी टेढी पडजाती
है। ७ कोरिया अर्थात् कंप इस रोगमें हाथ पैर शिर या और कोई
अंग कांपने लगताहै,कारण इसके कमजोरी,बचपन,बुढापा, अ-
धिकखून या धातु निकलना,कवजियत इत्यादिहैं।८टेरनस अर्थात्
धनुर्वायु। इस रोगकी आदिमें हाथपाँवकी नसें खिचने लग जाती
हैं, जावडे सुकडजातेहैं, गुदा और पीठमें दर्द होताहै, कोई चीज
निगली नहीं जाती।रोगकी वृद्धि होनेपर कमर अगाडी या पिछा
डीको कमानकी तरह झुकजातीहै कारण;क्षीणता,सरदी,सर्द हवा
खाना, कुचलादि वृक्षीय विषयका सेवन इत्यादि होतेहैं । ९
मस्क्योलररोमाटेजम—सर्दीका दर्द । यह भी १ प्रकारकी वायु
होती है । इसके भी कई भेद हैं । जब पसलियोंमें होताहै तो उसे
प्लोरोडीनिया कहते हैं । जब कमरमें होताहै तो लेवेंगो बोलतेहैं
इसके सिवाय गर्दन,छाती या और अंगोंमें भी होजाताहै।कभी२
इसके साथ बुखार और सरदी भी होती है । कारण इसका निर्ब-

लता, बदहंजमी, ठंढी प्रकृति, सर्दी लगना, मेहमें भीगना, ठंढी हवा, ठंढी वस्तु खाना, अतिपरिश्रम करना इत्यादि होतेहैं। अलावा इसके और भी कई प्रकारके वातरोग हुवा करतेहैं, जैसे १० स्पाईनलमिनन जाईटिस। ११ माईलाईटिस। १२ स्पाईनलकंजेशन। १३ स्पाईनलहिमरेज। १४ स्पाइनलइरि टेशन। १५ हाइड्रोरेक्सि। १६ कंकन। १७ जेनरेलपेरालिसिस। १८ हेमाप्लिजिया। १९ वेष्टिपलसी। २० न्यूराइटिस। २१ न्यूरोमा। २२ न्यूरेलजिया इत्यादिके अलावा भी बहुतसे भेद हैं। परन्तु चिकित्सा सामान्य होनेके कारण विशेष ग्रंथ बढाना ठीक नहीं समझा। होमियोपेथिकवाले सामान्य वायुमें शरीरकी संधियोंका फूलना और दर्द होना यह लक्षण बतातेहैं परन्तु पक्षाघातमें ज्ञान नष्ट होना, चलन शक्ति हीन होजाना, नाडीकी गति मन्द होना इत्यादि लक्षण बताते हैं। यह रोग कहीं चोट लगने या कोई पीडा होने अथवा भीतरी किसी बीमारीसे होताहै।

एलोपेथिकसे सामान्यवायुचिकित्सा।

वातरोगमें विलस्तरा देना और पोटासआयोडाइड देनेसे रोगकी शांति होती है।

दर्द दूर करनेके वास्ते अफीम देनी चाहिये।

पेशाब बंद हो तो सलाईसे पेशाब करावें और नीचे लिखी दवा देवें।

मेग्रेसिया सल्फेट	१२० ग्रीन
मेना	६० ग्रीन
टिंचर जेलप	१॥ ड्राम
एको वा कारुमी	१॥ ड्राम

यह एकमात्रा दवा हुई इसको पिलादे अथवा—

कालोमेलेनस	२ ग्रीन
एक्सट्रेक्ट जेलप.	८ ग्रीन

इसकी २ गोली बनाकर रातको देवै अथवा–

हाईड्राजीराई करोसिडिस क्लिमेटी	१ ग्रीन
एमोनिहाइड्रोक्लोराटिसि	५ ग्रीन
एक्सट्राक्ट सारसा लिक्वीड	११॥ औंस
डिकक्सन सारसा कम्पौन्ड	१॥ औंस

इस दवाको २ चमचेभर दिनमें दो दफे पीवै और बिलाडोना का पलास्तर लगावै ।

हाथपैरोंमें जलन हो तो खानेको भी बिलाडोना देवै । मैले-रियासे यह रोग हो तो कुनइन देवै, इसके अलावा पुष्टिकारक चीजें खानेको देवै ।

चीसमारती हो तो काडलिभरओयल और आयोडाइड औफ पुटासियम देवै ।

गांठिया हो तो कारबोट औफ पोटासमें कपडा भिगोकर जोडों पर लगावै अथवा इष्टिकिनिया रत्ती १ दिन में ४० खिलादे ।

ऊरुस्तंभ हो तो इसमें पेरालेसिसका तेल मलना और ऐसी दवा देना जिससे उष्णता बढे ।

रींगनमें कबज हो तो मुलय्यन दस्तावर दवा देकर पलास्तर लगावै और इष्टि किनिया १ ग्रीनको २८ दिनमें देवै । शून्यता हो तो गंधकका चोवा १ ड्राम, तारपीनका तेल १ औंस मिलाकर कई वार मलै अथवा तार बिजली लगाकर गरमी पहुँचावै ।

अर्द्धाङ्ग या लकवा हो अथवा धनुषवायु हो तो ऊपर पेराले-सिसका तेल मलै और विशेष करके जिधरका रुख मारागया हो उस कानमें गर्म भाफ पहुँचानी चाहिये । जो घाव हो तो उसका यत्न करे धनुषवायुके वास्ते तारबिजली लगाना उत्तम है परन्तु यह रोग कभी कभी कैसीही चिकित्सा करो अच्छा नहीं होता ओपियम, क्लोरोफार्म, गांजा, बिलाडोना, कुनइन, मद्य आदिसे इसकी चिकित्सा करै । डाक्टर फेब्रर कहते हैं कि–

क्लोरोफार्म	१० बूंद
टिंचर केनाबिस इंडिका	२० बूंद
मूसिलेज	१ औंस

इसकी १ मात्रा बनाकर दो तीन घंटेके अन्तरसे पिलावै इसके खानेके समय अफीमकी गोली बनाकर उसका धुवां पीनेसे रोगको फायदा होताहै, पीठके बांसपर बिलाडोना प्लाष्टर लगावै, एक्सट्राक्ट बिलाडोना, आधे ग्रीनसे २ ग्रीन तक ४–६ घंटेके अंतरमें सेवन करावै और बहुतसे मनुष्य रोगीको क्लोरोफार्म सुंघाकर बेहोश करनेकी भी संमति देतेहैं, परंतु क्लोरोफार्मकी क्रिया निवृत्ति होतेही रोगके लक्षण पूर्ववत् होजातेहैं।

यदि रोगी कमजोर और श्वासमें कष्ट हो तो क्लोरोफार्म देना कभी उचित नहीं है। कोई डाक्टर ४–५ घंटेके अन्तरसे ४–५ ग्रीन तक कुनइन देनेसे उपकार बताते हैं। और डाक्टर स्टेनर नीचे लिखी दवा देनेकी अनुमति देते हैं।

सोली सलफेटिस	३०से६० ग्रीन तक
इनफ्यूजन कैशिया	१॥ औंस

इसकी १ खुराक बनाकर दिनमें ६ खुराक देवै इस प्रयोगमें पीठके बांसपर बरफ लगानेसे फायदा होता है। इस औषधको देनेके समय अफीम नहीं देनी चाहिये।

कोष्ठबद्ध हो तो स्केमेनि वा कार्ष्ट्रायलका जुलाब देना चाहिये। माथेमें खूनकी कमी हो तो नीचे लिखी दवा देवै–

स्पिरिटास वाई निगोलिसाई	११॥ औंस
इनफ्यूजन सिनाकोना फ्लेमा	७॥ औंस
स्पिरिटास ईथारीस	२॥ औंस

इसको उचित मात्रासे पिलाया करे।

माथेमें खून जमगया हो तो जुलाव देवे और विलष्टर लगावे तथा आयोडाइट औफ पुटासियम देवे।

नींद कम आती हो तो अफीमके बदलेमें इयोसामस देवें अथवा नीचे लिखी दवा देवें।

एक्सट्राक्ट कोनाई	२ ग्रीन
एक्सट्राक्ट हाइयो सामस	२ ग्रीन
पिल्यूला रियाई	२ ग्रीन

इसकी दो गोली बनाकर सोनेके पहले खानेको देवें अथवा–

एक्सट्राक्ट केनाविस इंदिका	चौथाई ग्रीनसे १ ग्रीन तक
एक्सट्राक्ट हाइयोसामस	४ ग्रीन

इसकी एक गोली बनाकर २४ या १२ घंटेके अन्तरमें देवें।

पुरानी बीमारी हो तो कोई तेज लिनीमेन्ट देनी चाहिये अथवा–

स्पिरिट एमोनिया एरोमेटिक	४ ड्राम
स्पिरिटासरोज़मेरिनी	४ ड्राम
ग्लिसरीन	४ ड्राम
टिंचर केन्थराईडिस	२॥ड्राम
एकोवारोज़	७॥ औंस

इसको माथेके बाल बनवाकर काममें लावे।

यदि उपदंशके कारण वातरोग होगया हो तो पारा देकर आराम करना चाहिये और बिजलीकी ब्याटरी लगावे।

यदि बुखारसे लकवा होगया हो तो–

टिंचर कुनइन कम्पौन्ड	४ ड्राम
लाइकरिस आर्सनिकेलिस	१७॥बूंद

फेरियेट एमोनिया साईटार्टिस ३० ग्रीन
एको वा ओरेन्साई ७॥ औंस

इसकी ६ खुराक बनाकर दिन रातमें ३ खुराक देवै, रोगीको उपदंश भी हो तो दिनमें २—३ दफे ५ ग्रीनके हिसाबसे आयोडाइड औफ पुटासियम, भोजनके पहले देवै।

यदि कंपमें कब्ज हो तो कास्ट्रोयलका जुलाब देकर कमजोरी दूर करनेके वास्ते कार्बोनेट औफ पुटास आयरण देवै।

सरदीका दर्द पसली इत्यादिमें हो तो कार्बोनेट औफ पुटास काचलीके साथ मिलाकर मालिश करना चाहिये तारबिजली लगाना चाहिये ओपियम प्लाष्टर या मास्टर्डप्लाष्टर लगाना चाहिये।

होमियोपेथिकसे वातव्याधि चिकित्सा।

मुख लाल होगया हो तो बिलाडोना देवै। मुख मलीन हो तो ओपियम देवै। आक्रमणके स्थानमें दर्द हो तो नक्स ओमिका देवै। कन्धोंपर सरसोंका प्लाष्टर लगावै अथवा दिनमें ३ दफे ब्रायोनिया और रातको मर्क्यूरियस देवै। रातमें बीमारी बढे तो सिफ्दूगा दिनमें २ दफे देवै। सोते वखत जेलसिमिनम देवै। नींद न आती हो तो सोनेसे २ घंटा पहले देना चाहिये। खंजत्व दूर करनेके लिये दिनमें३ बार नक्सओमिका देवै दर्दकी जगह में फलालेन बँधा रक्खे। अजीर्ण हो तो दिनमें नक्सओमिका और रातको रस देवै। डाक्टरीमें आमवातको गाउंट बोलतेहैं उसीके अनुसार चिकित्सा करनी चाहिये।

एलोपेशिया अर्थात् गंज।

यह रोग एकतरहके कीडोंसे पैदा होताहै। इसके होनेसे शिरके बाल गिरपडतेहैं। धीरेधीरे शिर साफ और चिकना होकर स्वाभाविक खालके समान होजाताहै। दूसरा केशदद्रु भी इसका

भेद है। जिसमें केशोंकी जडमें छोटे २ दाग होकर वहांकी खाल उडाकरतीहै। रोग बढनेसे छोटे २ फोडे भी देखेजातेहैं।

एलोपेथिकसे गंजकी चिकित्सा।

लाइकर एमोनिया	१ ड्राम
जलपाई तेल	२ ड्राम
स्पिरिट रोजमेरेनि	४ ड्राम
गुलाब जल	४ औंस

इन सबको मिलाकर लिनीमेन्ट बना ले इसको लगानेसे गंजेके शिरमें बाल पैदा होजातेहैं। अथवा—

स्पिरिट एरोमेटिकएमोनिया	४ ड्राम
स्पिरिट रोजमरी	४ ड्राम
ग्लिसरीन	४ ड्राम
टिंचर केन्थराईडिस	२॥ से ५ ड्राम तक

सबको अच्छीतरह मिलाकर माथेपर लगावे।

केशदद्रु हो तो वाईक्लोराइड औफ मर्करी ६ ग्रीन पानी २ औंस अच्छी तरह मिलाकर लगावे।

दंतरोग।

एलोपेथिकसे दंतरोगके लक्षण।

इसके ५ भेद हैं १ ग्यांग्रीन, २ पल्प, ३ कैंकेर, ४ निक्रोसिस, ५ म्यूरलजिया यह ५ भेद होते हैं। पहिला ग्यांग्रीनके लक्षण, अजीर्ण आदिरोग पारा खाने और स्त्रियोंकी गर्भावस्थामें दांतोंकी मांडी शिथिल होकर दंतरोग उत्पन्न होताहै १, दूसरा पल्प-ढका न रहनेसे वा ठंढा वा गरम रहनेसे यह प्रदाह होताहै-२, तीसरा कांकेर-निक्रोसिस अर्थात् दांत टूटते समय उसकी जड रहजाय तो उसमें जलन और वाट याने दर्द और फोडे होजातेहैं ३, चौथा

न्यूरेलजिया दंतरोग वह कहाता है जो बहुत दिन निरंतर बीमार रहनेसे होता है ४। पांचवां नक्रोसिस इसका भी वही कारण है ५।

होमियोपेथिकसे दंतरोगके लक्षण।

यह बीमारी ठंढसे होतीहै। टूटे वा गिरे दांतकी जडसेभी यह बीमारीहोतीहै। गर्भावस्थामें यह पीडा स्त्रियोंको विशेषकरकेदेखीजातीहै।

एलोपेथिकसे दंतरोगकी चिकित्सा।

घावोंको अच्छीतरहसे धोकर सडामांस न रहै ऐसी रीति करनी चाहिये। पिचकारीसे साफ करके खून निकलना बंन्द करनेके लिये परक्लोराइड औफ आयरन और टानिकएसिडका सोल्यूशन बनाकर पिचकारी दे।

पत्व हो तो बाईकार्बोनेट औफ सोडाको पानीमें मिलाकर उसकी पिचकारीसे साफ करे, उसके साथ क्लोरोफार्म, आयल-क्लोव्ज, टिंचर एकोनाइट, केजूपेट ओयल, तारपीनतैल, कैम्फर टानिक एसिड, किम्वा ईथरमें भिगोकर क्षतस्थानमें रक्खे परंतु यह चीजें ऐसी सावधानीसे लगावे कि पेटमें नहीं जाने पावें पेटमें जानेसे प्राणनाश होनेका डर है।

कांकेरनिक्रोसिससे दर्द हो तो दांतका शेष भाग उखाडदेना चाहिये।

न्यूरेल जियामें, आयोडाइड औफ पुटासियमसे फायदा होताहै।

होमियोपेथिकसे दंतरोग चिकित्सा।

दाँतोंमें दर्द हो तो बिलाडोना और मर्क्यूरियस२घंटेके अंतरमें देवै अगर किसी खास समयमें इस पीडाका प्रकोप हो तो फी२घंटेके अंतरमें जलसीमिनम् और आर्शनिक देवै, सम्पूर्ण दांतोंके दर्दपर काष्टिकलोशन लगानेसे पानी टपककर दर्द बंद होजाता है।

बालकोंके दांतोंमें दर्द हो तो आधे घंटेके अंतरमें एक मात्रा कैमोमिला देवै।

दांतोंकी जडमें घाव हो रोगी दुर्बल होगया हो तो फास्फरिस् देना चाहिये ।

स्टोमेटाइटस् अर्थात् मुखपाक ।

यह रोग प्रायः बालकोंको हुवा करता है मुख और जीभ लाल होजाती है, गर्म और खुश्की होती है, कभी राल बहती हैं, होठ और जीभपर नन्हेर्दाने पडजाते हैं, कभी बुखार भी होजाता है, कारण आमाशय और आंतोंका विकार और गरमी होती है ।

एलोपेथिकसे चिकित्सा ।

खुश्की हो तो बिहीदाना या ईसबगोलकी पोटलीको भिगोकर फेरना चाहिये यदि लाल हो तो कत्था सीतल मिर्च डालना चाहिये, यदि छाले पडगये हों तो तूतियेको भूनकर लगानेसे शीघ्र ही आराम होता है ।

एपथलमिया याने नेत्ररोग ।

एलोपेथिकसे लक्षण ।

आंखोमें अतिशय गरमी पहुँचनेसे नेत्रोंमें लाली आजाती है। आंख करकराती हैं, सूर्यआदिकी ओर देखा नहीं जाता, सिवा हरेके और कोई रंग देखना रोगी बरदास्त नहीं करसक्ता ।

होमियोपेथिकसे नेत्ररोगके लक्षण ।

ठंढसे यह प्रदाह होता है । यही इसका मुख्य कारण है ।

एलोपेथिकसे नेत्ररोगकी चिकित्सा ।

साधारण रीतिसे रोगीकी स्वस्थतापर ध्यान रक्खे और बलकारक औषधें खानेको देवें जैसे आर्सनिक टिंचरष्टील,काडलिभर आयल देवै।और आंखोंपर मैल न जमनेदे हमेशा सफाई काममें लावै, जो मरहम लगानी हो उसको पानीमें मिलाकर बडी

सावधानीसे लगानी चाहिये। और बहुत हल्की मरहम जिसमें तेजी न हो ऐसी लगानी चाहिये जैसे नाइट्रेट औफ मर्करी, रेड-ओक्सा इड औफ मर्करी अथवा रेडओक्साइड औफ जिंक को पानीमें मिलाकर काममें लानी चाहिये अथवा—

हाइड्रार्जिराइ बूब्रि	८ ग्रीन
आयून्टिसिम्पिनाई	१ औंस

दोनोंको अच्छी तरह मिलानेसे—रेड ओक्साइड औफ मर्करी ओयन्टमेन्ट बनजाता है। इसको डालनेसे बडा फायदा होता है।

कभी २ आंखोंसे पानी गिरे और आँखें लाल हों तो बिला-डोना ऊपर लगानेसे फायदा होता है।

होमियोपेथिकसे नेत्ररोग चिकित्सा।

गर्म पानीसे आंखोंको साफ करके चायका—ठंढा पानी आंख में लगावे। पीछे दो दो घंटेके अन्तरमें—बिलाडोना और मर्क्यू-रियस देवे, तथा आंखोंपर हरा कपडा बँधा रहनेदे यदि रोग भारी हो तो रोगीको अँधेरे मकानमें रक्खे जो आँखें बहुत लाल हों तो एक पाइन्ट याने १० छटांक पानीमें—वेलिसटिंचर—मिलाकर आँखें धोवै,इसके पीछे दो घंटेके अन्तरमें एकोनाइट काममें लावे।

थ्राई याने फूली वा छड हो तो सवेरे और शामको ६ खुराक हियार देवे। उसके १ सप्ताह उपरांत पलसेटिला देवे।

एकटेरिस याने पीलिया।

एलोपेथिकसे लक्षण।

ऐसा रोगी सुस्त होजाता है, जी मचलाता है, भूख कम, मुख कडवा, पेट भारी, नेत्र पीले, कभी दस्त, कभी कब्ज होता है। रोगके बढजानेपर मल, मूत्र, पसीना, थूक, नख, चेहरा, सब पीला होजाता है। बल्कि सब कुछ पीला ही दीखने लगता है। कभी दाहिनी पसलीमें दर्द होनेलगता है। कारण जब पित्त गरमी

पाकर खूनकी पतली रगोंमें चलाजावै या जिगरमें पित्त बडकर रुकजाय अथवा ज्वर वहुत आवै या गर्म चीजोंका वहुत खाना इत्यादि कारण होतेहैं ।

एलोपेथिकसे चिकित्सा ।

इसमें कार्वोट औफ आयरन का सेवन करना,पेटमें कठिनता हो तो जुलाव देना चाहिये ।

उटाइटिस अर्थात् कर्णरोग ।

एलोपेथिकसे लक्षण ।

खराव खून और वादीसे कानमें चीस मारे, माथेके एकतरफ दर्द हो, पीव या और किसी प्रकारके पानीद्वारा यह रोग उत्पन्न होताहै । इस रोगके अधिक वढजानेसे आदमी वहरा होजाता है कभी २ कानमें फुनसी होजानेसे भी यह रोग होजाता है वालकों को दाँत निकलनेके समय भी यह रोग देखा गया है ।

होमियोपेथिकसे लक्षण ।

कानमें मैल जमजानेसे ऐसा मालूम होता है मानो कानमें कोई चीज जमीहुई है । या ऐसा होजाता है कि रोगी कुछ भी नहीं सुनसक्ता । ठंढी हवा लगनेसे या और किसी तरह ठंढके लगनेसे कानमें कटकट चटचट शब्द होने लगता है ।

एलोपेथिकसे कर्णरोगकी चिकित्सा ।

इसमें साधारणतः इस वातके ऊपर ध्यान रखना आवश्यक है कि रोगीका शरीर कमजोर न होजावै । दूध इत्यादि पुष्टि कारक खाद्य और कुनइन काडलिभरओयल आदि पुष्टिकारक औषधि खानेके वास्ते देवै । दर्दकी जगह सेच पुल्टिस और पिचकारीसे कान साफ करके ग्लिसडीन वा ओलिमओयल इत्यादि कानमें डाले साबुन डालेहुये गरमपानीकी पिचकारीसे कान साफ करे और नीचे लिखा आयोडाइड पुटासियम मिक्चर डालै ।

पुटास आयोडाइड	४० ग्रेन
टिंचर टियाई	॥ औंस
एक्सट्राक्ट सारसालिक्वीड	१॥ औंस

इसको १ ग्लास पानीमें चाहका छोटा चमचा भर दवा मिलाकर दिनमें ३ बार पीनेको देवै।

होमियोपेथिकसे कर्णरोगे चिकित्सा।

ठंढसे कानमें जलन होती हो तो एकोनाइट देवे, मुँहकी गरमी और माथेके दर्दके कारण कानमें दर्द हुवा हो तो फी १ घंटेके अन्तरसे बिलाडोना देवै, कानमें मैल होनेके कारण दर्द हुवाहो तो ग्लिसरीन डालै।गलेके दर्दसे यह रोग हो तो रातको बिलाडोना और सवेरे मर्क्यूरियस देवै।शीतलाके कारण हुवा हो खून और पीब निकलताहो तो रातमें आर्सनिक, दिनमें कलकेरिया देना चाहिये।परंतु दिनमें २ दफे गर्म पानीकी पिचकारीसे कानको साफ करता रहै।

पेरोटायस-कनफेड-कर्णमूल।

एलोपेथिकसे लक्षण।

जावडेके पास कानके पीछे नीचेकी तरफ शोथ और गांठ होजाती है, कभी २ बुखार भी होजाता है, प्रायः यह चढती हुई उमरके बालकोंको होती है।

एलोपेथिकसे चिकित्सा।

टिंचर आयोडीन अथवा कास्टिकलोशन लगानेसे फायदा होताहै।

इनफलोइनजा-प्रतिश्याय-जुकाम।

एलोपेथिकसे लक्षण।

नाकसे रतूबत बहती रहै, कभी बन्द भी होजाय, शरीर भारी रहै कभी मध्यम ज्वर भी होजाय, कारण, रतूबत बढना, नीचेके मकानमें रहना, सीढ, कमजोरी, एक खासतरहकी वायु।

एलोपेथिकसे चिकित्सा ।

नमकीन चाह-पीना और गर्म कपडा ओढकर सोना, ठण्ढी हवासे बचना चाहिये ।

स्त्रीरोग चिकित्सा ।

एलोपेथिकसे लक्षण ।

इस रोगके कई भेद हैं जैसे पहिला प्रुराइटास अर्थात् योनिखाज, स्त्रियोंकी जननेन्द्रियमें जो खाज होती है उसे योनिखाज बोलते हैं जिस्में आक्रांतस्थानमें बहुत खुजली चलै, सुईसी चुभै, गर्मी मालूम पडै, अत्यंत खुजलीके कारण ठंढे पानीको काममें लावै, निद्राका नाश, भूख कम लगना, और निर्वलता यही इसके मुख्य लक्षण हैं १. दूसरा-शैशव याने सोम, लडकपनमें योनिकपाटकी श्लेष्माकी गांठसे पानीसा निकलनेसे यह रोग होता है। इसमें खुजली, बेकली योनिमें दर्द, बदबू, योनिमें घाव और कमजोरी होकर ज्वर होजाना इसके मुख्य लक्षण होतेहैं २. तीसरा-ल्यूकोरिया अर्थात् श्वेत प्रदर इसमें सफेद पानी निकलताहै पीठमें दर्द होता है ३. चौथा-एक्यूटवें जेनाईटिस अर्थात् प्रदर। इसमें योनिका खुजाना, मूत्राशयमें उत्तेजना, जलन और गरमी मालूम होती है ऐसी दशामें परीक्षा करनेसे देखागयाहै कि योनि गर्म और फूलीहुई दिखाई पडती है । कभी लाल भी देखीगई है पीछे कुछ दिनों बाद पीव निकलने लगताहै जितना पीव ज्यादः निकलताहै तकलीफ भी उतनी ही ज्यादः होतीहै ४ पांचवीं-योनिमें पथरी जैसे मनुष्योंको पथरीरोग होता है उसी प्रकारसे स्त्रियोंको भी होजाता है। लक्षण भी उसीके समान दिखाई पडते हैं ५. छठा-एमेनोरिया अर्थात् रजस्वलाधर्म यह तीन प्रकारका होता है । एक वह जिस्में खून निकलता ही नहीं, इसके कारण इसप्रकार निश्चय किये गये हैं कि बहुत चिन्ता करना, चोट लगना, ज्वर, या और कोई बडी व्याधिका होना, ठंढ लगना, गीला रहना;

क्षयकासके होनेसे भी खूनके निकलनेमें अनेक प्रकारका गोल योग होजाता है बिना किसी प्रकाशित हेतुके भी रजोधर्म्ममें कुछ विकार देखाजाता है, बहुत दिनों तक स्वामीसहवास न करके उपरांत स्वामीके सहवास करनेसे २–३ महीने तक रजस्राव बंद होता देखागया है। दूसरा जिस्में खून कम या ज्यादा निकलै, अधिक रजस्रावका कारण यह है कि जिस स्त्रीके संतान बहुत होती हों अथवा संतानको बहुत दिनों तक दूध पिलातीरहै तो रुधिर अधिक निकलताहै इस बीमारीमें कमजोरी, आलस्य, थकावट कमर और पेडूमें दर्द, मुख फीका यह लक्षण देखेजाते हैं। तीसरा डिसमेनेरिया अर्थात् रजःकष्ट । इस रोगमें निर्धारित ऋतुकालके ३–४ दिन पहिले पीठके बांसमें दर्द होताहै, आलस्य, बेकली, दर्द, यही लक्षण दिखाई पडते हैं।

होमियोपेथिकसे लक्षण ।

ऋतु न होनेके कारण अथवा गर्भ होनेके कारण ऋतु बंदहोना स्वाभाविक है। तथापि बहुत रजस्राव होनेसे नये पुराने रोगोंसे अथवा अधिक पतिसंग करनेसे, ऋतु समयमें गीले कपडे पहरने से, बरफ खानेसे या और किसी प्रकारका शीतोपचार करनेसे तथा किसी विशेष चिंतामें लगे रहनेसे ऋतु बंद होजाता है, कभी २ अनियमित रजोधर्म्म अर्थात् २–३ मास तक ठीक समयमें ऋतु होकर फिर दो एक दिनका गोलमाल होजाता है इसका कारण कमजोरी आलस्य है। और ऋतुशूलमें थोडा या बहुत रजस्राव होकर रजोधर्म्ममें कष्ट होता है, माथेमें दर्द, गालों-पर लाली, हृदय कांपना, पेट भारी यह लक्षण दिखाई पडतेहैं। यह दर्द ऋतुके चार पांच दिन पहिले होता है और ऋतु आरंभ होनेके बाद बन्द होजाता है कोष्टबद्ध होना ही इसका कारण है कृत्रिम ऋतु उसको कहते हैं, कभी कभी ऋतु बंद होना वा

थोडा होना, लारके साथ खून निकलना वा खूनकी कै होना, जननेन्द्रियमें सफेद पानी निकलना, ऋतुके बदलेमें प्रतिमास कोई दूसरा पदार्थ निकले इसीसे इसको कृत्रिम याने बनावटी ऋतु कहते हैं। और श्वेतप्रदर, ठण्ढा, खूनकी अधिकता और स्वास्थ्यमगहोनेसे बिना सफाईके स्त्रियोंको यह रोग होजाताहै। इस रोगमें स्त्रियोंकी योनिद्वारा सफेद, पीला, हरा या पानीके समान निकलता है उसमें दुर्गंधि भी आती है। और गर्भावस्थाकी पीडा अर्थात् स्त्रीको गर्भरहनेसे शय्या परित्याग करतेही शरीर आलस्यपूर्ण होजाता है। सोनेमें कुछ भी तकलीफ नहीं होती परंतु सोके उठतेही कै होनेकी इच्छा होती है। और घरसे बाहर निकलते ही कै होजाती है। भोजनमें अरुचि और खायेहुये पदार्थकी उसी समय कै होजाना गर्भरहनेके मुख्यलक्षण होते हैं। और स्त्रीके वन्ध्या होनेका कारण यह होता है कि किसी २ स्त्रीकी जननेन्द्रिय और विपकोपकी गढनप्रणाली ठीक नहीं होती परन्तु ऐसा बहुत कम होता है। दूसरा जरायुकोप, फोडे या मांस के बढजानेसे अथवा ऊंची नीची जगहके बैठनेसे या बहुत पुरुषसंग करनेसे, अधिकदिन श्वेतप्रदर रहनेसे अथवा किसी भारी रोगके बहुत दिन बनेरहनेसे, या बहुत कमजोर होनेसे अथवा हृष्ट पुष्ट बलवान होनेसे स्त्रियोंका वंध्या होना सम्भव है। और गर्भपात होनेके समय किसी कामके करनेमें जी न लगना, शरीर तेजहीन, पीठके नीचेके भागमें दर्द और कमजोरी और धीरे धीरे उनमानसे अधिक खून पडे। कमरमें कतरनेके समान कष्ट हो कभी कभी वह कम ज्यादः भी होजावै। पीछे पानी सा निकलकर गर्भपात होजाता है कारण इसका कहीं ऊंचे स्थानसे गिरना, चोट लगना, पैरका ऊंचा नीचा पडना, भारी चीज उठाना, गरिष्ठ भोजन, जुलाब लेना, मनकी अकुलाहट, शरीरकी कमजोरी अथवा बहुत श्वेतप्रदर भी गर्भपातका कारण होता है।

एलोपेथिकसे चिकित्सा ।

पुराइटिस याने योनिखाज होतो थोडी मात्रामें कुनइन देनेसे फायदा होता है अथवा नीचे लिखी दवासे खूब फायदा होताहै ।

क्वीन सल्फ	१ ग्रीन
एक्स्ट्राक्ट बिलाडोना	१ ग्रीन का तिहाई
एक्सट्राक्ट ओपिआई	॥ ग्रीन
एक्सट्राक्ट हायेसायेमाई	२ ग्रीन

इसकी १ गोली बनाकर दोनों बखत देवे अथवा–

एसिड हाइ ड्रोसीनका डिल	३ ड्राम
प्लाम्वाई एसिलेस	१ ड्राम
स्पिरिट रेक्टीफिटोई	१ औंस
एकोवा	८ औंस

इन सबका लोशन बनाकर जननेन्द्रियको धोनेसे रोगीको फायदा होता है ।

योनिकपाटपर जलन हो तो–हाइडोक्लोरिक एसिड अथवा विचारकर और कोई संकोचक दवा देनी चाहिये तथा बलपुष्टि कर्ता दवा देवे ।

शैशव याने सोम हो तो,फिटकडीका लोशन लगानेसे फायदा होता है और हल्का जुलाव देना भी बहुत जरूरी है ।

दर्द हो तो संकोचक औषधका लोशन बनाकर काममें लावे, पुष्टिकारक औषधि खानेको देवै।इस रोगमें दूध देनेसे भी फायदा देखपडता है ।

मूत्राशयमें पथरी हो तो वह अस्त्रचिकित्सासे ही अच्छी होसक्ती है।

एक्यूटवेजानाईटिस अर्थात् प्रदर हो तो, पहले रोगीको कमर तक गर्म पानीमें डुबावे और गर्म पानीकी ही योनिमें पिचकारी

दे,कोठा साफ करनेके लिये, काष्ट्रोयल देवे । पथ्यमें लघुपाकी पुष्टिकर चीजें देवै अथवा-

प्लाम्बिआइयो डाईडाई	८० ग्रीन
एक्सट्राक्ट बिलाडोना	२४ से४० ग्रीन तक
व्यूटिरिआईके कोया	१ औंस
ओलिआईओलिम	१॥ ड्राम

इनमेंसे जो चीजें कड़ी हैं उनको अग्निमें तपाकर गरम करनेसे सब चीजें आपसमें अच्छी तरह मिलाकर एकजीव होजायेंगी पीछे छोटी अंगुलीके बराबर मोटा और१ इंच लम्बा कपडेका फलीता बना उसपर दवा डालकर पानीसे तर करले उस्मेंसे १ फलीता रातको सोते बखत योनिमें रखकर सोनेसे प्रदररोगको फायदा होताहै, सब दवा आठ फलीतोके लिये काफी है ।

अगर पीब होगया हो तो-

एमोनिया कार्बोनेटिस	३० ग्रीन
टिंचर एकोनाइट	४० बूंद
टिंचर सिनकोना कम्पौन्ड	५॥ ड्राम
एको वा मेन्थपिपरेटा	७॥ ड्राम

सबकी ६ खुराक बनाकर दिनमें ३ खुराक पिलानी चाहिये ।

ल्यूकोरिया याने श्वेतप्रदर हो तो ठंढे और खारीपानीमें कमर तक डुबारखना चाहिये और-

जिन्सी सलफेटिस	१ औंस
एल्यूमिनिस एक्सिकेटा	५ औंस

एक साथ मिलाकर एक छोटे चमचेभर दवा २० औंस पानी में मिलाकर योनिमें जस्त या पीतलकी पिचकारी लगावे कांचकी पिचकारी नहीं लगावै और आगे लिखी दवा खानेको देवै ।

कुनईन सल्फटिस	१२ ग्रीन
फेरी रेडाक्टाई	३० ग्रीन
एक्सट्राक्ट एकोनिटाई	१२ ग्रीन
ग्लिसरिन	गोली बनानेके लायक

इसकी १२ गोली बनाकर दुपहर और रातको भोजनके १ घंटे बाद देनी चाहिये।

पीठके बांसमें दर्द होतो बिलाडोनाका पलास्तर लगाना चाहिये। पथ्यमें थोडे पानीमें मिलाकर ब्राण्डी, पोर्ट और हलकी पुष्टिकारक चीजें खानी चाहिये। सबसे उत्तम इलाज आबहवा बदलना है।

एमोनिया अर्थात् रजस्वला धर्म्म लीवरमें बहुत खून हो तो—

एसिडाईनाईट्रिसाईडिल	१॥ ड्राम
स्पिरिटासईथरिसनाईट्रोसी	१॥ ड्राम
साक्सिटेराक्सिसाई	१॥ औंस
टिंचरसेना	४ औंस
इनफ्यूजन जन्सियन कम्पौन्ड	७॥ औंस

इसकी ६ खुराक बनाकर दिनमें २–३ दफे देनी चाहिये।

कोष्ठबद्ध हो तो—

एक्सट्राक्ट आर्गट लिक्वीडाई	२ ड्राम
टिंचर सापेन्टरी	६ ड्राम
डिक्क्सन एलो कम्पौन्ड	६ औंस

प्रतिदिन प्रातःकाल १ औंस पीनी चाहिये।

डिसमेनोरिया अर्थात् रजःकष्टमें बहुत दर्द हो तो—

टिंचरकेवा विसईडिका २० बून्द। स्पिरिट जूनीपर ३० बूंद
स्पिरिट ईथर ३० बून्द। टिंचर एकोनाइट १० बूंद
म्यूसलेज १॥ औंस

यह १ खुराक है जैसी ज्यादः कम बीमारी हो वैसी ही मात्रा पिलावै । खून अधिक पडता हो तो—

एसिडाई गोलसाई १५ से २५ ग्रीन तक
एसिडाई सल्फ़ारिसाई एरोमेटिक। १५ से २० बूँद तक
टिंचर सिनेमोनाई १॥ ड्राम । साफ पानी १॥ औंस ।

यह १ खुराक है जब तक खून बंद न हो फी ४ घंटेपर पिलाता रहै ।

ऋतुसमयमें साधारण स्वस्थताकी उन्नतिके वास्ते ।

एसिड फास्फारिक डिल	१॥ ड्राम
टिंचर एकोनाइट	॥ ड्राम
टिंचर सिनकोना कम्पौन्ड	४ ड्राम
इनफ्यूजन ऑरेन्साई	७॥ औंस

इसकी ६ खुराक बनाकर दिनमें ३ दफे पिलाना चाहिये ।

होमियोपेथिकसे चिकित्सा ।

पेशाबके समय दर्द जलन हो तो एकोनाइट देवै । जलनके साथ पीब बदबूदार निकलै या रोगकी जगह लाल पडगई हो तो आर्सनिक, देवै । योनिसे सफेद पानी पडै और सुईसी चुभै, तलपेटमें दर्द हो तो बिलाडोना, देवै ।

ऋतु बन्द होगया हो तो रोगीको गर्म पानीसे स्नान कराके एकोनाइट देवै । और पलसेटिला, डालकामारा, सिमिसिफ्यूगा भी दिये जासक्ते हैं अगर ऋतु डरसे बंद होगया हो तो एकोनाइट, उपियमवेरेट्रम देवै । उत्तेजनासे ऋतु बंद होगया हो तो कैमोमिला, शोकसे बंद हुवा हो तो इग्नेशिया। आनन्दसे बन्द हो तो, कफिया देवै । ऋतु बन्द होनेके कारण माथे में दर्द हो तो एकोनाइट देवै । बाईं तरफ पीडा हो तो सिमिसिफ्यूगा देवै। कोमलस्वभाववाली स्त्रीके तलपेटमें दर्द होगया हो तो

पलसेटिला देवै।जननेन्द्रियका उत्ताप और आंखोंमें दर्द होगया हो तो बिलाडोना देवै। माथा घूमता हो और नाकसे खून गिरता हो अथवा कोष्ठबद्ध और पसलीमें, वक्षस्थलमें, दर्द हो तो ब्रायोनिया देवै। माथा भारी और घूमै,नींद न आवै,दस्त साफ न हो और पेशाव बन्द हो तो ओपियम देवै।

यदि नियमपूर्वक दस्त न होता हो तो चायना देवै अथवा पहिले दिन पलसेटिला देकर दो तीन दिन तक चायना देवै जब तक रोग को फायदा न पहुँचे तब तक दोनों दवा उलटपुलट कर खिलातारहै ऋतुशूल हो तो कैमोमिला देवै।

श्वेतप्रदर या गर्भावस्थामें सफेद कफ सा निकलै और उसीसे खुजली होनेके कारण ऋतु बन्द होगयाहो तो पलसेटिला देवै।

हरा पीला बदबूदार पानी निकले और ऋतुसमयमें दर्द हो, थोडा खून निकले, कोष्ठबद्ध हो तो सिपिया देना चाहिये।

यदि वंध्या हो तो इसकी चिकित्सा कारण देखकर करनी चाहिये यदि ईश्वरीय यन्त्रोंके निर्माणमें ही त्रुटि रही हो तो औषधिसे लाभ नहीं होगा और किसी कारणसे हो तो सिपिया, वेवाइट कार्बोनेट कोपियन, प्लेटिना, फेरम, फास्फरिस, देवै।

गर्भपातमें सेवाइना देना चाहिये।

बहुत खून गिरै तो एकोनाइट देवै।

गौण ऋतुमें तलपेटके नीचे दर्द और पीठमें दर्द, कभी हँसै कभी रोवै तो ऐसी दशामें पलसेटिला देवै।

शिशुरोग चिकित्सा।

एलोपेथिकसे होपिंकाफ लक्षण।

इस रोगमें सरदीके साथ खांसी होती है। पहिले थोडा थोडा ज्वर, खांसी, नाकसे पानी गिरना, कै होनेसे पसीना

फेन होना,आलस,बेकली,बहुत देर तक छातीमेसे आवाज,खासते २मुख लाल होजावै, आखें निकल आवें, मृत्युके लक्षण दिखाईपड़े,नाकसे खून पडै, विना इच्छाके ही मल मूत्र निकलै,पेटमें कीड़े पडजानेसे, पेट फूलजानेसे,अजीर्ण होनेसे,बालकोंको कन्वेन्सन होजाताहै।इसके आक्रमणकालमें शरीर कडा और अचल होजाता है।मुखकी पेशी सिकुड़जाती है।मस्तक और मुखकी खाल लाल होजाती है, आंख सफेद,श्वास कभी धीरे कभी जल्दी और कष्टदायक होता है। हाथकी मुट्ठी बन्धजावै, अंगुली हथेलीमें बंध जावै, बालक डरेके समान रोवै, बहुत पसीना आवै,यहांतक कि बीमारी बढनेसे बालक मूर्च्छित होकर मर भी जाता है।

होमियोपेथिकसे लक्षण ।

बालकोंको प्रायः एक रोग ऐसा देखागया है।नाक बद होकर श्वासलेनेमें, दूध पीनेसे भी कष्ट होताहै।खानेके समय छातीमेंसे एक तरहका शब्द होताहै।बालकोंका कोष्टबद्ध प्रायः माता पिताके रोगसे होता है।जिनको शिरदर्दकी बीमारी है उनके बालकोंको कोष्टबद्ध होता है। पिता माताको कोई बीमारी हो तो बालकको मूर्च्छा भी आती है। विशेषतः यह मूर्च्छा दांतोंके उठनेके समय होती है वा किसी कीडे आदिके काटनेसे। प्रायः बलशाली बालकोंको भी यह रोग देखागया है कि हाथ पैर टेढे होना, खिंचना आंखोंके तारे पलट जाना परंतु यह रोग क्षणक्षयी है।

एलोपेथिकसे चिकित्सा ।

होपिंकाफ होवै तो सामान्यतः बालकको गर्म कपडेसे ढका रखना चाहिये। हलकी चीजें खानेको दे, घरके किवाड बन्द रक्खै और बिलाडोनाकी सोपलिनीमेन्टसे पीठके बांसको रगडना उपकारी होता है। पीडा कठिन हो तो वमनकारक दवा देकर आगे लिखी दवा देवै–

टिंचर कार्डिमम कम्पौन्ड	२॥ ड्राम
एसिडाई नाईट्रिसाई डिल	११॥ ड्राम
सीरप	३॥ औंस
पानी	॥ औंस

सब मिलाकर एक छोटे चमचेभर दिनमें दो घंटेके अंतरसे पिलावै अथवा—

सल्फेट औफ जिंक	८ ग्रीन
एक्सट्राक्ट बिलाडोना	२ ग्रीन
पानी	८ औंस

इस दवाको फी ४ घंटेके बाद ४ ड्राम पिलावै।

कन्वेन्सन हो तो, बालककी पीडाका कारण जानकर चिकित्सा करनी चाहिये। थोडी देर पीडा रहती हो तो ठंढे पानीको माथेपर डालना और कपडे उतार देना चाहिये। यदि पीडा कुछ समय तक ठहरती हो तो माथेपर ठंढा पानी और शरीरको गर्म पानी लगाना चाहिये। आहारके उपरांत आक्रमण हो तो जीभके ऊपर एक बूंद आयलक्रोटन लगादे।

दंत निकलनेके कारण पीडा हो तो उनकी जडोंको सावधानीसे चीरदे।

नींद न आनेके कारण यह रोग हो तो, तीन महीनेके बालकको चौथाई ग्रीन और १ वर्षके बालकको आधी ग्रीन डोवार्सपाउन्डर देनेसे बहुत फायदा होता है।

कीडेके कारण यह रोग हुवा हो तो—

केम्फर	५ ग्रीन
एक्सट्राक्टबिलाडोना	१ ग्रीनका तिहाई
एक्सट्राक्ट कनाई	४ ग्रीन
स्पिरिट रेक्टीफाइड	गोली बनानेके लायक

इसकी ४ गोली बनाकर रातको सोते वखत १ गोली देनी चाहिये ।

होमियोपेथिकसे चिकित्सा ।

अगर चमडी गर्म हो और ज्वर मालूम पडे तो एकोनाइट फी तीन घंटेमें देवे ।

अजीर्णके कारण बालक चिस्कार मारे, सफेद दस्त होते हों तो केमोमिला देवे ।

कोष्ठबद्ध और पेटकी बीमारीमें पलसेटिला देवे ।

केवल कोष्ठबद्ध हो तो उपियम, ब्रायोनिया, मर्क्यूरियस, नक्सवोमिका, सल्फर, पर्याय क्रमसे देवे ।

मूर्च्छा हो तो एकोनाइट, बिलाडोना देवे ।

चोट लगी हो तो आर्निका, सिक्यूटा वा बिलाडोना देवे ।

अम्लरोगसे मूर्च्छा हो तो नक्सवोमिका देवे ।

अब पेजिन्ट दवायें लिखीजाती हैं ।

अर्ककपूर बनानेकी विधि ।

रेकटीफाइड इस्प्रिट	२४ औंस
केम्फर	४ औंस

दोनोंको बोतलमें बंद करके धरदे जब देखें कि कपूर बिलकुल गलगया तब २ से १० बूंद तक मात्रा देवे ।

आयल केम्फर बनानेकी विधि ।

केम्फर पिसाहुवा	१ औंस
अजवायनका फूल	१ ड्राम

कपूरको शीशीमें डालकर अजवायन फूलके टुकडे डालदेनेसे स्वयं आपही गलकर तेलके समान होजाता है, और अजीर्ण इत्यादिको अर्ककपूरकी अपेक्षा उत्तम होता है ।

क्लोरोडीन बनानेकी विधि ।

टिंचर केपसिस आई	१४ बूंद
आयल पीपरमैन्ट	१४ बूंद
म्यूरिट ऑफ मार्फिया	१॥ ग्रीन
ग्रान्ट सूगर	२ ड्राम
क्लोरोफार्म	२ ड्राम
एसिड हाईड्रिसनिव डिल	१० बूंद
डिस्टल वाटर	१ औंस

इन सब चीजोंको एक साथ मिलानेसे क्लोरोडीन तैयार होजाती है । मात्रा इसकी ५ से २० बूंद तक होतीहै ।

यकृत्पर—सिडलिसपाउन्डर बनानेकी विधि ।

सोडा	२० ग्रीन
टारटरिक एसिड	३० ग्रीन
सोडीय टाइसाई	३० ग्रीन

इन्होंको पानीमें मिलानेसे झाग उठने लगतीहै उसी वखत पिलादे तो यकृत्पीडा और कोष्ठवद्ध दूर हो ।

रेचनकर्ता व्लूपिलके बनानेकी विधि ।

सवक्लोराइड औफ मर्करी १औंस. सलफ्यूरेटेड मर्करी १औंस
गोयाकमरेजिन पाउन्डर २ औंस. काप्ट्रायल १ औंस

इसकी मटरसे कुछ वडी गोली वनावे इसको रातको खाकर सोनेसे सवेरेही साफ दस्त आताहै ।

उपदंशपर कम्पौन्ड कैलोमेलपिल की विधि ।

पिल्यूला कैलोमेनस कम्पजिटा	५ ग्रीन
एक्सट्राक्ट उपिआई	॥ ग्रीन

यह १ गोलीकी दवा है इससे उपदंश दूर होता है

इसकी ४ गोली बनाकर रातको सोते वखत १ गोली देनी चाहिये ।

होमियोपेथिकसे चिकित्सा ।

अगर चमडी गर्म हो और ज्वर मालूम पडे तो एकोनाइट फी तीन घंटेमें देवै ।

अजीर्णके कारण बालक चिस्कार मारे, सफेद दस्त होते हों तो कैमोमिला देवै ।

कोष्टबद्ध और पेटकी बीमारीमें पलसेटिला देवै ।

केवल कोष्टबद्ध हो तो उपियम, ब्रायोनिया, मर्क्यूरियस, नक्सवोमिका, सल्फर, पर्याय क्रमसे देवै ।

मूर्च्छा हो तो एकोनाइट, विलाडोना देवै ।

चोट लगी हो तो आर्निका, सिक्यूटा वा विलाडोना देवै ।

अम्लरोगसे मूर्च्छा हो तो नक्सवोमिका देवै ।

अब पेजिन्ट दवायें लिखीजाती हैं।

अर्ककपूर बनानेकी विधि ।

रेकटीफाइड इस्प्रिट	२४ औंस
केम्फर	४ औंस

दोनोको बोतलमें बंद करके धरदे जब देखै कि कपूर बिलकुल गलगया तब २ से १० बूंद तक मात्रा देवै ।

आयल केम्फर बनानेकी विधि ।

केम्फर पिसाहुवा	१ औंस
अजवायनका फूल	१ ड्राम

कपूरको शीशीमें डालकर अजवायन फूलके टुकडे डालदेनेसे स्वयं आपही गलकर तेलके समान होजाता है, और अजीर्ण इत्यादिको अर्ककपूरकी अपेक्षा उत्तम होता है ।

क्लोरोडीन बनानेकी विधि ।

टिंचर केपसिस आई	१४ बूंद
आयल पीपरमैन्ट	१४ बूंद.
म्यूरिट औफ मार्फिया	१॥ ग्रीन
ग्रान्ट सूगर	२ ड्राम
क्लोरोफार्म	२ ड्राम
एसिड हाईड्रिसनिव डिल	१० बूंद
डिस्टल वाटर	१ औंस

इन सब चीजोंको एक साथ मिलानेसे क्लोरोडीन तैयार होजाती है । मात्रा इसकी ५ से २० बूंद तक होतीहै ।

यकृत्पर—सिडलिसपाउन्डर बनानेकी विधि ।

सोडा	२० ग्रीन
टारटरिक एसिड	३० ग्रीन
सोडीय टाइसाई	३० ग्रीन

इन्होंको पानीमें मिलानेसे झाग उठने लगतीहै उसी वखत पिलादे तो यकृत्पीडा और कोष्ठवद्ध दूर हो ।

रेचनकर्ता ब्लूपिलके बनानेकी विधि ।

सवक्लोराइड औफ मर्करी १औंस. सलफ्यूरेटेड मर्करी १औंस
गोयाकमरेजिन पाउन्डर २औंस. काप्ट्रायल १ औंस
इसकी मटरसे कुछ बडी गोली बनावे इसको रातको खाकर सोनेसे सवेरेही साफ दस्त आताहै ।

उपदंशपर कम्पौन्ड कैलोमेलपिल की विधि ।

पिल्यूला कैलोमेनस कम्पुजिटा	५ ग्रीन
एक्सट्राक्ट उपिआई	॥ ग्रीन

यह १ गोलीकी दवा है इससे उपदंश दूर होता है

वाजीकरण।

फास्फोरिस पिल कम्पौन्ड की विधि ।

कोनैन सिलफूरट	॥ ग्रीन
इष्टिकिनिया	१ ग्रीनका पचीसवां हिस्सा
फौलाद की रूह	१ ग्रीन
फस्फोरिस	१ ग्रीनका पचीसवां हिस्सा

-इसमें फी गोली इस हिसाबसे दवा पडती है यह दवा पतली, दुबली, सुस्त मिजाज और कमजोर औरत मर्द को मोटा ताजा बनानेके वास्ते अकसीर है चन्द रोज खानेसे बहुत खून पैदा हो जाता है। मांस बढता है। हड्डी मजबूत होती है। भूख बढती है। पेटकी पुरानी गिरानीको दूर करके मेदेमें ताकत पैदा करती है। पतली धातुको दहीके माफिक जमादेती है। नजला, जुकाम, खांसी, दर्द सीना जोडोका दर्द और गांठियेसे मनुष्यको बचाती है। पुरानी हरारत और जमेहुये कफको साफ करके कमजोर और बूढे मनुष्यको जोश जवानी पैदा कर देती है।

नपुंसककी दवा।

इष्टिकिनिया ॥ रत्ती. दूधमें भीगा छुहारा नग १

इन्होकी मोठके प्रमाण वटी बनाकर दूधके साथ दोनों बखत खानेसे पुरुषार्थ बढता है अथवा—

कोनैन	२ मासे.	टिंचर स्टील	१। छटांक
इष्टिकिनियां	चौथाई रत्ती.	पानी	४० तोले

सबको मिलाकर दिनमें ३ दफे आधी छटांक की मात्रासे पीवे तो पुरुषार्थ बढेगा।

॥ इति डॉक्टरीचिकित्सार्णव समाप्त ॥

पुस्तक मिलनेका पता-खेमराज श्रीकृष्णदास "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेस-बंबई।